नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

भाग

३



आगम - ४०

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [१]

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

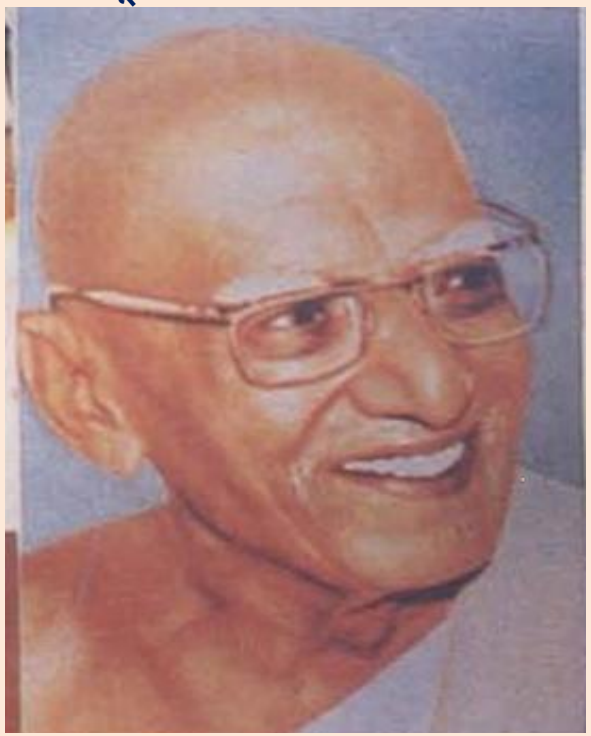
अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब



श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

~~~~~~

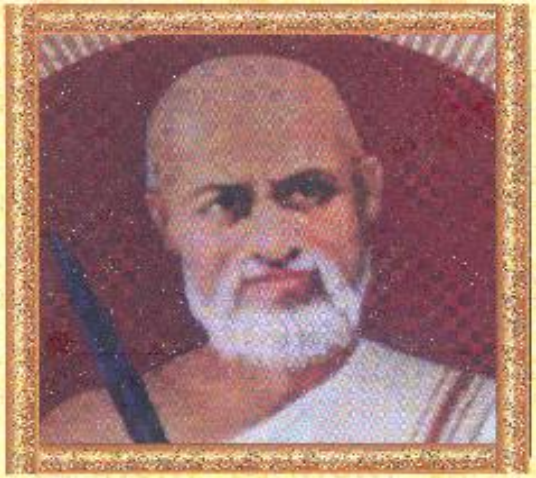
करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |
~~~~~~

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

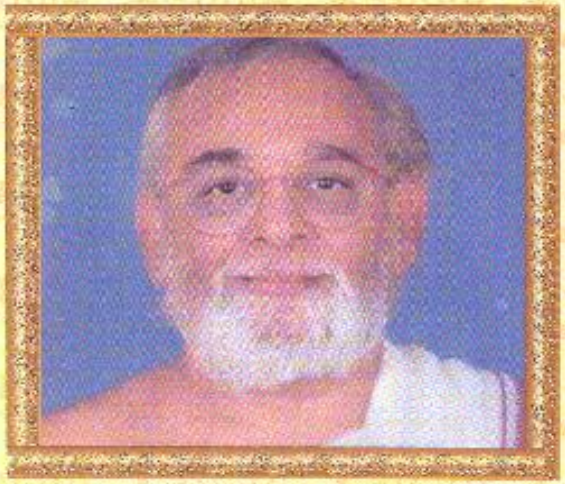
सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदावाद Mo 9825598855 / 9825306275



आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

भाग-3 [४०] श्री आवश्यक सूत्रम् (1)

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [१]

[मूलं + भद्रबाहुस्वामी कृत् निर्युक्ति: + भाष्यं + जिनदासगणि रचिता चूर्णि:]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]
(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५

'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-३

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... ***.....मुनि दीपरत्नसागर...***

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |

*** मुनि दीपरत्नसागर...

~~~
~~~

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ८ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "स चूर्णिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई , उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे | समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

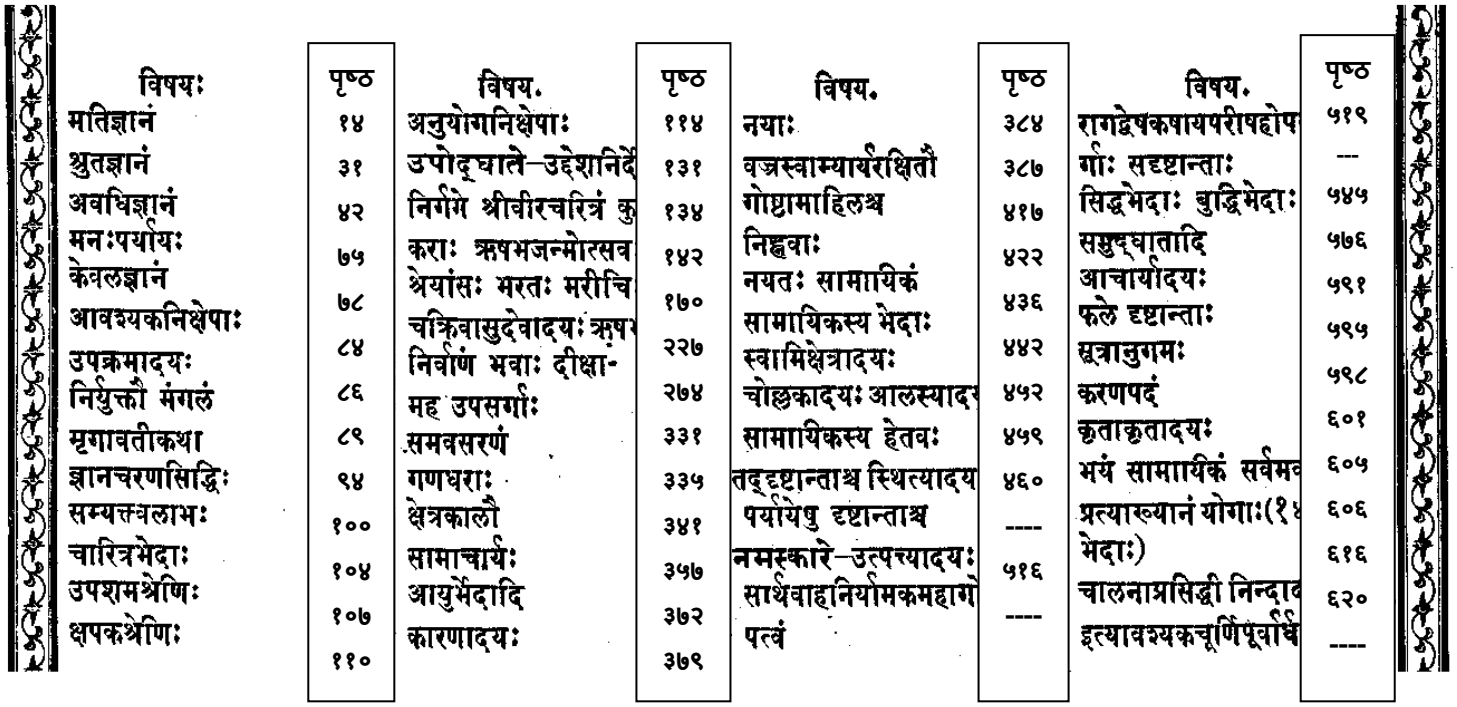
(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

आवश्यक चूर्णे: मूल संपादने लिखित: विषयानुक्रम:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1



विषयः	पृष्ठ
मतिज्ञानं	१४
श्रुतज्ञानं	३१
अवधिज्ञानं	४२
मनःपर्यायः	७५
केवलज्ञानं	७८
आवश्यकनिक्षेपाः	८४
उपक्रमादयः	८६
निर्युक्तौ मंगलं	८९
मृगावतीकथा	९४
ज्ञानचरणसिद्धिः	१००
सम्यक्त्वलाभः	१०४
चारित्रभेदाः	१०७
उपशमश्रेणिः	११०
क्षपकश्रेणिः	

विषय.	पृष्ठ
अनुयोगनिक्षेपाः	११४
उपोद्घाते–उद्देशनिर्दे	१३१
निर्गमे श्रीवीरचरित्रं कु	१३४
कराः ऋषभजन्मोत्सव	१४२
श्रेयांसः भरतः मरीचि	१७०
चक्रिवासुदेवादयः ऋष	२२७
निर्वाणं भवाः दीक्षा-	२७४
मह उपसर्गाः	३३१
समवसरणं	३३५
गणधराः	३४१
क्षेत्रकालौ	३५७
सामाचार्यः	३७२
आयुर्भेदादि	३७९
कारणादयः	

विषय.	पृष्ठ
नयाः	३८४
वज्रस्वाम्यार्यरक्षितौ	३८७
गोष्ठामाहिलश्च	४१७
निह्नवाः	४२२
नयतः सामायिकं	४३६
सामायिकस्य भेदाः	४४२
स्वामिक्षेत्रादयः	४५२
चोल्लकादयः आलस्यादः	४५९
सामायिकस्य हेतवः	४६०
तद्दृष्टान्ताश्च स्थित्यादय	----
पर्यायेषु दृष्टान्ताश्च	५१६
नमस्कारे–उत्पत्त्यादयः	----
सार्थवाहनिर्यामकमहागो	
पत्वं	

विषय.	पृष्ठ
रागद्वेषकषायपरीषहोप	५१९
र्गाः सदृष्टान्ताः	---
सिद्धभेदाः बुद्धिभेदाः	५४५
समुद्घातादि	५७६
आचार्यादयः	५९१
फले दृष्टान्ताः	५९५
सूत्रानुगमः	५९८
करणपदं	६०१
कृताकृतादयः	६०५
भयं सामायिकं सर्वमव	६०६
प्रत्याख्यानं योगाः(१४	६१६
भेदाः)	६२०
चालनाप्रसिद्धी निन्दाव	----
इत्यावश्यकचूर्णिपूर्वार्धं	

***चूर्णि के मूल संपादकने ये अनुक्रम बनाया था परंतु यहां दिये गये पृष्ठांको के मुद्रण या प्रूफ़-रीडिंगमे विसंवादिता दिखाई दी | इसीलिए हमने यहाँ शुद्धिकरण कर के नया बॉक्स बनाकर उसमे सही पृष्ठांक दे दिये है|

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं			मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
				०१-०२	१-सामायिकं	2/२९७				
आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम										
निर्युक्ति / भाष्य	पीठिका ➔➔➔	०१३		नि./भा.	--उपोद्घात-निर्युक्ति:	पृष्ठांक		नि./भा.	अध्ययनं-१- सामायिकं	पृष्ठांक:
		----		०८१	--वीरआदिजिनवक्तव्यता	१४०		८९०	नमस्कार-व्याख्या	२११
	[भाग-1]			३४३	--भरतचक्री-कथानकं	१९४		९१९	अर्हत्, सिद्धादे: निर्युक्ति:	२१८
---	--मंगलं	०१५		भा.०३९	--बलदेव-वासुदेव कथानकं	२२८		९६०	सिद्धशिला वर्णनं	२९२
				-----	[भाग-2]	-----		९९३	आचार्य-आदीनाम निक्षेपा:	२९४
००१	--ज्ञानस्य पञ्चप्रकारा:	०२०		५४३	--समवसरण वक्तव्यता	०३४				
				५८८	--गणधर वक्तव्यता	०४३		१०१३	सामायिक- व्याख्या,	३०१
०१३	--उपक्रम-आदि:	०९२		६६६	--दशधा सामाचारी	०५०		-----	उद्देश-वाचना-अनुज्ञा आदि:	---
				७५४	--निक्षेप, नय, प्रमाणादि	०८७		-----	सूत्र स्पर्शे भङ्गा:	---
				७७८	--निह्नव वक्तव्यता	१२३		-----	सामायिक-उपसंहार:	---
				७८९	--सामायिकस्वरुपम्	१३९				
				८१२	--गति आदि द्वाराणि	१४९.				

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
---	----------	---		०३-०९	२-चतुर्विंशतिस्तव:	3/		१०- --	३-वंदनकं	3/
११-३६	४-प्रतिक्रमणं	3/		३७-६२	५-कायोत्सर्गं			६३-९२	६-प्रत्याख्यानं	

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति / भाष्य	अध्ययनं	पृष्ठांक:		नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:		नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:
	भाग-3									
					अध्ययनं-४- प्रतिक्रमणं					
	अध्ययनं-२-				नमस्कार व सामायिक-सूत्रं				अध्ययनं-५- कायोत्सर्ग:	
	सूत्रपाठ:, कीर्तनं, प्रतिज्ञा,				चत्वार: लोकोतम-मङ्गल				सूत्रपाठ:, कायोत्सर्गस्थापना	
	--अर्हत: विशेषणं,				एवं ----------शरणभूत				श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि	
	--ऋषभादि नामानि,				संक्षिप्त व ईर्यापथ					
					शयन संबंधी प्रतिक्रमणं					
	अध्ययनं-३- वन्दनं				भिक्षाचर्याया: प्रतिक्रमणं				अध्ययनं-६- प्रत्याख्यानं	
	--गुरुवन्दन सूत्रपाठ:				स्वाध्याय,				सम्यक्त्व एवं श्रावकव्रत-	
	--मितावग्रह प्रवेशयाचना				असंयम आदि ३३-				प्रतिज्ञा	
	--क्षमापना, प्रतिक्रमण-				सूत्रोच्चारणे मिथ्यादुष्कृतम्				विविध प्रत्याख्यानादि:	
					प्रवचनस्तुति, वंदना,					

***** आवश्यक-चूर्णि के विषयानुक्रममें हमने भाग का क्रमांक एवं पृष्ठांक दोनो लिख दिये है *****

[आवश्यक-चूर्णि] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "आवश्यकसूत्र (पूर्वभाग)" के नामसे सन १९ २८ (विक्रम संवत १९ ८४) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

वृत्ति की तरह चूर्णी के भी दुसरे प्रकाशनों की बात सुनी है, जिसमे ऑफसेट-प्रिंट और स्वतंत्र प्रकाशन दोनों की बात सामने आयी है, मगर मैंने अभी तक कोई प्रत देखी नहीं है |

✣ - हमारा ये प्रयास क्यों? - ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर श्रुतस्कंध-अध्ययन-उद्देशक-मूलसूत्र-निर्युक्ति आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगम चूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है , कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते, कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है, उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति तथा भाष्यो के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनसंघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये 'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' भाग-३ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर.

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥ श्रीजिनदासगणिमहत्तरकृता श्रीआवश्यकचूर्णिः ॥

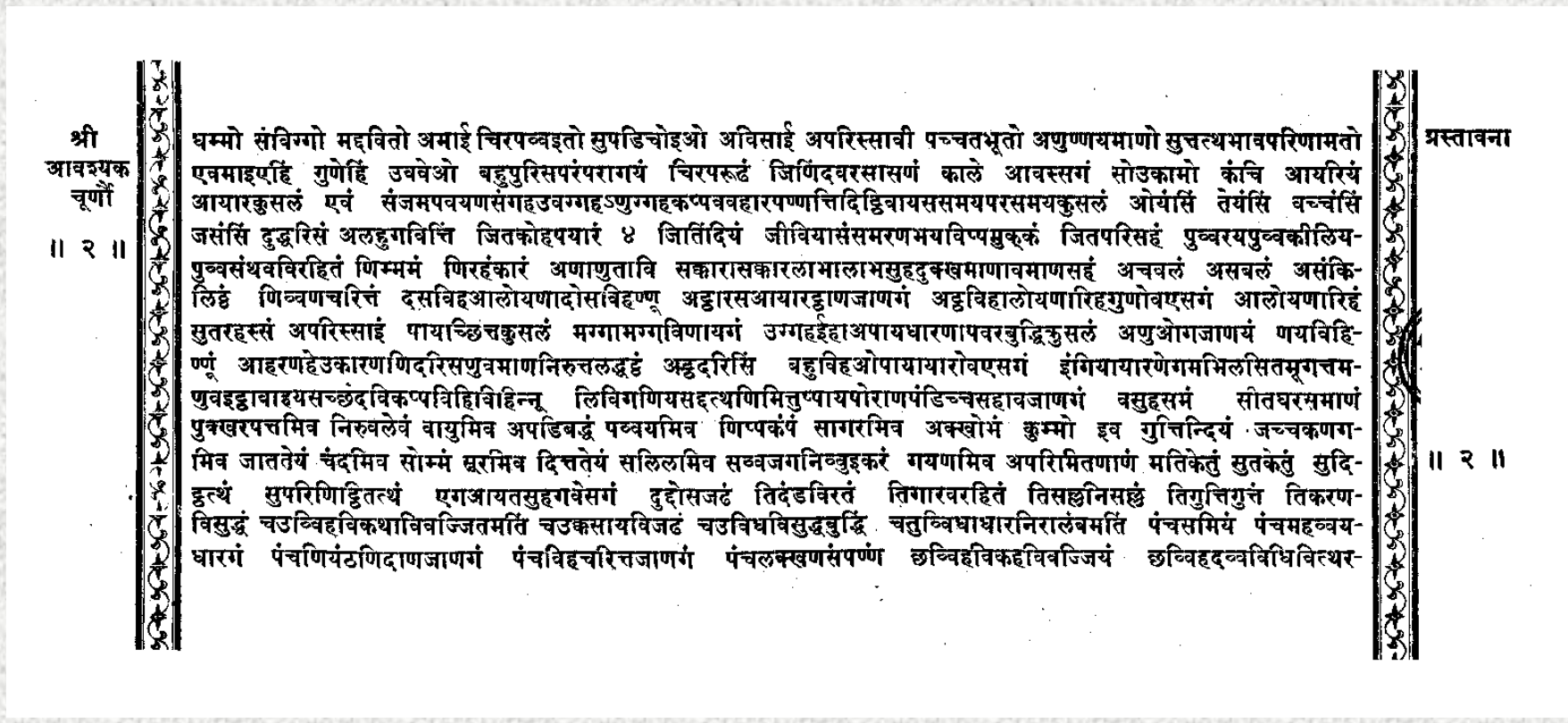
नमो अरहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरिआणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं ।

काउण णमोक्कारं तित्थकराणं तिलोकमहिताणं । आयरिउज्झायाणं णमिऊणं सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

कोति सुसीसो आयरियकुलवासी जातिकुलरूवसुयायारसत्तविणयसंपण्णो ण दुगुंछिओ अभीरू सत्तिजुओ विणीतो गंभीरो अदीणो ण रूसणो ण कुसीलो ण चवलो ण बहुभासी ण गारविओ ण तुरिओ असंपसारो ण पिसुणो ण परोपतापी ण अत्तट्ठगुरुओ ण मच्छरी ण अकयण्णू ण अहच्छंदो ण मंदो ण संदिद्धवादी ण सढो ण दिण्णकयपसंसी ण दिण्णकयपच्छाणुतावी णातिणिहो ण पडिकूलो णालसो ण तण्हालू ण छुहालू ण असंतुट्ठो नादेसकालण्णू ण थद्धो ण लुद्धो णाकालचारी ण मूढो ण णिल्लज्जो ण नाणस्स कारणे विप्पसवति एकाकी ण कंदप्पितो ण कोऊहतो ण मोहरितो ण आयारभावसुत्तवइतेणो उज्जुभावो विसुद्धसमत्तो दढचरित्तो दढाभिग्गहो सुगुत्तो समिओ समतण्णू दढोग्गहो दढीहो दढावाओ दढधारणो णायरियपरिभासी भत्तिजुत्तो अणुरत्तो अपडिरूवो हितओ अणुलोमो गणसोभी संघसोभी छंदण्णू अवायण्णू सुहदुक्खण्णू अट्ठई अणुयत्तवो विसेसण्णू उज्जुत्तो अपरितंतो बहुसुतो ण अंतरकहापुच्छी ण समइच्छियपुच्छी ण उड्डियपुच्छी सुहासणविणयपुच्छी [illegible] विसुद्धवक्को पियधम्मो दढ-

॥ १ ॥

पंच नमस्कार, चूर्णिकारेण कृतं आद्य मंगलं



श्री आवश्यक चूर्णौ ॥ २ ॥

धम्मो संविग्गो मद्दवितो अमाई चिरपव्वइतो सुपडिचोइओ अविसाई अपरिस्सावी पच्चतभूतो अणुण्णयमाणो सुत्तत्थभावपरिणामतो एवमाइएहिं गुणेहिं उववेओ बहुपुरिसपरंपरागयं चिरपरूढं जिणिंदवरसासणं काले आवस्सगं सोउकामो कंचि आयरियं आयारकुसलं एवं संजमपवयणसंगहउवग्गहऽणुग्गहकप्पववहारपण्णत्तिदिट्ठिवायससमयपरसमयकुसलं ओयंसिं तेयंसिं वच्चंसिं जसंसिं दुद्धरिसं अलहुगविचिं जितकोहपयारं ४ जितिंदियं जीवियासंसमरणभयविप्पमुक्कं जितपरिसहं पुव्वरयपुव्वकीलिय-पुव्वसंथवविरहितं णिम्ममं णिरहंकारं अणाणुतावि सक्कारासक्कारलाभालाभसुहदुक्खमाणावमाणसहं अचवलं असबलं असंकि-लिट्ठं णिव्वणचरित्तं दसविहआलोयणादोसविहण्णू अट्ठारसआयारट्ठाणजाणगं अट्ठविहालोयणारिहगुणोवएसगं आलोयणारिहं सुतरहस्सं अपरिस्साइं पायच्छित्तकुसलं मग्गामग्गविणायगं उग्गहईहाअपायधारणापवरबुद्धिकुसलं अणुओगजाणयं णयविहि-ण्णूं आहरणहेउकारणणिदरिसणुवमाणनिरुत्तलद्धट्ठं अद्धदरिसिं बहुविहओपायायारोवएसगं इंगियायारणेगमभिलसितमूगत्तम-णुवइट्ठावाइयसच्छंदविकप्पविहिविहिन्नू लिविगणियसद्दत्थणिमित्तुप्पायपोराणपंडिच्चसहावजाणगं वसुहसमं सीतघरसमाणं पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवं वायुमिव अपडिबद्धं पव्वयमिव णिप्पकंपं सागरमिव अक्खोभं कुम्मो इव गुत्तिन्दियं जच्चकणग-मिव जाततेयं चंदमिव सोम्मं सूरमिव दित्ततेयं सलिलमिव सव्वजगनिव्वुइकरं गयणमिव अपरिमितणाणं मतिकेतुं सुतकेतुं सुदि-ट्ठत्थं सुपरिणिट्ठितत्थं एगआयतसुहगवेसगं दुद्दोसजढं तिदंडविरतं तिगारवरहितं तिसल्लनिसल्लं तिगुत्तिगुत्तं तिकरण-विसुद्धं चउव्विहविकथाविवज्जितमतिं चउक्कसायविजढं चउविधविसुद्धबुद्धिं चतुव्विधाधारनिरालंबमतिं पंचसमियं पंचमहव्वय-धारगं पंचणियंठणिदाणजाणगं पंचविहचरित्तजाणगं पंचलक्खणसंपण्णं छव्विहीवकहविवज्जियं छव्विहदव्वविधिवित्थर-

प्रस्तावना ॥ २ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ॥ ३ ॥

जाणगं छट्ठाणविसुद्धपच्चक्खाणदेसगं छज्जीवकायदयापरं सत्तभयविप्पमुक्कं सत्तविहसंसारजाणगं सत्तविहगोत्तोवदेसगं अट्ठविहमाणमहणं अट्ठविहबाहिरज्झाणजोगरहितं अट्ठविधब्भंतरज्झाणजुत्तं अट्ठविहकम्मगंठिभेदगं णवबंभचेरवावत्तिधातगं दसविहसमणधम्मजाणगं एक्कारसमातियक्खरविहिवियाणगं एक्कारसउवासगपडिमोवएसगं बारसभिक्खुपडिमाफासगं बारसंगतवभावणाभावियमतिं बारसंगसुत्तत्थधारगं एवमादिगुणोववेयस्स णिग्गंथमहरिसिस्स सगलसकम्मं किइकम्मं काऊणं भणति—भगवं ! बहुपुरिसपरंपरागतं संसारणित्थरणोपायं आवस्सयाणुओगं सोतुमिच्छामि, तस्सायरिओ गुणमाहप्पं णच्चा आवस्सयाणुओगं परिकहेति । तत्थ आवस्सगं छव्विहं, तंजहा-सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणं पडिक्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणमिति । एसा पुव्वायरिएहिं रइया पुव्वाणुपुव्वी इति ।

तस्स य पुव्वामेव मंगलमिच्छावेति, जम्हा 'मंगलाईणि सत्थाणि मंगलमज्झाणि मंगलावसाणाणि, मंगलपरिग्गहिया सिस्सा उग्गहेहावायधारणासमत्था य अविग्घेणं सत्थस्स पारगा भवंति, ताणि य सत्थाणि लोए विरायंति, वित्थारं च गच्छन्ति,' एतेण कारणेणं आदिंमि मज्झंमि अवसाणे य मंगलं कीरइत्ति । तत्थ आइमंगलेण सीसा अविग्घेण तस्स सत्थस्स पारगा भवंति, मज्झमंगलेण पउत्तेण तं सत्थं थिरपरिचितं भवति, अवसाणमंगलेण तं सत्थं सिस्सपसिस्साणं अव्वोच्छित्तिकरं भवति, अतो मंगलतियमिच्छिज्जति, तत्थ आदिमंगलं सामाइयज्झयणं, कम्हा ?, जम्हा तंसि सामाइयज्झयणे तित्थकरगणहरउप्पत्तिमाहणो बहवे अत्था परूविया, ते य जो सद्दहति, सद्दहित्ता य जो करणिज्जे करेति अकरणिज्जे य परिहरति सो तं सव्वमंगलनिहाणं निव्वाणं पाविहितित्तिकाऊण सामाइयज्झयणं मंगलं भवति । सुत्ततोऽवि मंगलं 'करेमि भंते ! सामाइय'न्ति, कहं ?, जम्हा

आदि मध्यान्त मंगलानि

॥ ३ ॥

	***आदि-मध्य-अंत्य मंगलानां स्पष्टिकरणं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ ॥ ४ ॥

तत्थ सव्वसत्तेसु समता कायव्वत्ति एतं पइण्णमारूहति साधू, अतो तमवि सामाइयसुत्तं व मंगलं चेव, जो य समभावो सो कहं सव्वमंगलनिधाणं ण भविस्सति ?, तम्हा करेमि भंते ! सामाइयंति एयमादिसुत्तं मंगलं चेव। मज्झेऽवि मंगलं वंदणज्झयणं, कहं ?, जम्हा वंदमाणस्स णीयागोयकम्मक्खओ भवति, विनयमूलो जिणसासणे धम्मो परूविओ, अओ वंदणज्झयणं मज्झे मंगलं भवति, सुत्ततोवि 'इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं' ति एसो सद्दो मंगलिओ दट्ठव्वो, अहवा मज्झे मंगलं चउवीसत्थयादि, कहं ?, जम्हा तित्थगरत्थयादि परूविज्जति, तेण य सम्मइत्ताइसुद्धी जायतित्ति, दरिसणादिविसुद्धो य जीवो सव्वप्पवरमंगलणिधाणो भवइ। अवसाणेऽवि पच्चक्खाणज्झयणं मंगलं, कम्हा ?, जम्हा संवरियासवदुवारस्स णवस्स पावस्स आगमो ण भवति, ततो पुव्वसंचितं लहुं चेव बारसविधेण तवसा झोसिज्जति, अतो पच्चक्खाणज्झयणं मंगलं, सुत्ततोऽवि 'नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि'-त्ति, एवमाई अवसाणियं मंगलं भवति।

आह-जति आदी मज्झं अवसाणं च इमस्स सत्थस्स मंगलं तो जाणि पुण इमस्स अंतरालाणि ताणि किं अमंगलियाणि भवंतु ?, आयरितो आह-ताणिवि मंगालियाणि, कहं ?, जम्हा ताणिवि परूवणालक्खणाणि सव्वण्णुभासियाणि य, अतो ताणिवि मंगलियाणि भवंति, एत्थ दिट्ठंतो मोयगो– जहा अविरोधिदव्वाणं समवाएण मोदगो णिप्फण्णो सव्वो चेव मधुरो भवति, एवं ताणिवि अंतरालाणि सुयणाणाइसामत्थजुत्ताणि चेव काऊणं मंगलियाणि दट्ठव्वाणि।

तं च मंगलं ४, तंजहा-णाममंगलं ठवणामंगलं दव्वमंगलं भावमंगलमिति, तत्थ णाममंगलं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा मंगलंति णामं कीरइ से तं णाममंगलं, तत्थ जीवस्स जधा कस्सति मणूसस्स मंग-

आदि-मध्यान्त मंगलानि

॥ ४ ॥

मंगलस्य नाम-आदि निक्षेपा:

श्री आवश्यक चूर्णौ ॥ ५ ॥

लोत्ति णामं कीरइ, अथवा अग्गिस्स मंगलोत्ति णामं केसुवि देसेसु भवति, अजीवस्स जहा-वेणुपव्वमज्झस्स देसाविक्खाए, तदुभयस्स जहा तस्सेव मणूसस्स मुंजेसीयदलमज्झसाहियस्स, अहवा तस्स अग्गिणो वेणुपव्वमज्झसहियस्स, एवं पुहुत्तेऽवि विभासा १। इयाणिं ठवणामंगलं, तं च दुविहं, तं०-सब्भावतो असब्भावतो य, तत्थ सब्भावओ जथा-चित्तकम्मादिसु अरहंतसाधुणामादिणो ठाविता ते ठवणामंगलं भवंति, असब्भावओ जथा-अक्खमादि णिवेसिज्जति, इंदलट्ठीवि इंदंमि णिवेसिज्जइ, एवमादि। आह- णामठवणाणं को पइविसेसो ?, उच्यते, णामं पायसो आवकथितं, ठवणा इत्तिरिया वा होज्जा आवकहिया वा, तत्थ इत्तिरिया जथा-अक्खो इंदो वा सरतकालभूसितो, एवमादि, आवकहिता जथा जे देवलोकादिसु घडसुत्थियादिणो चित्तकम्मलिहिया, अहवा इमो विसेसो-जहा ठवणाइंदो अणुग्गहत्थीहिं अभिथुव्वति ण एवं णामिंदोत्ति २।

दव्वमंगलं दुविहं-आगमतो णोआगमतो य, तत्थ आगमतो जाणए अणुवउत्ते, णोआगमतो पुण तिविहं, तंजहा-जाणगसरीरदव्वमंगलं भवियसरीर० तव्वतिरित्त०, तत्थ जाणगसरीरं जो जीवो मंगलपदत्थाधिकारजाणओ तस्स जं सरीरं ववगयजीवं, पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च, जहा-अयं घयकुंभे आसी, अयं महुकुंभे भविस्सति, एवं भवियसरीरविभासा कायव्वा, तव्वतिरित्तं जहा-सोत्थियसिरिवच्छादिणो अट्ठमंगलया सुवण्णदधिअक्खयमादीणि य भावमंगलनिमित्ताणित्ति दव्वमंगलं ३।

भावमंगलंपि दुविहं, तं०-आगमतो णोआगमतो य, तत्थ आगमतो जहा जाणए उवउत्ते, णोआगमतो पसत्थो आयपरिणामो जह णाणादि, अहवा 'वंदे उसभं अजितं संभवं' एवमादि जे यावण्णे भगवंते, अहवा 'जयइ जगजीवजोणीवियाणओ' इत्यादि, अहवा 'सुधम्मं अग्गिवेसाणं' एवमादि जाव अप्पणो आयरियत्ति, अहवा पंचनमुक्कारो, अहवा जावतिया थया थुतीतो

नामादि-मंगलानि

॥ ५ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

य, अहवा भावनंदी, सव्वं तं नोआगमतो भावमंगलंति ॥ एत्थ चोअओ चोअयइ, जहा-अहो भगवं ! तुब्भेहिं अतिसुद्धं भासितंति, कहं णाम जो जस्स उवओगो सो सो चेव भविस्सइ ?, णो य खलु अग्गिंमि उवउत्तो देवदत्तो अग्गी चेव भवति, आयरिओ भणति-अहो वच्छ ! तुमं चेव अतिसुद्धाणि वयणाणि उल्लावयसि, णणु णाणंति वा संवेदणंति वा अहिगमोत्ति वा वेयणित्ति वा भावोत्ति वा एगट्ठा, जीवलक्खणं च णाणं, ण उ णाणाओ वतिरित्तो आया, जदि य चेयणातो जीवो अण्णो भवेज्ज ततो जीवदव्वं अलक्खणं चेव भविज्ज, ण वा बंधो मोक्खो वा अचेयणस्स जुत्तो, तेण जो सो णाता सो जं तं अग्गिस्स सामत्थं दहणपयणपगासणादि तं जाणति, तओ अग्गिणाणाओ सो णाता अवतिरित्तो, तेण सो अग्गिसामत्थजाणओ भावग्गी चेव लब्भति, जम्हा य उप्पायट्ठितिभंगजुत्तो आता अओ जम्मि उवउत्तो सो सो चेव भण्णइ ॥ आह-दव्वभावमंगलाणं को पइविसेसो ?, भण्णइ, दव्वमंगलं अणेगंतियं अणच्चंतियं च भवति, तत्थ अणेगंतियं णाम जं किं (केसिं) चि तारिसं मंगलं भवति तं चेव अण्णेसिं न भवइ, अमंगलं वा भवइ, अणच्चंतियं णाम जं पडिहणिज्जति, भावमंगलं पुण एगंतियं अच्चंतियं च भवति, इमं पुण सत्थजायं भावमंगलं समोयरइ-जओ भावणंदीए अंतग्गतं, कहं एवं ?, णंदी चतुव्विधा, तं०-णामनंदी ठवणानंदी दव्वनंदी भावनंदी, णामठवणाओ परूवियव्वाओ, दव्वणंदी दुविहा तिविहा य, केवलं तव्वइरित्ता संखबारसंगाणि तूराणि, भावणंदी दुविहा-आगमओ जाणए उवउत्ते, णोआगमओ पुण पंचविधं णाणं, तंजहा—

आभिणिबोहियनाणं० ॥ १ ॥ एतं पंचविधमवि णाणं समासओ दुविहं-पच्चक्खं च परोक्खं च, पच्चक्खं ताव अच्छतु, परोक्खं पुण अप्पतरगंतिकाऊण पुव्वं वण्णिज्जइ ॥ आह-कः अनयोर्विशेषः ?, उच्यते, अक्खो-जीवो तस्स जं

॥ ६ ॥

'नन्दी' चतुर्विध-भेदे, ज्ञानस्य द्वि-भेदा: (प्रत्यक्षं-परोक्षं च)

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ ७ ॥

परतो तं परोक्खं, जं णो विणा इंदिएहिं जाणतित्ति वुत्तं भवति, जं सयं चेव जीवो इंदिएण विणा जाणति तं पच्चक्खं भण्णति, लोइआणं पुण अक्खाणि इंदियाणि भण्णंति, तेसिं परतो परोक्खं, जं पुण तेहिं उवलब्भति तं पच्चक्खं, तं च ण युज्जते, जेण इंदियाणि रूवाईणं विसयाणं अगाहगाणि, जीवो च्चेव चक्खुमादिएहिं रूवाईणं विसयसत्थाणं गाहतो, कहं?, जम्हा जीवोवओग-विरहियाणि इंदियाणि णो उवलभंति, अओ जं इंदिएहिं उवलब्भति तं णाणं लिंगियं,लिंगियंति वा चिंधणिप्फण्णंति वा करणनि-प्फण्णंति वा परनिमित्तणिप्फण्णंति वा एगट्ठं, एस विसेसो ।

तं च परोक्खं दुविहं- तं०-आभिणिबोहियणाणं सुयणाणं च, जत्थ आभिणिबोहितं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुतं तत्थ आभिणि-बोहियं, कहं ?, जंमि चेव पुरिसे आभिणिबोहियं तंमि चेव पुरिसे सुतमवि अत्थि, जंमि सुतं तंमि आभिणिबोहियतं अत्थि चेव, एवं एयाइं दोऽवि अण्णमण्णमणुगयाइं तहाऽवऽत्थ आयरिया एतेण कारणेण तेसिं णाणत्तं पण्णवयंति, तं०-अभिणिबुज्झतीति आभिणिबोहिअं, सुणेतीति सुतं, अविसेसिया मती, विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मती आभिणिबोहियणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स मती मति-अण्णाणं, अविसेसितं सुतं, विसेसितं सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुत्तनाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुतं सुयअण्णाणं । एत्थ सीसो आह- भगवं! किं भणितं होंति अभिणिबुज्झतीति आभिणिबोहियं सुणेतीति सुतं ?, आयरिओ आह-जमत्थं ऊहिऊण णो निद्दिसति तं आभिणि-बोहियणाणं भण्णति, एत्थ निदरिसणं, जहा- कस्सइ मंदपगासाए रयणीए पुरिसप्पमाणमेत्तं खाणुं दट्ठूण चिंता समुप्पज्जति-'किं पुण एस पुरिसो भविज्ज उदाहु खाणुत्ति ?, ततो तं खाणुं वल्लीविणद्धं दट्ठूण पक्खिं वा तंहिं णिलीणं पासिऊणं आभिणि-बोधो भवति जहा एतं खाणुत्ति, तं च जइ अभिमुहमत्थं जाणति णो विवरीयं ततो आभिणिबोहियं भवति । अभिमुहम-

प्रत्यक्ष परोक्ष

॥ ७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ ८ ॥

त्थं णाम जो खाणुं खाणुं चेव अभिणिबुज्झति, ण पुण खाणुं पुरिसं मण्णति, एयं अभिमुहमत्थं भण्णाति, जं च अभिमुहमत्थं तं आभिणिबोहियं, णो विवरीयंति । जो पुण अत्थं ऊहिऊण निद्दिसइ तं सुयणाणं भण्णइ, जम्हा सुयणाणेऽवि ऊहा अत्थि ततो सुतणाणं आभिणिबोहितणाणसहितं चेव दट्ठव्वन्ति १ ॥ अहवा आभिणिबोहियणाणसुतणाणाणं इमो विसेसो, तं०-आभिणिबोहियणाणं ताव मतिविसयं परिणायव्वंति, सुयणाणं पुण मइपुव्वगं चेव दुभेयं दट्ठव्वंति, तं०-अंगपविट्ठं अंगबाहिरं च, तत्थ जं तं अंगबाहिरं तं अणेगभेयं, आवस्सयं दसवेयालियं उत्तरज्झयणाइं दसाओ कप्पो एवमादि, तत्थ जं तं अंगपविट्ठं तं दुवालसविहं, तंजहा- आयारो जाव दिट्ठिवादो । आह-भगवं ! तुल्ले चेव सव्वण्णुमते को विसेसो जहा इमं अंगपविट्ठं इमं अंगबाहिरन्ति ?, आयरिओ आह- जे अरहंतेहिं भगवंतेहिं अईयाणागयवट्टमाणदव्वखेत्तकालभावजथावत्थितदंसीहिं अत्था परूविया ते गणहरेहिं परमबुद्धिसन्निवायगुणसंपण्णेहिं सयं चेव तित्थगरसगासाओ उवलभिऊणं सव्वसत्ताणं हितट्ठाय सुतत्तेण उवणिबद्धा तं अंगपविट्ठं , आयाराइ दुवालसविहं । जं पुण अण्णेहिं विसुद्धागमबुद्धिजुत्तेहिं थेरेहिं अप्पाउयाणं मणुयाणं अप्पबुद्धिसत्तीणं च दुग्गाहकंतिणाऊण तं चेव आयाराइ सुयणाणं परंपरागतं अत्थतो गंथतो य अतिबहुंतिकाऊण अणुकंपाणिमित्तं दसवेतालियमादि परूवियं तं अणेगभेदं अणंगपविट्ठं, जम्हा य सुयणाणस्सवि अत्थो अणूहितो णो णज्जइ अओ मतिपुव्वगं सुयणाणं भण्णातित्ति २ ।

अहवा आभिणिबोहियसुतणाणाणं इमो विसेसो तंजहा-'सोइंदिओवलद्धी भवति सुतं, सेसयं तु मतिणाणं । मोत्तूणं दव्वसुतं अक्खरलंभो य सेसेसु ॥ १ ॥ जे सोइंदिएवि अत्था उवलब्भंति तं सुतं, सेसेसु पुण चक्खुमादीहिं जे अत्था उवलब्भंति तं मतिणाणं भण्णति, जा य सा सोइंदिओवलद्धी तत्थ दव्वसुतं मोत्तूण मतिसहितं सुयणाणं भण्णति, दव्वसुयं णाम जं भावसुय-

मतिश्रुत-योनानात्वं

॥ ८ ॥

'आभिणिबोहिय(मति)'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

निबंधणभूतं तं दव्वसुयं भण्णति, जेऽवियं सेसेहिं चक्खुमाईहिं इंदिएहिं अत्था उवलब्भंति तत्थवि भयणाए मतिणाणं भवति, कहं ?, जे चक्खुमाईहिं अत्थे उवलहिऊण अक्खरलद्धीए भासति तं सुतं मतिसहितं भण्णति, जाव ण भासइ ताव मइणाणं चेव भण्णइ ३

अहवा 'बुद्धीदिट्ठे अत्थे जे भासति तं सुतं मतीसहियं । इयरत्थवि होज्ज सुतं उवलद्धिसमं जदि भणिज्जा ॥ २ ॥ जे बुद्धीए दिट्ठे अत्थे भासति तं सुतं मतिसहितं भण्णति, मतिसहितं नाम मतिसहितंतिवा मतिअणुगयंति वा एगट्ठा, 'इयरत्थवि' आहिणिबोहियणाणे सुतं हविज्जा जदि उवलद्धिमेत्तमेव अत्थं भासेज्जा, अहवा उवलद्धिसमं णाम जे उवलद्धा अत्था ते जति सक्केज्जा भासेउं तं सुतं भवति । आह- उवलद्धावि अत्था किं न सक्कंति भासितुंति ?, उच्यते, आमं, 'पण्णवणिज्जा भावा अणन्तभागो उ अणभिलप्पाणं । पण्णवणिज्जाणं पुण, अणंतभागो सुयणिबद्धो ॥ ३ ॥ जे पण्णवणिज्जा भावा ते अणभिलप्पाणं भावाणं अणंतभागो, तेसिं पुण पण्णवणिज्जाणं भावाणं अणंतइमो भागो सुयनिबद्धो, कहं ?- जं चोद्दसपुव्वधरा छट्ठाणगया परोप्परं होंति । तेण उ अणंतभागो पण्णवणिज्जाण जं सुत्तं ॥ १ ॥ अक्खरलंभेण समा ऊणहिता होंति मइविसेसेणं । तेऽवि य हु मतिविसेसे, सुअणाणब्भंतरे जाण ॥ ५ ॥ दोऽवि एयाओ गाथाओ कंठाओ ४ ।

अहवा इमो विसेसो फुडो चेव- जे अभिनिबुद्धे अत्थे ण ताव भासति तं आभिणिबोहियनाणं भण्णति, तं चेव भासिउं पवत्तो ततो सुयणाणं भवति, एत्थ सुंबवलगदिट्ठंतो, जारिसगा वलगा तारिसं आभिणिबोहितं, जारिसयं सुंबं तारिसं सुतं, एवं जाव परिण्णाता अत्था ण भासति ताव आभिणिबोहियं भण्णति, जाहे भासिउं पवत्तो ताहे सुतं भण्णति ५ ।

अहवा अणक्खरं आभिणिबोहितं, सुयं अक्खरं वा होज्ज अणक्खरं वा, एस विसेसो ६ ।

अथवा आभिणिबोहियं अत्ताणं चेव एक्कं पगासेति, सुतणाणं पुण अत्ताणं परं च दोऽवि पगासेति, पगासेतित्ति वा बुज्झावेति वा पच्चाणेतित्ति वा एगट्ठा, एत्थ दिट्ठंतो- मूका अमूका, जहा मूको अत्ताणं चेव एगं पगासेति, अमूको पुण अत्ताणं परं च दोऽवि पगासेति, एवं आभिणिबोहियणाणं मूकसरिसं दट्ठव्वं, सुयणाणं पुण अमूकसरिसंति ७ ।

भणितो आभिणिबोहियणाणसुतणाणविसेसो, इयाणिं एतेसिं चेव दोण्हवि परूवणा भाणियव्वा । तत्थ पढमं ताव आभिणिबोहियणाणस्स परूवणं काहामि, जम्हा सुत्ते एतस्स चेव पढमसुच्चारणं कतं, तं च दुविधं- सुयणिस्सितं असुतनिस्सितं च, तत्थ जं तं असुतनिस्सियं तं चउव्विहं- तंजहा-उप्पत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४, एसा चउव्विहा बुद्धी उवरि णमोक्कारनिज्जुत्तीए भण्णिहिति, इह गंथलाघवत्थं ण भण्णति । तत्थ जं तं सुयणिस्सितं तस्सिमा परूवणगाथा-

उग्गह ईहाऽवाओ य० ॥ २ ॥ सुतनिस्सितं आभिणिबोहियणाणं चउव्विहं भवति, तंजहा- उग्गहो ईहा अवाओ धारणा, एयाणि उग्गहाईणि चत्तारि आभिणिबोहियणाणस्स भेदवत्थूणि समासेण दट्ठव्वाणीति । तत्थ भेदो णाम भेउत्ति वा विकप्पोत्ति वा पगारोत्ति वा एगट्ठा, वत्थुणाम मूलदारभेदोत्ति वुत्तं भवति, समासो णाम संखेवो ॥ २ ॥ इदाणिं एतेसिं चेव उग्गहाईणं चउण्हं दाराणं विभागं भणामि-

अत्थाणं उग्गहंमी० ॥ ३ ॥ तत्थ अत्था सुत्ता असुत्ता पयत्था भण्णंति, एतेसिं जं ओगिण्हणं तंमि उग्गहो, वियालणा पुण ईहा, तत्थ वियालणंति वा मग्गणंति वा ईहणंति वा एगट्ठं, अवादो ववसाओ भण्णति, तत्थ ववसातो णाम ववसाउत्ति वा णिच्छयत्थपडिवत्तित्ति वा अवबोहोत्ति वा एगट्ठा, धारणा णाम धरणंति वुत्तं भवति, धारणं णाम जो उग्गहादीहिं जाणितो

अत्थो तं चेव अण्णंमि काले पुणोऽवि संभरति, तत्थ जो सो उग्गहो तं अत्थालोयणं भण्णति, अत्थालोयणं णाम जं अत्थस्स सामण्णेण गहणं, सो य उग्गहो दुविहो–अत्थोग्गहो वंजणोग्गहो य, तत्थ अत्थोग्गहो छव्विहो, तंजहा-सोइंदियअत्थोग्गहो चक्खुइंदियअत्थोग्गहो घाणिंदियअत्थो० जिब्भिंदियअत्थो० फासेंदियअत्थो० णोइंदियअत्थो०, वंजणोग्गहो पुण चउव्विहो, तंजहा-सोइंदियवंजणोग्गहो घाणिंदिय० जिब्भिंदिय० फासिंदिय०। ईहाअवायधारणाओऽवि एवं चेव छव्विहाओ, चउव्विहाओ ण भाणियव्वाओ ॥ ३ ॥ इयाणिं एतेसिं उग्गहाईणं चउण्हं दाराणं वित्थरतरएण कालस्स परूवणत्थं इमं गाहासुत्तं भण्णइ, तंजहा—

उग्गह एक्कं समयं० ॥ ४ ॥ एत्थ पुव्वं ता उग्गहस्स परूवणं करिस्सामि दोहिं दिट्ठंतेहिं, तंजहा- पडिबोहगदिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेण य। से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं?, २ से जहा नामए केइ पुरिसे सुत्तं पुरिसं पडिबोहिज्जा 'अमुया अमुय'त्ति, तत्थ चोदए पण्णवयं एवं वयासी–किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति दुसमय० तिसमय० जाव दससमय० संखेज्जसमय० असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति?, एवं वदंतं चोदयं पण्णवए एवं वयासी-णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति जाव णो संखेज्जसमयपविट्ठा०, असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, जहा को दिट्ठंतो?, से जहा णाम एकेइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थ एगं उदयबिंदुं पक्खिविज्जा, से णट्ठे, णट्ठेत्ति वा विगएत्ति वा अतथाभूएत्ति वा एगट्ठा, अण्णं पक्खिवेज्जा, सेवि णट्ठे, अण्णंपि, सेवि णट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेहिं २ होहिति से उदगबिंदू जेणं तं मल्लगं रावेहिति, होहिति से उदगबिंदू जे मल्लगं पवाहेहिहित्ति, एवामेव कलंबुयापुप्फसंठियं सोइंदियं तं जाहे अणंतेहिं पोग्गलेहिं पूरितं भवति ताहे हुंति करेइ, ण पुण जाणति केवि एस सद्दाति, एस एगसमइओ सोइंदियओग्गहो भण्णइ, ततो अंतोमुहुत्तियं ईहं पविसइ, जहा

॥ ११ ॥

केस णं पुण एस सद्दे भवेज्जत्ति?, ततो अंतोमुहुत्तियं अवायं गच्छइ, ततो से उवगयं भवइ, ततो धारणं पडइ, ततो धारेति संखेज्जं वा असंखेज्जं वा कालं, संखेज्जवासाउए संखेज्जं कालं असंखेज्जवासाउए असंखेज्जं कालं धरेइ, एसो सोइंदियवुग्गहो। एत्थ सीसो चोदेति, जहा-हेट्ठा सोइंदियउग्गहो दुविहो भणितो, तंजहा- अत्थोवग्गहो वंजणवग्गहो य, ण पुण एएसिं विसेसो भणितोत्ति, आयरिओ आह- जो कलंबुयापुप्फसंठियस्स सोइंदियस्स सद्दपोग्गलेहिं सह संजोगो एस सोइंदियवंजणाग्गहो, अत्थोग्गहो पुण जो सो सद्दो तेण कलंबुयापुप्फागितिणा इंदियएणं जीवस्स उवणीओ, तस्स अत्थस्स जं सामण्णगहणं एस सोइंदियअत्थोग्गहो भण्णइ, अत्थोग्गहस्स ईहाअवायधारणातो अत्थि, वंजणोग्गहस्स पुण अवग्गहणमेत्तमेव, ण तु ईहाअवायधारणाओ तंमि अत्थित्ति।

इदाणिं चक्खिंदियस्स उग्गहादीणं परूवणा भण्णति, से जहा णामए केइ पुरिसे चक्खिंदिएण मसूरगचंदगसंठाणसंठिएणं अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, णो चेव णं जाणति-किं खाणुं पुरिसोत्ति, एस एकसमइतो चक्खिंदियउग्गहो, ततो अंतोमुहुत्तियं ईहं पविसति, जहा-'किं पुण एतं खाणुं होज्ज? उदाहु पुरिसोत्ति', ततो सो अंतोमुहुत्तियं अवायं गच्छति, ततो से अवगयं भवति जहा-खाणुमेयं, णो पुरिसोत्ति', ततो धारणं पडति, ततो धरेति संखेज्जं असंखेज्जं वा कालं, संखेज्जवासाउए संखिज्जं कालं, असंखेज्जवासाउए असंखेज्ज कालं, एस चक्खिंदियअत्थोग्गहो, एयस्स पुण चक्खिंदियस्स वंजणोग्गहो णत्थित्ति।

इदाणिं घाणिंदियस्स उग्गहादीणि परूवेयव्वाणि, से जहा णामए कोइ पुरिसे घाणिंदिएणं अतिमुत्तगपुप्फचंदगसंठाणसंठिएणं अव्वत्तं गंधं आघाएज्ज, ण पुण जाणइ कस्सेस गंधोत्ति, 'किं उप्पलस्स? उदाहु अन्नस्स कस्सइ दव्वस्स?' स इक्कसमइतो घाणिंदियउग्गहो, एवं तेणेव कमेण जहा सोइंदियस्स, णवरं घाणाभिलावो भाणियव्वो, अत्थोग्गहवंजणोग्गहविसेसोऽवि तहेव।

इयाणिं जिब्भिंदियस्स उग्गहेहादीण परूवणा, से जहा णामए केइ पुरिसे खुरुप्पसंठाणसंठिएणं जिब्भिंदिएणं अव्वत्तं रसमासा-
एज्जा, ण पुण जाणइ-किमेस खीररसो? उदाहु अच्चस्स कस्सति दव्वस्सत्ति, सेसं जहा सोइंदियस्स तहेव अहीणमइरित्तं भाणियव्वं ।
इदाणिं फासिंदियस्स, से जहा णामए केइ पुरिसे अणित्थंत्थसंठाणसंठिएणं फासिंदिएण अव्वत्तं फासं वेदिज्जा, ण पुण
जाणइ-किमेस सप्पस्स फरिसो? उदाहु उप्पलणालस्सत्ति, सेसं जहा सोइंदियस्स ।
इयाणिं णोइंदियस्स, से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासेज्जा, ण पुण जाणति–किंपि मए दिट्ठंति, ततो अंतोमुहुत्तियं
ईहं पविसति, ततो जाणति अंतोमुहुत्तेण जहा देवे मए दिट्ठोत्ति, ततो अवातो, ततो धारणं पडइ, ततो धरेति संखिज्जं असंखेज्जं
वा कालं, संखेज्जवासाउए संखेज्जं कालं, असंखे० असंखे०, एस णोइंदियस्स अत्थोग्गहो । एयस्सऽवि वंजणोग्गहो णत्थित्ति ।
एत्थ सीसो आह-णो एस सव्वत्थ तरतमजोगो विज्जए, जहा पुव्वि उग्गहो ततो ईहा ततो अवाओ ततो धारणं, आयरिओ
आह-कहं ?, सीसो आह-जहा कोइ कंचि पुरिसं सहसत्ति पासिज्जा, तंमि उग्गहादयो जुगवमुप्पज्जंति, आयरिओ आह-तंमिवि
अत्थि चेव, कहं ?, जहा उप्पलपत्तसतवेहे कालणाणत्तं अत्थि, अहवा सुहुमत्तणेण णज्जए जहा एककालमेव विद्धंति, ण च-
रिल्ले पत्ते अविद्धे हेट्ठिल्लस्स वेधो जुज्जए, एवं सहसत्ति दिट्ठे पुरिसे उग्गहादीणं तरतमजोगो अत्थि चेव, ण पुण कालस्स सुहुम-
त्तणेण जाणितुं सक्किज्जतित्ति ॥ ताणि य इंदियाणि काणिइ पत्तविसयाणि काणिवि अपत्तविसयाणि, कहं ?–
पुट्ठं सुणेइ सद्दं० ॥५॥ पुट्ठं णाम फरिसितं, जाहे तं सोइंदियं अणंतेहिं सद्दपोग्गलेहिं पूरियं भवति तदा सुणेइ, जं पुण
पासति तं अपुट्ठं, कहं ?, जइ पुट्ठं पासिज्जा तो अंगिं दट्ठूण णयणाणं दाहो भवेज्जा, सूलं वा दट्ठूण णयणाणं वेहो भवेज्जा ॥

॥ १३ ॥

एत्थ सीसो आह-जति अपुट्ठं पासइ तो कहं देवलोयं ण पासति ?, आयरियो आह-विसए इंदियाणं णाणं दंसणं वा भवति । सीसो आह-भगवं ! को पुण एतेसिं विसउत्ति?, आयरिओ आह-सोइंदियस्स जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं, चक्खिंदियस्स जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं साइरेगं, घंधरसफासाणं जहण्णो अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं नव जोयणाइंति । गंधरसफासिंदिया बद्धपुट्ठं वियाकरेज्जा, कहं?, जाहे घाणपोग्गला घाणिंदियं पविट्ठा भवंति ताहे पुट्ठा, जाहे पुण घाणिंदिएण सह गाढं संजुत्ता भवंति ताहे बद्धा भण्णंति, एवं पुट्ठं बद्धं च गंधमग्घायइत्ति, तहा जिब्भिंदिएवि, मुखे जया पक्खित्तो आहारो भवति तदा पुट्ठो, जया लालाए सद्धिं एकीभूओ भवति जिब्भिंदियत्ताए य परिणामिओ तदा बद्धो, एवं पुट्ठं बद्धं च रसं आसादयतित्ति । जाहे फासपोग्गला ईसिं फासिंदिएण सह समागया भवंति तदा पुट्ठा भवंति, जदा पुण गाढं फासिंदिएण सह परिणामिया भवंति तदा बद्धा भण्णंति, एवं पुट्ठं बद्धं च फरिसं वेदेतित्ति ॥ ५ ॥ एत्थ सीसो आह-भगवं ! जे पुण निसिरिया भासापोग्गला ते किं ते चेव सुणेति उआहु अण्णेत्ति?, आयरिओ आह—

भासासमसेढीयं० ॥६॥ जाओ एयाओ लोगागासपएसाणं सेढीओ पाईणपडिणायताओ उत्तरदक्खिणउद्धमधायताओ य तासिं सेढीणं जो सोइंदियस्स समसेढीए ठितो भासति ते पोग्गला अण्णेहिं सद्दपोग्गलपाओग्गेहिं सह मीसगा सुव्वइ, जो पुण विसेढी भासइ ते पोग्गला णो सोइंदियं पविसंति, णियमा अण्णे सद्दपोग्गलपाउग्गपोग्गला तेहिं पोग्गलेहिं परंपराघाएण णोछिज्जमाणा २ सोइंदियं पविसंति, जे य ते पोग्गला णिसट्ठा भासंतेणं तेहिंतो बहुतरगा जे सोइंदियं पविसंति । आह-एकओमुहेऽवि ते कह विसेढी सुणेति?, उच्यते, ते पुण णियमा छद्दिसिं पविसंति ॥६॥ सीसो आह-भगवं! भणितं तुब्भेहिं जहा 'जं सद्दं

समसेढीए सुणेइ तं मीसगं सुणोतीत्ति' कत्थ पुण ताणि भासादव्वाणि कयरेण जोगेण गेण्हति ? कतरेण वा णिसरतीत्ति ?, आयरिओ आह–

गेण्हइ य काइएण० ॥ ७ ॥ भासालद्धीओ जीवो भासागहणपाउग्गाणि दव्वाणि कायजोगेण घेत्तूण भासत्ताए परिणामेउं वयजोगेण णिसिरति, णिसिरइ णाम भासइत्ति वुत्तं भवति, सो पुण ताणि दव्वाणि एगंतरेण गेण्हति एक्कन्तरं च णिस्सिराचिति, कहं?, एमसमएण जया भासापोग्गलाग्गहिया भवंति तदा एगेण चेव समएण णिसिरति, एवं गहणाणिस्सरणं काउं कोइ तंमि चेवट्ठितो भवति, ठितिक्खयं वा करेज्जा, एवं गहणानिसिरणाणं कालो जहण्णेण दुसमइओ उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तिओ, ते पुण अंतोमुहुत्तस्स समया असंखेज्जा णायव्वा, तेसु एक्कंतरं गेण्हति णिसिरति य, कहं ?, जो भासंतो-णो उवरमति सो जंमि समए णिस्सरति तंमि चेव समए भासं भासंतो अण्णाणि भासादव्वाणि पुणो गेण्हति, घेत्तूण य तइए समए णिसिरति, ताणि य कितियसमयसाहिताणि तइए समए णिसिरमाणो अण्णाणि भासादव्वाणि पुणो गेण्हति, ताणि चउत्थे णिसरति, ताणि य तइयसमयगहियकाणि चउत्थे समए णिसिरमाणो अण्णाणि भासदव्वाणि पुणो गेण्हति, ताणि पंचमे समए णिसरति, एवं एगंतरं गेण्हंतस्स एगंतरं णिस्सिरंतस्स य अब्भंतरेसु मुहुत्तस्स असंखेज्जा समया भवंति ॥७॥ जाणि पुण ताणि भासादव्वाणि गेण्हइ काइएण जोगेण ताणि पंचण्हं सरीराणं कतरेणं गेण्हतीत्ति?, एत्थ भण्णतीत्ति–

तिविहंमि सरीरंमि०॥८॥तिविहसरीरग्गहणेण ओरालियवेउव्वियआहारगाणं गहणं कयं, इयराणि पुण तेयाकम्मगाणि तदंतग्गयाणि चेव काऊण ण भणियाणि, जस्स ओरालियसरीरं सो जीवपएसेहिं गेण्हिऊण ओरालियसरीरेण णिसिरति, जस्स वेउव्वियसरीरं

सो जीवपएसेहिं गेण्हिऊण वेउव्वियसरीरेण णिसिरति, एवं आहारगेणऽवि, 'तो भासति भासतो भासति भासं' ति णाम जति भासतो भवति तो भासति, किं कारणं?, अण्णोसिं ओरालियवेउव्वियआहारगा अत्थि, ण पुण भासंति। कम्हा?, पज्जत्तिअभावा, कारणं वा किंचि पडुच्च ण भासंतीत्ति ॥ ८ ॥ तं पुण भासं कतिप्पगारं गेण्हति?, एत्थ भण्णति–

ओरालियवेउव्विय० ॥ ९ ॥ ओरालियवेउव्वियआहारगसरीरी चउव्विहं भासं गेण्हति य मुंचइ य, तंजहा- सच्चं असच्चं सच्चामोसं असच्चामोसं च, जाए भासाए गेण्हति ताए चेव णिसिरति, णो अण्णाए घेत्तूण अण्णाए णिसिरइत्ति ॥९॥ एत्थ सीसो आह- **कतिहिं समएहिं लोगो०**' ॥ १० ॥ गाहा कंठा । आयरिओ आह–

चउहिं समएहिं० ॥११॥ जीवो जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं णिसरति ताणि भिण्णाणि वा णिसिरति अभिन्नाणि वा, जाइं भिन्नाइं णिसिरति ताइं अणंतगुणपरिवुड्ढीए परिवड्ढमाणाइं २ चउहिं समतेहिं समंतओ लोगंतं फुसंति, फुसंति णाम पावंतित्ति वुत्तं भवति, जाइं अभिण्णाइं णिसिरति ताइं असंखेज्जाओ उग्गाहणवग्गणाओ गंता भेदमावज्जंति, संखेज्जाइं जोयणाइं गंता विद्धंसमागच्छंति, विद्धंसमागच्छाति णामाभासीभवंतीत्ति वुत्तं भवति। एवमेव जाइं भिण्णाइं णिसिरति ताइं महंतलेट्ठुकसमाइं चउहिं समएहिं लोगंतं पावंति, जाणि पुण अभिण्णाणि णिसिरति ताणि खुड्डुलगलेट्ठुगसमाणाइं अंतरा चेव विद्धंसमागच्छंति, तेहि य भिण्णेहिं भासादव्वेहिं चउहिं समएहिं लोगो निरंतरं सव्वो चेव फुडीकओ, जो य लोगस्स चरिमो अन्तो सो चेव भासाएऽवि चरिमो अंतोत्ति । कहं ?, जेण अलोए जीवाजीवदव्वाणं धम्मत्थिकायदव्वस्स अभावे गती चेव णत्थि, अतो लोगस्स चरिमंते भासाएऽवि चरिमंतो भण्णतित्ति ॥११॥ इयाणिं एयस्स आभिणिबोहियस्स एगट्ठिया भण्णंति, तंजहा–

ईहाऽपोह वीमंसा० ॥ १२ ॥ ईधत्ति वा अपोहोत्ति वा विमंसत्ति वा मग्गणात्ति वा गवेसणत्ति वा सण्णत्ति वा सइत्ति वा मइत्ति वा पण्णत्ति वा सव्वमेतं आभिणिबोहियं, एतेहिं एगट्ठिएहिं भणितंति ॥ तं पुण इमेहि अणुओगदारेहिं अणुगन्तव्वं, तंजहा—

संतपय परूवणया दव्वपमाणं च खित्तफुसणा य। कालो अंतर भागो भावो अप्पाबहुंकति ॥ १३ ॥

तत्थ संतपयपरूवणया पढमदारन्तिकाऊण पुव्विं भण्णति, तत्थ संतं णाम संतंति वा अत्थित्ति वा विज्जमाणंति वा एगट्ठा, संतं च तं पयं च संतपदं तस्स परूवणा संतपयपरूवणा, परूवणात्ति वा कहणंति वा वक्खाणमग्गोत्ति वा एगट्ठा, सा य इमेण पगारेण भवति, जहा- कोइ सीसो कंचि आयरियं पुच्छेज्जा, जहा आभिणिबोहियस्स किं संतस्स परूवणं असंतस्स वा?, आयरिओ आह- वत्थ! कतो ते संदेहो?, सीसो आह- संताणं असंताणं च परूवणा दिट्ठा, घडादिणं असंभवे भं(सिं)गादीणं च अतो मम संसओ, आयरिओ आह- संतस्स, कहं?, जम्हा ओहिणाणादीहिं पच्चक्खेहिं जे दिट्ठा अत्था सुत्तनिबद्धा असुतनिबद्धा वा ते आभिणिबोहियणाणसामत्थजुत्तो जीवो संतं गिण्हइ परं च गाहेति, अतो णियमा अत्थि आभिणिबोहियणाणंति, सीसो आह- जइ अत्थि तो कहिं मग्गितव्वं?, आयरिओ आह- इमेहिं ठाणेहिं मग्गियव्वं, तंजहा-

गइ इंदिए य काए जोगे वेए कसाय लेसा य। संमत्त णाण दंसण संजय उवओग आहारे ॥ १४ ॥

भासग परित्त पज्जत्त सुहुम सण्णी य हुंति भवचरिमे। एतेहिं तु पदेहिं संतपदे होंति वक्खाणं ॥ १५ ॥

तत्थ पढमं गतित्ति दारं, सा णिरयगतिआदी चउव्विहा, तत्थ पडिवज्जमाणयं पडुच्च चउसुवि गतिओ (सु) आभिणिहियणाणं भवेज्जा, पुव्वपडिवण्णंपि पडुच्च चउसुवि भवेज्जा, तत्थ पडिवज्जमाणओ णाम जो तप्पढमताए चेव आभिणि-

बोहियणाणं पडिवज्जइ, सो य एगसमयइओ लब्भति, सेसेसु समएसु पुव्वपडिवण्णओ लब्भति, गइत्तिदारं गयं १ ॥

इदाणिं इंदिएत्ति दारं, तत्थ पुढवीकाइयाइणो वणप्फतिकायावसाणा पंच काया एगिंदिया, तेसु दोवि णत्थि, बितिचउरिंदिएसु णत्थि पडिवज्जमाणओ, पुव्वपडिवण्णओ पुण भवेज्जा, कहं ?, जो कोई अविरयसम्मद्दिट्ठी विगलिंदिएसु उववज्जति सो जाव अपज्जत्ततो ताव घंटालालादिदृंतेण पुव्वपडिवण्णओ लब्भति, पंचिंदिएसु पुव्वपडिवण्णतो पडिवज्जमाणोऽवि आभिणिबोहियणाणी हविज्जा, इंदिएत्ति गयं २ ॥

काएत्ति, पुढविकाए जाव वणप्पप्फतिकाए ण पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ, तसकाए उभयं होज्जा ३ ॥

जोगेत्ति जोगो तिविहो, तंजहा-मणवइकायजोगित्ति, एतेसु तिसुवि पुव्वपडिवन्नो पडिवज्जमाणतो वा होज्जा ४ ॥

वेदेत्ति, सो तिविहो तंजहा-इत्थी, पुरिसो णपुंसगत्ति, एतेसु तिसुवि दुविहोऽवि होज्जा ५ ॥

कसाएत्ति, ते य कोहादिणो चउरो, तेसु दुविहोऽवि होज्जा ६ ॥

लेसात्ति, तत्थ उवरिल्लासु तिसु विसुद्धलेसासु पुव्वपडिवन्नतो पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, हेट्ठिल्लासु अविसुद्धलेसासु पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ णत्थि ७ ॥

सम्मत्तेत्ति, तं आभिणिबोहियणाणं किं सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जति मिच्छद्दिट्ठी सम्ममिच्छद्दिट्ठी ?, एत्थ दो णया समोतरंति, तंजहा-णिच्छतिए य ववहारिए य, तत्थ णिच्छइयनयस्स सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जइ, पुव्वपडिवन्नओऽवि सम्मद्दिट्ठी चेव, ववहारियस्स मिच्छादिट्ठी पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओ से णत्थि, सम्ममिच्छद्दिट्ठी ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ ८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

णाणत्ति, तं आभिणिबोहियणाणं किं णाणी पडिवज्जति उदाहु अण्णाणी ?, एत्थ दो णया, तंजहा-णिच्छतिए य ववहारिए य, णिच्छतियस्स णाणी पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओऽवि णाणी चेव हवेज्जा, जति णाणी पडिवज्जति किं आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी पडिवज्जति ?, तत्थ आभिणिबोहियणाणी आभिणिबोहियणाणउप्पत्तिसमकालमेव पडिवज्जमाणतो भवति, ततो कालतो पच्छा णत्थि पडिवज्जमाणतो, पुव्वपडिवण्णओ पुण भवेज्ज, सुतणाणी णत्थि पुव्वपडिवण्णओ, पडिवज्जमाणस्स पुण आभिणिबोहियसुयणाणाणं जुगवं चेव समुप्पत्ती भवति, ओहिणाणी पुव्वपडिवण्णओ भवेज्जा पडिवज्जमाणओऽवि, कहं ?, जम्हा जुगवं चेव आभिणिबोहियसुतओहिणाणाणं समुप्पत्ती भवति, अओ पडिवज्जमाणतो हवेज्जा, मणवज्जवणाणे पुव्वपडिवण्णओ हवेज्जा, पडिवज्जमाणओ णत्थि, केवलणाणे दोऽवि णत्थि, ववहारियस्स विभासा ९ ॥

दंसणेत्ति दारं, किं चक्खुदंसणी पडिवज्जति अचक्खुदंसणी० ओहिदंसणी० केवलदंसणी पडिवज्जइ ?, तत्थ चक्खु० अचक्खु० ओहिदंसणी य पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा पडिवज्जमाणओ वा, केवलदंसणे दोऽवि णत्थि १० ॥

संजमेत्ति-आभिणिबोहियं किं संजओ पडिवज्जति?, असंजओ० संजयासजओ०?, संजओ पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, पडिवज्जमाणओ जो सम्मत्तं चरित्तं जुगवं पडिवज्जति तस्सेतं गहणं कतंति, भणितं च-णत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं दंसणं तु भयणिज्जं । सम्मत्तचरित्ताइं जुगवं पुव्वि व सम्मत्तं ॥ १ ॥ असंजतोऽवि पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, संजतासंजतोऽवि एवं चेव ११ ॥

उवओगेत्ति, आभिणिबोहियं किं सागारोवउत्ते पडिवज्जति उआहु अणागारोवउत्ते पडिवज्जति ?, सागारोवउत्ते पडिव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

ज्जति, णो अणागारोवउत्तो, जम्मि समए पडिवण्णो आभिणिबोहियणाणं तंमि समए सो जीवो सागारोवउत्तो लब्भति, पुव्वपडिवण्णओवि सागारोवउत्तो हुज्जा, अणागारोवउत्तो पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणतो १२ ॥

आहारेत्ति, आभिणि० किं आहारतो पडिवज्जति अणाहारतो वा ?, आहारतो पडिवज्जति, णो अणाहारतो, जति आहारतो तो किं पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणो वा होज्जा ?, दोऽवि होज्जा, अणाहारओ पुण पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणओ १३ ॥

भासत्ति, किं भासतो पडिवज्जति अभासतो वा ?, जस्स भासालद्धी अत्थि सो भासंतोऽवि अभासंतोऽवि पडिवज्जति, जस्स णत्थि सो ण चेव पडिवज्जति १४ ॥

परित्तत्ति, किं परित्तो पडिवज्जति अपरित्तो वा ?, परित्तो पुव्वपडिवण्णतो वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, अपरित्तो दुविहो-कायापरित्तो संसारापरित्तो य, एस दुविहोऽवि ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणतो १५ ॥

पज्जत्तत्ति, किं पज्जत्ततो पडिवज्जति अपज्जत्ततो वा?, पज्जत्ततो, पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, अपज्जत्ततो पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणतो १६ ॥

सुहुमेत्ति, किं सुहुमो पडिवज्जति बायरो वा?, बायरो पडिवज्जति, णो सुहुमो, सो य बायरो पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा होज्जा १७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ २१ ॥

सण्णित्ति, किं सण्णी पडिवज्जति असण्णी वा?, सण्णी पडिवज्जति, णो असण्णी, सो य सण्णी पडिवज्जमाणओ वा पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, असण्णी पुण पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणओ १८ ॥

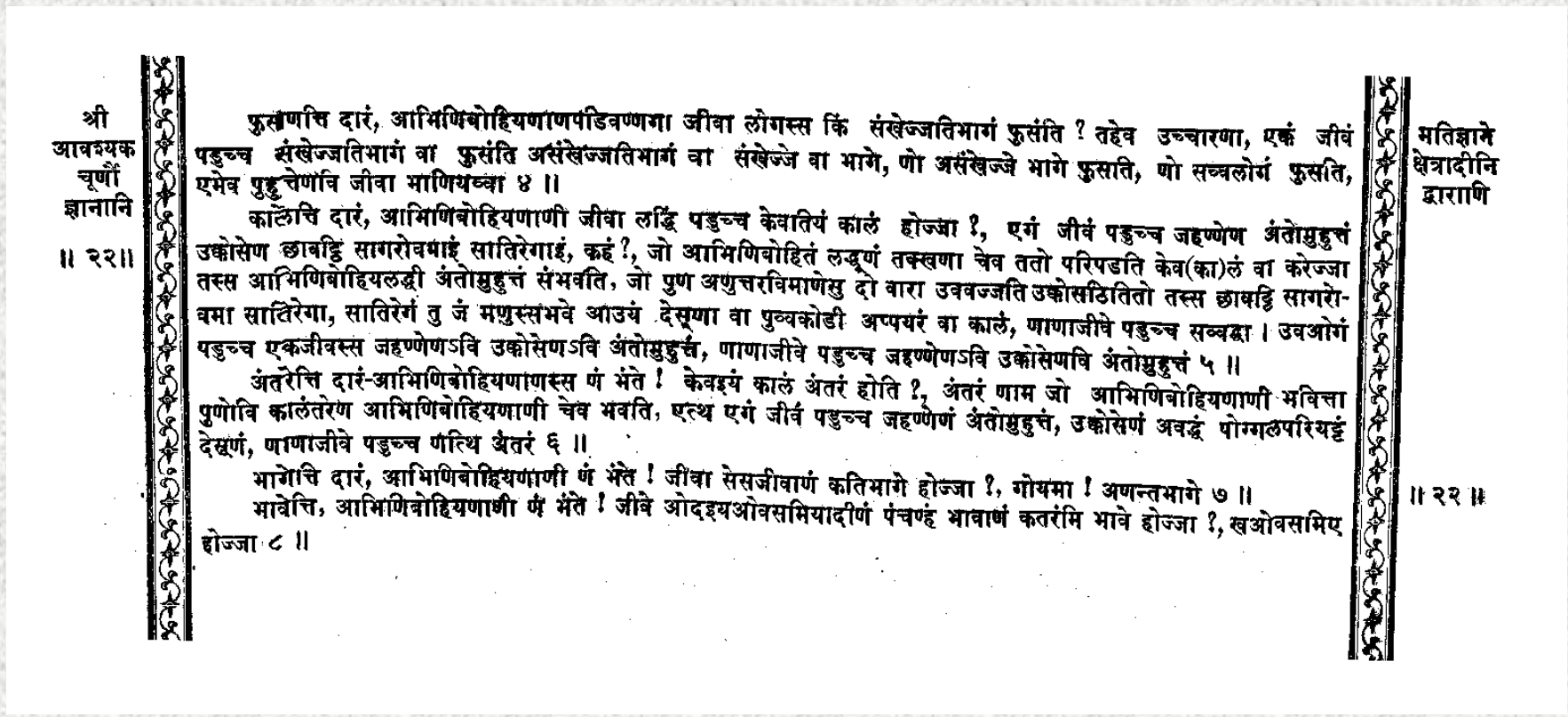
भवसिद्धिएत्ति, किं भवसिद्धिओ पडिवज्जति अभवसिद्धिओ वा पडिवज्जति ?, भवसिद्धिओ, णो अभवसिद्धिओ, सो भवसिद्धिओ दुविहोऽवि होज्जा १९ ॥

चरिमेत्ति, किं चरिमे पडिवज्जति अचरिमे वा ?, चरिमे पडिवज्जति, णो अचरिमे, से य चरिमे पडिवज्जमाणए वा होज्जा, पुव्वपडिवण्णए वा होज्जा २० ॥ १ ॥

गतं संतपदपरूवणत्तिदारं, इयाणिं दव्वपमाणंति दारं, तंजहा-आभिणिबोहियणाणपडिवण्णगा जीवा दव्वपमाणेण केवइआ ?, पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जति अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागे जावतिया वालग्गा, पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णपदे असंखेज्जा उक्कोसपदेऽवि असंखेज्जा, जहण्णपयातो उक्कोसपदे विसेसाहिया २ ॥

खेत्तत्ति दारं, आभिणिबोहियपडिवण्णया जीवा लोगस्स कतिभागे होज्जा ?, किं संखेज्जतिभागे असंखेज्जतिभागे संखेज्जेसु भागेसु असंखिज्जेसु भागेसु सव्वलोए वा होज्जा ?, असंखेज्जइभागे वा होज्जा, सेसपडिसेहो, थूरगणणाए विसयं पडुच्च लोगस्स चोद्दसखंडीकतस्स सत्तसु चोद्दसभागेसु होज्जा, विसओ णाम विसओत्ति वा संभवोत्ति वा उववत्तित्ति वा एगट्ठा, पडुच्च नाम पडुच्चत्ति वा पप्पत्ति वा अहिकिच्चत्ति वा एगट्ठा ३ ॥

सत्पदे सूक्ष्मादीनि द्वाराणि द्रव्य प्रमाणं च ॥ २१ ॥



श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ २२॥

फुसणत्ति दारं, आभिणिबोहियणाणपंडिवण्णगा जीवा लोगस्स किं संखेज्जतिभागं फुसंति ? तहेव उच्चारणा, एकं जीवं पडुच्च संखेज्जतिभागं वा फुसंति असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जे वा भागे, णो असंखेज्जे भागे फुसंति, णो सव्वलोगं फुसंति, एमेव पुहुत्तेणवि जीवा भाणियव्वा ४ ॥

कालेत्ति दारं, आभिणिबोहियणाणी जीवा लद्धिं पडुच्च केवतियं कालं होज्जा ?, एगं जीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइं, कहं ?, जो आभिणिबोहितं लद्धूणं तक्खणा चेव ततो परिपडति केव(का)लं वा करेज्जा तस्स आभिणिबोहियलद्धी अंतोमुहुत्तं संभवति, जो पुण अणुत्तरविमाणेसु दो वारा उववज्जति उक्कोसठितितो तस्स छावट्ठि सागरोवमा सातिरेगा, सातिरेगं तु जं मणुस्सभवे आउयं देसूणा वा पुव्वकोडी अप्पयरं वा कालं, णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा । उवओगं पडुच्च एकजीवस्स जहण्णेणऽवि उक्कोसेणऽवि अंतोमुहुत्तं, णाणाजीवे पडुच्च जहण्णेणऽवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ५ ॥

अंतरेत्ति दारं-आभिणिबोहियणाणस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होति ?, अंतरं णाम जो आभिणिबोहियणाणी भवित्ता पुणोवि कालंतरेण आभिणिबोहियणाणी चेव भवति, एत्थ एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं, णाणाजीवे पडुच्च णत्थि अंतरं ६ ॥

भागेत्ति दारं, आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! जीवा सेसजीवाणं कतिभागे होज्जा ?, गोयमा ! अणन्तभागे ७ ॥

भावेत्ति, आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! जीवे ओदइयओवसमियादीणं पंचण्हं भावाणं कतरंमि भावे होज्जा ?, खओवसमिए होज्जा ८ ॥

मतिज्ञाने क्षेत्रादीनि द्वाराणि

॥ २२ ॥

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ २३ ॥

अप्पबहुत्ति दारं, एतेसिं णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं णोआभिणिबोहियणाणीणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा ?, सव्वत्थोवा आभिणिबोहियणाणी, णोआभिणिबोहियणाणी अणंतगुणा । अप्पाबहुयत्ति दारं गतं ९ ॥

अण्णे एवं भणंति-किं सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जति मिच्छादिट्ठी० सम्मामिच्छादिट्ठी?, एत्थ दो णया-णिच्छइए य ववहारिए य, तत्थ ववहारियस्स मिच्छद्दिट्ठी पडिवज्जाति, णेच्छतियस्स सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जति, सम्मामिच्छो ण एकेऽवि, किं णाणी पडिवज्जइ उआहु अण्णाणी ?, एत्थऽवि एमेव । किं चक्खुदंसणी पडिव० ?, केवलदंसणवज्जे पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा । किं संजओ प० असंजओ वा प० संजयासंजतो वा ?, 'णत्थि चरित्तं०' गाहा । किं सागरोवउत्ते प० अणागारोवउत्ते पडिवज्जइ?, सागारोवउत्ते पडि०, णो अणागारोवउत्ते, जंमि पडिवण्णो सो सागारोवउत्तो, सेसेसु सागारोवओगेसु य अणागारोवओगेसु य पुव्वपडिवण्णओ। किं आहारओ प० अणाहारओ प० ?, आहारओ प०, नो अणा० प०, दोऽवि पुण पुव्वपडिवण्णगा होज्जा। किं भासतो प० अभासतो प० ?, जस्स भासालद्धी अत्थि सो भासंतोऽवि अभासंतोऽवि, जस्स णत्थि सो ण पडिव० । किं परित्तो प० अपरित्तो प० ?, दुविधोऽवि परित्तो प०, अपरित्तो ण पडि०, ण पुव्वपडि० । नोपरित्तोनोअपरित्तो ण प०, ण पुव्वपडि० । पज्जत्तओ पडिवज्जइत्ति २, अवज्जे पुव्वप० होज्जा । बायरो प०, २ । सुहुमो ण प०, ण पुव्व० । सण्णी पडि० २, असण्णी पुव्वप० । भवसिद्धिओ पडि० २, णो अभवसिद्धिओ । चरिमो पडिवज्जति अचरिमो प०, पुव्वपडिवण्णगं च पडिवज्जमाणगं च पडुच्च चरिमो, अचरिमो ण । सेत्तं संतपदपरूवणा १ ।

दव्वपमाणं आभिणिबोहियणाणपडिवण्णगा जीवा दव्वपमाणेण केवइया होज्जा ?, पडिवज्जमाणए सिय अत्थि सिय

मागादीनि सत्पदादौ अन्यमतं

॥ २३ ॥

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ २४ ॥

णत्थि, जति अत्थि एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागो, पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णपए असंखेज्जा उक्कोसपएवि असंखेज्जा, जहण्णपयाओ उक्कोसे विसेसाधिका २। खेत्तंति, लोयस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा जाव सव्वलोए?, णो संखेज्जतिभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु णो असंखेज्जेसु णो सव्वलोए ३। फुसणावि एमेव ४। कालतो एगजीवं पडुच्च लद्धी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तहियाणि, णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं ५। सेसं तहेव ।

तं च आभिणिबोहियणाणं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वतो णं आभिणिबोहियणाणी आदेसेणं सव्वदव्वाइं जाणति, ण पासति, खेत्ततो णं आदेसेणं सव्वखेत्तं जाणति, ण पासति, कालतो णं आएसेणं सव्वकालं जाणति, ण पासति, भावओ आएसेणं सव्वभावे जाणति, न पासति ॥ इयाणिं एतस्स आभिणिबोहियणाणस्स पगडिभेदपयरिसणत्थं इमं गाहापुव्वद्धं भण्णति, तंजहा-

आभिणिबोहिय नाणे, अट्ठावीसं भवंति पगडीओ ॥ १६ अ ॥ ता य इमा, तं०- छव्विहो अत्थोग्गहो सोइंदियाई, तंमि छव्विहा चेव सोइंदियाई ईहा पक्खित्ता, तासिं मज्झे सोइंदियाई छव्विहो अवाओ पक्खित्तो, तासु छव्विहा धारणा तहेव पक्खित्ता, तासु सोइंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवंजणोग्गहो चउव्विहो पक्खित्तो, जाया पगडी अट्ठावीसंति ॥ एवमेते आभिणिबोहियणाणं अट्ठावीसंति, पगतिभेदं गयं ॥ इयाणिं सुतणाणस्स पगडिभेयपदरिसणत्थं इमं गाहापच्छद्धं भण्णति-

सुतणाणे पगडीओ वित्थरओ यावि वोच्छामि ॥ १६ ब ॥ जातो सुयणाणे पगडीओ भवंति तातो वित्थरओ वण्णेहामि, अविसद्दो संभावणे, किं संभावयति?, दुविधो वक्खाणधम्मो, तंजहा-संखेवओ वित्थरतो य, तत्थ संखेवओ भणिहामि,

मतांतरेण सत्पदादीनि

॥ २४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ २५ ॥

वित्थरओ पुण तासिं पगडीणं भेदा चेव दरिसावेउं अहं समत्थो, ण पुण पत्तेयं पत्तेयं जो तासिं अत्थो तं समत्थो दंसिउंति संभावयति ॥ ते य तासिं भेदा वित्थरओ इमे-

पत्तेयमक्खराइं० ॥ १७ ॥ जावइयाइं पत्तेयं पत्तेयं असंजुत्ताणि अक्खराइं लोए जावइया य तेसिं अक्खराणं परोप्परतो संजोगा एवइयाओ सुयणाणे पगडीओ भवंति णायव्वाओत्ति ॥ एयाओ पगडीओ वित्थरेण अहं ण सक्केमि परूवेउं णाउं वा, जतो परिमियमाऊ णाणसंपत्ती य इतिकाऊण इमं गाहासुत्तं भणामि—

कत्तो मे० ॥ १८ ॥ अण्णे पुण भणंति- एयाओ पगडीओ वित्थरेण चोद्दसपुव्वधरा जाणंति परूवेंति य, अभिण्णदसपुव्विणो वा, अहं पुण असमत्थोत्तिकाउं इमं गाहासुत्तं भणामि 'कत्तो मे वण्णेउं' गाहा, पुव्वद्धं गयं, संखेवेण पुण अहं जहा आभिणिबोहियणाणं अट्ठावीसपगडिभेदं परूवितं तहा सुयणाणे यावि चोद्दसविहं णिक्खेवं वण्णेहामित्ति । तंजहा—

अक्खर०१९॥ अक्खरसुतं सण्णिसुतं सम्मसुतं सादिसुयं सपज्जवसियं गमितं अंगपविट्ठं, एते सत्त भेदा सह पडिवक्खेहिं मेलिया चोद्दस भवंति, तत्थ पढमं दारं अक्खरसुतंति, एत्थ क्खरसद्दो संचलणे वट्टइ, अकारो पडिसेहे, जम्हा णो क्खरति अओ अक्खरं, ण क्खरति णाम सव्वविसुद्धेणेगमणयादेसेण ण कयाइवि जीवेण सह विजुज्जइत्ति वुत्तं भवति, ये पुण अत्था अक्खरेहिं अहिलप्पंति ते क्खरा अक्खरा य भणंति, तत्थ अमुत्तदव्वाणि धम्मत्थिकायादीणि अक्खराणि, सासयाणित्ति वुत्तं भवति, तेसिंपि परिपच्चइतो असासयभावो भवति चेव, जहा आगासस्स पडागाससंजुत्तस्स पडागासत्तेण विगमो घडाकासत्तेण उप्पाओ, आगासत्तेणावट्ठिती चेव, जीवपोग्गलावि दव्वट्ठयाए अक्खरा, पज्जवट्ठयाए पुण क्खरा, कहं ?, जहा जीवस्स मणुस्सत्तादिणा उप्पाओ

अक्षरश्रुतेऽक्षरस्वरूपं

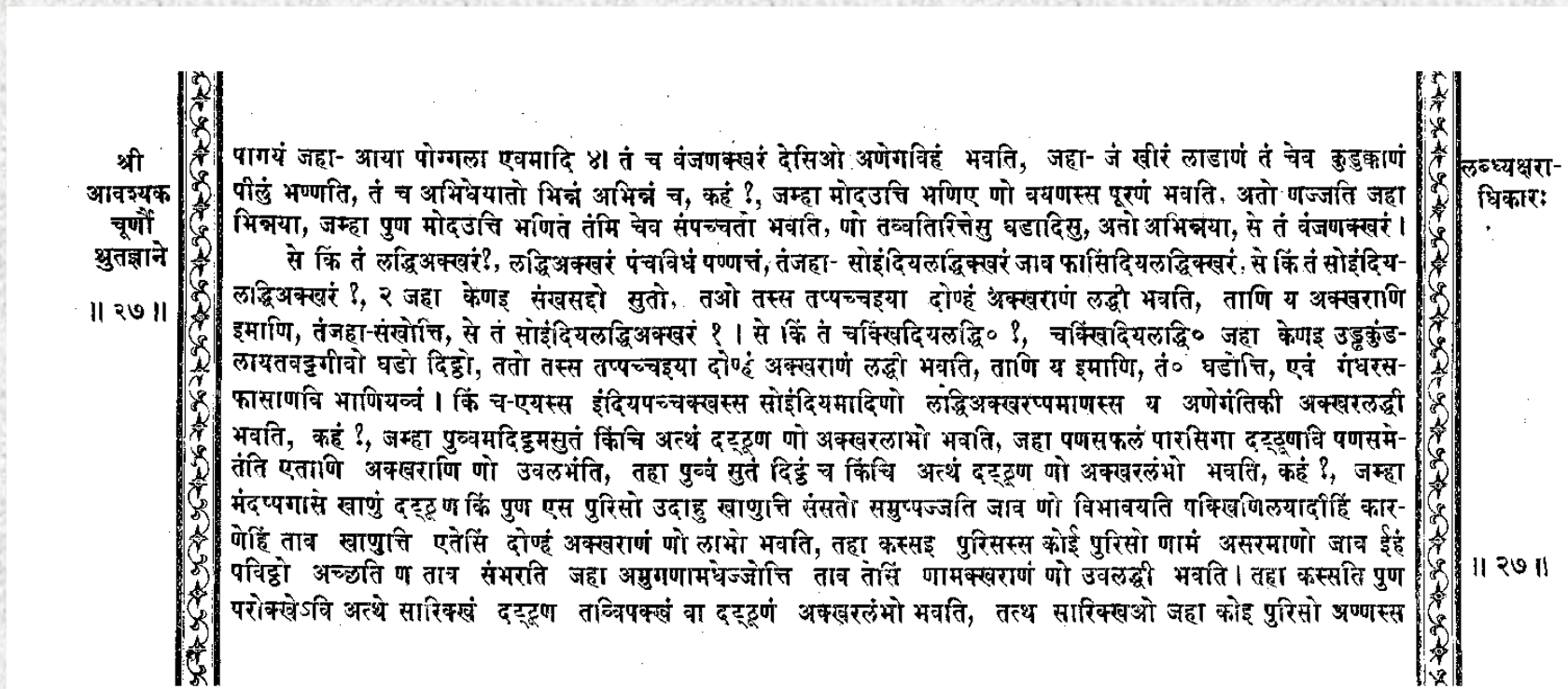
॥ २५ ॥

'श्रुत'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

देवत्तादिणा विगमो, जीवत्तेण अवट्ठिती चेव, तहा अजीवदव्वस्सवि दुपदेसितादित्तेण उप्पाओ परमाणुमादित्तेण विगमो पोग्गलत्तेण अवट्ठिती चेव । जो अविणासीभावो तस्स निच्छयतो अक्खरंति सन्ना ।

तं पुण अक्खरं तिविहं, तंजहा- सन्नक्खरं वंजनक्खरं लद्धिअक्खरं च, से किं तं सन्नक्खरं ?, जा अक्खरस्स संठाणागिती, जहा वट्टो ठकारो वज्जागिती वकारो, एवमादि सण्णक्खरं भण्णति ।

वंजणक्खरं णाम जो अक्खरस्स अहिलावो, जेण य अत्था णिव्वंजीयंति, णिव्वंजीयंति णाम विभाविज्जंति फुडीकज्जंतीत्यर्थः, जहा अंधकारे वट्टमाणो घडो पदीवेण णिव्वंजिज्जति, एवं जम्हा अभिहाणेण उच्चारिएण अत्था णिव्वंजीयंति अतो वंजणक्खरं भण्णति, ते य एवं णिव्वंजीयंति जहा गोणित्ति भणिए तीए चेव ककुहणंगुलाविसाणाइगुणजुत्ताए संपच्चओ भवति, ण पुण आसहात्थिमाईसुत्ति । तं च वंजणक्खरं दुविहं- जहत्थाणियतं अजहत्थाणियतं च, तत्थ जहत्थाणियतं जहा दहतीति दहणो तवतीति तवणो एवमाइ, अजहत्थाणियतं णाम जहा अमाइवाहगो माइवाहगो, णो पलं असईति पलासो एवमादी १। तहा वंजणक्खरं अणेणावि पगारेण दुविहं भवति, तंजहा- एगपरिरयं च अणेगपरिरयं च, एगपडिरयंति वा एगपज्जायंति वा एगणामभेदंति वा एगट्ठा, तंजहा-कस्सइ दव्वस्स एगं चेव नामं भवति, णो बितियं, अणेगपरिरयंति वा अणेगपज्जायंति वा अणेगणामभेदंति वा एगट्ठा, तं च जहा कस्सइ दव्वस्स अणेगाइं णामाइं भवंति, जहा घडस्स 'घडकुडकुंभा' हत्थिणो 'हत्थिदंतिकुंजरा' एवमादी २। अहवा तं वंजणक्खरं दुविहं- एगक्खरं अणेगक्खरं, एगक्खरं जहा श्रीः ह्रीः धीः स्त्रीः एवमादि, अणेगक्खरं जहा- 'सहस्सक्खो ईसाणोत्ति'एवमादि ३ । अहवा तं वंजणक्खरं दुविहं- सक्कयं पागयं च, सक्कयं जहा- आत्मा पुद्गलः एवमादि,



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ २७ ॥

पागयं जहा- आया पोग्गला एवमादि ४। तं च वंजणक्खरं देसिओ अणेगविहं भवति, जहा- जं खीरं लाडाणं तं चेव कुडुक्काणं पीलुं भण्णति, तं च अभिन्नेयातो भिन्नं अभिन्नं च, कहं ?, जम्हा मोदउत्ति भणिए णो वयणस्स पूरणं भवति, अतो णज्जति जहा भिन्नया, जम्हा पुण मोदउत्ति भणिते तंमि चेव संपच्चतो भवति, णो तव्वतिरित्तेसु घडादिसु, अतो अभिन्नया, से तं वंजणक्खरं।

से किं तं लद्धिअक्खरं?, लद्धिअक्खरं पंचविधं पण्णत्तं, तंजहा- सोइंदियलद्धिक्खरं जाव फासिंदियलद्धिक्खरं. से किं तं सोइंदियलद्धिअक्खरं ?, २ जहा केणइ संखसद्दो सुतो, तओ तस्स तप्पच्चइया दोण्हं अक्खराणं लद्धी भवति, ताणि य अक्खराणि इमाणि, तंजहा-संखोत्ति, से तं सोइंदियलद्धिअक्खरं १। से किं तं चक्खिंदियलद्धि० ?, चक्खिंदियलद्धि० जहा केणइ उड्डकुंडलायतवट्टगीवो घडो दिट्ठो, ततो तस्स तप्पच्चइया दोण्हं अक्खराणं लद्धी भवति, ताणि य इमाणि, तं० घडोत्ति, एवं गंधरसफासाणवि भाणियव्वं। किं च-एयस्स इंदियपच्चक्खस्स सोइंदियमादिणो लद्धिअक्खरप्पमाणस्स य अणेगंतिकी अक्खरलद्धी भवति, कहं ?, जम्हा पुव्वमदिट्ठमसुतं किंचि अत्थं दट्ठूण णो अक्खरलाभो भवति, जहा पणसफलं पारसिगा दट्ठूणवि पणसमेतंति एताणि अक्खराणि णो उवलभंति, तहा पुव्वं सुतं दिट्ठं च किंचि अत्थं दट्ठूण णो अक्खरलंभो भवति, कहं ?, जम्हा मंदप्पगासे खाणुं दट्ठूण किं पुण एस पुरिसो उदाहु खाणुत्ति संसतो समुप्पज्जति जाव णो विभावयति पक्खिणिलयादीहिं कारणेहिं ताव खाणुत्ति एतेसिं दोण्हं अक्खराणं णो लाभो भवति, तहा कस्सइ पुरिसस्स कोई पुरिसो णामं असरमाणो जाव ईहं पविट्ठो अच्छति ण ताव संभरति जहा अमुगणामधेज्जोत्ति ताव तेसिं णामक्खराणं णो उवलद्धी भवति। तहा कस्सति पुण परोक्खेऽवि अत्थे सारिक्खं दट्ठूण तव्विपक्खं वा दट्ठूणं अक्खरलंभो भवति, तत्थ सारिक्खओ जहा कोइ पुरिसो अण्णस्स

लब्ध्यक्षराधिकारः

॥ २७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

कस्सई पुरिसस्स अणुसरिसो भवति, ततो तं दट्ठूण अक्खरलंभो भवति, जहा- अहो इमो अमुगणामधेज्जस्स सरिसोत्ति?, तहा विपक्खतो, जहा अहिं दट्ठूण तव्विपक्खस्स णउलस्स णामक्खरोवलंभो भवति, कहं ?, जइ पुण इदाणिं एत्थ णउलो भवेज्जा ततो एयं अहिं खंडाखंडिं करेज्जा, अहिस्स वा णउलो पडिसत्तुत्तिकाऊण कस्सति दयाजुत्तस्स अहिदरिसणाणुसमयमेव णउलक्खरोवलंभो भवति, जहा- अहो एतेसिं अहिणउलाणं अणवराहेऽवि भवपच्चइतो वेराणुभवो बंधोत्ति २। एवं इंदिओवलद्धिं पडुच्च अक्खरलंभो जहा भवति जहा वा ण भवति तहा परूवितंति। एतेण य सोइंदियादिणा पंचविहेण लद्धिअक्खरगहणेण इंदियपच्चक्खप्पमाणं गहियं भवति। एगग्गहणे तज्जातियाण गहणं भवतित्तिकाउं अणुमाणउवम्मआगमावि गहिता चेव भवंति, तत्थ अणुमाणमवि पडुच्च इमेण पगारेण अक्खरोवलंभो भवति, जहा-कोई अत्थो पुव्वोवलद्धो, तम्मि अ काले अदिस्समाणो अणुमाणेण वेप्पति, एत्थ दिट्ठंतो, जहा- धूमं दट्ठूण अपच्चक्खस्स अग्गिस्स अक्खरोवलंभो भवति, जहा- एत्थ एस धूमो एत्थ अग्गिणा भवितव्वं, तहा रत्तं णिद्धं च संझं दट्ठूण वरिसिउकामो अंतरिक्खोत्ति एतेसिं अक्खराणं उवलद्धी भवति, एवमादी अणुमाणिओ अक्खरोवलंभो भवतित्ति। तहा उवम्ममवि पडुच्च अक्खरोवलंभो भवतित्ति, कहं ?, जहा-जारिसो गौः तारिसो गवतोत्ति। तहा आगममवि पडुच्च अक्खरोवलंभो भवति, तत्थ आगमो णाम अत्तवयणं, तंमि भव्वाभव्वदेवकुरुत्तरकुरादीणं भावाणं अक्खरोवलंभो भवति। एवमादि जो य एसो अक्खरोवलंभो इदाणिं चिंतितो एस पायेण सण्णीण जीवाण भवति, णो असण्णीणंत्ति, कथं ?, असण्णिणो पंचेंदिया पासंतावि अत्थे घडपडादिणो णोऽभिजाणंति-किमवि एयंति, तम्हा पायसो एसो लद्धिअक्खरलंभो सण्णीणं भवति, णो असण्णीणंति। सेत्तं लद्धिअक्खरं, तस्स पुण एगमेगस्स अक्खरस्स दुविहा पज्जाया भवंति,

तंजहा- सपज्जाया असपज्जाया य, तत्थ सपज्जायत्ति वा अत्थिभावोत्ति वा विज्जमाणभावोत्ति वा एगट्ठा, असपज्जायत्ति वा णत्थिभावोत्ति वा अविज्जमाणभावोत्ति वा एगट्ठा, तत्थ जे ते सपज्जाया ते दुविहा, तंजहा-संबद्धा असंबद्धा य, जेऽवि ते असपज्जाया तेऽवि दुविहा, तं०-संबद्धा असंबद्धा य, एत्थ णियरिसणं अकारो, अकारस्स जे सपज्जाया ते अत्थित्तेण संबद्धा, णत्थित्तेण असंबद्धा, ते चेव अकारपज्जाया अण्णेसिं अत्थित्तेण असंबद्धा णत्थित्तेणं संबद्धा, तहा जे असपज्जाया अकारस्स ते णत्थित्तेण संबद्धा, अत्थित्तेण असंबध्धा ते चेव अकारस्स असपज्जाया अन्नेसिं अत्थित्तेण संबद्धा, णत्थि० असं० एवं एतेण पगारेण सव्वत्थ सपज्जाया असपज्जाया संबद्धा असंबद्धा य चारेयव्वा। अक्खरग्गहणेण णाणस्स गहणं कतं, णाणं च णेयाओ अव्वतिरित्तं, कहं?, जाव जाणियव्वा भावा ताव णाणं, अतो एतेसिं णाणणेयाणं परिमाणं इमं भण्णति, तंजहा–सव्वागासपदेसग्गं अणंतगुणितं पज्जवग्गं अक्खरं लब्भति, तत्थ सव्वसद्दो णिरवसेसिए अत्थे वट्टइ, आगासं पसिद्धं चेव, तस्स जं पएसग्गं, अग्गंति वा परिमाणंति वा पमाणंति वा एगट्ठा, तेण चेव सव्वागासपदेसग्गेण अणंतगुणितं पज्जवग्गं अक्खरं लब्भति, पज्जायाणं च एगमेगस्स आगासपदेसस्स जावइया अगुरुलहुपज्जाया तेसिं संपिंडियाणं जं अग्गं एतं परिमाणं अक्खरस्सत्ति, णाणपमाणंति वुत्तं भवति ।

इयाणिं एतेसिं अगुरुलहुदव्वाणं परूवणा भण्णति, गुरुलहुदव्वाणि य पडुच्च अगुरुलहू भवंति अतो पुव्विं तेसिं परूवणं काहामो, यच्छा अगुरुलहुदव्वाणंति, णिच्छयणयस्स णत्थि सव्वगुरुं दव्वं, णावि सव्वलहुं, ववहारणयादेसेण पुण बायरखंधेसु सव्वेसु दोऽवि अत्थि, जहा सव्वगुरू कोडियसिला, सव्वलहु मूलगपत्तं तूलं वा, आह-केसु खंधेसु बादरसन्ना लब्भतित्ति?, उच्यते, परमाणुतो आढत्तं जाव अणंतपदेसितो खंधो एते सुहुमा खंधा भण्णंति, अगुरुलहुपज्जाया य णिच्छयतो एतेसिं भवंति, जे णो गुरू णो

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

लहुगा ते अगुरुलहुपज्जाया भण्णंति, जे पुण सुहुमातो अणंतपदेसितातो आरब्भ अणंताणंतपदेसिया खंधा तेसिं जे पज्जाया ते गुरुया लहुया य णिच्छयतो णातव्वत्ति, जे य गुरुदव्वाणं गुरुलहुयपज्जाया जे य अगुरुलहू ते बुद्धीए पिंडेतुं तेण चेव रासिणा जाहे अणंते वारे गुणिया भवंति ताहे एगस्स अमुत्तदव्वस्स अगुरुलहुपज्जवेहिं समा न भवंति, एत्थ सीसो चोदेति-एवं केवइएहिं मुत्तदव्वाणं पिंडियपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगुरुलहुयपज्जाया अणंतगुणा भवंति ?, आयरिओ आह- बहुयावि अणंतएण गुणेज्जमाणे णत्थि परिमाणंति, तम्हा एतेण कारणेण अमुत्तदव्वस्स अगुरुलहुपज्जाया अणंता भवंति, जावइया य अमुत्तदव्वस्स अगुरुलहुपज्जाया एवइयं पमाणं अक्खरस्सत्ति ॥ एयस्स य अक्खरस्स सव्वजीवाणं अणंतभागोऽवि णिच्चुग्घाडियतो, कहं ?, अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं सव्वविसुद्धं सुतणाणं, तयणंतरं असंखेज्जगुणपरिहीणं उवरिमगेवेज्जगाणं, एवं च जाव पुढविकाइयाणं ताव असंखेज्जगुणपरिहीणा सेढी, जइ य तेसिं तंपि थोवगं आवरियं होंतं ततो तेसिं अजीवभावतो होंतो, जं च तेसिं तं थोवगं णावरितं से अणंततमो भागो अक्खरस्स णातव्वोत्ति । एत्थ दिट्ठंतो रविपहा, जहा-सुट्ठुवि मेहच्छण्णं गहं तहावि रविणो पभा अत्थि चेव, एवं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अणंतेहिं अविभागपलिच्छेदेहिं जतिवि एक्कक्को जीवपदेसो आवेढितो परिवेढितो भवति तहावि णाणभावो अत्थि चेव पुढविकाइयादीणंति । अक्खरसुतं गतं, इयाणिं अणक्खरसुतं भण्णति, तंजहा

ऊससितं० ॥२०॥ उस्ससियादीणि सिंघितावसाणाणि कंठाणि, अणुस्सारं णाम पम्हुट्ठे अत्थे सतं वा संभरिते अण्णेण वा संभारिते जं अक्खरविरहितं सद्दकरणं तमणुस्सारं भण्णइ, छोलितं णाम सिंटी, आदिग्गहणेण य पुप्फसिकिडिकारजड्डिमुड्डिप्पहारसद्दादिणोऽवि भेदा गहिता भवंति, से तं अणक्खरसुयं २। इयाणिं सण्णिसुयं भण्णति, सण्णि णाम जो संजाणाति, ईहापोहादि-

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३१ ॥

गुणजुत्तोत्ति वुत्तं भवति, तस्स जं सुतं तं सण्णिसुयं भण्णति, तं च तिविहं, तंजहा-कालिओवएसेण हेतुवाओवदेसेण दिट्ठिवाओवएसेणंति, तत्थ कालिओवदेसो णाम जो सब्भावो कालणियमेण पढिज्जति सो कालिओ भण्णति, तस्स उवएसो कालिओवएसो, तेण जस्स अत्थि ईहा वूहा मग्गणा य गवेसणा सो कालिओवदेसेण सण्णी भण्णति, सो पुण सण्णी सद्दं सोऊण तस्स अत्थं ईहितुकामो अणंतपदेसिए खंधे मणपाउग्गे अणंते कायजोगेण घेत्तुं मणयति, तत्तो तस्स सण्णिणो जहा चक्खुसामत्थजुत्तस्स पुरिसस्स पगाससंजुत्ते रूवे उवलद्धी भवति एवं तस्सवि सोइंदियादीहिं पंचहि मणेण य जुत्तस्स सद्दं सोऊणं अत्थोवलद्धी भवति, से तं कालिओवदेसेणं सण्णिसुतं भण्णति १। इयाणिं हेउगोवएसेणं भण्णति-तत्थ हेउगोवएसोत्ति वा कारणोवएसोत्ति वा पगरणोवएसोत्ति वा एगट्ठा, सो य हेउगोवएसो गोविंदणिज्जुत्तिमादितो, तंमि भणितं-जस्स अहिसंधारणपुव्विगा करणसत्ती अत्थि सो सन्नी लब्भति, अभिसंधारणपुव्विया णाम मणसा पुव्वापरं संचिंतिऊण जा पवित्ती निवत्ती वा सा अभिसंधारणपुव्विगा करणसत्ती भण्णति, सा य जेसिं अत्थि ते जीवा जं सद्दं सोऊण बुज्झंति तं हेउगोवएसेण सण्णिसुयं भण्णति २। इयाणिं दिट्ठिवाइगोवदेसेणं सण्णिसुयं भण्णइ-तत्थ दिट्ठिवाओ चोद्दस पुव्वाणि तस्स उवदेसो २ तेण जेहिं कम्मेहिं सण्णिभावो आवरितो तेसिं केसिंचि खएण केसिंचि उवसमेणं सण्णिभावो लब्भति, सो य सण्णी जं सद्दं सुणेति सुणित्ता य पुव्वावरं बुज्झति तं दिट्ठिवाइओवदेसेण सण्णिसुयं भण्णति, सेत्तं सण्णिसुतं ३।

इयाणिं कालियहेतुदिट्ठिवाइओवदेसेण चेव असण्णिसुयं भण्णइ, तत्थ कालिओवएसेणं जम्हा जस्स णत्थि ईहा वूहा मग्गणा गवेसणा सो असन्नी भवति, तस्स य सद्दं सोऊण अव्वत्ता अत्थोवलद्धी भवति, कहं ?, जहा पित्तमुच्छिकतस्स मज्जाईहिं वा

संज्ञ्यसंज्ञि-श्रुतं

॥ ३१ ॥

दव्वेहिं मत्तस्स ईसिं वा सइयंस्स सद्दं सोऊण अव्वत्ता अत्थोवलद्धी भवति, जहा य से सद्दे विसओवलद्धी अव्वत्ता तहा रूवगंधरसफासाणवि जा अत्थोवलद्धी सावि अव्वत्ता चेव भवति, सेत्तं कालिओवएसेण असन्निसुयं। इयाणिं हेउगोव० जस्स णं अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती णत्थि से असन्नी भवति, सो य तीए तहाविहाए सत्तीए अभावेण जं सद्दादिअत्थं उवलभति तं अव्वत्तं उवलभति, सेत्तं हेउगोवएसेणं असन्निसुयं। इयाणिं दिट्ठिवाइतोवएसेण असन्नीसुयं भण्णति, तंजहा-अत्थि ते असण्णिणो बेइंदियाई जेसिं असण्णिसुतावरणकम्मोदएण सोयव्वलद्धी चेव णत्थि, केसिंचि पुण असण्णिणं पंचेंदियाणं सोइंदियावरणस्स कम्मस्स खओवसमेण असण्णिसुयलद्धी भवति, तेसिंपि जा सद्दादिसु अत्थेसु उवलभियव्वएसु लद्धी साऽवि अव्वत्ता चेव, सेतं दिट्ठिवाइगोवदेसेणं असण्णिसुयं भण्णति। एयं च असण्णिसुतं असण्णिपंचिंदियं पडुच्च एव भणियं, एगिंदियबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण य मइसुयाणि अण्णोऽण्णाणुगयाणित्तिकाउं तेसिंपि तिविहेणवि कालिगहेउगदिट्ठिवादिओवदेसेण असण्णिसुयं अत्थि चेव, एत्थ सीसो आह- एतेसिं पुण सण्णिसुयअसण्णिसुयाणं तुल्लेऽवि जीवभावत्ते को पतिविसेसो ?, आयरिओ आह- जहा तुल्ले लोहभावे जा तिण्हया चक्करयणस्स, तओ बहुगुणपरिहीणा पिंडलोहसत्थस्स, तओ परिहीणतरा अपिंडलोहसत्थस्स, एवं जा सण्णीणं इंदिओवलद्धी सा बहुगुणपरिहीणा असन्निपंचिंदियाणं, ततो बहुगुणपरिहीणा जहाणुक्कमेण चतुरिंदियतेइंदियबेइंदियएगेंदियाणंति। सेतं असण्णिसुतं।

अण्णे पुण सामण्णेण जस्स णं ईहापोहमग्गणगवेसणा अत्थि से सण्णी लब्भइ, जस्स णत्थि से असण्णी, से तं कालिओवएसेणं, जस्स णं अभिसंधारणपुव्विका करणसत्ती से सण्णी लब्भइ, जस्स णत्थि सो असण्णी, से तं हेतु०, सण्णिसुयस्स खओवसमेण

सण्णी, असण्णिसुयस्स खओवसमेण असण्णी, सेतं दिट्ठिवाईओवदेसेणं, सेतं सण्णिसुतं, सेतं असण्णिसुतं ४ ।

इदाणिं सम्मसुतं, जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं आयाराइ दुवालसंगं गणिपिडगं परूवितं एतं सम्मदिट्ठिपरिग्गहितं सम्मसुतं, मिच्छदिट्ठिपरिग्गहियं पुण मिच्छसुयं भवइ, सेत्तं सम्मसुतं ५ । से किं तं मिच्छसुतं?, मिच्छसुयं जं इमं अन्नाणिएहिं मिच्छदिट्ठीहिं सच्छन्दपरिकप्पियं, तंजहा-भारहं रामायणं एवमादि मिच्छदिट्ठीपरिग्गहियं मिच्छसुयं भण्णति, एयं चेव सम्मदिट्ठीपरिग्गहियं सम्मसुतं भण्णति, सेत्तं मिच्छसुयं ६ । इयाणिं सादियं अणादीयं सपज्जवसियं अपज्जवसियं च एते चत्तारिवि दारा समगं चेव भण्णन्ति, तंजहा-इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं वोच्छित्तिणयट्ठयाए सादीयं सपज्जवसितं, अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अणाईयं अपज्जवसियं, अभवसिद्धियस्स सुतं अणादीयं अपज्जवसियं, भवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं सपज्जवसियंति । अण्णे तं समासओ चउव्विहं, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावतो, दव्वतो एगं पुरिसं पडुच्च साईयं सपज्जवसितं, कहं?, जम्हा पंचहिं ठाणेहिं सुतं सिक्खिज्जा० (जहा नंदीए, एगं) पुरिसं पडुच्च सुयणाणं सादीयं सपज्जवसियं भवति, आह-तुब्भेहिं भणियं, जहा-देवलोगं गयस्स सुयणाणं परिवडइ, तो कहं इमो आलावगो एवं पढिज्जति?, जहा 'इहभविए भंते! णाणे पारभविए नाणे तदुभयभविए नाणे?, गोयमा! इहभविएऽवि नाणे परभविएऽवि णाणे तदुभयभविएऽवि णाणि'त्ति, उच्यते, एगणयादेसेण एस आलावगो एवं पढिज्जति, कहं परभवियं तदुभयभवियं (वा)णाणं णियमा भवति?, ण पुण जो णाणमहिज्जते तस्स सव्वस्स चेव एवं भवति, कम्हा?, जम्हा चोद्दसपुव्वी देवलोगं गओ णियमा तं सव्वं सुयण्णाणं णिरवसेसं ण संभरति, जो पुण एगंगवी जाव भिण्णदसपुव्वी सो सव्वं णिरवसेसं संभरेज्ज वा ण वा, तम्हा सिद्धं इहभविए णाणे परभविए णाणे तदुभयभविए णाणेत्ति । बहवे पुण पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं, संताणधम्मेण

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

भवतित्ति, खेत्तओ पंच भरहाइं पंच एरवयाइं पडुच्च साईयं सपज्जवसियं, पंच विदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसितं, कालोत्ति छव्विहं उस्सप्पिणिं छव्विहं ओसप्पिणिं पडुच्च सादीयं सपज्जवसितं, णोउस्सप्पिणिअवसप्पिणिं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसितं, भावओ पण्णवगं पडुच्च पण्णवणिज्जा य भावा पडुच्च साद्दीयं सपज्जवसितं, कहं ?, जओ उवउत्तो पण्णवेति अणुवउत्तो पण्णवेति, तहा उदत्तेण सरेण पण्णवेतुं अणुदत्तेण पण्णवेति, तहा आयरेण पण्णवेतुं अणादरेण पण्णवेति, तहा निच्चलो पण्णवेउं आउंटणपसारणादीणि कुव्वंतो पण्णवेति, एवमादिसु कारणेसु पण्णवगं पडुच्च भावओ सादीयं सपज्जवसियं सुयणाणं भवति। इयाणिं पण्णवणिज्जा भावा पडुच्च जहा तहा भण्णति–गतिपरिणयं दव्वं पण्णवितुं ठाणपरिणयं पण्णवेति, अतो सादीतं सपज्जवसितं भवति, तथा दुपएसितं खंधभेदं पण्णवेऊण तिपएसियं पण्णवेति, एवमादिभेदं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, तहा दो परमाणू संहता दुपदेसितो गंधपरि० वण्ण० खंधो भवति, एवं पण्णवेतुं तिपदेसितं एवमादि संघायं पडुच्च सादीसपज्जवसियं, तहा दव्वाणं वण्णपरिणामं पण्णवेऊण० एवमादी पण्णवणिज्जा भावा पडुच्च सादिसपज्जवसियं। जम्हा खओवसमिते भावे णिच्चं वट्टइ सुयणाणं, बद्धा य अत्था जम्हा दव्वट्ठयाए णिच्चा अतो सुयणाणं भावतो अणादीयं अपज्जवसियं च भवति। गताणि चत्तारिवि दाराणि७-८-९-१०

इयाणिं गमियं अगमियं च दोऽवि दारा समं भण्णंति, तत्थ गमियं णाम जं भंगजुत्तं गणितगमियं वा, जं वा कारणवसेण सरिसगमं भवति, तत्थ भंगगमियं एगदुगतिगचउभंगमादी, गणियगमितं णाम जहा एक्कजीवाधणुपडुकरणेण अण्णाणिवि जीवाधणुपट्ठाणि गणिज्जंति, सरिसगमं णाम जहा- कोहस्स उदयनिरोहो कायव्वो उदयपत्तस्स विफलीकरणं कायव्वंति तहा माणमायालोभाणवि, एवमादि ११। अगमितं विवरीयं १२।

॥ ३४ ॥

	गमिक-अगमिक श्रुतस्य स्वरुपम्

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

इयाणिं अंगपविट्ठं बाहिरं च दोण्णिऽवि भण्णंति, अंगपविट्ठं आयारो जाव दिट्ठिवाओ, अणंगपविट्ठं आवस्सगं तव्वतिरित्तं च, आवस्सगं सामादियमादी पच्चक्खाणपज्जवसाणं, वतिरित्तं कालियं उक्कालियं च, तत्थ उक्कालियं अणेगविहं, तंजहा- दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं एवमादि, कालियंपि अणेगविहं, तंजहा-उत्तरज्झयणाणि एवमादि १३-१४ ॥ एत्थ सीसो आह जहा दिट्ठिवाए सव्वं चेव वयोगतमत्थि तओ तस्स चेव एगस्स परूवणं जुज्जति, आयरिओ आह- जतिवि एवं तहावि दुम्मेहअप्पाउयइत्थियादीणि य कारणाणि पप्प सेसस्स परूवणा कीरतित्ति, तत्थ बहवे दुम्मेधा असत्ता दिट्ठिवायं अहिज्जिउं अप्पाउयाण य आउयं ण पहुप्पति, इत्थियाओ पुण पाएण तुच्छाओ गारवबहुलाओ चलिंदियाओ दुब्बलधिईओ, अतो एयासिं जे अतिसेसज्झयणा अरुणोववायणिसीहमाइणो दिट्ठिवातो य ते ण दिज्जंति, तत्थ तुच्छा नाम पुव्वावरओ वक्खाणे असमत्था, गारवबहुला णाम गव्वमन्तीउत्ति, चलिंदियाओ णाम इंदियविसयणिग्गहे भूयावादं पप्प असमत्थाओ, दुब्बलधितीओ णाम चलचित्ताओ इति मा तं सुयणाणलद्धीं उवजीविस्संति, अतो तासिं अतिसेसज्झयणाणि वारिज्जंतित्ति। गतं अंगबाहिरं, सम्मत्तं च चोद्दसविधणिक्खेवं सुयणाणं ॥

एतंपि संतपदपरूवणाईहिं दारेहिं अविसेसमणाणत्तं जहा आभिणिबोहियणाणं भणितं तहा भाणियव्वं। तं च समासओ चउव्विहं, तंजहा- दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्तो सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, एवं खेत्तओ सव्वखेत्तं जाणति पासति, एवं कालभावावि भाणियव्वा। केति पुण पढंति- दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं सुयणाणी जाणति न पासति, एत्थ सीसो आह-सुट्ठु जे एवं पढंति, आयरिओ आह-कहं?, सीसो आह-जं पच्चक्खग्गहणं ण एंति सुयणाणसंसिया अत्था। तम्हा दंसणसद्दो ण होति सकलेऽवि सुयणाणे ॥ १ ॥ आयरिओ आह-जे जाणति पासतित्ति एवं पढंति ते इमं

अंगप्रविष्ट एवं अंगबाह्य श्रुत

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३६ ॥

कारणं पडुच्च, जम्हा सुयणाणी दीवसमुद्दाणं देवकुरूत्तरकुरादीणं च भावाणं संठाणादीणि जाणंतो पासंतो इव आलिहिऊणं दरिसेति अतो जाणति पासतिचि एस आलावगो न विरुज्झइ ॥ इयाणिं इमस्स सुतणाणस्स इमो गहणोवाओ भण्णति—

आगमसत्थग्गहणं० ॥ २१ ॥ आह- आगमग्गहणेण चेव सत्थग्गहणं गतं, किं पिहुग्गहणं?, उच्यते, णज्जंति अत्था जेण सो आगमो, ते य पंचविहेणऽवि णज्जंति, अतो सुयणाणवज्जाणं चउण्हं निवारणत्थं सत्थग्गहणं कीरति, अहवा सुयणाणस्स चेव पज्जायभेदपदरिसणत्थं सत्थग्गहणं, तस्स आगमसत्थस्स जं गहणं भवति तं अट्ठहिं बुद्धिगुणेहिं जुत्तस्स सीसस्स भवति, ण पुण एतद्विरहियस्स, एवं तित्थयरेहिं दिट्ठंति ॥ आह- कस्सेसो आदेसो जहा एतं एवं ?, आयरिओ आह- तं पुव्वविसारया धीरा. भिराइगुणजुत्ता आयरिया एतेण पमाणेण सुतणाणस्स लंभं वेंतिचि । ते अट्ठ बुद्धिगुणा इमे—

सुस्सूसति पडिपुच्छति० ॥२२॥ सुस्सूसति णाम सोतुमिच्छति, आयरियस्स विणयं पउंजति, विणओववेयस्स आयरिओ सविसेसं सुयं उवदिसति, अतो सुस्सूसा सुयणाणग्गहणस्स उवग्गहे वट्टइ, तहा पडिपुच्छाइणोऽवि सुयणाणस्स उवग्गहे चेव वट्टंति । पडिपुच्छाणाम संकियस्स वीसरियस्स वा जा पुणो पुणो पुच्छणा, सुणेति णाम णिसामेति, गेण्हति अवधारयति, ईहति- मग्गति, सुत्तत्थपदं गवेसतिचि वुत्तं, अपोहए णाम एवमेतं ण अन्नहा इति निच्छितं करेति, धारेति परियट्टणुप्पेहाहिं, ण णासेति, करेति सुत्तोवदेसे सम्ममायरतिचि ।

एवमेतं, सुयणाणं सम्मत्तं, सम्मत्तं च दुविहमवि परोक्खं । इयाणिं तिप्पगारं पच्चक्खं भण्णइ, तत्थ पढमं ताव ओहिणाणं भण्णति, तस्स य पयडिभेयपयरिसणत्थं इमं गाहासुत्तं—

बुद्धिगुणाः

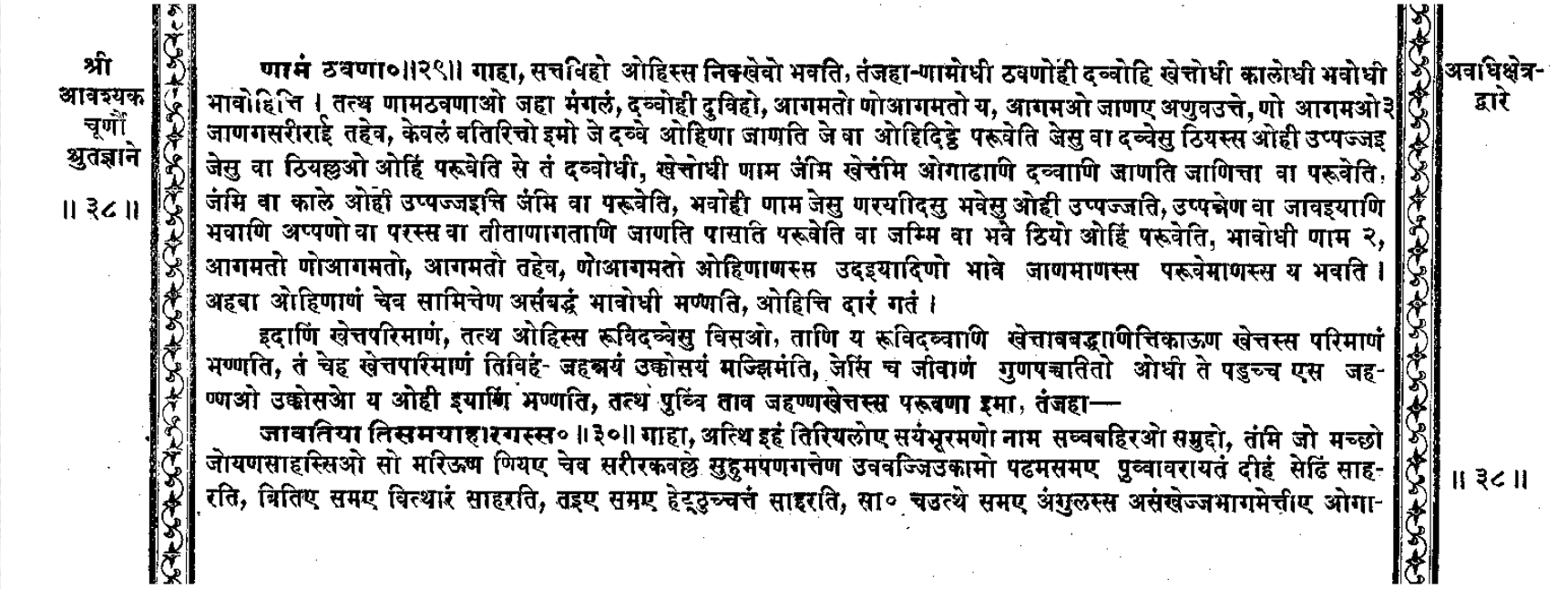
॥ ३६ ॥

'ओहि'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

['इक: प्राक् वृत्तौ 'मूअं' तिगाथा 'सुत्तत्थो' गाथा च वर्त्तेते] संखाइयातो खलु० ॥ २५ ॥ तत्थ संखा गणणा तं संखं अतीयाओ २, (ओहारणे) खलुसद्दो, जहा निरुवियत्थो ओहिसद्दो मज्जायाए वट्टति, जओ मज्जायत्ति वा ओहित्ति वा मेरत्ति वा एगट्ठा, सा य मज्जाया इमा-जाणि रूविदव्वाणि तेसु जम्हा ओहिणाणस्स विसओ, ण पुण अमुत्तदव्वेसु धम्मत्थिकायादिसु, णाणसद्दो परिपट्ठो, ओहिए णाणं २, सव्वसद्दो निरवसेसिए अत्थे वट्टति, पगडीओत्ति वा पज्जायत्ति वा भेदत्ति वा एगट्ठा, एयाओ यें काई भवपच्चइयाओ काओ य खाओवसमियाओ, तत्थ भवपच्चइयाओ देवाणं णेरइयाण य, कहं ?, जहा पक्खीणं विज्जादिसयादिकारणविरहियाणवि भवपच्चएण चेव आगासगमणलद्धी भवति, एवं देवणेरइयाणं भवपच्चइया ओहिणाणलद्धी भवति, मणुस्सपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुण खओवसमिया ॥ एयाओ असमत्थो वित्थरतो वण्णेउंति काउं इमं गाहासुत्तं भण्णइ—

कत्तो मे वण्णेउं० ॥ २६ ॥ गाहापुव्वद्धं गतं । किं पुण ?, संखेवेण जहा चोद्दसविहं सुयणाणं परूवियं तहा ओहिणाणमवि चोद्दसविहनिक्खेवं चेव भणिहामि, तप्पसंगेण य इड्ढीपत्ते य भणिहामित्ति, ते य ओहिस्स चोद्दसऽवि भेदा इड्ढीपत्ताणुओगो य इमाहिं दोहिं गाहाहिं संगहिता, तंजहा—

ओही खेत्त परिमाणे०॥२७॥ गाहा । णाण दंसणविब्भंगे०॥२८॥ गाहा,तत्थ ओहित्ति पढमा पडिवत्ती,बीया खेत्तपरिमाणं, तइया संठाणे, चउत्थी आणुगामिए, पंचमी अवट्ठिए, छट्ठी चले, सत्तमा तिव्वमंदे, अट्ठमा पडियाओप्पाया, णवमा णाणे, दसमा दंसणे, एक्कारसमा विभंगे, बारसमा देसे, तेरसमा खेत्ते, चोद्दसमा गतीएत्ति । इड्ढिपत्ताणुओगे य तप्पसंगेण पण्णरसमा पडिवत्ती भवति, पडिवत्ती णाम भेदो पगारोत्ति वुत्तं । तत्थ पढमाए पडिवत्तीए परूवणत्थं इमं गाहासुत्तं—



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३८ ॥

णामं ठवणा०॥२९॥ गाहा, सत्तविहो ओहिस्स निक्खेवो भवति, तंजहा-णामोधी ठवणोधी दव्वोधि खेत्तोधी कालोधी भवोधी भावोधिचि । तत्थ णामठवणाओ जहा मंगलं, दव्वोही दुविहो, आगमतो णोआगमतो य, आगमओ जाणए अणुवउत्ते, णो आगमओ३ जाणगसरीराई तहेव, केवलं वतिरित्तो इमो जे दव्वे ओहिणा जाणति जे वा ओहिदिट्ठे परूवेति जेसु वा दव्वेसु ठियस्स ओही उप्पज्जइ जेसु वा ठियल्लओ ओहिं परूवेति से तं दव्वोधी, खेत्तोधी णाम जंमि खेत्तंमि ओगाढाणि दव्वाणि जाणति जाणित्ता वा परूवेति, जंमि वा काले ओही उप्पज्जइत्ति जंमि वा परूवेति, भवोही णाम जेसु णरयादिसु भवेसु ओही उप्पज्जति, उप्पन्नेण वा जावइयाणि भवाणि अप्पणो वा परस्स वा तीताणागताणि जाणति पासति परूवेति वा जम्मि वा भवे ठियो ओहिं परूवेति, भावोधी णाम २, आगमतो णोआगमतो, आगमतो तहेव, णोआगमतो ओहिणाणस्स उदइयादिणो भावे जाणमाणस्स परूवेमाणस्स य भवति । अहवा ओहिणाणं चेव सामित्तेण असंबद्धं भावोधी भण्णति, ओहित्ति दारं गतं ।

इदाणिं खेत्तपरिमाणं, तत्थ ओहिस्स रूविदव्वेसु विसओ, ताणि य रूविदव्वाणि खेत्तावबद्धाणित्तिकाऊण खेत्तस्स परिमाणं भण्णति, तं चेह खेत्तपरिमाणं तिविहं- जहन्नयं उक्कोसयं मज्झिमंति, जेसिं च जीवाणं गुणपच्चातितो ओधी ते पडुच्च एस जहण्णओ उक्कोसओ य ओही इयाणिं भण्णति, तत्थ पुव्विं ताव जहण्णखेत्तस्स परूवणा इमा, तंजहा—

जावतिया तिसमयाहारगस्स० ॥३०॥ गाहा, अत्थि इहं तिरियलोए सयंभूरमणो नाम सव्वबहिरओ समुद्दो, तंमि जो मच्छो जोयणसाहस्सिओ सो मरिऊण णियए चेव सरीरकवल्ले सुहुमपणगत्तेण उववज्जिउकामो पढमसमए पुव्वावरायतं दीहं सेढिं साहरति, बितिए समए वित्थारं साहरति, तइए समए हेट्ठुच्चत्तं साहरति, सा० चउत्थे समए अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तीए ओगा-

अवधिक्षेत्र-द्वारे

॥ ३८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३९ ॥

हणाए अप्पणो देहकवल्ले सुहुमपणगजीवत्ताए उववन्नो, तस्स णं पढमबितियततियसमये आधारयस्स जावइए खेत्ते सा सरीरोगाहणा एवइए खेत्ते रूविदव्वाणि ओगाढाणि जहण्णेण ओहीनाणी जाणति पासति । जहण्णयं खेत्तपरिमाणयं गयं ।

इदाणिं उक्कोसं भण्णति-सव्वबहुअगणिजीवा० ॥३१॥ जया पंचसु भरहेसु पंचसु एरवयएसु उत्तमकट्ठपत्ता मणुगा भवंति तदा सव्वबहुअगणिजीवा णायव्वा, जेण तत्थ लोगबाहुल्लयाए पयणादीणिवि चेव बहूणि भवति, आह- कया पुण अतीव उत्तमकट्ठपत्ता मणुया आसि ?, उच्यते, जया अजियसामी आसि तदा मिहुणधम्मभेदगुणेण चिरजीवियत्तणेण य बहुपुत्तणत्तुका मणुया जाया, अतो अजियसामिकाले उत्तमकट्ठपत्ता मणुया आसित्ति, एत्थ सीसो आह- ते सव्वे अग्गिजीवा बुद्धीए रासिं काऊण एक्केके आगासपदेसे एक्केकं अगणिजीवं ठवेऊण रुयगसंठियं खित्तं कीरइ, एवं ठविज्जंते सव्वदिसागं रुयगं पूरित्ता अलोए असंखेज्जाणि जोयणाणि सो रुयतो पविट्ठो, एवतियं खेत्तं उक्कोसे आहिणाणस्स विसओ भवतित्ति ?, आयरिओ आह- अतिथोवं एयं, अवि य-अवसिद्धंतदोसो य एत्थ, कहं ?, जेण एक्कंमि आगासपदेसे ण चेव जीवस्स अवगाहणा भवति, णियमा असंखेज्जेसु आगासपदेसेसु जीवो ओगाहतित्ति । एत्थ पुणोऽवि सीसो आह— जति एवं ततो ते अगणिजीवा सगाए असंखेज्जपदेसिआए ओगाहणाए रुयओ कीरउ सो पुणोऽवि य लोयं पूरित्ता असंखेज्जाणि जोयणाणि अलोए पविट्ठो, एवइयं खेत्तं परमोही जाणइ पासइ ?, आयरिओ आह- जातिवि एत्थ अवसिद्धन्तो णत्थि तहावि अतत्थोवएसो भवति चेव, तओ पुणोऽवि सीसो आह- तो खाइं एगपदेसितं पतरं रज्जति उड्ढअहदिसिवज्जं तं जहा पतरं लोगं पूरित्ता असंखेज्जाणि जोयणाणि अलोए पविट्ठं, एवतियं खेत्तं परमोही जाणइ पासइ ?, आयरिओ भणइ- एवमवि अतिथोवं, अवसिद्धंतो य पुव्वप्पगारेणेव, सीसो पुणो आह- तो ते अगणिजीवा सगाए २

अवधे-रुत्कृष्टं क्षेत्रं

॥ ३९ ॥

असंखेज्जपदेसियाए ओगाहणाए पतरं कीरउ, तं च पतरं लोगं पूरित्ता जाव पविट्ठं एवतियं जाव पासति ?, आयरिओ भणति- एवं अतिथोवं, पुणो सीसो आह- तो खाइ एगादिसिं एगपदेसियाए सेढीए ते सव्वे अगणिजीवा एगमेगे आगासपदेसे एक्केक्कं अगणिजीवं ठावेतेहिं सूई कीरउ जाव सव्वे णिट्ठिया, सा य सूई लोगं वोलेत्ता असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं पविट्ठा, ततो बुद्धीए उड्ढअहतिरियासु सव्वासु दिसासु भमाडिया, एवतियं जाव पासति ?, भण्णति- तहावि अतिथोवं एयं, अवसिद्धंतो य तहेव, पुणोऽवि आह- तो ते सव्वेऽवि अगणिजीवा सगाए असंखेज्जपएसियाए ओगाहणाए एगदिसिं सूई कीरउ जाव सव्वेऽवि ते अगणिजीवा णिट्ठिता, सा य सूई लोगं वोलेत्ता असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं पविट्ठा, ततो उड्ढअहतिरियासु सव्वासु दिसासु भमाडिया, एवतितं खेत्तं परमोही जाणति पासति ?, आयरिओ आह- आमं, एवतियं खेत्तं जाणति पासइ । सो य परमोही अंतोमुहुत्तं भवति, ततो परं केवलनाणं समुप्पज्जति, उक्कोसं ओहिखेत्त परिमाणं गतं । एतेसिं जहण्णुक्कोसाणं जं मज्झे तं मज्झिमं भणितं । तहावि सीससहियट्ठाए विभागं दरिसेति—

अंगुलभावलियाणं० ॥३२॥ जो ओहिनाणी अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तं रूविदव्वाबद्धं खेत्तस्स वित्थारं जाणति पासति दव्वतो जे तत्थ रूविदव्वा ते जाणति पासति, खेत्तं पुण अरूविं ण जाणति ण पासति, सो कालओ आवलिआए असंखेज्जइभागे जावइया समया एवइयं कालं तीयं च अणागयं च जाणति पासति, भावतो जे तेसिं अंगुलस्स असंखेज्जइभागावट्ठियाणं दव्वाणं कालगणीलगाइणो पज्जाया ते जाणति पासति १। जो अंगुलस्स संखेज्जभागमेत्तं रूविदव्वावबद्धं खेत्तस्स वित्थारं जाणइ पासइ सो दव्वओ अंगुलस्स संखेज्जतिभागमेत्ते जावतिया रूविदव्वा ते जाणइ पासइ, कालओ आवलियाएवि संखेज्जइभागे जावतिया

मध्यमावधेः क्षेत्रादयः

॥ ४० ॥

समया एवतियं कालं तीयं च अणागयं च जाणइ पासइ, भावतो तेसिं अंगुलस्स संखेज्जतिभागावट्ठियाणं दव्वाणं कालगणीलगाइणो पज्जाते जाणति पासति २। एवं जो अंगुलं पासति वित्थरतो सो आवलियस्संतो जाणइ पासति, ३। जो अंगुलपुहुत्तं सो आवलियं पुण्णं जाणति पासति दव्वाणि, भावतो य तहेव । तत्थ पुहुत्तसद्दो दोसु आरद्धो जाव णव लब्भंतीत्ति ४। मज्झिमओहिखेत्तपरिमाणे चेव वट्टमाणे इमोवि मज्झिमओ चेव ओही दट्ठव्वो-तंजहा—

हत्थंमि मुहुत्तंतो० ॥ ३३ ॥ जो हत्थवित्थरं खेत्तं पासति सो कालतो अंतोमुहुत्तं तहेव जाणति पासति, दव्वभावावि सव्वत्थ तहेव भाणियव्वा५ जो पुण गाउयं सो दिवसब्भंतरं ६ । जो जोयणं जा०पा० सो दिवसपुहुत्तं ७, जो पणवीसं जोयणाणि सो पक्खंतो ८। किं च- एयंमि चेव अहिगारे इमं गाहासुत्तं- तंजहा—

भरहंमि अद्धमासो० ॥ ३४ ॥ जो भरहप्पमाणमेत्तं रूविदव्वावबद्धं खेत्तस्स वित्थारं जाणति पासति तस्सवि दव्वभावा जहा हत्थस्स, कालपरिमाणं पुण से संपुण्णं अद्धमासं तीतं च अणागयं च कालं जाणति पासति ९। एवं जंबुदीवे साहितो मासो१०, माणुसखेत्ते वरिसं११, जो इतो जाव रुयगवरो दीवो एयप्पमाणमित्तं जाव पासति कालपरिमाणं से वासपुहुत्तं जाव पासइ,१२अण्णे वाससहस्सं भण्णंति । एवं एतेण पगारेण खेत्तदव्वकालभावाणं वुड्ढीए भण्णमाणीए गंथवाहुल्लया भवतित्तिकाऊणं इमं गाहासुत्तमागतं—

संखेज्जंमि उ काले० ॥ ३५ ॥ एत्थ सीसो आह- भगवं ! जो ताव असंखेज्जं कालं तीयं च अणागयं च जाणति पासति सो असंखेज्जे दीवसमुद्दे पासउ, जे पुण संखेज्जा दीवसमुद्दा ते तस्स असंखेज्जकालदंसिणो ण जुज्जंति, आयरियो आह-जो

असंखेज्जकालदंसी संखेज्जजोयणवित्थडे दीवसमुद्दे जाणति पासति सो कोई णियमा असंखेज्जे दीवसमुद्दे जाणति पासति, जो पुण असंखेज्जकालदंसी असंखेज्जजोयणवित्थडे दीवसमुद्दे जाणति पासति सो कोती संखेज्जे दीवसमुद्दे जाणइ पासइ, कहं ?, जहा-सयंभुरमणे ठियस्स कस्सइ तिरियस्स असंखेज्जकालविसइओ ओही उप्पण्णो, ततो सो सयंभुरमणाइणो संखेज्जे दीवसमुद्दे जाणति पासति, तम्हा एतेण कारणेण काले असंखेज्जे दीवसमुद्दा संखेज्जा असंखेज्जा वा भतियव्वत्ति ॥ इयाणिं गुणपच्चइयस्स ओहिणाणस्स उप्पण्णस्स सुभपरिणामोदएण दव्वखेत्तकालभावाणं जहा वुड्ढी भवति तहा भण्णति- तंजहा—

काले चउण्ह वुड्ढि० ॥ ३६ ॥ काले वड्ढमाणे दव्वखेत्तकालभावा चउरोवि णियमा वड्ढंति, खेत्ते पुण वड्ढमाणे दव्वभावा णियमा वड्ढंति, कालो वड्ढति वा ण वा वड्ढति, वुड्ढीए य दव्वपज्जवाणं खेत्तकाला वड्ढंतित्ति, एत्थ पुण केई एवं चोएऊण एवं परिहरंति-जहा किल कोइ सीसो आह-भगवं ! कहं खित्तवुड्ढीए कालो वड्ढति वा न वा वड्ढति ?, दव्वभावाणं च वुड्ढीए कहं खेत्तकाला वड्ढंति वा ण वा वड्ढंतित्ति ?, आयरिओ आह—जया कालो दव्वावबद्धातो खेत्ताओ अण्णो चेव संभाविज्जइ तदा तंमि खेत्ते वड्ढमाणे कालो ण वड्ढति, जया पुण तस्स चेव दव्वावबद्धस्स खेत्तस्स परिणामो कालो संभाविज्जइ तया खेत्ते वड्ढमाणे कालो णियमा वड्ढति, णिच्छयनयस्स पुण ण चेव दव्वावबद्धातो खेत्तातो कालो अण्णो भवति, जच्चेव सा तस्स दव्वावबद्धस्स खेत्तस्स परिणती सो कालो भण्णति, एत्थ दिट्ठंतो रवी, जहा तस्स रविणो गइपरिणयस्स जं पुव्वदिसादरिसणं सो पुव्वण्हकालो भण्णति, तस्सेव गतिपरिणयस्स जं णहमज्झे दरिसणं सो मज्झण्हकालो भण्णति, तस्सेव गतिपरिणयस्स जं पच्चत्थिमेण गमणं सो अवरण्हकालो भन्नइ, अतो निच्छयनयस्स दव्वपरिणामो चेव कालो भन्नति, दव्वपज्जवाणं च वुड्ढीए खेत्तमवि दव्वावबद्धं वित्थारं पडुच्च वड्ढति चेव,

॥ ४२ ॥

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ४३ ॥

जंमि खेत्ते अवगाढा दव्वपज्जाया तं अरूवित्तणेण आगासं न वट्टति, कालोऽवि जया दव्वपज्जवाणं अण्णो चेव संभाविज्जति तया तेसु दव्वपज्जवेसु वट्टंतेसु सो कालो ण वट्टइ, जया पुण दव्वपज्जवाणं चेव परिणामो कालो संभाविज्जति तदा तेसिं वुट्ठीए कालोऽवि वट्टति चेव, अतो दव्वपज्जवाणं वुट्ठीए खेत्तकाला दोऽवि भइयत्ति ।

एत्थ सीसो आह–भगवं ! तेसिं पुण दव्वखेत्तकालभावाणं किं सव्वसुहुमत्ति ?, आयरिओ आह–सट्ठाणं पडुच्च दव्वतो सव्वदव्वाणं परमाणुपोग्गलो सुहुमो, खेत्ततो सट्ठाणं पडुच्च एगो आगासपदेसो सुहुमो, कालतो सट्ठाणं पडुच्च समओ सुहुमो, भावतो सट्ठाणं पडुच्च एगगुणकालतो सुहुमो, परट्ठाणं पडुच्च दव्वातो भावो सुहुमतरागो, कहं ?, जेण परमाणुपोग्गलो अणंतगुणकालओऽवि अत्थि, अतो दव्वेहिन्तो भावो सुहुमयरागो, सुत्तदव्वभावेहिंतो अमुत्तभावत्तणेण कालखेत्ता सुहुमा, कालतो य खेत्तं सुहुमयरागंति, कहं ?,

सुहुमो य होति कालो० ॥ ३७ ॥ कालो ताव अतीव सुहुमो दट्ठव्वो, कहं ?, से जहा णागए तुण्णागदारए तरुणे बलवं णिउणसिप्पोवगयादिगुणजुत्ते पडसाडियं वा पट्टसाडियं वा गहाय सयराहं हत्थमेत्तं ओसारेज्जा, एत्थ सीसो आह–भगवं ! जेण कालेण तेणं तुण्णागदारएण तीसे पडसाडियाए वा पट्टसाडियाए वा हत्थमेत्ते उस्सारिए से समए भवति ?, आयरिओ आह-ण भवति, कहं ?, जम्हा संखेज्जाणं तंतूणं समागमेणं से वत्थे णिप्फण्णे, उवरिल्ले य तंतुंमि अच्छिण्णे हिट्ठिल्ले तंतू ण छिज्जति, अन्नंमि काले उवरिल्ले तंतू छिज्जति, अण्णंमि हेट्ठिल्ले, अतो से समए ण भवति, एत्थ पुणोऽवि सीसो आह—भगवं ! जेणं कालेणं तेण तुण्णाकदारएणं तत्थ वत्थस्स उवरिल्ले तंतू छिण्णे से समए ?, आयरिओ आह—ण भवति, कहं ?, जम्हा संखेज्जाणं

द्रव्यादिषु-सूक्ष्मता-क्रमः

॥ ४३ ॥

पम्हाणं समागमेण स तंतू णिप्फज्जति, उवरिल्ले य पम्हंमि अच्छिण्णंमि हेट्ठिल्ले पम्हे ण छिज्जति, अण्णंमि काले उवरिल्ले पम्हे छिज्जति, अण्णंमि काले हेट्ठिल्ले पम्हे छिज्जति, अतो सेऽवि समए न भवति, एतेणं सुहुमतराए समए पण्णत्ते समणाउसो !, एवं ताव कालो सुहुमो भवति, एयाओ य कालाओ खेत्तं सुहुमतरागं भवति, कहं ?, जेण अंगुलप्पमाणमेत्ते आगासे जावतिया आगासपदेसा ते बुद्धीए समए समए एगमेगं आगासपदेसं गहाय अवहीरमाणा अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीहिं अवहिया भवंति, अतो कालतो खेत्तं सुहुमतरागं भवति । इयाणिं मज्झिमखेत्ताहिगारे चेव वड्ढमाणे उप्पज्जमाणओ ओही जाणि दव्वाणि पढमं पासति जेसु वा दव्वेसु परिवडति ताणि भण्णंति, तंजहा—

तेयाभासादव्वाणमंतरा०॥३८॥ एसा गाथा महत्था दुरहिगमा य अतो आयरितो सीसहियट्ठयाए (ओरालविउव्व०॥३९॥) चउव्विधाओ वग्गणाओ दरिसेति, ताहि य पदरिसियाहिं एतस्स गाहासुत्तस्स अत्थो सुहं घेप्पिहिति, कहं ?, तत्थ दिट्ठंतो कुइयण्णो, जहा कुइयण्णगाहावइस्स अणेगा गोउलाण वग्गा, तेसिं पुण वग्गाण एक्केको वग्गो पिहप्पिहं रक्खगाण दिण्णो, ततो तेसिं एगभूमीए चरंताणं अण्णवग्गमिलणेणं अतिबहुलत्तणेण य गोणीणं ते गोवाला असंजाणंता मम एसा ण एसा तुब्भंति परोप्परओ भंडणं कुव्वंति, तेसिं च भंडणपमाएण ताओ गोणीओ सीहवग्घाईहिं खज्जंति, दुग्गविसमेसु य पडियाओ भज्जंति मरंति य, ततो तेण कुइयण्णेण एतं दोसं णाऊण तेसिं गोवालाणं असंमोहणिमित्तं एगो कालियाणं वग्गो कओ, एगो नीलियाणं, एगो लोहियाणं, एगो सुक्किलियाणं, एगो सबलाणं वग्गो कतो, एवं सिंगाकिडविसेसेऽवि काउं पिहप्पिहं समप्पिया, पच्छा ते गोवा ण संमुच्छं(ज्झं)ति ण वा कलहिंति, विसरिसाओ य पए पागडा जहा हंसमज्झे काओ, एवं आयरिओ सिस्साणुग्गहनिमित्तं इमाओ

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चउव्विहाओ वग्गणाओ दंसेति, तंजहा- दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो, तत्थ दव्वतो इमातो वग्गणातो भवंति, तंजहा- एगा परमाणुपोग्गलाण दव्ववग्गणा, एगा दुपदेसियाणं, एवं जाव दसपएसियाणं, एगा संखेज्जपएसिआणं खंधाणं वग्गणा, एगा असंखेज्जपएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एयाओ दव्ववग्गणाओ। इयाणिं खेत्तवग्गणाओ, तंजहा- एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा दसपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा संखेज्जपएसोगाढाणं वग्गणा, एगा असंखेज्जपदेसोगाढाणं, एयाओ खेत्तवग्गणाओ। इयाणिं कालवग्गणाओ, तंजहा- एगा एगसमयट्ठितीयाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा असंखेज्जसमयठितीताणं पोग्गलाणं वग्गणा, एयाओ कालवग्गणाओ। इयाणिं भावसभेदातो भावववग्गणातो भण्णंति, तंजहा-एगा एगगुणकालाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा अणंतगुणकालाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं नीललोहियहालिद्दसोक्किलावि वण्णा भाणियव्वा, एवं दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा य भाणियव्वा, जाव एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा गरुयलहुयाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा अगुरुलहुयाणं, एवमेयाओ वग्गणाओ, गंधरसफासगरुयलहुयअगरुयलहुयसहियाओ बावीसं वग्गणाओ भवंतीत्ति। एयाओ कालभावाणं वग्गणाओ पसंगेण भणियाओ। एत्थ पुण दव्ववग्गणासु खेत्तवग्गणासु य पाहण्णेण अधिगारो। तासु य दव्ववग्गणासु खेत्तवग्गणासु य पंचण्हं सरीराणं भासाए आणपाणुस्स मणस्स य जाओ अग्गहणपाउग्गाओ वग्गणाओ जाओ य गहणपाओग्गाओ ताओ भण्णंति, तंजहा-एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं वग्गणा, तत्थ जहिं पढमो अणंतसद्दो णिप्फण्णो तमणंतरं एकुत्तरियाए परिवुड्ढीए जाहे अणंते वारे गुणियं भवति ताहे एगा ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाओग्गा दव्ववग्गणा भवति, कहं?, जओ ओरालियसरीरं एत्तोऽवि थूलतरएहिंतो खंधेहिंतो निप्फण्णं,

॥ ४५ ॥

ते य अणंताणंतपदेसिया खंधा तं ओरालियसरीरं पडुच्च थोवतरएहिं परमाणूहिं णिप्फण्णत्ति, अतो ते अणंताणंतपदेसिया खंधा ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, जाहे य ते अणंताणंतपदेसिया खंधा एक्कुत्तरियाए परिवुड्ढीए अणंते वारे गुणिया ताहे ओरालियसरीरस्स एगा गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, किं कारणं ?, जेण तावरूविमेत्तेहिं खंधेहि ओरालियसरीरं णिप्फज्जति, तेहिंतोवि ओरालियसरीरस्स गहणपाउग्गेहिंतो खंधेहिंतो एक्कुत्तरियाए वड्ढीए अणंताओ दव्ववग्गणाओ वोलेउं ताहे एगा ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, किं कारणं?, जम्हा ओरालियसरीरगहणपाउग्गेहिं खंधेहिंतो बहुतरएहिं परमाणूहिं णिप्फण्णा, अओ ओरालियसरीरस्स एगा अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति। ततोऽवि एक्कुत्तरियातो अणंता ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गातो दव्ववग्गणातो गंता ताहे एगा वेउव्वियसरीरस्स अतिसुहुमत्तणेण खंधाणं एगा अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, ताओ वेउव्वियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गाओ दव्ववग्गणाओ एक्कुत्तरियाओ अणंताओ गंता ताहे वेउव्विगसरीरस्स एगा गहणपाओग्गा दव्ववग्गणा भवति, ततोऽवि वेउव्वियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा एक्कुत्तरियाओ अणंताओ गंता ताहे वेउव्वियसरीरस्स अतिथूरत्तणेण खंधाणं एगा अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, वेउव्वियसरीरं च ओरालियसरीरातो जतिवि सुहुमयरागं दीसति तहावि तं बहुतरएहिं परमाणुसंघायनिप्फण्णेहिं खंधेहिं निप्फज्जति, घणणिचियत्तणेण य ताओ ओरालियसरीराओ सिढिलखंधनिप्फण्णातो, तं चिय वेउव्वियसरीरं सुहुमयरागं भवति। एत्थ दिट्ठंतो वइरं, जहा वइरं सकातो पमाणातो अण्णेण त दुगुणपमाणमेत्तेण सिढिलखंधणिप्फण्णेण फुट्टपत्थरादिणा दव्वेण सह तोलिज्जमाणं घणणिचियत्तणेण खंधाणं डहरयंपि दीसमाणं बहुतरायं तुलति, एवं वेउव्वियसरीरं सुहुमतरागंपि दीसमाणं ओरालिय-

॥ ४६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ४७ ॥

सरीरपाउग्गखंधेहिंतो बहुतरएहिं परमाणुसंघायनिप्फण्णेहिं खंधेहिं निप्फज्जातित्ति। ताओ य वेउव्वियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गाओ एकुत्तरियाओ अणंताओ दव्ववग्गणाओ गंता ताहे एगा आहारकसरीरस्स अतिसुहुमत्तणेणं खंधाणं अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, ताओऽवि आहारगसरीरस्स अग्गहणपाउग्गाउ एकुत्तरियाओ अणंताओ दव्ववग्गणाओ गंता ताहे एगा आहारगसरीरस्स गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, ततोऽवि आहारगसरीरस्स गहणपाउग्गातो एकुत्तरियाओ अणंताओ दव्ववग्गणातो गंता ताहे अतिथूरत्तणेणं खंधाणं एगा आहारगसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, एवं एतेण कमेण आहारगाओ अणंतरं तेयकस्स अग्गहणं गहणं पुणो य अग्गहणं भाणियव्वं, तेयकाणंतरं एतेण चेव कमेण भासाएवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, आणपाणुस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, मणस्सावि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, कम्मस्सावि तिण्णि पगारा भाणिअव्वा, जाव कम्मकस्स उवरिल्ला अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा। ताओ एकुत्तरियातो अणंतातो दव्ववग्गणाओ गंता ताहे अणंताओ धुववग्गणाओ भवंति, ताओऽवि एकुत्तरियाओ अणंताओ धुवाओ गंता ताहे अणंताओ अद्धुववग्गणाओ भवंति, ताओऽवि एगुत्तरियाओ अणंताओ गंता ताहे अणंताओ सुन्नंतरवग्गणाओ भवंति, तातोऽवि एकुत्तरियातो अणंताओ गंता ताहे अणंतातो असुण्णंतरवग्गणातो भवंति, चत्तारि धुवणंतराइं चत्तारि सरीरवग्गणातो गंता एत्थ मीसयखंधो भवतीत्ति, पच्छा अचित्तमहाखंधो भवति, एवमेयाओ दव्ववग्गणाओ भणिआतो। इयाणिं खेत्तं पडुच्च तेसिं चेव दव्वाणं ओगाहणवग्गणाओ भण्णंति, तंजहा-एगा एगपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा दसपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा संखेज्जाओ संखेज्जपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणाओ असंखेज्जाओ असंखेज्जपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणाओ, तत्थ असंखेज्जपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं एकुत्तरियाए ओगाहणपरिवुड्ढीए अतिसु-

द्रव्यक्षेत्र-कालभाव-[illegible]णाः

॥ ४७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

हुमत्तणेण खंधाणं अग्गहणपाउग्गा ओगाहणवग्गणा, ताओवि एक्कुत्तरियाओ कम्मगसरीरस्स असंखेज्जा ओगाहणवग्गणाओ गंता एगा कम्मगसरीरस्स गहणपाउग्गा ओगाहणवग्गणा, गहणपाउग्गावि एकुत्तरियाए असंखेज्जाओगाहणवग्गणाओ गंता अतिथूरत्तणेण खंधाणं एगा कम्मगसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा ओगाहणवग्गणा, एवं एतेण कमेण मणस्सवि अग्गहणं गहणं पुणोऽवि अग्गहणमुहेण तिण्णि पगारा भाणियव्वा, एवं आणापाणुस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, भासाएवि तिन्नि पगारा भाणियव्वा, तेयगस्सवि तिन्नि पगारा भाणियव्वा, आहारगस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, वेउव्वियस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, ओरालियस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, एवमेयातो खेत्तवग्गणाओ भाणियव्वाओ। कालवग्गणा एगसमयाट्ठितिकादी सव्वा गहणं एंति, भावेऽवि सव्वा वग्गणाओ गहणं एंति, गुरुकलहुका अगुरुकलहुका य, एयाओ कस्सवि एंति कस्सइ णिंति । इयाणिं तीए गाहाए अत्थो समोतारिज्जति, तंजहा—

जाणि तेयकसरीरस्स अतिथूरत्तणेण अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि भासाए य जाणि अतिसुहुमत्तणेणं अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि एत्थ अंतरालं भवति, पट्ठवतो लहति णाम ओहिण्णाणं पडिवज्जइत्ति वुत्तं भवति, पट्ठवतो णाम तप्पढमयाए एताणि दव्वाणि पासित्तुमारभतित्ति वुत्तं भवति, गुरुलहुअगुरुलहुयं णाम जो तेयकसरीरस्स भासाए य अंतरदव्वा तेसिं केइ गुरुलहुया केइ अगुरुलहुया, ते गुरुलहुगा अगुरुलहुगा य ओहिनाणी पढमं पासिऊण जति पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वट्टति ततो विसुद्धपरिणामगो ओहिणा परिवड्ढमाणेण उवरिं जाव अचित्तमहाखंधो ताव पासति, हेट्ठावि जाव परमाणू पोग्गला ताव पासति, अप्पसत्थेहिं पुण अज्झवसाणेहिं वट्टमाणो अविसुद्धपरिणामको ओहिणा हायमाणेणं एवं चेव उवरिं हिट्ठाओ, तं ओहिणाणं तेसु

॥ ४८ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

चेव दव्वेसु णिद्दाइ, णिद्दाइ णाम ताणि चेव दव्वाणि पासित्ऊण परिवडतिचिंतुत्तं भवति । इदाणिं जमेतं गाहासुत्तं महत्थं हेट्ठा वण्णितं एयस्स दव्वक्खेत्तवग्गणाणं खेत्तवग्गणाण य दोण्हवि जाओ गहणपाओग्गाओ अगहणपाओग्गाओ य वग्गणाओ तासिं कमपरिवाडिं भणिहामि, तत्थ दव्ववग्गणाणं अणुक्कमपरिवाडी इमेण गाहापुव्वद्धेणं गहिता, तंजहा—

(ओरालविउव्वाहारतेअभासाणपाणमणकम्मे । अह दव्ववग्गणाणं, कमो विवज्जासओ खित्ते ॥ ३९ ॥
कम्मोवरिं धुवेयरसुण्णेयरवग्गणा अणंताओ । चउधुवखंतरतणुवग्गणा य मीसो तहाऽचित्तो ॥ ४० ॥
ओरालियचेउव्वियआहारगतेअ गुरुलहू दव्वा । कम्मगमणभासाई, एआइ अगुरुयलहुआइं ॥ ४१ ॥ (इतिवृत्तौ)

आहारतेयभासामणकम्मकदव्ववग्गणासु कमो ॥ ४० ॥ पूर्वार्धं ॥ तत्थ आहारकग्गहणेण एगग्गहणे गहणं तज्जातियाणं सव्वेसिं भवतित्तिकाऊण वेउव्वियओरालियावि गहिया चेव, तेणं पुव्वं तिविहाओ ओरालियस्स सरीरस्स वग्गणाओ भणिआओ, तंजहा- अग्गहणवग्गणा गहणवग्गणा पुणोऽवि अग्गहणवग्गणा चेव, एवं वेउव्वियस्सवि तिण्णि चेव पगारा भाणियव्वा, आहारकस्सवि तिण्णि चेव पगारा भणिता, तेयकस्स भासाए य दोण्हवि तिण्णि पगारा भणिया, एगग्गहणेण गहणं तज्जातियाणं सव्वेसिं भवतित्तिकाऊण भासागहणेण आणापाणुस्सवि गहणं कतं चेव भवति, तस्सवि आणापाणुस्स तिण्णि पगारा भणिता, मणकम्मकाणवि दोण्हवि तिण्णि चेव पगारा भणिता । दव्ववग्गणासु कमो भणितो ॥ इयाणिं खेत्तवग्गणासु कमो इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ, तंजहा—

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५० ॥

कम्मकमणभासाए य तेय आहारए खेत्ते ॥ ४० ॥ पश्चार्धं ॥ खेत्तं पडुच्च पुव्वं कम्मकसरीरस्स तिविधा वग्गणा भणिता, तंजहा- अग्गहणवग्गणा गहणवग्गणा पुणो य अग्गहणवग्गणात्ति, एवं मणस्सवि तिण्णिवि पगारा भणिया, एक्कग्गहणेण तज्जातीताणं गहणंतिकाऊण आणपाणुस्सवि भासाएवि तिण्णि चेव पगारा भणिता, तेयस्सवि तिण्णि पगारा भणिता, आहारकस्सवि तिण्णि पगारा, एगग्गहणे तज्जातीयाणं गहणंतिकाऊण ओरालियवेउव्वियाणवि तिण्णि चेव पगारा भणितत्ति ॥ इयाणिं एतेसिं चेव पयाणं जत्थ गरुयलहुयाणि दव्वाणि भवंति जत्थ वा अगुरुयलहुयदव्वाणि भवंति ताणि इमाए गाहाए भण्णंति, तंजहा—

तेआहारगविकुव्वणोराल० ॥ ४१ ॥ तेयकसरीरं तेयगसरीरस्स अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ आहारकसरीरं आहारकसरीरस्स य अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ वेउव्वियसरीरं वेउव्वियसरीरस्स य अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ ओरालियसरीरं ओरालियसरीरस्स य अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ, एताणि गरुयलहुएसु दव्वेसु निप्फज्जंति, भासा भासाए य अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि आणपाणू आणपाणुस्स य अग्ग० मणो मणस्स य अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि कम्मगं कम्मकस्स य अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि, एताणि अगुरुयलहुएसु निप्फज्जंति । जाणि पुण ताणि तेयकसरीरस्स अतिथूरत्तणेण अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि भासाए य अतिसुहुमत्तणेण अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि ताणि अंतराले वट्टमाणाणि दव्वाणि गुरुलहुयाणि अगुरुलहुयाणि य भण्णंतीत्ति ॥ मज्झिमओहिखेत्तपरिमाणाहिकारे चेव वट्टमाणे इमं गाहासुत्तमागतं, तंजहा—

संखेज्ज मणोदव्वे० ॥ ४२ ॥ तत्थ मणदव्वाणि य भवंति मणो य भवति, मणदव्वाणि णाम जाणि मणपाउग्गाणि

द्रव्यादि-वर्गणाक्रमः गुरुलघ्व-गुरुलघु-द्रव्याणि

॥ ५० ॥

दव्वाणि गहियाणि न ताव मणेति ताणि मणदव्वाणिं भण्णंति, जाहे य मनिताणि भवंति ताहे मणो भण्णति, जो ओहिणाणी मणदव्वाणि पासति सो खेत्तओ लोगस्स रूवावबद्धं संखेज्जतिभागं पासति, कालतो पुण पलिओवमस्स संखेज्जे भागे तीतं च अणागयं च जाणति पासति, जो कम्मगदव्वाणि पासइ सो खित्तओ लोगस्स रूवावबद्धे संखेज्जभागे जाणति पासति, कालओ पुण पलिओवमस्स संखेज्जतिभागे तीयं च अणागयं च कालं जाणति पासति, भावओ जे तेसिं दव्वाणं कालगणीलगादिणो भावा ते जाणइ पासइ, जो पुण ओहिणाणी खेत्ततो रूवावबद्धं लोगं ता जाणति पासति सो कालतो तत्तो थोवूणयं पलिओवमं तीतं अणागयं च कालं जाणति पासति ॥ किंच-मज्झिमओहिक्खेत्तपरिमाणे चेव वट्टमाणे जोऽवि इयाणिं ओही भण्णिहि सोवि मज्झिमओ चेव दट्ठव्वो । तंजहा–

तेयाकम्मसरीरे० ॥ ४३ ॥ जो ओहिनाणी तेयगसरीरं कम्मगसरीरं तेयग (कम्मग) सरीरगहणपाउग्गाणि दव्वाणि भासं भासागहणपाउग्गाणि य दव्वाणि दव्वतो जाणति पासति सो खेत्ततो रूवावबद्धे असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणति पासति, कालतो पुण असंखेज्जं कालं तीतं च अणागयं च ओहिणा जाणति पासति, भावतो पं जे तेसिं दव्वाणं कालगणीलगातिणो भावा ते जाणति पासतित्ति ॥ इयाणिं जं तं उक्कोसयं खेत्तपरिमाणं हेट्ठे वण्णितं तं पडुच्च तेयगसरीरं च इमं गाहासुत्तमागतं—

एगपदेसोगाढं० ॥ ४४ ॥ जो परमोहिणाणजुत्तो जीवो भवति सो एगपदेसोगाढं कम्मकसरीरं लभति, लभति णाम जाणातित्ति वुत्तं भवति, ण केवलं परमोही एकपदेसोगाढं कम्मकसरीरं चेव जाणति, किं तु परमाणुं वा परमाणुवतिरित्तं वा खंधं जाणेज्जा, जाणि य अगुरुलहुयदव्वाणि ताणिवि सो परमोही एगपदेसोगाढाणि जाणिज्जा, अण्णे भणंति- 'एगपदेसो' गाहा, जो

॥ ५१ ॥

पुण परमोही भवति सो एगपदेसोगाढं दव्वं पासति, तं पुण परमाणुं वा वतिरित्तं वा, कम्मगसरीरं च अगुरुयलहुयं च दव्वं पासइ, जो य ओहिणाणी तेयकसरीरं जाणति पासति सो अप्पणो वा परस्स वा तीताणागताणं भावाणं पुहुत्तं जाणति, पुहुत्तसद्दो पुव्वभणितो चेव दट्ठव्वोत्ति ॥ इदाणिं दव्वखेत्तकालभावा पडुच्च जो परमोहिस्स विसओ सो भण्णति–

परमोहि असंखेज्जा० ॥ ४५ ॥ जो परमोही भवति सो लोगं जाणति चेव, अलोगेऽवि से असंखेज्जेसु लोगप्पमाणमेत्तेसु खंडेसु विसओ भवति, कालतो पुण असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ तीयं च अणागयं च जाणति पासति, दव्वओ सव्वरूविदव्वाइं जाणइ पासइ, भावओऽवि तेसिं दव्वाणं कालगणीलगाइणो भावा जाणति पासति। एत्थ सीसो आह-भगवं ! जाणि ताणि खेत्तओ अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ ताणि कतराए उवमाए अम्हेहिं गेण्हियव्वाइंति ?, आयरिओ आह-खेत्तस्स उवमा अगणिजीवा भवंति, सा य तेहिं अगणिजीवेहिं जहा भवति तहा हेट्ठे वण्णितत्ति ॥ इदाणिं तिरियाण सरीरगाइं पडुच्च जस्स वा जावतिओ ओहिविसओ सो इमेण गाहापुव्वद्धेण भण्णति, तंजहा–

आहारतेयलंभो उक्कोसेणं तिरिक्खजोणीसु ॥ ४६ ॥ पूर्वार्धं ॥ तिरिक्खजोणिया जहण्णेण ओहिणा ओरालियं सरीरं जाणिज्जा, उक्कोसेण ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगसरीराणि जाणंति पासंति य, कम्मगसरीरं पुण ण चेव जाणंति ण वा पासंतित्ति ॥ एस तिरिक्खए मणुए य पडुच्च गुणपच्चइओ एवंविहो ओही वण्णिओ। इदाणिं णेरइयाणं देवाण य भवपच्चइओ ओही भणिहामि, तत्थ पुव्विं नेरइयाणं ओहेण जहण्णयं उक्कोसयं च इमेण गाहापच्छद्धेण भणीहामि, तंजहा—

गाउय जहण्ण ओही णिरएसु य जोयणुक्कोसो ॥४६॥ पश्चार्धं ॥ णेरइया जहण्णेण ओहिणा गाउयं पासंति, उक्कोसेणं

परमावधेः द्रव्यादयः

॥ ५२ ॥

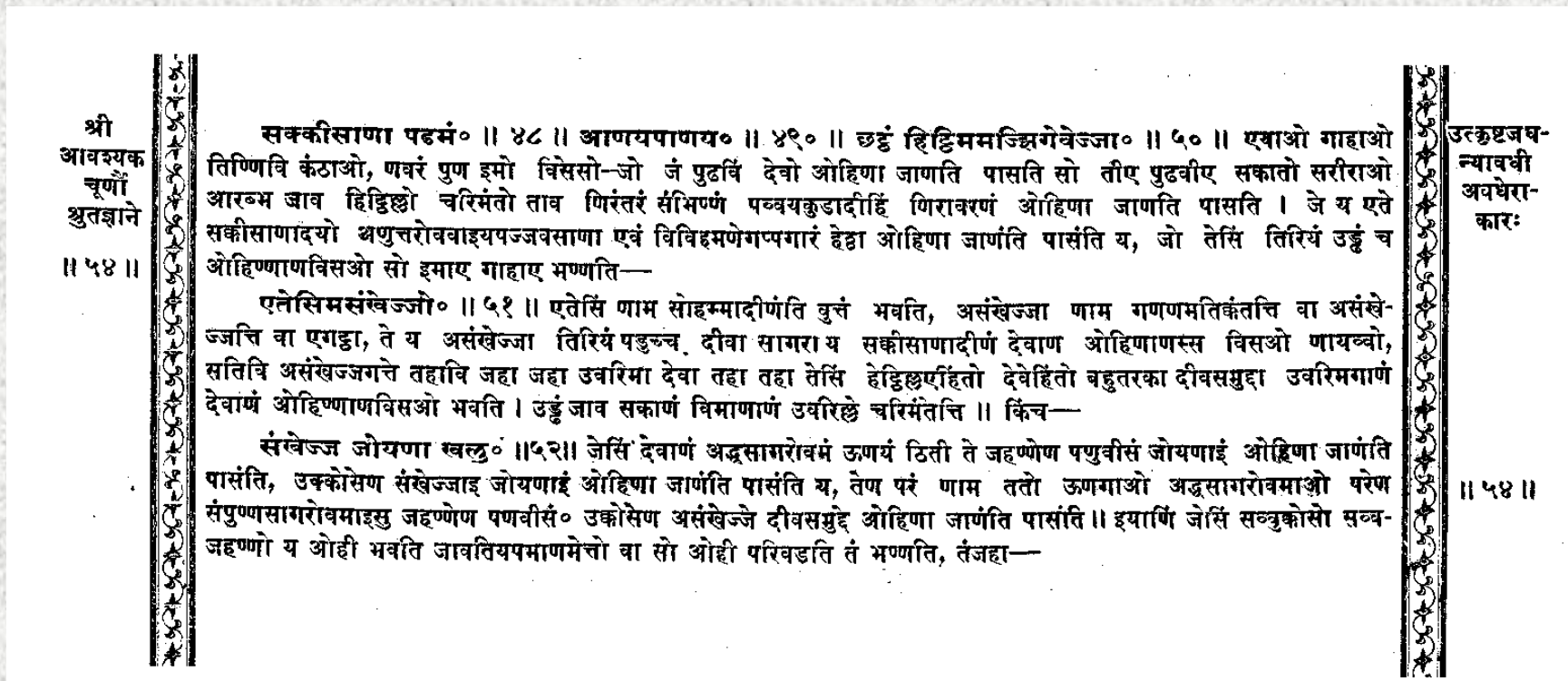
प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जोयणं पासंतित्ति । एस ओहेण णिरओही वण्णितो। इयाणिं पत्तेयं पत्तेयं सत्तसुवि पुढवीसु जहण्णुक्कोसयं ओहिं वण्णे हामि, तंजहा-

चत्तारि गाउयाइं, अद्धट्ठाइं तिगाउयं चेव। अड्ढाइज्जा दोण्णि य दिवड्ढमेगं च णरएसु ॥४७॥ जस्स रयणप्पभापुढविणेरइयस्स दसवाससहस्साइं जहण्णिया ठिती सो अद्धट्ठाइं गाउयाइं ओहिणा जाणति पासति, जस्स पुण रयणप्पभापुढविणेरइयस्स सागरोपमं ठिती सो चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणइ पासति, एवं जाव अहे सत्तमाय जहण्णाठितीओ अद्धगाउयं उक्कोसट्ठितीओ गाउयं ओहिणा जाणति पासति । एस ताव णेरइयाणं ओहेण पत्तेगेण य जहण्णुक्कोसओ ओही वण्णिओ । इदाणिं देवाणं ओहेणं पत्तेगेण य जहण्णयं उक्कोसयं च ओहिं भणिहामि, तत्थ ओहेण देवा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ओहिणा जाणंति पासंति, उक्कोसेणं संभिण्णं लोगनालिं ओहिणा जाणंति पासंति, एस ओहेणं देवाणं ओही भणिओ. इदाणिं पत्तेयं पत्तेयं देवाणं जहण्णुक्कोसयं ओहिं भणिहामि—तत्थ भवणवासिणो दसप्पगारा असुरकुमारादी थणियकुमारपज्जवसाणा, एतेसिं दसण्हंपि जहण्णओ ओही पणुवीसं जोयणाइं, उक्कोसओ ओही असुरकुमारवज्जाणं संखेज्जाइं जोयणाइं, असुरकुमाराणं पुण उक्कोसेणं असंखिज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति, वाणमंतराणं पुण जहंनउक्कोसओ ओही जहा असुरकुमारवज्जाणं ओही भवणवासीणं तथा भाणियव्वो, जोइसिया जहण्णेणवि संखिज्जदीवसमुद्दे उक्कोसेणवि संखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति । वेमाणिया सोहम्मातो आरब्भ जाव सव्वट्ठसिद्धगा देवा ताव जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ओहिणा जाणंति पासंति, अहे पुण जो एतेसिं सोहम्मगातीणं वेमाणियाणं अणुत्तरोववाइयपज्जवसाणाण देवाण ओहिणाणविसओ सो इमाहिं तिहिं गाहाहिं भण्णति, तंजहा—

॥ ५३ ॥



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५४ ॥

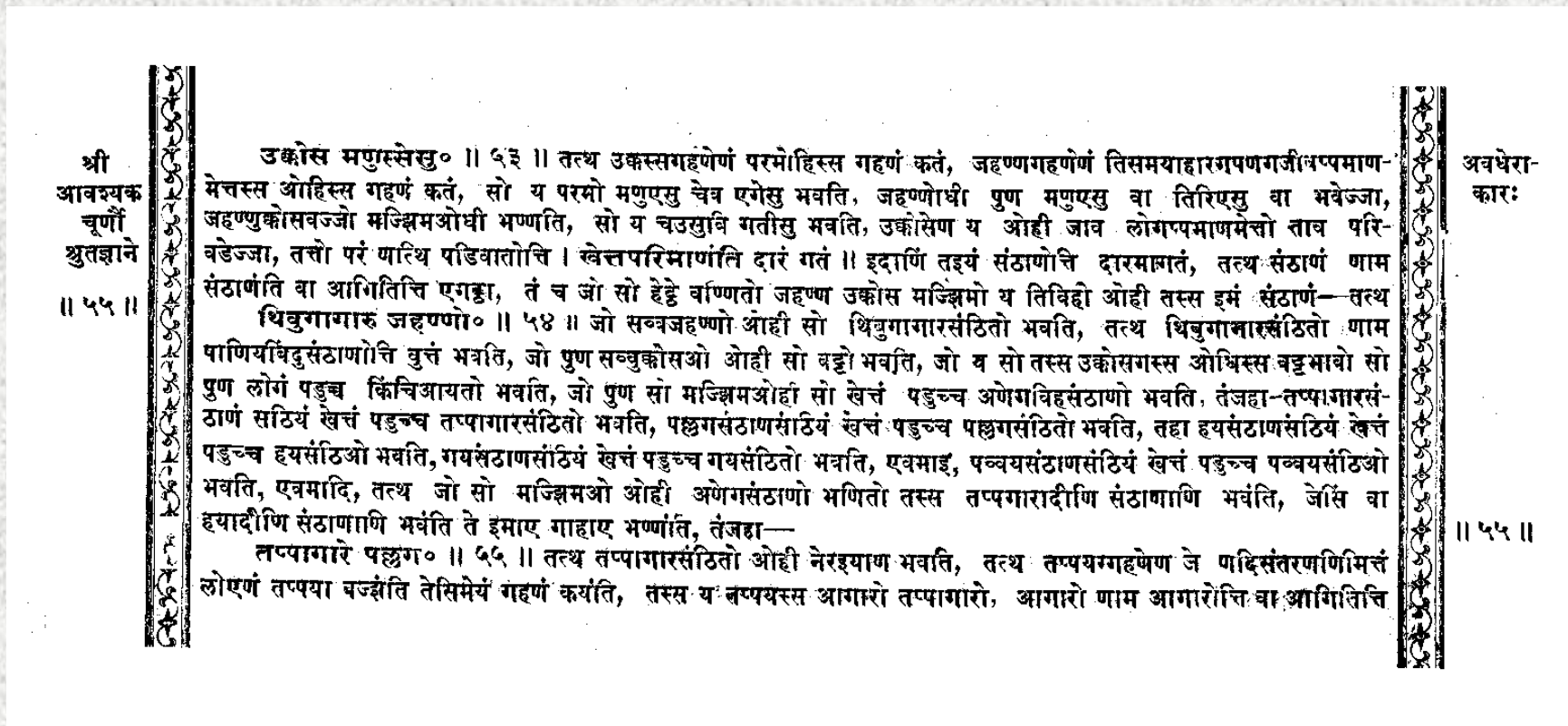
सक्कीसाणा पढमं० ॥ ४८ ॥ **आणयपाणय०** ॥ ४९० ॥ **छट्ठं हिट्ठिममज्झिमगेवेज्जा०** ॥ ५० ॥ एवाओ गाहाओ तिण्णिवि कंठाओ, णवरं पुण इमो विसेसो–जो जं पुढविं देवो ओहिणा जाणति पासति सो तीए पुढवीए सकातो सरीराओ आरब्भ जाव हिट्ठिल्लो चरिमंतो ताव णिरंतरं संभिण्णं पव्वयकुडादीहिं णिरावरणं ओहिणा जाणति पासति । जे य एते सक्कीसाणादयो अणुत्तरोववाइयपज्जवसाणा एवं विविहमणेगप्पगारं हेट्ठा ओहिणा जाणंति पासंति य, जो तेसिं तिरियं उड्ढं च ओहिण्णाणविसओ सो इमाए गाहाए भण्णति—

एतेसिमसंखेज्जो० ॥ ५१ ॥ एतेसिं णाम सोहम्मादीणंति वुत्तं भवति, असंखेज्जा णाम गणणमतिक्कंतत्ति वा असंखेज्जत्ति वा एगट्ठा, ते य असंखेज्जा तिरियं पडुच्च दीवा सागरा य सक्कीसाणादीणं देवाण ओहिणाणस्स विसओ णायव्वो, सतिवि असंखेज्जगत्ते तहावि जहा जहा उवरिमा देवा तहा तहा तेसिं हेट्ठिल्लएहिंतो देवेहिंतो बहुतरका दीवसमुद्दा उवरिमगाणं देवाणं ओहिण्णाणविसओ भवति । उड्ढं जाव सकाणं विमाणाणं उवरिल्ले चरिमंतत्ति ॥ किंच—

संखेज्ज जोयणा खलु० ॥५२॥ जेसिं देवाणं अद्धसागरोवमं ऊणयं ठिती ते जहण्णेण पणुवीसं जोयणाइं ओहिणा जाणंति पासंति, उक्कोसेण संखेज्जाइ जोयणाइं ओहिणा जाणंति पासंति य, तेण परं णाम ततो ऊणगाओ अद्धसागरोवमाओ परेण संपुण्णसागरोवमाइसु जहण्णेण पणवीसं० उक्कोसेण असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति ॥ इयाणिं जेसिं सव्वुक्कोसो सव्वजहण्णो य ओही भवति जावतियपमाणमेत्तो वा सो ओही परिवड्डति तं भण्णति, तंजहा—

उत्कृष्टजघन्यावधी अवधेराकारः

॥ ५४ ॥



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५५ ॥

उक्कोस मणुस्सेसु० ॥ ५३ ॥ तत्थ उक्कस्सगहणेणं परमोहिस्स गहणं कतं, जहण्णगहणेणं तिसमयाहारगपणगजीवप्पमाणमेत्तस्स ओहिस्स गहणं कतं, सो य परमो मणुएसु चेव एगेसु भवति, जहण्णोधी पुण मणुएसु वा तिरिएसु वा भवेज्जा, जहण्णुक्कोसवज्जो मज्झिमओधी भण्णति, सो य चउसुवि गतीसु भवति, उक्कोसेण य ओही जाव लोगप्पमाणमेत्तो ताव परिवडेज्जा, तत्तो परं णत्थि पडिवातोत्ति । खेत्तपरिमाणंति दारं गतं ॥ इदाणिं तइयं संठाणोत्ति दारमागतं, तत्थ संठाणं णाम संठाणंति वा आगितित्ति एगट्ठा, तं च जो सो हेट्ठे वण्णितो जहण्ण उक्कोस मज्झिमो य तिविहो ओही तस्स इमं संठाणं—तत्थ

थिवुगागारु जहण्णो० ॥ ५४ ॥ जो सव्वजहण्णो ओही सो थिवुगागारसंठितो भवति, तत्थ थिवुगागारसंठितो णाम पाणियबिंदुसंठाणोत्ति वुत्तं भवति, जो पुण सव्वुक्कोसओ ओही सो वट्टो भवति, जो व सो तस्स उक्कोसगस्स ओधिस्स वट्टभावो सो पुण लोगं पडुच्च किंचिआयतो भवति, जो पुण सो मज्झिमओही सो खेत्तं पडुच्च अणेगविहसंठाणो भवति, तंजहा–तप्पागारसंठाणं सठियं खेत्तं पडुच्च तप्पागारसंठितो भवति, पल्लगसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च पल्लगसंठितो भवति, तहा हयसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च हयसंठिओ भवति, गयसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च गयसंठितो भवति, एवमाइ, पव्वयसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च पव्वयसंठिओ भवति, एवमादि, तत्थ जो सो मज्झिमओ ओही अणेगसंठाणो भणितो तस्स तप्पगारादीणि संठाणाणि भवंति, जेसिं वा हयादीणि संठाणाणि भवंति ते इमाए गाहाए भण्णंति, तंजहा—

तप्पागारे पल्लग० ॥ ५५ ॥ तत्थ तप्पागारसंठितो ओही नेरइयाण भवति, तत्थ तप्पयग्गहणेण जे पडिसंतरणणिमित्तं लोएणं तप्पया वज्झंति तेसिमेयं गहणं कयंति, तस्स य तप्पयस्स आगारो तप्पागारो, आगारो णाम आगारोत्ति वा आगितित्ति

अवधेराकारः

॥ ५५ ॥

वा संठाणंति वा एगट्ठा, भवणवासीणं देवाणं पल्लगसंठितो ओधी भवति, वाणमंतराणं पुण पडहगसंठिओ ओही भवति, जोइसियाणं देवाणं झल्लरिसंठितो ओही भवति, सोहम्मातो आरब्भ जाव अच्चुतो कप्पो एतेसिं कप्पोवगाणं देवाणं अद्धमुइंगागारसंठिओ ओही भवति, गेवेज्जगदेवाणं पुप्फचंगेरीसंठितो भवति, अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं जवणालीसंठितो भवति, तत्थ जवणाली णाम जीए णालीए जवा वाविज्जंति सा जवणाली भण्णइत्ति । णेरइयदेवाणं ओहिस्स संठाणं भणितं ।

इयाणिं तिरियमणुयाणं जारिसं ओहिस्स संठाणं तं भण्णति, सो य तिरियमणुओही हयगयादीसंठाणसंठितो पुव्वि चेव भणितोत्ति । संठाणित्ति दारं गतं ॥ इयाणिं आणुगामियत्तिदारं आगतं, तत्थ आणुगामियं णाम जं तमोहिण्णाणिणं गच्छंतमणुगच्छति तं आणुगामियं भण्णइ, तं च दुविहं भवति, तंजहा--अंतगयं च मज्झगयं च, तत्थ जं तं अंतगतं तं तिविहं भवति, तंजहा--पुरओ अंतगतं मग्गतो अंतगयं पासतो अंतगतंति, तत्थ पुरतो अंतगयं णाम तमोहिण्णाणिं पडुच्च चक्खिंदियमिव अग्गतो दरिसणसामत्थजुत्तंति वुत्तं भवति, जत्थ जत्थ ओहिणाणी गच्छइ तत्थ तत्थ पुरतो अवट्ठिया रूवावबद्धा अत्था जाणेति पासति य, से तं पुरतो अंतगयं । तत्थ मग्गतो अंतगतं णाम मग्गतोत्ति वा पिट्ठउत्ति वा एगट्ठा, जत्थ२ सो ओहिण्णाणी गच्छति तत्थ२ संफरिसिया फासिंदियमिव पिट्ठतो अवट्ठिता रूवावबद्धा अत्था ओहिणा जाणति पासति, सेतं मग्गतो अंतगयं । पासतो अंतगयं णाम वामतो दाहिणतो वत्ति वुत्तं भवति, जत्थ जत्थ सो ओहिणाणी गच्छति तत्थ तत्थ सोइंदिएणमिव पासतो अवत्थिता रूवावबद्धा अत्था ओहिणा जाणति पासति य, तं पासतो अंतगतं, सेतं अंतगतं ॥ तत्थ मज्झगतं णाम जं समंततो अत्थग्गाहि तं मज्झगयं भण्णति, एत्थं दिट्ठंतो फरिसिंदियं चेव, जहा फरिसिंदिएणं समंतओ फरिसिए जीवो अत्थे उवलभति, एवं सोवि ओहिणाणी

जत्थ जत्थ गच्छति तत्थ तत्थ समंतओ रूवावबद्धे अत्थे ओहिणा जाणति पासति य, से तं मज्झगयं ओहिणाणं । एत्थ सीसो आह--भगवं! अंतगयमज्झगयाण को पडिविसेसो ?, आयरिओ आह--अंतगयं तिविहं वण्णियं, तत्थ पुरतो अंतगएण पुरतो चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि ओहिणा जाणति पासति, मग्गतोअंतगएणं मग्गतो चेव संखेज्जाणि असंखेज्जाणि वा जाणति पासति, पासतो अंतगएणं पासतो चेव संखेज्जाणि वा० मज्झगएण सव्वतो समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणति पासति, तम्हा एतेण कारणेणं अंतगयस्स व मज्झगयस्स व महंतो चेव पडिविसेसोत्ति ।

अणुगामियओहिण्णाणपसंगेण चेव अणाणुगामिओऽवि ओधी तप्पडिवक्खोत्तिकाऊण भण्णति, तत्थ अणाणुगामिओ णाम जो तमोहिण्णाणिं मच्छन्तं णाणुगच्छति, जत्थेव उप्पण्णं तंमि चेव ठाणे जाणति पासति, ततो ठाणातो अण्णत्थ गतो ण जाणइ पासइ, एत्थ दिट्ठंतो पुरिसो, जहा--कोइ पुरिसो अगणिमुज्जालेऊणं तस्सेव अगणिस्स परिपेरंतेहिं परिघोलमाणो२ तं उज्जोयठाणं पासति, अन्नत्थ गए ण पासइ, एमेव अणाणुगामियं ओहिण्णाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि २ जोयणाइं ओहिण्णाणी जाणति पासति, अण्णत्थ गए ण जाणति पासति । से तं अणाणुगामियं ओहिण्णाणं॥ इयाणिं जेसिं जीवाणं ओधी आणुगामितो अणाणुगामितो वा तं इमाए गाहाए भण्णति, तंजहा—

अणुगामितो य ओही० ॥ ५६ ॥ जो णेरइयदेवाणं ओही सो णियमा आणुगामिओ, जो पुण मणुस्सतिरियाणं सो आणुगामिओ वा होज्जा अणाणुगामिओ वा होज्जा मिस्सो वा होज्जा, मिस्सो णाम जं पुव्वदिट्ठं अत्थं अण्णत्थ गओ किंचि उवलभइ किंचि णो उवलभइ सो मिस्सो भन्नति । अणुगामियंति चउत्थदारं सम्मत्तं ॥ इयाणिं अवट्ठाणन्ति पंचमं दारमागतं, तं च

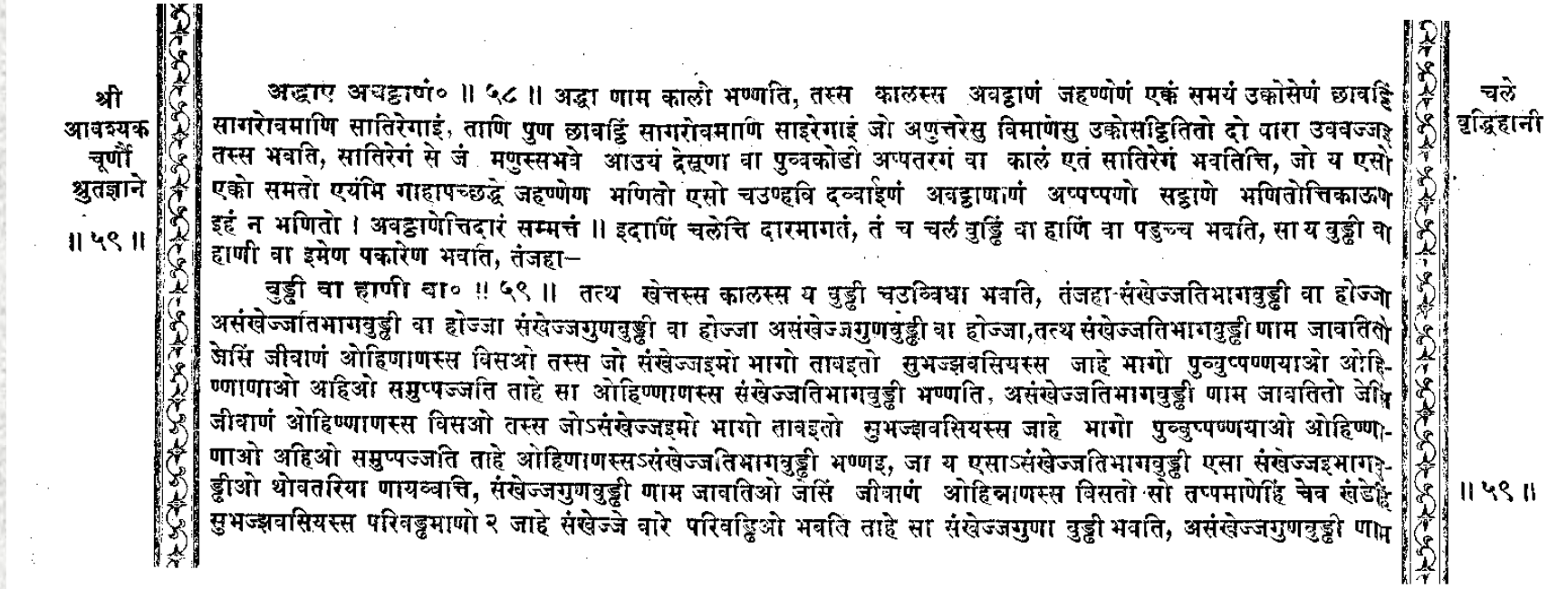
श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५८ ॥

अवट्ठाणं चउव्विहं, तंजहा--दव्वावट्ठाणं खेत्तावट्ठाणं कालावट्ठाणं भावावट्ठाणं, तं च अवट्ठाणं चउव्विहंपि दोहिं गाहाहिं भणिहामि, तत्थ बंधाणुलोमं पडुच्च एगाए गाहाए पुव्विं खेत्तावट्ठाणं ततो दव्वावट्ठाणं पच्छा भावावट्ठाणं च भणिहामि, कालावट्ठाणं चउण्ह अवट्ठाणाणं जं जहा भेयं अवट्ठाणं तं बितियाए गाहाए भणिहामि, तत्थ जा सा पढमा गाहा सा इमा—

तं०—खेत्तस्स अवट्ठाणं० ॥५७॥ तत्थ खेत्तगहणेणं भवखेत्तस्स गहणं कतं, तं च भवं पडुच्च ओहिन्नाणं जहन्नेण एकं समयं होज्जा, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि होज्जा, एत्थ एगो समओ तिरियस्स वा मणुयस्स वा भवति, कहं?, जस्स कस्सइ एक्कंमि समए ओहिण्णाणं उप्पण्णं बितियसमए से आउयं पहीणं चेव, अतो तिरियमणुयाणं एगो समओ भवं पडुच्च ओहिन्नाणं संभवति, देवस्स वा मिच्छदिट्ठिस्स एगं समयं सम्मत्तं पडिवन्नस्स, नवरं बितियसमए आउयं पहीणं चेव तम्मित्तिकाऊणं देवेऽवि एक्कं समओ ओहिणाणस्स भविज्जा, उक्कोसयं पुण तेत्तीससागरोवमियं भवखेत्तावट्ठाणं देवे णेरइए पडुच्च भविज्जा, दव्ववट्ठाणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं भिन्नमुहुत्तो, भिन्नमुहुत्तो णाम ऊणो मुहुत्तोत्ति वुत्तं भवति. तं च भिन्नमुहुत्तं ओहिण्णाणी एगदव्वे णिरंतरोवउत्तो अच्छेज्जा, ततो परेणं निरोहमसहमाणो ण सक्केति तंमि दव्वंमि उवउत्तो अच्छिउं, एत्थ दिट्ठंतो पुरिसो, जहा-कोइ पुरिसो अइव सण्हसूइए पासलिद्दे णिरंतरोवउत्तो न सक्केति दीहं कालं अच्छितुं, एवं सो ओहिणाणी तंमि दव्वे णिरंतरं उवउत्तो ण सक्केति भिण्णमुहुत्ताउ परं अच्छिउंति, भावओऽवि अवट्ठाणं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं सत्तट्ठ समया, किं कारणं ?, जम्हा तिव्वयरेण उवओगेण दव्वस्स पज्जवोवलंभो भवति, अओ तिव्वोवओगेण य सुट्ठुतरं निरोहमसहणो न सक्केति तंमि पज्जए सत्तण्हं अट्ठण्हं वा समयाणं उवरिं अच्छिउंति, एवमेस एक्काए गाहाए अत्थो भणितो, इयाणिं बितियाए गाहाए अत्थं भणिहामि, सा य इमा, तंजहा—

अवस्थानं चलद्वारं

॥ ५८ ॥



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५९ ॥

अद्धाए अवट्ठाणं० ॥ ५८ ॥ अद्धा णाम कालो भण्णति, तस्स कालस्स अवट्ठाणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाणि सातिरेगाइं, ताणि पुण छावट्ठिं सागरोवमाणि साइरेगाइं जो अणुत्तरेसु विमाणेसु उक्कोसट्ठितितो दो वारा उववज्जइ तस्स भवति, सातिरेगं से जं मणुस्सभवे आउयं देसूणा वा पुव्वकोडी अप्पतरगं वा कालं एतं सातिरेगं भवतित्ति, जो य एसो एक्को समतो एयंमि गाहापच्छद्धे जहण्णेण भणितो एसो चउण्हवि दव्वाईणं अवट्ठाणाणं अप्पप्पणो सट्ठाणे भणितोत्तिकाऊण इहं न भणितो । अवट्ठाणेत्तिदारं सम्मत्तं ॥ इदाणिं चलेत्ति दारमागतं, तं च चलं वुड्ढिं वा हाणिं वा पडुच्च भवति, सा य वुड्ढी वा हाणी वा इमेण पकारेण भवति, तंजहा–

वुड्ढी वा हाणी वा० ॥ ५९ ॥ तत्थ खेत्तस्स कालस्स य वुड्ढी चउव्विधा भवति, तंजहा-संखेज्जतिभागवुड्ढी वा होज्जा असंखेज्जतिभागवुड्ढी वा होज्जा संखेज्जगुणवुड्ढी वा होज्जा असंखेज्जगुणवुड्ढी वा होज्जा,तत्थ संखेज्जतिभागवुड्ढी णाम जावतितो जेसिं जीवाणं ओहिणाणस्स विसओ तस्स जो संखेज्जइमो भागो तावइतो सुभज्झवसियस्स जाहे भागो पुव्वुप्पण्णयाओ ओहिण्णाणाओ अहिओ समुप्पज्जति ताहे सा ओहिण्णाणस्स संखेज्जतिभागवुड्ढी भण्णति, असंखेज्जतिभागवुड्ढी णाम जावतितो जेसिं जीवाणं ओहिण्णाणस्स विसओ तस्स जोऽसंखेज्जइमो भागो तावइतो सुभज्झवसियस्स जाहे भागो पुव्वुप्पण्णयाओ ओहिण्णाणाओ अहिओ समुप्पज्जति ताहे ओहिणाणस्सऽसंखेज्जतिभागवुड्ढी भण्णइ, जा य एसाऽसंखेज्जतिभागवुड्ढी एसा संखेज्जइभागवुड्ढीओ थोवतरिया णायव्वात्ति, संखेज्जगुणवुड्ढी णाम जावतिओ जसिं जीवाणं ओहिन्नाणस्स विसतो सो तप्पमाणेहिं चेव खंडेहिं सुभज्झवसियस्स परिवड्ढमाणो २ जाहे संखेज्जे वारे परिवड्ढिओ भवति ताहे सा संखेज्जगुणा वुड्ढी भवति, असंखेज्जगुणवुड्ढी णाम

चले वृद्धिहानी

॥ ५९ ॥

जावइतो जेसिं जीवाणं ओहिण्णाणस्स विसओ सो तप्पमाणेहिं चेव खंडेहिं सुभज्झवसियस्स परिवड्ढमाणो परिवड्ढमाणो जाहेऽसंखेज्जवारे परिवड्ढितो भवति ताहे सा असंखेज्जगुणवुड्ढी भण्णति, संखेज्जगुणवुड्ढीओ य असंखेज्जगुणवुड्ढी बहुतरिया भवतीत्ति। खेत्तकालाणं च वड्ढी चउव्विहावि भणिता, इदाणिं एतेसिं चेव खेत्तकालाणं हाणी भाणियव्वा, सावि य एवं चेव णिरवसेसा हाणिअहिलावेणं चउव्विहा भाणियव्वा, णवरं सा असुभज्झवसियस्स भवतीत्ति। एवमेसा हाणी गया ॥ वड्ढीओ हाणीओ य खेत्तकालाणं गयाओ। इयाणिं दव्वस्स वुड्ढीओ य हाणीओ य दुविहाओ भण्णंति, तत्थ वड्ढी इमा, तंजहा-अणंतभागवुड्ढी वा अणंतगुणवुड्ढी वा। तत्थ अणंतभागवुड्ढी णाम जावतितो जेसिं जीवाणं दव्वाणि पडुच्च ओहिणाणस्स विसओ भवति तेसिं जो अणंततिमो भागो तावइओ सुभज्झवसियस्स जाहे भागो पुव्वुपण्णयातो ओहिण्णाणाओ अहिओ समुप्पज्जति ताहे सा ओहिण्णाणस्स अणंतभागवड्ढी भवति, अणंतगुणवुड्ढी णाम जावतिओ जेसिं जीवाणं दव्वाणि पडुच्च ओहिण्णाणस्स विसओ सो य तप्पमाणेहिं चेव खंडेहिं सुभज्झवसियस्स परिवड्ढमाणेहिं २ जाहे अणंतवारे वड्ढिओ भवति ताहे सा अणंतगुणवुड्ढी भण्णति, अणंतभागवड्ढीओ य अणंतगुणवड्ढी बहुतरिका णायव्वत्ति। दव्ववुड्ढी गता। इदाणिं तस्सेव दव्वस्स हाणी भण्णइ, साऽवि एवं चेव णिरवसेसा हाणिअभिलावेण भाणियव्वा, णवरं सा हाणी असुभज्झवसितस्स भवतीत्ति। एवमेसा दव्वस्स हाणी गता, दव्वं पडुच्च वुड्ढीओ हाणीओ य मताओ। इदाणिं पज्जवे पडुच्च छव्विहाओ वुड्ढिहाणीओ भण्णंति, तत्थ पुव्विं ताव वुड्ढी भणामि, तंजहा—

अणंतभागवुड्ढी वा असंखेज्जइभागवुड्ढी वा संखेज्जतिभागवुड्ढी वा अणंतगुणवड्ढी वा असंखेज्जतिगुणवड्ढी वा संखेज्जगुणवड्ढी वा, तत्थ अणंतभागवुड्ढी जहा दव्वस्स अणंतभागवड्ढी भणिया तहेव भाणियव्वा, णवरं इह पज्जवाभिलावो भाणियव्वोत्ति,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

असंखेज्जतिभागवुड्ढी संखेज्जतिभागवुड्ढी य जहा खेत्तकालाणं तहेव भाणियव्वा णवरं पज्जवाभिलावो भाणियव्वो, अणंतगुणवुड्ढी जहा दव्वस्स भणिया तहा भाणियव्वा, णवरं इह पज्जवाभिलावो भाणियव्वो, असंखेज्जगुणवड्ढी संखेज्जगुणवड्ढी य एयाओ दोऽवि जहा खेत्तकालाणं भणियाओ तहा भाणियव्वाओ, णवरं इहं पज्जवाभिलावो भाणियव्वो । एवमसा छव्विहा पज्जववुड्ढी सम्मत्ता । इदाणिं तेसिं चेव पज्जवाणं हाणी भण्णति, सा एवं चेव णिरवसेसा हाणिअभिलावेण भाणियव्वा, णवरं सा हाणी असुभज्झवसितस्स भवतिचि । एवमेसा छव्विहा पज्जवहाणी भणिया । वुड्ढीओ हाणीओ य पज्जवे पडुच्च भणियाओ । एवमेव चलन्ति दारं सम्मत्तं । इदाणिं तिव्वमंदेति दारमागतं, तंजहा—

फड्डा य असंखेज्जा० ◆ ६१ ॥ तिव्वमंददारपदरिसणत्थं इमो जालकडगदिट्ठंतो कीरइ जहा जालकडगस्स अंतो दीवको पलीविओ, ततो तस्स पईवस्स लेसातो तेहिं जालंतरेहिं निग्गच्छंति, णिग्गताओ य समाणीओ बाहिं अवट्ठियाणि रूविद्दव्वाइं उज्जोवेंति, एवं जीवस्सवि जेसु आगासपदेसेसु ओहिण्णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमो भवति तेसु ओहिण्णाणं समुप्पज्जति, जेसु पुण आगासपदेसेसु ओहिण्णाणावरणक्खओवसमो णत्थि तेसु ओहिण्णाणं ण उप्पज्जति, जेसिं जीवाणं केसुवि आगासपदेसेसु ओही उप्पण्णो केसुवि न उप्पन्नो, तत्थ जेसु उप्पणो ते फड्डगा भण्णंति । अण्णे पुण एवं भणंति जहा--एवं जीवस्सवि जेसिं जीवप्पएसाणं ओहिण्णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमो भवति तेसु ओहिण्णाणं समुप्पज्जइ, जेसिं पुण जीवस्स जीवप्पएसाणं ओहिण्णाणावरणिज्जाणं कम्माणं णत्थि खओवसमो तेसु ओहिण्णाणं ण उप्पज्जइ, तेसिं च जीवाणं केसुवि जीवप्पएसेसु ओहिण्णाणं उप्पण्णं केसुवि जीवप्पएसेसु ण उप्पण्णं, तत्थ जेसु उप्पण्णं ते फड्डगा भण्णंति, एतच्च

॥ ६१ ॥

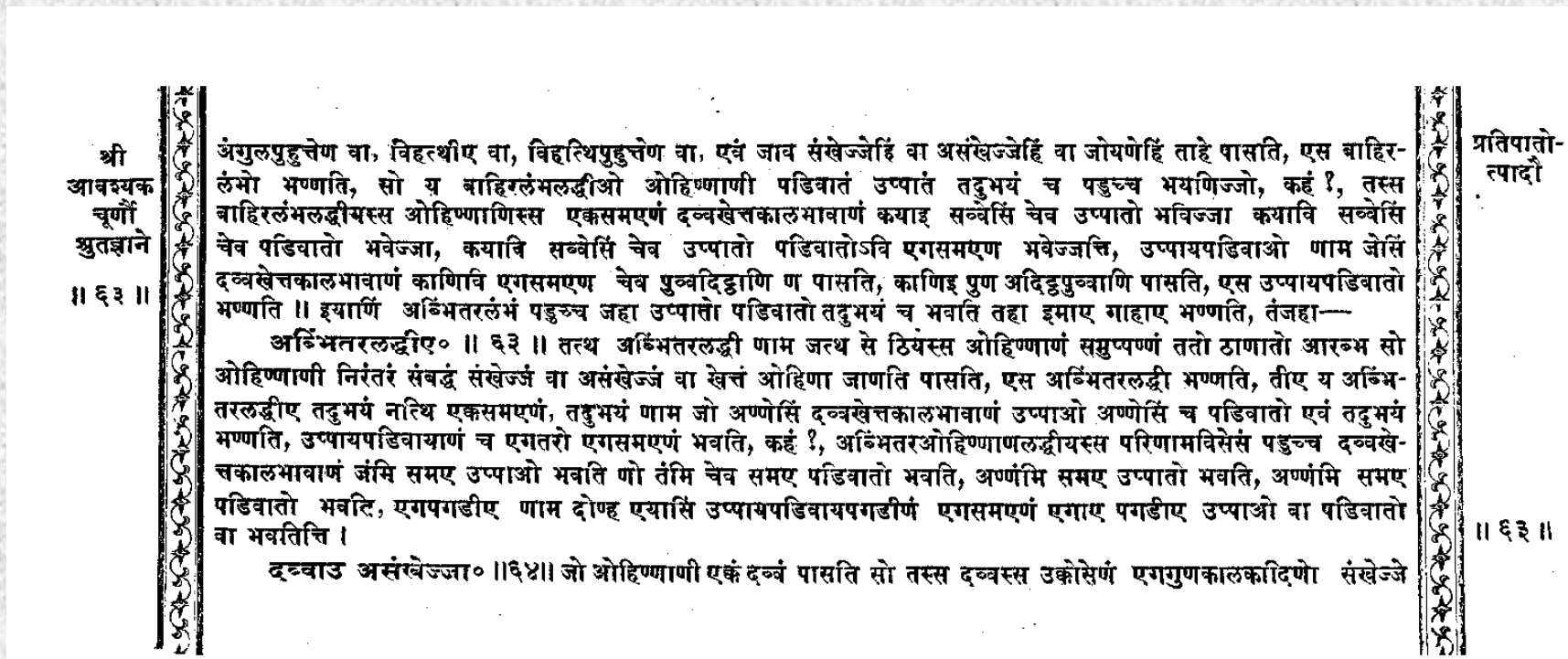
◆ अत्र निर्युक्ति-क्रम ६० वर्तते, मुद्रण-दोषात् ६१ इति मुद्रितम्

चिंत्यं, ते य फड्डगा एगजीवस्स संखेज्जा वा होज्जा असंखेज्जा वा होज्जा, जया य सो ओहिण्णाणी एगंमिवि फड्डए उवउत्तो भवति तदा नियमा सव्वेसु चेव फड्डएसु उवउत्तो भवति, एतेसिं फड्डगाणं अण्णोऽण्णं फड्डगं पडुच्च केवि फड्डया विसुद्धा केइ पुण तओ विसुद्धतरगा केई पुण तओऽवि विसुद्धतमा भवंतित्तिकाऊणं ते फड्डया तिव्वा भण्णंति, तहा तेसिं चेव फड्डयाणं अण्णोऽण्णं फड्डगं पडुच्च केइ फड्डगा अविसुद्धा केइ पुण ततो अविसुद्धतरगा केइ पुण ततो अविसुद्धयमा भवंतित्तिकाऊणं ते फड्डगा मंदा भण्णंति । देवाण णारगाण य तित्थगरस्स य देवभविएण ओहिणा अपरिवडिएण चेव काऊणं फड्डगा, ओहियभावं पडुच्च तिव्वमंदा फड्डगा सव्वहा चेव णत्थि, मणुयतिरियाण पुण ते तिव्वमंदा फड्डगा छव्विहभेदा इमे, तंजहा—

फड्डा य आणुगामी ॥ ६१ ॥ मणुयतिरियाणं फड्डगा केइ आणुगामिया केइ अणाणुगामिया केइ मीसगा केइ पडिवादी केइ अपडिवादी केइ पडिवाईअप्पडिवाई य, तत्थ आणुगामिया णाम जे तावोहिण्णाणी अण्णत्थवि गच्छमाणमणुगच्छंति ते आणुगामिया भण्णंति, जे पुण णाणुगच्छंति ते अणाणुगामिया भण्णंति, जेसिं पुण फड्डगाणं किंचि अणुगच्छंति किंचि णाणुगच्छंति ते मीसगा भण्णंति, जेसिं पुण तिरियमणुयाणं फड्डगाणं उप्पज्जेऊण पुणो सव्वहा चेव ण भवंति ते पडिवाई भण्णंति, जे ण पडंति ते अपरिवाडी भण्णंति, जेसिं पुण फड्डगाणं किंचि पडिवडति किंचि ण पडिवडति ते पडिवातिअपडिवातित्तेण मीसगा भण्णंति । तिव्वमंदात्ति दारं गतं ॥ इदाणिं पडिवाउप्पातत्ति दारमागतं, तंजहा--

बाहिरलंभे भज्जा० ॥ ६२ ॥ तत्थ बाहिरलंभग्गहणेणं अब्भितरलंभोऽवि सूयितो चेव, सो य बाहिरलंभो नाम जत्थ से ठियस्स ओहिण्णाणं समुप्पण्णं तंमि ठाणे सो ओहिण्णाणी ण किंचि पासति, तं पुण ठाणं जाहे अंतरियं होति, तंजहा-अंगुलेण वा

॥ ६२ ॥



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६३ ॥

अंगुलपुहुत्तेण वा, विहत्थीए वा, विहत्थिपुहुत्तेण वा, एवं जाव संखेज्जेहिं वा असंखेज्जेहिं वा जोयणेहिं ताहे पासति, एस बाहिर-लंभो भण्णति, सो य बाहिरलंभलद्धीओ ओहिण्णाणी पडिवातं उप्पातं तदुभयं च पडुच्च भयणिज्जो, कहं ?, तस्स बाहिरलंभलद्धीयस्स ओहिण्णाणिस्स एकसमएणं दव्वखेत्तकालभावाणं कयाइ सव्वेसिं चेव उप्पातो भविज्जा कयावि सव्वेसिं चेव पडिवातो भवेज्जा, कयावि सव्वेसिं चेव उप्पातो पडिवातोऽवि एगसमएण भवेज्जत्ति, उप्पायपडिवाओ णाम जेसिं दव्वखेत्तकालभावाणं काणिवि एगसमएण चेव पुव्वदिट्ठाणि ण पासति, काणिइ पुण अदिट्ठपुव्वाणि पासति, एस उप्पायपडिवातो भण्णति ॥ इयाणिं अब्भितरलंभं पडुच्च जहा उप्पातो पडिवातो तदुभयं च भवति तहा इमाए गाहाए भण्णति, तंजहा—

अब्भितरलद्धीए० ॥ ६३ ॥ तत्थ अब्भितरलद्धी णाम जत्थ से ठियस्स ओहिण्णाणं समुप्पण्णं ततो ठाणातो आरब्भ सो ओहिण्णाणी निरंतरं संबद्धं संखेज्जं वा असंखेज्जं वा खेत्तं ओहिणा जाणति पासति, एस अब्भितरलद्धी भण्णति, तीए य अब्भि-तरलद्धीए तदुभयं नत्थि एकसमएणं, तदुभयं णाम जो अण्णेसिं दव्वखेत्तकालभावाणं उप्पाओ अण्णेसिं च पडिवातो एवं तदुभयं भण्णति, उप्पायपडिवायाणं च एगतरो एगसमएणं भवति, कहं ?, अब्भितरओहिण्णाणलद्धीयस्स परिणामविसेसं पडुच्च दव्वखे-त्तकालभावाणं जंमि समए उप्पाओ भवति णो तंमि चेव समए पडिवातो भवति, अण्णंमि समए उप्पातो भवति, अण्णंमि समए पडिवातो भवति, एगपगडीए णाम दोण्ह एयासिं उप्पायपडिवायपगडीणं एगसमएणं एगाए पगडीए उप्पाओ वा पडिवातो वा भवतित्ति ।

दव्वाउ असंखेज्जा० ॥६४॥ जो ओहिण्णाणी एकं दव्वं पासति सो तस्स दव्वस्स उक्कोसेणं एगगुणकालकादिणो संखेज्जे

प्रतिपातो-त्पादौ

॥ ६३ ॥

वा असंखेज्जे वा पज्जवे ओहिणा लभइ, अणंते पज्जवे न लभति, लभति णाम पासतित्ति वुत्तं भवति, पज्जवग्गहणेण य तस्स दव्वस्स वण्णगंधरसफासा गहिता भवंति, सो य एगदव्वदंसी ओहिण्णाणी तस्स एक्कस्स दव्वस्स जहण्णेण दो पज्जवे दुगुणिते पासति, दुगुणियग्गहणेण य चउण्हं गहणं कतं, किं कारणं?, जेण दोण्णि चेव दुगुणिज्जमाणे चउरो भवंति, अतो दुगुणितग्गहणेण चउण्हं गहणं कयंति, ते य चउरो पज्जाया इमे-वण्णं गंधं रसं फासं, तेसिं पुण वण्णगंधरसफासाणं जे एगगुणकालगाइणो पज्जाया ते सो एगदव्वदंसी ओहिण्णाणी न पासतित्ति, एवमेतं पडिवातोप्पातात्ति दारं गतं ॥ इयाणिं णाणदंसणविभंगं च एते तिण्णिऽवि दाराइं इमाए गाहाए भण्णंति, तंजहा--

सागारमणागारा० ॥ ६५ ॥ तत्थ तिव्वमंदातीणि कारणाणि पडुच्च तिरियमणुयाण ओहिण्णाणं ओहिदंसणं विभंगणाणं च विसओ अतुल्लो एतेसिं भणितोच्चिकाऊण इहं ण भणितो। एत्थ पुण णेरइया देवा व पडुच्च जेसिं ओहिण्णाणं ओहिदंसणं विभंगणाणं च तुल्लं भवति ते भण्णंति, तत्थ सागारग्गहणेणं ओहिण्णाणस्स गहणं कतं, अणागारग्गहणेणं ओहिदंसणस्स गहणं कतं, विभंगग्गहणेणं विभंगणाणस्स गहणं कयं, तत्थ विभंगणाणं णाम तं चेव ओहिण्णाणं मिच्छादिट्ठिस्स वितहभावगाहित्तणेण विभंगणाणं भण्णति, तत्थ जहण्णयग्गहणेणं खेत्तकालाणं गहणं कतं, ते य खेत्तकाला णेरइएहिंतो आरब्भ तिरियमणुए मोत्तुं जाव उवरिमगेविज्जगा देवा, एत्थ जे जे तुल्लट्ठितीया तेसिं ओहिण्णाणं ओहिदंसणं विभगणाणं च पडुच्च विसओ तुल्लो भवति, दव्वभावविसओ पुण तुल्लट्ठितीणंपि एतेसिं सम्मदंसणं पडुच्च विसुद्धतवोकम्माईणि य कारणाणि य पडुच्च अतुल्लो भवति, उवरिमगेविज्जगाणं च परेण खेत्तं कालं च पडुच्च ओहिणाणओहिदंसणाणं विसओ असंखेज्जो भवति, दव्वपज्जवेसु पुण

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६५ ॥

ओहिण्णाणओहिदंसणाणं विसओ अणंतो भवतीति ॥ ओहिण्णाणओहिदंसणविभंगाणि य एते तिण्णिऽवि दारा गता ।

अण्णे पुण भणंति-इयाणिं नाणदंसणविभंगोत्ति दारं, तत्थ 'सागारमणागारा' गाहा, सागारंति णाणं, तं पुण ओहिण्णाणं गहितं, अणागारग्गहणेण ओहिदंसणं गहितं, ते सागारपज्जवा य अणागारपज्जवा य ओहिविभंगाणं जहण्णगा तुल्ला जाव गेवज्जा, तेण परं उवरिमगेविज्जेसु परेणं खेत्ततो य कालतो य असंखेज्जा, दव्वपज्जवेसु अणंता । इदाणिं देसोत्ति दारमागतं ।

णेरइय देव तित्थंकरा य० ॥ ६६ ॥ णेरइया देवा तित्थंकरा य एते तिण्णिवि ओहिण्णाणस्स अबाहिरा भवति, अबाहिरा णाम ओहिण्णाणवत्थियाउत्ति वुत्तं भवति, ते य णेरइय देव तित्थंकरा य ओहिणाणस्स मज्झवत्थितत्तेण सव्वओ समंता पासंति, जे पुण सेसया तिरियमणुया ते देसेणवि पासंतित्ति ॥ देसित्ति दारं गतं ॥ इदाणिं खेत्तोत्ति दारमागतं, तंजहा—

संखेज्जमसंखेज्जा० ॥ ६७ ॥ संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि ओही पुरिसमबाधा य भवति, अबाहा णाम पुरिसस्स य ओहीए य जं अंतरं सा अबाधा भण्णति, सो पुण ओही दुविहो भवति, तंजहा-संबद्धो य असंबद्धो य, जो य संबद्धो सो सरीरातो आरब्भ णिरंतरं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणति पासइ, जोऽवि असंबद्धो सोऽवि संखेज्जाणि वा असेखज्जाणि वा जोयणाइं सरीरातो अन्तरित्ता तत्तो परेण पासति, आरेण ण पासतित्ति । एत्थ संबद्धे असंबद्धे य ओहिण्णाणे चउभंगो भवति, तंजहा-पुरिसे संबद्धो लोगंते असंबद्धो १ लोगंते संबद्धो पुरिसे असंबद्धो २ अण्णो लोगंतेऽवि संबद्धो पुरिसेऽवि संबद्धो ३ अण्णो दोसुवि असंबद्धो४, जो पुण अलोगस्स अप्पमवि पासति सो पुरिसे णियमा संबद्धो ओही णायव्वोत्ति ॥ खेत्तत्ति दारं गतं ॥ तं पुण ओहिण्णाणं इमेहिं णवहिं दारेहिं अणुगन्तव्वं, तंजहा—

देशक्षेत्र-द्वारे

॥ ६५ ॥

संतपयपरूवणया० ॥ १३ ॥ तत्थ संतपयपरूवणा णाम जहा कोइ सीसो कंचि आयरियं पुच्छिज्जा-भगवं ! एतं ओहिणाणं किं अत्थि णत्थित्ति ?, आयरिओ आह—नियमा अत्थि, सीसो आह-जदि अत्थि तो कहिं मग्गितव्वं ?, आयरिओ आह—इमेहिं ठाणेहिं मग्गितव्वं—

गइ इंदिए य काए० ॥ १४ ॥ भासगपरित्त० ॥ १५ ॥ तत्थ पढमं गतित्ति दारं, ताए चउव्विहाएऽवि गतीए ओहिणाणं पुव्वपडिवण्णओ य पडिवज्जमाणो य दोऽवि अत्थि । गतित्ति दारं गतं, इयाणिं इंदियत्ति दारमागतं--तत्थ एगिंदिया बि० ति० चतु० ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ, पंचिंदिएसु पुण पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ य दोऽवि अत्थि, इंदिएत्ति दारं गतं । इदाणिं काययोगवेदकसायलेसासम्मत्तपज्जवसाणा एए छप्पि दारा जहाभिणिबोहियणाणे भणिया तहा भाणियव्वा ओहिअभिलावेणंति । इदाणिं णाणेत्तिदारं आगतं, तंजहा—ओहिणाणं किं णाणी पडिवज्जति उदाहु अण्णाणी ?, एत्थ दो णया समोतरंति, तंजहा—णेच्छइए य ववहारिए य, निच्छयनयस्स णाणी पडिवज्जाति, पुव्वपडिवण्णओवि णाणी चेव होज्जा, ववहारियणयस्स णाणी वा पडिवज्जति अण्णाणी वा, जति णाणी पडिवज्जति किं आभिणिबोहियणाणी पडिवज्जति सुत० ओहि० मणपज्जवणाणी पडिवज्जति ?, तत्थ आभिणिबोहियणाणसुयणाणिणो वट्टमाणसमयं पडुच्च ओहिण्णाणे पुव्वपडिवण्णगा वा होज्जा पडिवज्जमाणगा वा, सम्मत्तसमुप्पत्तिकालातो पुण ओहिण्णाणी पुव्वपडिवण्णओ णत्थि, पडिवज्जमाणओ पुण आभिणिबोहियणाणसुतओहिणाणाणि कोइ जुगवं चेव पडिवज्जेज्जा, ओहिण्णाणी ओहिण्णाणउप्पत्तिसमकालमेव पडिवज्जमाणओ भवति, ततो उप्पत्तिकालतो पच्छा पुव्वपडिवण्णओ लब्भति, मणपज्जवणाणी जीवो ओहिण्णाणे

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, केवलणाणं ण वा पुव्वपडिवन्नतो ण वा पडिवज्जमाणतो। णाणत्ति दारं गतं। इयाणिं दंसणेत्ति दारमागतं। तत्थ चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिणाणं पुव्वपडिवन्नओ वाऽवि पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, ओहिदंसणी उप्पत्तिसमकालमेव पडिवज्जमाणओ भवति, उप्पत्तिकालाओ पच्छा पुव्वपडिवन्नओ लब्भइ, केवलदंसणी न वा पुव्वपडिवन्नओ न वा पडिवज्जमाणओ । दंसणत्तिदारं गतं । इयाणिं संजमत्ति दारमागतं, तत्थ ओहिण्णाणं संजतो असंजतो संजतासंजतो य एते तिन्निऽवि पुव्वपडिवन्नगा पडिवज्जमाणगा वा होज्जा, संजमेत्ति दारं गतं। उवओगआहारभासगपरित्ता एते चउरोऽवि दारा जहा आभिनिबोधिते तहेव भाणियव्वा ओहिअभिलावेणंति। इयाणिं पज्जत्तएत्ति दारमागतं, तत्थ पज्जत्तओ पुव्वपडिवन्नओ वा पडिवज्जमाणओ वा ओहिण्णाणं दोसुवि भवेज्जा, अपज्जत्तओ ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ, पज्जत्तियात्तिदारं गतं। इयाणिं सुहुमे सन्निभवसिद्धियचरिमा एते चउरोवि दारा जहा आभिणिबोहियणाणे भणिता तहा ओहिअहिलावेण निरवसेसा भाणियव्वा । संतपयपरूवणत्ति दारं गतं॥ इयाणिं दव्वपमाणादीणि भाणियव्वाणि, ताणि दव्वपमाणादीणि अप्पाबहुकपज्जवसाणाणि अट्ठवि दाराणि जथा आभिणिबोहियणाणे भणितानि तहेव निरवसेसाणि ओहिअहिलावेण भावियव्वाणित्ति ।

इयाणिं तमोहिन्नाणं समासतो चउव्विहं भवति, तंजहा-दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो, दव्वओ णं ओहिन्नाणी रूविदव्वाणि जाणति पासति, खेत्तओ णं ओहिन्नाणी जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं असंखेज्जाइं खंडाइं ओहिणा जाणति पासति, कालओ णं ओहिन्नाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं असंखेज्जाओ

॥ ६७ ॥

ओसप्पिणिओ तीतं च अणागतं च कालं ओहिणा जाणति पासति, भावतो णं० अणंते पज्जवे जाणति पासति, सव्वपज्जवाणं अणंतभागं । एवमेतं ओहिन्नाणं चोद्दसपगडिभेदं सम्मत्तं ॥ ओहिन्नाणरिद्धिअवसरे चेव आमोसधिमादीयायोऽवि रिद्धीओ जीवाण भवंतित्तिकाऊण इड्ढिपत्ताणुओगस्स अवसरो आगतो, सो य इड्ढिपत्ताणुओगो इमाहिं दोहिं गाहाहिं भन्नति, तंजहा–

आमोसधि विप्पोसधि० ॥ ६९ ॥ चारण आसीविस केवली य० ॥ ७० ॥

तत्थ आमोसधी नाम रोगाभिभूतं अत्ताणं परं वा जं चेव तिगिच्छामित्ति सांचिंतेऊण आमुसति तं तक्खणा चेव ववगयरोगातंकं करोति, सा य आमोसधीलद्धी सरीरेगदेसे वा सव्वसरीरे वा समुप्पज्जतित्ति, एवमेसा आमोसहित्ति भन्नति। तत्थ विप्पोसधिगहणेण विट्ठस्स गहणं कीरइ, तं चेव विट्ठं आसहिसामत्थजुत्तत्तेण विप्पोसही भन्नति, तं च जीविए (जं चेव) विप्पोसधी य रोगाभिभूतं अप्पाणं वा परं वा छिवति तं तक्खणा चेव ववगयरोगायंकं करेति, सेत्तं विप्पोसधी, खलजल्ला पसिद्धा, तेऽवि एवं चेव ओसहिसामत्थजुत्ता कस्सति नवरिद्धिसंपन्नस्स भवंतित्ति । संभिन्नसोयरिद्धी नाम जो एगतरेणवि सरीरदेसेण पंचवि इंदियविसए उवलभति सो संभिन्नसोयत्ति भन्नति । उज्जुमतिलद्धिगहणेण य विउलमतिलद्धीऽवि गहिता चेव, तत्थ उज्जुमती नाम मणोगतं भावं पडुच्च सामण्णमेत्तग्गाहिणी मती जस्स सो उज्जुमती भन्नति, विउलमती नाम मणोगयं भावं पडुच्च सपज्जायग्गाहिणी मती जस्स सो विउलमती भन्नति, जाणि य दव्वखेत्तकालभावाणि उज्जुमती जाणति ताणि विउलमती विसुद्धतराणि वितिमिरतराणि जाणतित्ति । तत्थ सव्वोसधी नाम सव्वाओ ओसधीओ आमोसधिमादीयाओ एगजीवस्स चेव जस्स समुप्पण्णाओ स सव्वोसधी भन्नति, अहवा सव्वसरीरेण सव्वसरीरावयवेहिं वा खेलोसधिमादीहिं जो ओसहिसामत्थजुत्तो सो

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सव्वोसधी भन्नति, अहवा सव्ववाहीणं जो निग्गहसमत्थो सो सव्वोसधी भन्नति । एगाते गाथाए एसऽत्थो भणितो ।

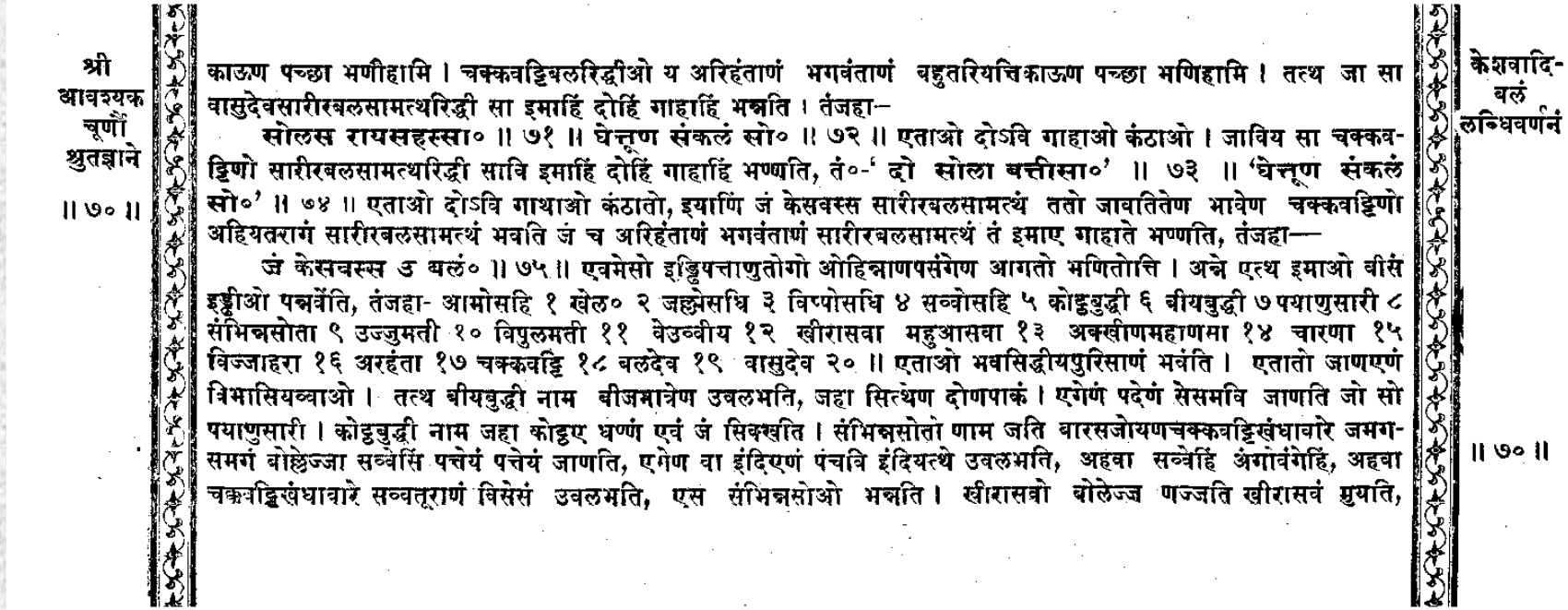
इयाणिं बितिज्जियाए गाथाए अत्थो भन्नति, तंजहा- एत्थ चारणलद्धी णाम दुविहा चारणा भवंति, तंजहा-जंघाचारणा य विज्जाचारणा य, तत्थ जंघाचारणलद्धिसंपन्नो अणगारो लूतापुडकतंतुमेत्तमवि णीसं काऊण गच्छति, विज्जाचारणलद्धीओ पुण विज्जातिसयसामत्थजुत्तयाए पुव्वविदेहअवरविदेहादीणि खेत्ताणि अप्पेण कालेण आगासेण गच्छतित्ति ॥ तत्थ आसीविसलद्धी णाम आसीविसोविव कुवितो जो देहविणिवायसामत्थजुत्तो सो आसीविसलद्धीओ भन्नतित्ति, केवलमणपज्जवणाणीपुव्वधरा अरिहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा य एतेऽवि केवलणाणादीहिं वासुदेवपज्जवसाणाहिं लद्धीहिं उववेया णायव्वा, केवलणाणादीयाओ य सिद्धाओत्तिकाऊण इहं ण भणिताओ ।

एत्थ सीसो आह- भगवं ! उज्जुमतिग्गहणेण चेव मणपज्जवणाणस्स गहणं कयं तो किमत्थं पुणो गहणं कयंति?, आयरिओ आह- तत्थ पुव्विं उज्जुमतिविउलमतिणो भेदा पडुच्च मणपज्जवणाणलद्धी परूविता, इह पुण अविसेसियस्स मणपज्जवणाणस्स गहणं कयंतिकाऊण णत्थित्थ दोसो । इयाणिं जा अरहंतचक्कवट्टिबलदेववासुदेवाणं च सारीरबलसामत्थं पडुच्च रिद्धी तं भणीहामि, जा पुण तेसिं अणुवमरूवपण्णासोहग्गसत्तमातीयाओ रिद्धीओ ताओ पसिद्धाओत्तिकाऊण इहं ण भण्णंति, तत्थ पुव्वं वासुदेवस्स सारीरबलसामत्थरिद्धिं भणीहामि । तीए पुव्विं भणिताए बलदेवस्स सरीरबलसामत्थरिद्धी वासुदेवसारीरबलसामत्थरिद्धीतो अद्धप्पमाणा सुहग्गहणतरिका भविस्सति, वासुदेवस्स य सारीरबलसामत्थरिद्धीए चक्कवट्टिस्स बलरिद्धी अहियतरियत्ति-

'मन:पर्यव'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]



श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ७० ॥

काऊण पच्छा भणीहामि । चक्कवट्टिबलरिद्धीओ य अरिहंताणं भगवंताणं बहुतरियत्तिकाऊण पच्छा भणिहामि । तत्थ जा सा वासुदेवसारीरबलसामत्थरिद्धी सा इमाहिं दोहिं गाहाहिं भन्नति । तंजहा—

सोलस रायसहस्सा० ॥ ७१ ॥ **घेत्तूण संकलं सो०** ॥ ७२ ॥ एताओ दोऽवि गाहाओ कंठाओ । जाविय सा चक्कवट्टिणो सारीरबलसामत्थरिद्धी साविं इमाहिं दोहिं गाहाहिं भण्णति, तं०-' **दो सोला बत्तीसा०**' ॥ ७३ ॥ '**घेत्तूण संकलं सो०**' ॥ ७४ ॥ एताओ दोऽवि गाथाओ कंठातो, इयाणिं जं केसवस्स सारीरबलसामत्थं ततो जावतितेण भावेण चक्कवट्टिणो अहियतरागं सारीरबलसामत्थं भवति जं च अरिहंताणं भगवंताणं सारीरबलसामत्थं तं इमाए गाहाते भण्णति, तंजहा—

जं केसवस्स उ बलं० ॥ ७५ ॥ एवमेसो इड्ढिपत्ताणुतोगो ओहिन्नाणपसंगेण आगतो भणितोत्ति । अन्ने एत्थ इमाओ वीसं इड्ढीओ पन्नवेंति, तंजहा- आमोसहि १ खेल० २ जल्लोसधि ३ विप्पोसधि ४ सव्वोसहि ५ कोट्ठबुद्धी ६ बीयबुद्धी ७ पयाणुसारी ८ संभिन्नसोता ९ उज्जुमती १० विपुलमती ११ वेउव्वीय १२ खीरासवा महुआसवा १३ अक्खीणमहाणमा १४ चारणा १५ विज्जाहरा १६ अरहंता १७ चक्कवट्टि १८ बलदेव १९ वासुदेव २० ॥ एताओ भवसिद्धीयपुरिसाणं भवंति । एतातो जाणएणं विभासियव्वाओ । तत्थ बीयबुद्धी नाम बीजमात्रेण उवलभति, जहा सित्थेण दोणपाकं । एगेणं पदेणं सेसमवि जाणति जो सो पयाणुसारी । कोट्ठबुद्धी नाम जहा कोट्ठए धण्णं एवं जं सिक्खति । संभिन्नसोतो णाम जति बारसजोयणचक्कवट्टिखंधावारे जमगसमगं बोल्लेज्जा सव्वेसिं पत्तेयं पत्तेयं जाणति, एगेण वा इंदिएणं पंचवि इंदियत्थे उवलभति, अहवा सव्वेहिं अंगोवंगेहिं, अहवा चक्कवट्टिखंधावारे सव्वतूराणं विसेसं उवलभति, एस संभिन्नसोओ भन्नति । खीरासवो बोलेज्ज णज्जति खीरासवं भुयति,

केशवादि-बलं लब्धिवर्णनं

॥ ७० ॥

	वासुदेव आदे: लब्धि-वर्णनं

खीरासवो नाम जहा चक्कवट्टिस्स लक्खो गावीणं, ताणं जं खीरं तं अद्धद्धस्स दिज्जति, तं चातुरक्कं, एवं खीरासवो भवति । एवं महुआसवावि बुद्धयाऽपेक्ष्य परूवेयव्वा । अक्खीणमहाणसियस्स भिक्खं ण अन्नेणं णिट्ठविज्जति, तंमि जिमिते निट्ठाति । उज्जुमती । विपुलमती । तहेव इच्छितं विउव्वति वेउव्वी । चारणो दुविहो- जंघाचारणो आगासचारणो य, आगासचारणो आगासेणं जाइ, जंघाचारणो जाव रुतातंतुएणावि जाति, विज्जाधरस्स विज्जा आगासगमणा, सेसं तहेव । इयाणिं मणपज्जवणाणं भणीहामि, तस्स य मणपज्जवणाणस्स य दोन्नि भेदा भवंति, तंजहा- उज्जुमती य विउलमती य, सो य जहेव इड्ढिपत्ताणुतोगे भणितो तह चेव एत्थंपि भाणियव्वोत्ति । तं च लक्खणतो इमं, तंजहा--

मणपज्जवणाणं० ॥ ७६ ॥ एत्थ मणपज्जवणाणं णाम जेण उप्पण्णेण णाणेण मणुस्सखेत्ते सन्निजीवेहिं मणपातोग्गाणि दव्वाणि मणिज्जमाणाणि जाणति तं मणपज्जवणाणं भन्नति, एत्थ दिट्ठंतो पिहुज्जणो, जहा सो पिहुजणो अन्नो अन्नस्स कस्सइ आगारे दट्ठूणं दुमणं सुमणं वा भावं जाणति, एवं मणपज्जवणाणीवि संनीणं पंचेंदियाणं मणोगते भावे जाणति, जहा एरिसेहिं दव्वेहिं मणिज्जमाणेहिं एरिसं चिंतितं भवतित्ति । तं च मणपज्जवणाणं मणुस्साणं गब्भवक्कंतियाणं कम्मभूमगाणं संखेज्जवासाउयाणं पज्जत्तगाणं सम्मदिट्ठीणं इड्ढिपत्तमपमत्तसंजयाणं भवतित्ति । तं च मणपज्जवणाणं समासओ चउव्विहं भवति, तंजहा- दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो, तत्थ दव्वतो णं उज्जुमती अणंते अणंतपएसिते खंधे जाणति पासति, ते चेव विउलमती विसुद्धतराए वितिमिरतराए खंधे जाणति पासति, खेत्तओ णं उज्जुमती जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु, उड्ढं जाव जोतिस्सस्स उवरि तलो, तिरियं जाव अड्ढाइज्जेसु दीवेसु दोसु य समुद्देसु सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे

॥ ७१ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जाणति पासति, ते चेव विउलमती अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहिए खेत्ते विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ, कालओ णं उज्जुमती जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणऽवि पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागं तीयं च अणागयं च कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणति पासति, भावतो णं उज्जुमती अणंते भावे जाणति पासति सव्वभावाणंतभागं, ते चेव विउलमती विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति पासति । से तं मणपज्जवणाणं ॥ इयाणिं केवलनाणं भन्नति, तंजहा—

अह सव्वदव्वपरिणाम० ॥७७॥ तत्थ अहसद्दो आणंतरिए वट्टति, तत्थ आणंतरियं णाम आणंतरियंति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेति वा एगट्ठा, मणपज्जवणाणातो य अणंतरं केवलनाणं भवति, अह तस्स केवलणाणस्स अवसरो संपत्तोत्ति, तत्थ केवलसद्दो णिरवसेसिते अत्थे वट्टति, आभिणिबोहियणाणाईणिवि णाणाणि चेव भवंति, ण पुण ताणि केवलाणि नाम संपुन्नाइंति वुत्तं भवति, एत्थ दिट्ठंतो कद्दमोदगं, जहा कद्दमोदकस्स कयकफलादिणा दव्वेण अच्छता भवति, सा य अच्छता काइ विसुद्धा, कावि ततोऽवि विसुद्धतरा, कावि पुण ततो विसुद्धतमा भवति, एवं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खतोवसमेण आभिनिबोहियसुयणाणाणि उप्पज्जंति, ततो विसुज्झमाणस्स ओहिन्नाणं उप्पज्जति, ततो विसुज्झमाणस्स मणपज्जवणाणं उप्पज्जति, ततो णाणावरणदंसणावरणमोहणिज्जअंतरायाणं चउण्हवि कम्माणं णिरवसेसक्खतेण अविगप्पं एगं चेव केवलनाणं समुप्पज्जति । जे य आभिनिबोहियणाणादयो विगप्पा ते तस्स केवलणाणिणो ण हवंति, कस्सति पुण ओहिन्नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे अकतेऽवि मणपज्जवणाणं उप्पज्जति, पच्छा ओधिणाणावरणखतोवसमं काऊण ओहिन्नाणं उप्पाडेति, ततो केवलणाणावरणक्खयं

'केवल'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

काऊण केवलणाणमुप्पाडेंतीत्ति । कोवि पुण ओहिमणपज्जवणाणाणि अपाविऊण चेव केवलणाणमुप्पाडेति । अतो केवलणाणं चेव निच्छयणयस्स वत्तव्वयाए आवरणं पडुच्च आभिणिबोहियणाणादीणि णामाणि लब्भति । तं चेव केवलणाणं सव्वदव्वाणं परिणामस्स सव्वभावाणं च परिणामस्स विन्नत्तिकारणं भवति, एगगहणे गहणं तज्जातीयाणं सव्वेसिंतिकाऊण दव्वभावग्गहणेण सव्वखेत्तपरिणामस्स सव्वकालपरिणामस्स य दोण्हवि विन्नत्तिकारणं भवति । जम्हा य सव्वदव्वखेत्तकालभावाणं चउण्हवि सव्वपरिणामाणं विन्नत्तिकारणं भवति अतो तं केवलणाणं अणंतं दट्ठव्वंति । तत्थ सव्वदव्वपरिणामो णाम, दव्वं दुविहं भवति, तंजहा- जीवदव्वं अजीवदव्वं च, तस्स दुविहस्सावि दव्वस्स जो उप्पायट्ठितिभंगेहिं पज्जायभावो सो दव्वपरिणामो भन्नति, तत्थ खेत्तगहणेण आगासत्थिकायस्स गहणं कयं, तस्स खेत्तपरिणामो परप्पच्चइओ पोग्गलत्थिकायादिणो दव्वे पडुच्च भवतित्ति, तत्थ कालपरिणामो णाम समयावलियमुहुत्तादी अणेगभेदो भवति, भावपरिणामो णाम एगगुणकालादी अणंगभेदो दट्ठव्वोत्ति । एतेसिं चउण्हवि दव्वखेत्तकालभावाणं जो परिणामो तस्स सव्वपरिणामस्स विन्नत्तिकारणमणंतं केवलणाणं भवतित्ति । तत्थ विन्नत्तिकरणं नाम विन्नत्तिकारणंति वा जाणितव्वगसामत्थजुत्तंति वा विन्नत्तिहेउभूयंति वा एगट्ठा, जहा य केवलणाणं अणंतं भवति तहा सासतं अपडिवाती एगविहं च भवति । तत्थ एगविहं णाम आभिणिबोहियनाणादीभेदाविउत्तंति वुत्तं भवति, एत्थ सीसो आह- जमेतं दुवालसंगं गणिपिडगं एयं केवलणाणोवलद्धंति काऊण कहं केवलं चेव ण भवति ?, आयरितो आह–

केवलणाणेणऽत्थे० ॥ ७८ ॥ दुविहा भावा भवंति, तंजहा-अभिलप्पा य अणभिलप्पा य, तत्थ जे ते अणभिलप्पा ते ण चेव अभिलविऊण सक्कंतित्तिकाऊण तेसु अधिकारो चेव णत्थि, जे ते पुण अभिलप्पा ते दुविहा भवंति, तंजहा- पण्णवणिज्जा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अपण्णवणिज्जा य, तत्थ जे ते अपन्नवणिज्जा तेसु ण चेव अहिगारो अत्थित्ति, जे पुण पण्णवणिज्जा भावा ते केवलणाणेण पासिऊण तित्थकरो तित्थकरनामकम्मोदतेण सव्वसत्ताणं अणुग्गहनिमित्तं भासति, जं च सो भगवं भासति तं वतिजोगजुत्तत्तणेण सुयणाणं भवति, जं च पुण सेसं केवलणाणोवलद्धं ण चेव भासति तं केवलणाणं दट्ठव्वंति ॥

तं च केवलणाणं सामित्तं पडुच्च दुविहं भवति, तंजहा- भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च, तत्थ भवत्थकेवलणाणं नाम जं मणुस्सभवे चेव अवत्थितस्स चउहिं घातिकम्मेहिं खीणेहिं समुप्पज्जति, तं जाव चउरो केवलिकम्मा अक्खीणा ताव भवत्थकेवलणाणं भन्नति, जं पुण केवलिकम्मेहिं खीणेहिं सिद्धस्स तं सिद्धकेवलणाणं भन्नति, तत्थ जं तं भवत्थकेवलणाणं तं दुविहं, तंजहा- सजोगिभवत्थकेवलणाणं च अजोगिभवत्थकेवलणाणं च, तत्थ सजोगिग्गहणेण केवलणाणसमुप्पत्तीओ आरब्भ जाव पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं ण पडिवज्जति ताव सयोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, जाहे पुण पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं पडिवन्ने भवति ताहे अजोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, तत्थ जं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं तमवि दुविहं भन्नति, तंजहा-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, तत्थ पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं णाम जंमि चेव समये केवलणाणमुप्पन्नं तंमि चेव तस्स केवलणाणस्स पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणंति सन्ना भवति, ततो य केवलणाणुप्पत्तिपढमसमयातो जो बीतो अणंतरसमतो ततो आरब्भ जाव पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं ण पडिवज्जति ताव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, तहा एयस्स चेव सजोगिभवत्थकेवलणाणस्स अन्ने इमे दुए भेदा भवंति, तंजहा- चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, तत्थ चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं णाम जातो समयातो अणंतरं

पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं पडिवज्जति सो य सजोगिभवत्थकेवलणाणिस्स चरमसमयो भन्नति, तंमि य समये वट्टमाणस्स केवलिस्स जं केवलणाणं तं चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं भन्नति, तातो य सजोगिचरिमसमयाओ आरब्भ जो से अतीतो कालो जाव केवलणाणुप्पत्तिपढमसमयो एत्थ अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, से तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं। तत्थ जं तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं०, से तं भवत्थकेवलनाणं॥

से किं तं सिद्धकेवलणाणं?, सिद्धकेवलणाणं दुविहं भवति, तंजहा-अणंतरसिद्धकेवलणाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च, तत्थ अणंतरसिद्धकेवलणाणं णाम जंमि समते एगो केवली सिद्धो ततो जो अणंतरो बितीओ समतो तंमि अन्नो केवली सिद्धो तस्स केवलिस्स जं णाणं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं भन्नति, तं च पन्नरसविहं, तंजहा-तित्थसिद्धकेवलणाणं अतित्थसिद्ध० तित्थगरसिद्ध० अतित्थकर० सयंबुद्ध० पत्तेयबुद्ध० बुद्धबोहिय० इत्थिलिंगसिद्ध० पुरिस० णपुंसकलिंग० अन्नलिंग० गिहिलिंग० एगसिद्ध० अणेगसिद्धकेवलणाणंति। तत्थ तित्थसिद्धकेवलणाणं णाम जे तित्थगराणं तित्थे सिद्धा तेसिं जं णाणं तं तित्थसिद्धकेवलणाणं भन्नति, अतित्थसिद्ध० णाम जे तेसिं तित्थगराणं तित्थातो तित्था ण मिलिता तत्थ तित्थंतरे च वट्टमाणे जे सिद्धा तेसिं जं केवलणाणं तं अतित्थसिद्धकेवलणाणं भन्नति, तित्थगरसिद्धकेवलणाणं जहा उसभादीणं, अतित्थगरसिद्धकेवलनाणं जहा भरहादीणं, सयंबुद्धकेवलनाणं जं सयं चेव संबुज्झिऊणं किंचि आयरियं उवसंपज्जति ततो पच्छा जं तस्स केवलणाणं तं सयंबुद्धकेवलणाणं भण्णति, पत्तेयबुद्धकेवलणाणं णाम जहा णमिस्स रायरिसिणो, ते य पत्तेयबुद्धा सयं चेव संबुज्झिऊण सयं चेव पव्वज्जं अब्भुवगच्छंति तेसिं जं केवलणाणं तं पत्तेयबुद्धकेवलणाणं भन्नति, अथवा सयं-अप्पणिज्जं जातिस्सरणादिकारणं पडुच्च बुद्धा सयंबुद्धा, फुडतरं

॥ ७५ ॥

वा अभिधीयते, बाह्यप्रत्ययमंतरेण ये प्रतिबुद्धास्ते सयंबुद्धाः, ते य दुविहा- तित्थगरा यइरित्ता य, इह यतिरित्तेहिं अहिगारो, किंच- सयंबुद्धस्स बारसविहोऽवि उवही भवति, पुव्वाधीतं से सुतं भवति वा ण वा, जति से णत्थि तो लिंगं नियमा गुरुसंनिहे पडिवज्जति गच्छे य विहरति, अहवा पुव्वाधीतसुयसंभवो अत्थि तो से लिंगं देवता पयच्छति गुरुसंनिहे वा पडिवज्जति, जदि य एगविहारविहरणजोग्गो इच्छा य से तो एगो चेव विहरति, अन्नहा गच्छे विहरति, एयम्मि भावे ठिता सिद्धा, पती पती (पत्तेयत्ता) ओ वा भावतो सिद्धा पत्तेयबुद्ध०, पत्तेयं बाह्यं वसभादिकारणमभिधीक्ष्य बुद्धा पत्तेयबुद्धा, एतेसिं णियमा पत्तेयं विहारो जम्हा तम्हा ते पत्तेयबुद्धा, जहा करकंडुमादयो, किंच-पत्तेयबुद्धाणं जहन्नेण दुविहो उक्कोसेण णवविहो उवधी णियमा पाउरणवज्जो भवति, किंच-पत्तेयबुद्धाणं नियमा पुव्वाधीतं सुतं भवति, जहन्नेण एक्कारसंगी उक्कोसेण भिन्नदसपुव्वी, लिंगं च देवया पयच्छति लिंगवज्जितो वा भवति । जतो भणितं 'रुप्पं पत्तेयबुद्धा' इति । बुद्धबोहियकेवलणाणं णाम जं संभं सोऊण वेरग्गतवजुत्तस्स भवति तं बुद्धबोहियकेवलणाणं भन्नति, इत्थिलिंगेण सिद्धाणं जं नाणं तं इत्थिलिंगसिद्धकेवलणाणं, एवं पुरिसणपुंसएसुवि भाणियव्वं, तहा सलिंगसिद्धाण जं णाणं तं सलिंगसिद्धकेवलणाणं भन्नति, अन्नलिंगसिद्धकेवलणाणं णाम जं अन्नलिंगेण सम्मत्तं पडिवन्नस्स केवलणाणं समुप्पज्जति, समुप्पत्तिकालसमयमेव कालं करेति तं अन्नलिंगसिद्धकेवलणाणं भन्नति, सो य अन्नलिंगिकेवली जति आउयमप्पणो अपरिक्खीणं पासति ततो साधुलिंगं चेव पडिवज्जतित्ति । गिहिलिंगसिद्धकेवलणाणं णाम जहा कस्सति गिहिणो चेव सम्मत्तं पडिवन्नस्स केवलणाणं उप्पज्जेज्जा, समुप्पत्तिकालसमयमेव कालं करेज्जा तस्स जं णाणं तं गिहिलिंगसिद्धकेवलणाणं भन्नति, एगसिद्धकेवलणाणं नाम जंमि समये सो सिद्धो न तंमि अन्नो कोइ सिद्धोत्तिकाऊण तस्स जं नाणं तं एगसिद्धकेवलनाणं

भण्णति, अणेगसिद्धकेवलनाणं नाम जंमि समए सो सिद्धो तंमि समये अन्नेऽवि सिद्धा एतेसिं जं णाणं तं अणेगसिद्धकेवलणाणं भन्नति। एवमेतं अणंतरसिद्धकेवलणाणं भन्नतीत्ति ॥

तत्थ परंपरसिद्धकेवलणाणं अणेगविहं भवति, तंजहा-अपढमसमयसिद्धकेवलणाणं एवं दुसमय जाव दससमय० संखेज्जसमय० असंखेज्जसमय० अणंतसमयसिद्धकेवलणाणंति। तत्थ अपढमसमयसिद्धकेवलणाणं णाम अत्थि ते सिद्धा जे अन्नस्स सिद्धस्स सिज्झणकालातो अपढमिल्ले समये सिद्धा तेसिं जं केवलनाणं तं अपढमसमयसिद्धकेवलणाणं भन्नति, तहा अत्थि ते सिद्धा जे अन्नस्स सिद्धस्स सिज्झणकालातो बितिए समए सिद्धा तेसिं जं केवलणाणं तं दुसमयसिद्धकेवलणाणं भन्नति, एवं जाव अत्थि ते सिद्धा जे अन्नस्स सिद्धस्स सिज्झणकालातो अणंततिमे समये सिद्धा तेसिं जं णाणं तं अणंतसमयसिद्धकेवलनाणं भन्नति। सेत्तं परंपरसिद्धकेवलणाणं। से तं सिद्धकेवलनाणं ॥ तं च केवलणाणं समासतो चउव्विहं भवति, तंजहा-दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो, दव्वतो णं केवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणति पासति, खेत्तओ णं केवलनाणी सव्वखेत्तं जाणति पासति, कालओ णं केवलनाणी सव्वकालं जाणति पासति, भावतो णं केवलणाणी सव्वभावे जाणति पासति। सेत्तं केवलणाणं। एवमेतं पच्चक्खणाणं तिविहमवि भणितं, वन्निया य पंचविहावि आभिणिबोहियणाणाती केवलणाणपज्जवसाणा भावणंदित्ति ॥ भावनंदी समत्ता ॥

एवमेताइं आभिनिबोहियणाणादीणि पंच णाणाइं भावमंगलणिमित्तं परूवियाइं। एत्थ पुण सुयणाणेणं अधीगारो, कम्हा ?, जम्हा सुयणाणे उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुतोगो य पवत्ततित्ति, अहवा जम्हा सुयणाणेण अवसेसाणि णाणाणि णज्जंति परूविज्जंति वा तम्हा सुयणाणेण अधीगारो। अहवा चत्तारि णाणाणि ससमुत्थाणि इमं परसमुत्थं तेणं तस्स अधिकारो ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

जति सुयणाणेण अधिगारो तो उद्देसादीणि एयस्स पवत्तंति, तो किं अंगपविट्ठस्स अंगबाहिरस्स ?, दोण्हवि, इमं पुण पडुच्च अंगबाहिरस्स, जति अंगबाहिरस्स तो किं आवस्सगस्स आवस्सगवतिरित्तस्स?, दोण्हवि, इमं पुण पडुच्च आवस्सगस्स अणुतोगो, आवस्सगस्स किं अंगं अंगाइं सुअक्खंधो सुयखंधा अज्झयणं अज्झयणाइं उद्देसो उद्देसा ?, आवस्सगं णं णो अंगं णो अंगाइं सुयक्खंधो णो सुयक्खंधा णो अज्झयणं अज्झयणा णो उद्देसो णो उद्देसा, तम्हा आवस्सगं णिक्खिविस्सामि सुयं णिक्खिविस्सामि खंधं णिक्खिविस्सामि ।

से किं तं आवस्सयं ?, आवस्सगं समासतो चउविहं-णाम० ठवणा० दव्व० भाव०, णामावस्सयं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा आवस्सएत्ति णामं कीरति, से तं णामावस्सगं । से किं तं ठवणावस्सगं ?, २ जन्नं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा सब्भावओ असब्भावओ वा आवस्सएत्ति ठवणा ठप्पति सेत्तं ठवणावस्सगं । से किं तं दव्वावस्सगं ?, दव्वावस्सगं दुविहं, तंजहा-आगमओ य णोआगमओ य, आगमओ जस्स णं आवस्सएत्तिपदं सिक्खितं ठितं इच्चादि, सिक्खितं नाम जं अंतं पत्तं, ठितं णाम जं से ठितं हियये, जितं नाम जं मूले घेत्तूण अग्गं पावेति, मितं णाम जं अक्खरेहिं पदेहिं सिलोगेहिं मितं-एत्तियाइं ताइं, परिजितं नाम जं मूलाओ अग्गं पावेति अग्गाओ य मूलं पावेति, णामसमं णाम जहा अप्पणो णामं एवं तंपि अज्झयणं, घोससमं उदत्तअनुदत्तस्वरितकंपितद्रुतविलंबितविश्लिष्टापेक्षस्वरानियतं, उच्चैरुदात्तं जहा उप्पज्जेति वा भूएत्ति वा, अणुदत्तं उप्पज्जेति वा भूएति वा, सयाहारे उप्पन्नभूयपरिणया, हीणक्खरं उदाहरणं—दव्वे अगारीए पुत्तस्स ओसहं ऊणं दित्तं, भावे विज्जाहरो, 'रायगिहे' गाहा० अच्चक्खरं उदाहरणं—दव्वे तहेव अगारी, अहिए भावे 'जो जह वट्टती०' गाहा, अहवा-'चंदगुत्त०' गाहा ।

॥ ७८ ॥

***अत्र उपोद्घात् निर्युक्ति: आरभ्यते,

***आवश्यकस्य नामादि निक्षेपा: वर्णयते

खलिते पत्थरंमी नांगूलं मिलिए धन्नरासी विच्चामेलिते कोलियपायसो 'पडिपुन्नं' पडिपुन्नघोसं कंठोट्ठविप्पमुक्कं जहा 'कप्पपेढिताए' तहा भणियव्वं । सेत्तं आगमतो ।

से किं तं णोआगमतो दव्वावस्सयं ?, २ जाणगसरीर० भवियसरीर० तव्वतिरित्तं ३ जहा णिओगदारे जा वतिरित्ते, णवरि लोउत्तरिए दव्वावस्सए इमं अ[त्थ]क्खाणगं भाणियव्वं--वसंतपुरं णगरं, तत्थ गच्छो अगीयत्थसंविग्गो विहरति, तत्थ य एगो अगीयत्थो समणगुणमुक्कजोगी, सो दिवसदेवसियं उदउल्लसासिणीद्धआहाकम्मादीणि पडिसेवित्ता महता संवेगेणालोएति, ते पुणो अगीयत्था पायच्छित्तं अयाणमाणा अहो इमो धम्मसड्ढीओ साधू, सुहं पडिसेविउं दुक्खं आलोएउं, एवं नाम एस आलोएत्ति अगूहंतो, तं दट्ठूणं ते अवसेसा पव्वइया चिंतेंति-णवरि आलोएयव्वं, णत्थित्थ किंचि पडिसेवितेणं । तत्थऽन्नदा कयाती गीयत्थो संविग्गो विहरमाणो आगतो, सो तं दिवसदेवसियं दट्ठूणं तत्थ उदाहरणं दाएति--गिरिणगरे णगरे वाणियओ रत्तरतणाणं घरं पूरइत्ता पलीवेइ, तत्थ सव्वलोगो पसंसति-अहो इमो भगवंतं अग्गिं तिप्पेइ, अन्नया कयावि तेण य पलिवितं, वायो य पबलो जातो, सव्वं णगरं दड्ढं, अन्नेहिंपि णगरे एको एवं चेव करेइ, सो राइणा सुओ जहा एवं करेतित्ति, सो य सव्वस्स हरणं काऊणं विसज्जितो, अडवीए कीस ण पलीवेसि ?, जहा तेणं वाणियएणं अवसेसावि दड्ढा, एवं तुब्भेऽवि एतं पसंसंता इमे साधुणो सव्वे परिच्चयह, एवं च एस महाणिद्धंधसो, जदि एयस्स निग्गहं ण करेह ताहे सव्वे विणस्सेहा, एयं दव्वावासतं ।

से किं तं भावावासगं ?, २ आगमतो य णोआगमतो य, आगमओ जाणओ उवउत्तो, णोआगमतो तिविहं-लोइयं लोउत्तरियं कुप्पावयणियं, जहा अणुओगदारे ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया णामधेज्जा पं०-आवस्सगंति वा अवस्सकायव्वं अवस्सकर-

॥ ७९ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

गंति वा अवस्सकरणिज्जंति वा धुवकायव्वंति वा निग्गहोत्ति वा, एत्थ गाथा फासेयव्वा, 'समणेण सावगे' एयं निरुत्तं आवस्सगस्स, सेत्तं आवस्सगं । से किं तं सुयं?, सुयं जहा अणुओगदारे, खंधोवि तहेव, एत्थ सामादियादीणं सुयविसेसाणं छण्हं खंधो सुयक्खंधो, आवस्सगं च तं सुयखंधो २ । एत्थ य छ अत्थाधिगारा सामाइयादीणं जहाजोगमणुगंतव्वा, तं०-सावज्जजोगविरती उक्कित्तण गुणवतो य पडिवत्ती । खलियस्स निंदणा वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥ आवस्सयस्स एसो पिंडत्थो वन्नितो समासेणं । एत्तो एक्केकं पुण अज्झयणं वत्तइस्सामि ॥ १ ॥

तत्थ पढमं अज्झयणं सामाइयं, तस्स इमाणि चत्तारि अणुओगदाराणि भन्नंति, तंजहा-उवक्कमो निक्खेवो अणुगमो णयो, किं णिमित्तं चत्तारि दारा कता ?, एगेणेव अणुगमेणं कीस णाणुगम्मति ?, तत्थ दिट्ठंतो-एगदुवारेण नगरेण समंततो जोयणायामेणं, जहा तत्थ एगेणं दुवारेणं कट्ठतणयादिकज्जाणं संकिलेसो भवति सव्वलोगस्स, जहा तं नगरं दुन्निक्खमणपवेसं भवति एगेणं दुवारेणं, एवं चेव सिस्सस्स दुम्मेहस्स दुक्खं एगेणं दारेणं अत्थाधिगमो भवति, तेण चत्तारि दारा कया उवक्कमादिया ।

से किं तं उवक्कमे?, उवक्कमो णासस्स अपत्तावत्थापावणं, सो पुण छव्विहो-णामोवक्कमो ठवणोवक्कमो दव्वो०खेत्तो०कालो० भावोवक्कमो, णामठवणाओ गयाओ, से किं तं दव्वोवक्कमो?,२ दव्वस्स उवक्कमो दव्वोवक्कमो, दव्वाण वा उवक्कमो२ दव्वेण वा उवक्कमो दव्वोवक्कमो दव्वेहि वा उवक्कमो दव्वंमि वा दव्वेसु वा, दव्वस्स उवक्कमो जहा मोदगस्स, दव्वाणं उवक्कमो जहा णिप्फावाणं, दव्वेण उवक्कमो जहा फलएणं समुद्दं तरति, दव्वेहिं जहा बहुहिं फलएहिं णावा णिप्फज्जति ताए तरति, दव्वंमि उवक्कमो जत्थ कासति सीसं काऊणं उवक्कामिज्जति । अहवा दव्वोवक्कमो तिविहो-सचित्तो अचित्तो मीसओ, सचित्तो तिविहो-दुपदचतुप्पदअपदाणं,

अत्र 'उपक्रम'-आदि वर्तते

दुपदाणं दुविहो उवक्कमो-संवर्त्तने च परिकर्म्मणि च, संवर्त्तने जहा कोइ मणूसो मारिज्जति, परिकम्मणे जहा सो चेव बावत्तरी कलातो सिक्खाविज्जाति, एवं चेव चउप्पयाणंपि, अपयाणं परिकम्मणे जहा ककडियाओ जारिसियाओ इच्छिज्जंति तारिसा खड्डा खणंति पच्छा तारिसा भवंति, संवट्टणे सव्वेवि छिज्जंति। अचित्ते दव्वोवक्कमो जहा सुवण्णं अंगुलीयकत्तेण परिकम्मिज्जति, संवट्टणे जहा तं चेव विणासिज्जति। से किं तं मीसो दव्वोवक्कमो ?, २ सचामरधासलपरिमंडितो आसो धावणवग्गणधारणत्तियइवह एवमादि सिक्खाविज्जति, सो चेव जहा संगामे आवडिते ववरोविज्जदि सो संवट्टणोवक्कमो। से किं तं खेत्तोवक्कमो ?, खेत्तोवक्कमो जहा खेत्तं हलकुलियणंगलादीहिं उवक्कामिज्जति। से किं तं कालोवक्कमे?, कालोवक्कमो जहा कालो नालिकादीहिं उवक्कामिज्जति। भावोवक्कमो दुविहो-पसत्थो अपसत्थो य, अपसत्थे मरुइणिगणियाअमच्चदिट्ठंतेहिं, एगा मरुइणी, सा चिंतेति-किह धूतातो सुहिगाओ होज्जत्ति?, ताए जेट्ठितर धूता सिक्खाविता, जहा चडंतिया मत्थए पण्हीए आहणेज्जासि, ताए आहतो भत्ता, सो तुट्ठो पाया महिउमारद्धो, ण हु दुक्खावियत्ति, ताए मातुं सिट्ठं, ताए भणितं-जं करेहि तं करेहि, ण एस सकति तुज्झ किंचिवि कातुं, बितिया सिक्खाविता, ताएवि आहओ, सो झंकिखत्ता उवसंतो, सा भणति-तुमंपि वीसत्था विहराहि, ततिओ रुट्ठो घेत्तुं पिट्टिता धाडिता य, तं अकुलपुत्तिया जा एवं तुमं करेसि, पच्छा किहवि गमितो, एस अम्ह कुलधम्मो, सा भणिता-जहा देवयस्स तहा वट्टेज्जासि, मा छड्डितिया बहुं कालं अच्छिहिसित्ति॥ गणिकावि चित्तसमाए भावं परिक्खित्ता तहा उपचरति॥ अमच्चे आसमुत्तणं तलागआरामकरणं च, एस अपसत्थो भावोवक्कमो।

॥ ८१ ॥

पसत्थो आयरियस्स भावो उवक्कमेयव्वो, जं चिंतेइ तं उवणेतव्वं पढमालिकादि णिरिक्खितेणं, खेलमल्लाइ वा जं भणति तं तहा गेण्हियव्वं, श्वेतः काकः ?, आमं श्वेतः, पीतो वा ?, आमं पीतः, एवं वायाए, काएण-मिण गोणसंगुलीए०, मणेण सहमाणो, एवं सर्वार्थेषु । तत्र राजदिट्ठंतो–अमयकोसे राया भणति-कतमो विणतो बलिओ ?, आयरिया भणंति-लोगुत्तरिओ, पच्छा परिक्खितं रण्णा, णदीए वहंतीए पेसितं अमयकोसो, काइयमत्तओ पच्छण्णं खुद्दओ ढोएति, तन्निमित्तं पुच्छा, आयरिएणवि कतो मुहा वहातित्ति, एत्थ परिक्खितो विणतो ।

अहवा उवक्कमो छव्विहो-आणुपुव्वि नामं पमाणं वत्तव्वया अत्थाहिगारो समोतारो, एयाणि सव्वाणि परूवेऊणं इमं सामाइयअज्झयणं उवक्कमे, आणुपुव्विमादीएहिं दारेहिं जत्थ जत्थ समोयरइ तत्थ तत्थ समोतारियव्वं । आणुपुव्वीए उक्कित्तणाणुपुव्वीए समोतरति, सा य तिविधा-पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी, पुव्वाणुपुव्वीए पढमं, पच्छाणुपुव्वीए छट्ठं, अणाणुपुव्वीए एतेसिं चेव एकादियाए एगुत्तरियाए छगच्छगताए सेढीए अन्नमन्नब्भासो दुरूवूणो तावतियाओ ताओ अणाणुपुव्वीओ, करणं अणाणुपुव्वीणं-एगो बेहिं गुणिज्जति जाता दोन्नि, दोन्नि तिहिं गुणिज्जंति, जाता छ, छ चउहिं गुणिज्जंति, जाता चउव्वीसं, चउव्वीसा पंचहिं गुणिज्जति, जातं सयं वीसं, तं छहिं गुणेत्ता जावतिओ रासी सो दोहिं ऊणो कीरति, किंनिमित्तं ?, पुव्वाणुपुव्वी य पच्छाणुपुव्वी य दोवि अवणिज्जंति, तो अणाणुपुव्वीतो होंति । णामे छव्विहणामे समोतरइ, तत्थवि खओवसमिए नामे समोयरति, कम्हा ?, जम्हा सव्वसुयं खओवसमियमितिकट्टु । पमाणं चउव्विहं-दव्व०खेत्त०काल०भाव०, भावप्पमाणे समोतरति, तं तिविहं-गुण०णय०संख०.गुणप्पमाणे समोतरति, गुणप्पमाणं तिविहं-णाणप्पमाणं दंसणप्पमाणं चरित्तप्पमाणं, णाणगुणप्पमाणे समोतरति,णो

॥ ८२ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सेसेहिं, णाणगुणप्पमाणं चउव्विहं, तंजहा-पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, आगमे समोतरति, आगमे तिविहे, तंजहा-अत्तागमे अणंतरागमे परंपरागमे, इमस्स सामाइयज्झयणस्स तित्थगरस्स अत्थस्स अत्तागमे, गणहराणं अत्थस्स अणंतरागमे, सुत्तस्स अत्तागमे, गणहरसीसाणं अत्थस्स परंपरागमे, सुत्तस्स अणंतरागमे, तेण परं अत्थरसवि सुत्तस्सवि नो अत्तागमे नो अणंतरागमे, परंपरागमे।

से किं तं संखप्पमाणे?, संखा अट्ठविहा, तत्थ परिमाणसंखाए समोतरति, सा य दुविहा परिमाणसंखा-कालियसुयपरिमाणसंखा य दिट्ठिवायसुयपरिमाणसंखा य, कालियसुयपरिमाणसंखाए समोतरति, पज्जवसंखाए अणंता पज्जवा संखेज्जासंघाया संखेज्जा अक्खरा संखेज्जा पदा गाथा सिलोगा वेढा, अज्झयणसंखाए एगं अज्झयणं, णो उद्देसो संखाए।

से किं तं वत्तव्वया?, वत्तव्वया तिविहा, तंजहा--ससमयवत्तव्वया परसमयवत्तव्वया ससमयपरसमयवत्तव्वया, तत्थ ससमयवत्तव्वयाए समोतरति, वत्तव्वतत्ति गता। से किं तं अत्थाहिगारो?, सावज्जजोगविरती अत्थाहिगारो, एवं जत्थ जत्थ समोतरति तत्थ तत्थ समोतारेयव्वं। सेत्तं उवक्कमेत्ति दारं गतं॥

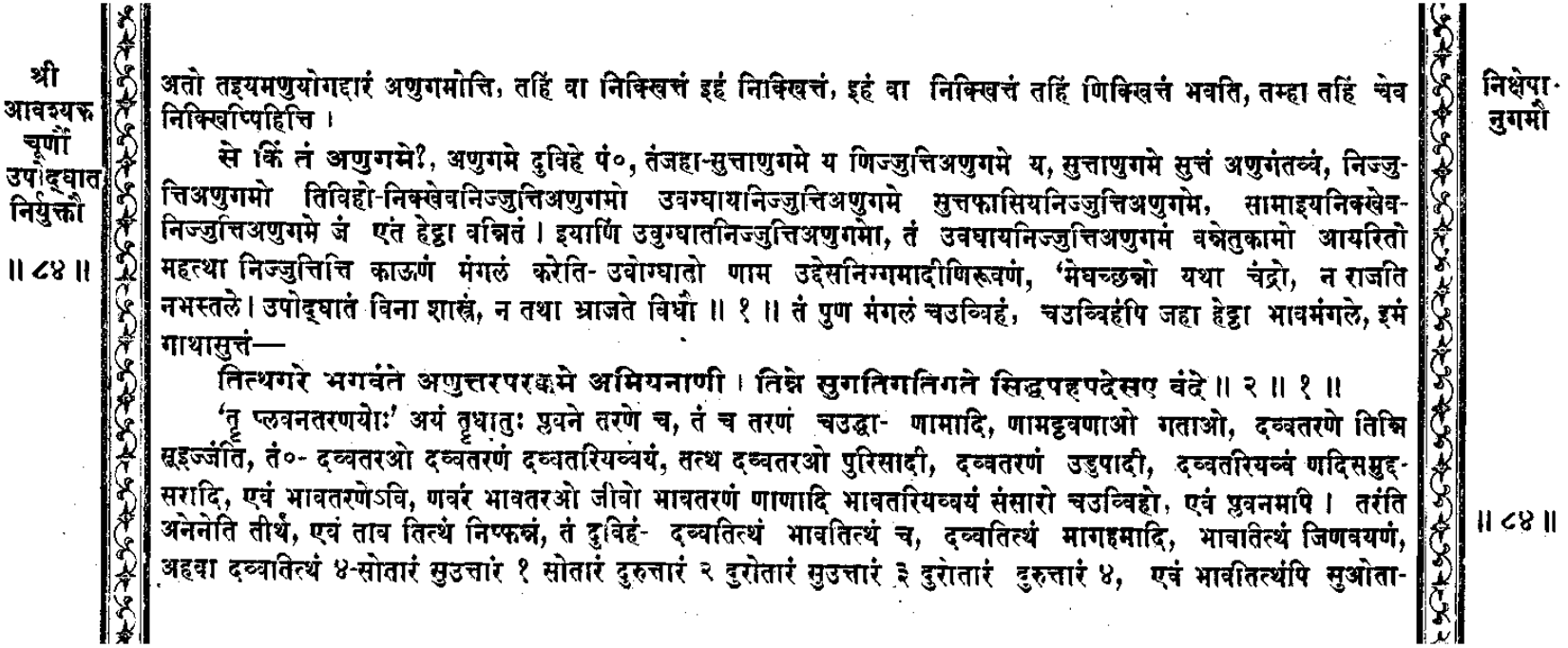
से किं तं निक्खेवे?, निक्खेवे तिविहे पन्नत्ते, तंजहा--ओघनिप्फन्ने नामनिप्फन्ने सुत्तालावगनिप्फन्ने, ओहनिप्फन्ने अज्झयणेत्ति वा अज्झीणेत्ति वा आएत्ति वा ज्झवणेति वा, जहा अणुयोगदारे णामनिप्फन्ने समोयारियंति, तं चउव्विहं-नामसामाइयं ठव० दव्व० भाव०, नामट्ठवणाओ गताओ, पत्तयपोत्थयलिहितं जं वा निण्हगाणं असंविग्गाणं एयं दव्वसामाइयं, भावसामाइयं चउव्विहं उवरिं भणिहामि, सुत्तालावगनिप्फन्नो निक्खेवो पत्तलक्खणोऽवि ण णिक्खिप्पति, कम्हा ?, लाघवत्थं, जम्हा अत्थि

निक्षेपस्य ओघ-आदि त्रि-भेदा:

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता.....आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥ ८४ ॥

अतो तद्दयमणुयोगद्दारं अणुगमोत्ति, तहिं वा निक्खित्तं इहं निक्खित्तं, इहं वा निक्खित्तं तहिं णिक्खित्तं भवति, तम्हा तहिं चेव निक्खिविप्पहित्ति ।

से किं तं अणुगमे?, अणुगमे दुविहे पं०, तंजहा-सुत्ताणुगमे य णिज्जुत्तिअणुगमे य, सुत्ताणुगमे सुत्तं अणुगंतव्वं, निज्जुत्तिअणुगमो तिविहो-निक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमो उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे सुत्तफासियनिज्जुत्तिअणुगमे, सामाइयनिक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमे जं एतं हेट्ठा वन्नितं । इयाणिं उवुग्घातनिज्जुत्तिअणुगमो, तं उवघायनिज्जुत्तिअणुगमं वत्तेतुकामो आयरितो महत्था निज्जुत्तित्ति काऊणं मंगलं करेति- उवोग्घातो णाम उद्देसनिग्गमादीणिरूवणं, 'मेघच्छन्नो यथा चंद्रो, न राजति नभस्तले। उपोद्घातं विना शास्त्रं, न तथा भ्राजते विधौ ॥ १ ॥ तं पुण मंगलं चउव्विहं, चउव्विहंपि जहा हेट्ठा भावमंगले, इमं गाथासुत्तं—

तित्थगरे भगवंते अणुत्तरपरक्कमे अभियनाणी । तिन्ने सुगतिगतिगते सिद्धपहपदेसए वंदे ॥ २ ॥ १ ॥

'तॄ प्लवनतरणयोः' अयं तृधातुः प्लवने तरणे च, तं च तरणं चउद्धा- णामादि, णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वतरणे तिन्नि सुइज्जंति, तं०- दव्वतरओ दव्वतरणं दव्वतरियव्वयं, तत्थ दव्वतरओ पुरिसादी, दव्वतरणं उडुपादी, दव्वतरियव्वं णदिसमुद्दसरादि, एवं भावतरणेऽवि, णवरं भावतरओ जीवो भावतरणं णाणादि भावतरियव्वयं संसारो चउव्विहो, एवं प्लवनमपि । तरंति अनेनेति तीर्थं, एवं ताव तित्थं निप्फन्नं, तं दुविहं- दव्वतित्थं भावतित्थं च, दव्वतित्थं मागहमादि, भावतित्थं जिणवयणं, अहवा दव्वतित्थं ४-सोतारं सुउत्तारं १ सोतारं दुरुत्तारं २ दुरोतारं सुउत्तारं ३ दुरोतारं दुरुत्तारं ४, एवं भावतित्थंपि सुओता-

निक्षेपानुगमो

॥ ८४ ॥

***अनुगमस्य द्वि-भेदा: -सूत्र एवं निर्युक्ति-अनुगम, ***अत्र निर्युक्ति-मङ्गलं वर्तते

● यहां से निर्युक्ति-क्रममें '[१/८०]', '[२/८१]' ऐसे आगे सभी निर्युक्तिमें जो लिखा है, उस का रहस्य ये है कि जो अंक (/) ओब्लिक के पहेले लिखा है, वो इस चूर्णिमें लिखा हुआ क्रम है और (/) ओब्लिक के बादमे जो क्रम है वो वृत्ति के संपादनमे लिखा हुआ क्रम है। चूर्णिमे छपे अंकोमें बहोत संदिग्ध पद्धत्ति है, इसिलिए हमने वृत्तिमे संपादित निर्युक्ति-क्रम दे कर सरल बनाने का प्रयास किया है।

रादि ४, सरक्खमइयाणं सुओयारं सूत्तारं, तच्चन्नियाणं सुओतारं दुरुत्तारं, बोडियाणं दुओतारं सुओत्तारं, दुओतारं दुरुत्तारं इणमेव निग्गंथं पावयणं, अहवा 'दाहोवसमं तण्हाए छेदणं मलपवाहणं चेव। तिहिं अत्थेहिं निउत्तं तम्हा तं भावओ तित्थं ॥ १ ॥' एवं भावतित्थेवि समोतारिज्जति। जेहिं एयं दंसणणाणादिसंजुत्तं तित्थं कयं ते तित्थकरा भवंति, अहवा तित्थं गणहरा, तं जेहिं कयं ते तित्थकरा, अहवा तित्थं चाउव्वन्नो संघो, तं जेहिं कयं ते तित्थकरा, भगो जेसिं अत्थि ते भगवंतो,-माहात्म्यस्य समग्रस्य, रूपस्य यशसः श्रियः। धर्मस्याथ प्रयत्नस्य, षण्णां भग इतींगना ॥ १ ॥ अणुत्तरो परक्कमो जेसिं ते अणुत्तरपरक्कमा, न अन्नेसिं उत्तरतरो परक्कमो अत्थि सव्वसत्ताणमपि, अमितणाणो--अणंतणाणी, तिन्ना चाउरंतसंसारकंतारं, तरिऊण सुगतिगतिगता, सुमती सिद्धा तेसिं गती सुगतिगती तं गता२, सिद्धिए पहो २, पहो दुविहो- दव्वपहो णगरादीणं भावप्पहो णाणदंसणचरित्ताइं, तेहिं सिद्धी गम्मइत्ति, पगरिसेण देसगा पदेसगा, ते वंदे, वंदि अभिवादणथुइसु· कायेणाभिवादयामि वाचा प्रस्तौमि, तित्थगरविसेसणत्थं भगवद्वचनं, दव्वअन्नवादितित्थगरणिसेहणत्थं, एतेऽवि कहिंचि भगवंतो व्याख्यायंते, अणुत्तरपरक्कमवयणं, जतो ण तेसिं एवं रागादिमहामत्तअक्कमणं, तहा अमितणाणी न ते णाणरहिता परिमितणाणी वा, किंतु अमियस्स-अपरिसेसस्स णेयस्स णाणीति, तिन्ने य ण पुण संसारकंतारत्था, तरिऊण ण पुणो तरिस्संति वा इति, तरिऊणं च सिद्धगतिं उड्ढलोगं तं गता, ण पुण अणिमादिअट्ठविहमिस्सरियं पाविऊण कतिणो, सव्वभावन्नू परमदुत्तरं तिन्ना, इहेव सव्वदा मोदन्ते इति, 'सिद्धपहपदेसए' इति अणेण लोइयतित्थगरासाहारणं परमोवगारित्तं दरिसेति, तत्किमुक्तं ?, जम्हा एतेहिंसेसणविसिट्ठसरूवा परमोवगारी य तम्हा वंदणारिहा, अतो तान् वंदे इति। एवं च लोइयतित्थगराणं वंदणववच्छेदो कतो, तेसिं च भगवंताणं अतिसयसरूवकहण-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पुव्वं वंदणं कयं भवतीति । अहवा तित्थगरवयणं प्रणथनादिप्रदर्शनार्थं, भगवद्वचनं इस्सरियादिसंदंसणत्थं, अणुत्तरपरक्कमवयणं शक्तिपदरिसणत्थं, अभियणाणिवयणं णाणिट्ठिथावणत्थं, तीण्णवचनं दुक्खच्छेदपदरिसणत्थं, सुगतिगतिवयणं अवत्थापदरिसणत्थं, सिद्धिपथादिवयणं सव्वहितोवदेसोवगारत्थमिति ॥ एवं ओहेण ताव णमोक्कारो कतो, इयाणिं जेणेदं तित्थमुपदिट्ठं तस्स णमोक्कारो कीरति-'वंदामि' गाहा ॥ २ । २ ॥ महत्तं पाहन्ने बहुत्ते य, पाहन्ने मोक्खो पहाणो, महंतं भजतीति महाभागो, बहुत्वे तत्रैव सुखमतुलं, महायशः, अविसेसितो यशो विसेसिता कित्ती, विदितं श्रुणितमेकोऽर्थः, महंतं जेण श्रुणितं स भवति महाश्रुणी, किं तन्महंतं?- णव पयत्था, महावीरो नामं गुणनिप्फन्नं, महन्तं वीरियं यस्य स भवति महावीरो, सव्वदेवावि अंगुट्ठएणं पंडुकंबलसिलाए अवट्ठितं तित्थगरं उप्पेल्लिज्जा, ण सकेति उप्पेलेउं, एवं सकला रयणप्पभा सा पुढवी मेरुंमि घेत्तूण सत्तवि पुढवीओ साहणित्ता अलोए खिविज्जा, एरिसं वीरियं, सा य अतीव लण्हा उच्चा य, ततो महावीरियजुत्तो इति महावीरो णामं, अमराणं णराणं व रायाणो अमरणरराया णो तेहिं महितो, सेसेहिं किं अमहितो ?, उच्यते, सेसेसु कामं ता, मह पूजायां, महितो पूजितो, पूजितो नमंसितो एगट्ठा । इमस्स तित्थस्स कत्ता, इदं च पच्चक्खीभावे, अहवा चरगादीण पडिसेहो । एवं सामिस्स अर्थवक्तुः मंगलत्थं वंदणमभिहितं, इयाणिं सुत्तकर्तृप्रभृतीनामपि पूज्यत्वाद्वंदणं कीरति—

एक्कारसवि० ॥२।३॥ एक्कारस इति संखा, तित्थगरेहिं सयमणुन्नातं गणं धारेंतीति गणहरा, अविसद्दो समुच्चये, पगारिसेण आदीए वा वायगा पवायगा, पवयणस्स दुवालसंगस्स । एतेण तेसिंपि भगवंताणं परमोवगारित्तं दंसेति । अतो तेऽवि वंदामित्ति । 'सव्वं गणहरवंसं' अज्जसुहम्मे० थेरावलिया, जाव जेहिं अम्ह सामाइयमादियं वाइतं, वायगवंसो णाम जेहिं परंपरएणं

॥ ८६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सामाइयादि अत्थो गंथो य वादितो, अन्नो गणहरवंसो अन्नो य वायगवंसो, तेण पत्तेयं क्रियते, पवयणं चाउव्वन्नो समणसंघो दुवालसंगं वा गणिपिडगं तं च वंदामीत्ति ।

ते वंदिऊण० ॥ २।४ ॥ ते तित्थगरादयो पवयणं च सिरसा-परमायरेण वंदिऊण अत्थाणं पुहुत्तं-बाहुल्लं जस्स तस्स तेहिं तित्थगरादीहिं कहियस्स, कस्स ?-सुयणाणस्स भगवतो, किं ?-निज्जुत्तिं किसयिस्सामि-परूवेस्सामि पन्नवेस्सामि एगट्ठा । कतमस्स सुयणाणस्स ?-आवस्सगस्स दसकालियस्स तह उत्तरज्झमायारे सुयगडे दसाणं कप्पस्स ववहारस्स परमणिउणस्स सूरियपन्नत्तीए इसिभासियाणं, चसद्देण चूलाण य पेढीण य जाणि य भाणितानि, एवं कालियसुयस्स, दिट्ठिवायस्स अन्नेण पगारेण भणिहिति । तत्थ अवसेसाणि ताव अच्छंतु, आवस्सगस्स ताव भणामि, तं आवस्सगं छव्विहं-सामायिकादि, तत्थ पढमं सामाइयस्स, एतेणाभिसंबंधेण सामाइयणिज्जुत्ती, तत्थ परंपरओ दुविहो, तंजहा-दव्वपरंपरओ भावपरंपरओ य, दव्वपरंपरए इमं उदाहरणं-तेणं कालेणं तेणं समतेणं साकेयं णगरं, तत्थ बहिता उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे सुरप्पिए णामं जक्खाययणे होत्था, वन्नओ, संनिहितपाडिहेरो, सो य वरिसे २ चित्तिज्जति, महो य से कीरति, सो य चित्तितो समाणो तं चेव चित्तगरं मारेति, तेण भएण चित्तकरका सव्वे पलाइतुमारद्धा, पच्छा रन्ना नायं-जदि एते सव्वे पलायंति पच्छा एसो जक्खो अचित्तिज्जंतो अम्हं वधाय भविस्सति, तेणं भएण चित्तकरका रन्ना संकलिता बद्धा, पाहुएऽहिकता, तेसिं सव्वेसिं नामाइं पत्तएहिं लिहिऊणं कुडे छूढाइं, ततो वरिसे वरिसे जस्स णामं उट्ठेति तेण चित्तेयव्वो । एवं च कालो वच्चति । अन्नया कयाइ एगो चित्तकरवेडो सो भमंतो साएयं गतो, तत्थेगस्स चित्तकारस्स घरं अल्लीणो, तत्थ एगपुत्तिया थेरी, सोवि से चेडो मित्तं जातो, एवं तस्स तत्थ अच्छंतस्स अह तंमि वरिसे तस्स

***अथ सामायिक-निर्युक्ति: आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

थेरिसुयस्स वारओ जाओ, पच्छा सा थेरी बहुप्पगारं रोयति, तं रूयमाणिं थेरिं दट्ठूणं भणति-किं आइए ! परूयसि एवं ?, ताए सिट्ठं, सो भणति थेरिकाभत्तेणं, मा तुब्भे रुयह, अहं तं जक्खं चित्तइस्सामि, ताहे सा भणति- तुमं किं मे पुत्तो न भवसि,? तोऽवि अहं चित्तेमि, अच्छह निरद्दाओ, एवं तेण छट्ठभत्तं काऊणं अहतवत्थजुगलपरिहितेणं चोक्खेण पयतेण सुतिभूतेणं णवएहिं कलसेहिं ण्हाणित्ता णवएहिं कुच्चएहिं नवएहिं मल्लयसंपुडेहिं असिलेसेहिं वन्नएहिं एवं तेण सो चित्तितो, चित्तेऊणं पादपडितो भणति- जं च मए एत्थ किंचि अवकतं तं खमह, तत्थ सो तुट्ठो संनिहितपाडिहेरो भणति-वरे वरं पुत्ता!, सो भणति-एस चेव मम वरो-मा लोगं मारेहि, तं भणति-एवं तावट्ठितमेव, जं तुहं ण मारितो, एवं अन्नंपि ण मारेमि, अन्न भण, सो भणति-जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगमवि देसं पासामि तस्स तदाणुरूवं रूवं निव्वत्तेमि, एवं होतुत्ति तेण दिन्नो, एवं सो वरे लद्धे गओ कोसंबिं णगरिं ।

तत्थ य सयाणिओ नाम राया, सो अन्नया कयाइ सुहासणवरगतो दूतं पुच्छेति-किं मम देवाणुप्पिया ! णत्थि जं अन्नरायाणं अत्थि?, तेण भणितं-चित्तसहा णत्थि, मणसा देवाणं वचसा पत्थिवाणं, तक्खणमेव आणत्ता चित्तगरगा, तेहि सभाओगासा विभत्ता, तत्थ तस्स वरदिन्नस्स जो रन्नो अन्तेपुरकिड्डपदेसो सो लद्धो, एवं तेण तत्थ णिम्मितेसु तदाणुरूवेसु रूवेसु अन्नया कदाति मिगावतीए जालंतरेण अंगुली दिट्ठा, तेणं अंगुलिसारिक्खेणं देवी सव्वा तदाऽणुरूवा णिम्मविता, तीसे पुण चक्खुंमि उम्मिल्लिज्जंतंमि एगो मसिबिंदुयओ उरूमन्तरे पडितो, तेण पुट्ठो, पुणोऽवि जातो, एवं तिन्नि वारे, पच्छा तेण णायं-एवं एतेण होयव्वमेव, एवं चित्तसभा णिम्माता। अन्नदा कयाति राया चित्तसभं पुलएंतो तं देसं पत्तो जत्थ सा देवी, तं णिव्वत्तेतेण सो बिंदुको दिट्ठो, तं दट्ठूणं आसुरत्तो,

	***मृगावति कथा

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ८९ ॥

एतेण ममं पत्तीं धारिसित्ति वज्झो आणत्तो, सेणी उवट्ठिता भणति- सामी ! एस वरलद्धओत्ति, राया भणति- जदि एवं तो खुज्जाए से मुहं दाइज्जतु, तेण तदाणुरूवं णिव्वत्तियं, तहावि तेण संडासो छिंदाविओ चेव, निच्छिवतो य आणत्तो। सो पुणो जक्खस्स उववासेण ठितो, जक्खेण भणिओ- 'वामेण चित्तेहिसि'त्ति, सो तस्स रन्नो पओसं गतो, तेण चिंतितं-पज्जोतो एयस्स पीतिं पाएज्जात्ति चिंतिऊण मिगावतीए चित्तफलए रूवं काऊणं जहा मट्ठी तहा पज्जोतस्स उवट्ठवितं, पज्जोतेण दूतो पयट्ठिओ, तेण निद्धमणेण णिच्छूढो, तेण सिट्ठं, इमो दूतवयणेण रुट्ठो सव्वबलेण कोसंबिं एति, तं आगच्छंतं सोऊणं इमो अप्पबलो अतिसारेण मतो, ताहे ताए चिंतितं- मा इमो बालो मम पुत्तो विणस्सिहिति, ताहे पज्जोओ आणत्तो-एस कुमारो अपडुप्पन्नो मा अन्नेण सामंतराइणा पेल्लिज्जिहिति, तहा णगरी उज्जेणियाए इट्टयाए दढं कीरउ, एवं ते चोद्दस रायाणो सबला, परंपरएण तेहिं सा आणिता इट्टगा, णिम्माता णगरी जाहे ताहे ताए भन्नति- इयाणिं भरेहि णगरं धन्नस्स, जाहे णगरी रोहगसज्जा जाता ताहे सा पुणो विसंवातिता, एवं अभिरुद्धाए ताए चिंतितं- धन्नाणं ते गामागरणगरखेडकव्वडा जाव संनिवेसा जत्थ णं समणे भगव महावीरे विहरति, पव्वएज्जामि जदि सामी एज्ज, समोसरणं, तत्थ सव्वाणि वेराणि पसमंति। मिगावती पनिग्गया, धम्मे कहिज्जमाणे एगे पुरिसे धम्मानुरागरत्ते इमे सव्वण्णू ण किंचि से अविदितं तम्हा इह पुच्छामि इमं पच्छन्नपुच्छं, मणसा पुच्छति, ताहे सामिणा सो भन्नति-वायाए पुच्छ देवाणं पिया, बहवे सत्ता संबुज्झिस्संति, एवमवि भणिते तेण भन्नति—

'भगवं ! जा सा सा सा' ?, तत्थ गोयमसामिणा भणितं- किं भणितं एतेणं जा सा सा सा ?, एत्थ तीसे उट्ठाणपारियाणितं सव्वं सामी परिकहति-तेण कालेणं २ चंपा णगरी, तत्थ सुवण्णकारो एगो, सो पंच पंच सुवन्नसयाणि दाऊणं जहापहाणा

द्रव्यपरंपरके इष्टकपरंपरकः

॥ ८९ ॥

दारिया तं गेण्हति, एवं तेण पंच सया पिंडिता, एगेगाए तिलगचोद्दसं भंडालंकारं देति, जद्दिवसं भोगे भुंजइ तद्दिवसं देइ, तीसे अवसेसं कालं न देइ, सो इस्सालुओ तं घरं ण कयाति मुयति, ण वा अन्नस्समछिउं देति, सो अन्नया कदाति मित्तेणं पगते वाहितो जेमेतुं, सो तहिं गतोत्ति णाऊण ताहिं णातं-किं अम्ह एतेण सुवन्नएणंति ?, अज्ज णे पतिरिक्कं भाणेमोत्ति ण्हातातो पतिरिक्कं मज्जियव्वयाविधिए तिलकचोद्दसेणं अलंकारेणं अप्पाणं अलंकिऊणं अद्दायं गहाय अप्पाणं देहमाणीओ चिट्ठंति, सो य ततो आगतो, तं दट्ठूणं आसुरत्तो, तेण एगा गहाय ताव पिट्ठिता जाव मयात्ति, ततो णं अन्नातो भणंति-एवं अम्हए एक्केका एतेण हंतव्वत्ति, तम्हा एतं एत्थ चेव अद्दागपुंजं करेमो, तत्थ एगूणेहिं पंचहिं महिलासएहिं पंचएगूणाइं अद्दागसताइं जमगसमगमेव पक्खित्ताइं, तत्थ सो अद्दागपुंजो कतो, पच्छा पुणो तासिं पच्छातावो जातो, का गती अम्हं पतिमारियाणं ?, लोए य उद्धंसणाओ सहियव्वाओ, तह चेव ताहिं तं घरं घणकवाडणिरंतरणिच्छिद्दाणि दाराणि काऊण अग्गी दिन्नो सव्वतो समंता, अन्ने भणंति-ओल्लंबिउं मयाओत्ति, तेण पच्छाणुतावेण साणुक्कोसयाए य ताए य अकामणिज्जराए मणुस्सेसु आउगं निबद्धं ।

सोऽवि कालगतो तिरिक्खेसु उववन्नो, तत्थ जा सा पढमं मारिता सावि एगं भवं तिरिएसु, पच्छा एगंमि बंभणघरे चेडो आयातो, सो य पंचवरिसो, सो य सुवन्नकारो तिरिक्खेसु उव्वट्टिऊणं तंमि चेव कुले दारिका जाया, सो चेडो तीसे बालग्गाहो, सा य निच्चमेव रुयति, तेणोदरपोप्पणं करेंतेण कहवि सा जोणिद्वारे हत्थेण तालिया, तहेव सा ठिता, तेण णातं लद्धो मए उवाओत्ति, एवं सो निच्चमेव तालेंतो मातापिताहिं णातो, ताहे हंतूण विसज्जितो, सावि अपडुप्पन्ना चेव विद्दाता, सो चेडो पलायमानो चिरणगरविणट्ठदुट्ठसीलाचारचारित्तो जाओ, गतो एगं चोरपल्लिं जत्थ ताणि पंच एगूणाइं चोरसयाइं परिवसंति, सावि

पइरिक्कं हिंडंती एगं गामं गता, सो गामो तेहिं पेल्लितो, सा य तेहिं गहिता, सा तत्थ पंच चोरसएहिं परिभुत्ता, तीसे चिंता समुप्पन्ना-अहो इमा वराकी एत्तियाणं सहति, जादि अण्णावि विति‌ज्जिया लभेज्जा तो से विस्सामो भवेज्जा, एवं तेहिं अन्नया कयाति तीसे विति‌ज्जिया आणीता, जं चेव सा आणीया तद्दिवसं आरद्धा सा तीसे आयं च उवायं च, केण उवाएण एतं मारेज्जा?, तत्थ अन्नया कयाति च्छिन्नकडयं गिरिं गता, तत्थ ताए भन्नति-पेच्छ इमं महादुमं कुसुमितं, ताए दिट्ठं, ताए णोल्लिया पडिता, ताहे पुच्छंति, ताए भन्नति-अप्पणो माहिलं कीस ण सारवेह?, तेहिं णायं-जहा एताए मारिता, तत्थ तस्स बंभणचेडस्स हियए ठितं, जहा एसा सा पावा, सुव्वति य भगवं, ताहे समोसरणे पुच्छति, ताहे सामी भणति-सच्चेव सा तव भगिणी, एत्थ संवेगमावन्नो सो पव्वइतो। एवं सोऊण सव्वा सा परिसा पतणुरागसंजुत्ता जाता, तत्थ सा मिगावई देवी जेणेव समणे भगवं महावीरे० वंदित्ता नमं० णवरिं पज्जोतं आपुच्छामि, अहासुखं, सा मिगावती देवी जेणेव पज्जोते राया तेणेव उवागच्छति, पज्जोतं करतलपरिग्गहितं एवं व०-इच्छामि णं देवाणंपिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समणस्स भगवतो महावीरस्स०, तए णं से पज्जोते राया तीसे महती महालियाए सदेवमणुयासुराए परिसाए लज्जाए ण तरति जहा मा पव्वयाहित्ति एयमट्ठं अणुजाणति। उदयणं च से कुमारं निक्खेवयनिक्खित्तं करेति एयं संवड्ढेहि, एवं पव्वइता मिगावती, पज्जोयस्स य अट्ठ अंगारवतिसिवप्पमुहाओ पव्वइयाओ देवीओ, ताणिवि पंचचोरसयाणि तेणाणित्तु संबोहिताइं पव्वइताणि। एतं पसंगेण वाणितं। एत्थ इहगपरंपरएण अधिकारो। एस दव्वपरंपरओ, एएणं भावपरंपरए साहिज्जति, जहा वद्धमाणसामिणा सुहम्मस्स जंबूनामस्स जाव अम्ह वायणारिया, आणुपुव्वीय कमपरिवाडीय आगतं सुत्तओ अत्थओ, करणतो य ॥ निज्जुत्तीए निरुत्तं भन्नति—

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

निज्जुत्ता जे० ॥ २-४ ॥ साधु अत्थं वा जुत्ता निज्जुत्ता जे अत्था सुत्ते ते अत्था जम्हा बद्धा तेण निज्जुत्ती भवति, यदुक्तं-'सुत्तनिज्जुत्तअत्थनिज्जूहणं निज्जुत्ती, आह-जदि सुत्ते निज्जुत्ता अत्था तो किं पुणो एत्थ तेसिं योजनं ?, भन्नति-तहवि य इच्छावेती विभासितुं सुत्तपरिवाडी, जदिवि सुत्ते निज्जुत्ता अत्था तहावि ते जाव ण विभासिता ताव ण णज्जंति, अतो सुत्तपरिवाडी-सुत्तपद्धती विविहं भासितुं इच्छावेतीत्ति । एत्थ दिट्ठंतो मंखो, तत्थ सव्वं मंखफलए लिहितं तहवि सो तेण दंडएण दाएति पढति विभासेति य, एवेत्थवि, सीसो आह-किमिदं सुत्तं जस्स पद्धती विभासितुमिच्छावेति?, कुतो किमिति कहं वा पवित्ती एयस्स इति ?, उच्यते-सुत्तं नाम सुत्तंति वा पवयणंति वा एगट्ठा, तं पुण तित्थगरभासियाइं गणहरगहिताइं सामाइयादि अणुक्कमेण ववत्थावियाइं, एयस्स पुण तित्थगरगणहरेहिंतो सासणहियट्ठा जीयमिति काउं एवं पवित्ती इति, भन्नति—

तवनियम० ॥ रूपकमिदं, इत्थ तुंगं विउलखंधं । जहा कोती कप्परुक्खमारूढो सपरक्कमो भरेज्जा पुव्विं सुरभीण कुसुमाणं, तत्थ य हेट्ठा पुरिसा बहवे उद्धंमुहा पलोएंति, घेत्तूण ततो कुसुमे मुयती अणुक्कंपणट्ठाए । जहा कोती वणसंडो घणकडच्छाओ तस्स बहुमज्झे महतिमहालयो महादुमो, तत्थ अतीव गंधवन्नादिगुणसंपन्ना कुसुमा, तत्थ पुण दुक्खं विलग्गिज्जति, एगो य महापयत्तो सो तत्थ विलग्गो तेसिं पेच्छंताणं, तत्थ मालेति, ते तं जायंति, अम्हवि देह, तेसिं सो अणुकंपट्ठयाए भणति-पडिच्छह पडेसु, तओ मुयइ तं कुसुमवुट्ठिं, तं पडिच्छणसत्तिजुत्ता पयत्तेण पडिच्छंति तद्दट्ठी सुंदरेहिं पडेहिं, अप्पणो य मालेंति, अन्नेसिं च देंति तहाविहाणं, एस दिट्ठंतो । एवं तवनियमनाणरुक्खं, तवो बारसविहो, नियमो दुविहो-इंदियनियमो नोइंदियनियमो य, नाणं पुव्वभणियं, एयाणि चेव रुक्खो, तं तवनियमनाणरुक्खं आरूढो- आश्रितः, को सो ?-केवली, छउमत्थव्यवच्छेदत्थमेयं,

॥ ९२ ॥

अभियनाणित्ति अपरिसेसनाणी, सरूवक्खावणामिदं, तो किं ?-तो भुयइ नाणवुट्ठिं, एत्थ महत्थवयणवुट्ठी चेव विन्नाणकारणत्ता नाणवुट्ठी भण्णइ, तं किमत्थं भुयइ ?, भवियजणा जे विबोहणजुग्गा तेसिं विबोहणत्थं—

तं बुद्धिमएण पडेण० ॥ २-५ ॥ तं नाणवुट्ठिं बुद्धिमएण पडेण गेण्हउं गणहरा निरवसेसं, अवि तेसिं पुप्फाइं पडेज्ज तेसु पडेसु, ण पुण गणहरबुद्धिमयपडिग्गहिताणि भगवतो महत्थवयणाणि अणवधारियाणि य वडंतित्ति, अतो गिण्हितुं निरवसेसं भन्नति, जहा ते गंथेति पच्छा मालेंति अन्नेसिं वा देंति, एवं इमेऽवि गणहरा तित्थकरभासिताइं गहेउं परिभाविऊण तहाविहाण सिस्साण अणुप्पदेहिंति तेण गंथंति । तत्तो पवयणट्ठत्ति भन्नति, पवयणं संघो । को गुणो पवयणस्स गंथितेहिं ?, भन्नति—

घेत्तूण सुहं०॥ २-६ ॥ जहा ताणि कुसुमाणि अगहियाणि ण सक्का घेत्तुं, गहिताणिवि पडंति, एवं इमाणिवि भासिताणि अग्गहिताणि दुगेज्झाणि पवडंति य, गहिताणि पुण सुहं घेप्पंति, तरतमजोगेण सुहं च परिवाडीए गुणिज्जंति, सुहं पदविन्नासेणं धारिज्जंति, अमुगत्थ वीसरितंति सारिज्जंति य, पोययव्व तं गेण्हंति, तस्स तारिसओ आलावओ दिज्जति । अहवा पुच्छति-किमस्स सारो ?, सुत्तं अत्थो दोन्निवि सुहं दिज्जंति पदविन्नासेण, पुच्छाएवि ण जाणति, किं गतं हेट्ठा उवरित्ति, आदीए मज्झे अवसाणेत्ति सुहं पुच्छइत्ति । एवमादीहिं कारणेहिं जीतं सुत्तं तं कयं गणहरेहिं, अहवा एतेहिं कारणेहिं पुव्वभणितेहिं गंथणं कयं गणहरेहिं । अविय-जीयमेयं पुव्वाइन्नमेयं इतिच गंथणं कयं गणहरेहिं ॥ किह पुण एवं पुव्वाइन्नं?, भन्नति—

अत्थं०॥ २-७ ॥ अत्थं भासति-पगासेति अरहा, सुत्तं गंथंति-अज्झयणउद्देसगादिअणुक्कमेण रचयंति गणहरा, जतो निपुणा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

निपुणं वा सूक्ष्मं बत्तीसदोसपरिसुद्धं एवमादि, सासणस्स-संघस्स हियट्ठाए ततो सुत्तं पवत्ततीति । सीसो आह-तं पुण सुत्तं किमादि ? किंपज्जवसाणं ? किं परिमाणं ? को वा एयस्स सारो ? इति, भन्नति–

सामाइयमादीयं०॥ २-८ ॥ सामाइयं आदीए, बिंदुसारं पज्जंते, परिमाणं पुण सामादियादि जाव बिंदुसारं एवतियं, को एयस्स सारो ?, एत्थ कस्सति बुद्धी भवेज्जा-एतं चेव सामादियमादीयं बिंदुसारपज्जंतं सुयणाणं सारं, को एयस्स अन्नो सारो मग्गिज्जतित्ति?, जतो अरहंतेहिं भगवंतेहिं तिलोगसारनिहाणभूतेहिं भासितं गणहरेहिं सुयणिपुणेहिं परमकल्लाणालएहिं सुत्तीकयं महत्थं परमसंवेगजणयं जीवादिपदत्थविभासगं सव्वकिरियाकलावपयत्तोवदेसगमिति परमं मोक्खकारणंति अतो एतं चेव सारो, अतो भन्नति-तस्सवि सारो चरणं, तस्सवि एवंगुणस्सवि सुयणाणस्स सारो-सव्वस्स चरणं-चारित्तं, चरणस्स पुण सारो निव्वाणं ॥ किह पुण तस्सवि सारो चरणं भन्नति, न पुण तदेव ?, भन्नति—

सुयणाणं० ॥ २-९ ॥ जेण सुयणाणंमि वट्टमाणो जीवो मोक्खं ण पाउणति । जो तवमतिए संजममइए य जोए ण चएइ वोढुं जो, को दृष्टांतः ?—

जह छेद०॥२-१०॥तह णाणलद्ध०॥२-११॥ पाढसमा, तम्हा एतं णाऊण **संसारसागराओ०** ॥२-१२॥ गाहद्धं दसहिं दिट्ठंतेहि दुल्लहं माणुसत्तं लहिऊण, एवं खेत्तजातिमादीणिवि, संसारसागरे बुड्डो संतो कहमवि उन्बुड्डो चरणजलोवरितलवर्त्तित्वेन मा पुणो निब्बुड्डिज्जा, जं किंचिदालंबणमासादेऊण, एतंमि अणादरेण, एत्थ दिट्ठंतो, जहा नाम कोयि कच्छवो पउरतणपत्तसेवालात्मकनिच्छिद्दपडलाच्छादितोदगंधयारमहाहरयअंतग्गतो तदंतग्गताणेगजलचरक्खोभादिवसणव्यथितमाणसो परिब्भमंतो

अत्र ज्ञान-चरण-सिद्धि: दर्शयते

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ९५ ॥

कहमवि पडलरंधमासादिऊण विणिग्गच्छिऊण ततो सारदससहरफरिससुहमणुभविय पुणोऽवि सबंधुणेहादिसमागिट्ठचित्तो तेसिमपि वरायाणमदिट्ठकल्लाणाणम हमिदमच्चब्भुयं किंपि संपादयामीति संपहारेऊण तत्थेव निब्बुड्डो, अह समासादितासमासादितबंधुवग्गो वा तस्स रंधस्सोपलंभनिमित्तं इतो ततो परिब्भमंतो ओहयमणसंकप्पो कट्ठतरं वसणमणुभवति । एवं संसारसागराओ अणादि-कम्मसंताणपडलसमच्छादिताओ विविहसारीरमाणसाच्छिवेदणजरजुद्धेट्ठवियोगाणिट्ठसंपयोगादिदुक्खजलचरसंखोभादिवसणबहुलाओ कहमवि कम्मक्खतोवसमादिरंधमासादेऊण भणियणाएण चरणपडिवत्तीए उब्बुड्डो अप्पवेरो अप्पजंजो एवमादिगुणजुत्तो जातो, तो मा पुणो निब्बुड्डेज्ज भणितणाएणेव । स्याद् बुद्धिः-जो अप्पविन्नाणो सो णिबुड्डति, जो पुण बहुंपि जाणति सो तप्पभावादेव नो निबुड्डिहिति इति, भन्नति—

चरणगुणविप्पहीणो०॥२-१२॥चरणमणाढायमाणो निबुड्डति सुबहुंपि जाणंतो ॥ किमिति—सुबहुंपि॥२-१३॥चरणगुणविहीणस्स सुबहुंपि सुयमहीतं किं काहिति?, जतो ण तस्स तारिसं सामत्थमत्थि जेण धारेहिति, जहा अंधस्स समीवे दीवसयसहस्सकोडीवि पलीविता असमत्था तस्सऽवपातादिपवडणं धारेतुन्ति ॥ आह-जेण पुण थोवमहीयं किं तु चरणजुत्तो तस्स किं?, भन्नति—

अप्पंपि०॥ २-१४ ॥ कंठा, किं तु पगासगं-कज्जसाहगं ॥ पुणो आह-तो जे इमे बहुस्सुया एते णाम निरत्थयं ?, एत्थ आयरितो भणति जहा खरो०२-१५॥ वृत्तं, कंठं ॥ एवं चरणे ख्यापिते मा भूच्छिष्यस्य एगंतेणेव णाणंमि अणायरो भवस्सति । अतस्तन्निरासार्थमिदं सूत्रं पठन्त्याचार्याः—

निब्बूडनचारणोपदेशः

॥ ९५ ॥

हतं णाणं० ॥२-१५॥ जहा कियाहीणं णाणं हतं एवं हया अन्नाणयो किया । एत्थ दिट्ठंतो-एगंमि महाणगरदाहे अंधलग-पंगुलगा दो अणाहा, णगरजणे जलणसंभमुब्भंतलोयणे पलायमाणे पंगुलओ गमणकिरियाऽभावातो जाणंतोऽवि पलायणमग्गं कमागतेण अग्गिणा दड्ढो, अंधोऽवि गमणकिरियाजुत्तो पलायणमग्गमजाणंतो तुरितं जलणंतेण गंतुं अगणिभरियाए खाणीए पडिऊण दड्ढो । एवं णाणी किरियारहितो ण कम्मग्गिणो पलाइतुं समत्थो, इतरोऽवि णाणरहियत्तणओत्ति, तो खाइं कहं फलसिद्धी ?, भन्नति—

संजोगसिद्धीए० ॥२-१६॥ वृत्तं, कंठं । णवरं दिट्ठंतो—एगंमि रन्ने रायभएण णगराओ उव्वसिय लोगो ठितो, पुणोवि धाडिभएण पवहणाणि उज्झिय पलाओ, तत्थ दुवे अणाहप्पाया अंधो पंगू य उज्झिता, लोगग्गिणा य वणदवो लग्गो, ते य भीता, अंधो छुट्टकच्छो अग्गितेण पलायति, पंगुणा भणितं—अंधा! मा इतो नास, णणु इतोप्पेव अग्गी, सो आह-कतो पुण गच्छामि?, पंगू भणति—अहं मग्गदेसणासमत्थो पंगू, ता मं खंधे करेहि जेण अहिकंटकजलणादिअवाए परिहरावेंतो सुहं णगरं पावेमि, तेण तहत्ति पडिवज्जितं, अणुट्ठितं पंगुवयणं, गता य खेमेण दोवि णगरंति, एवं णाणकिरियाहिं सिद्धिपुरं पाविज्जतीत्ति । एत्थ सीसो आह—केण पुण पगारेण णाणकिरियाहिं मोक्खो साहिज्जतीत्ति ?, अतो भन्नति—

एवं-णाणं०॥ २-१७ ॥ दिट्ठंतो—एगेण वणिएणं घरं गहितं कयवरेण भग्गविभग्गं, तेण चिंतितं—ण एत्थ भग्गविभग्गे सुखं वसिज्जति, सोहेमि णं, अंधकारे य ण सक्कति सोहेतुं, ताहे पदीवं करेति२ कयवरं सोहेति, छिद्दविच्छिद्दाणि पिहेति गुत्तकवाडं च करेति, पच्छा निरूव्विग्गं विसयसुहाणि अणुभवति, एवं घरत्थाणीओ जीवो कम्मं कज्जवरथाणीयं तवो वणियत्थाणीओ संजमो जहा छिद्दपिहाणं, सव्वाणि आसवच्छिद्दाणि पिहितव्वाणि, जहा सो वणितो तंमि घरे सुहं वसति, एवं णाणेण सुभासुभाणि णातूण

सुभेसु पवत्तति असुभेसु णिवत्तति, तवेण पुव्वसंचितं सोहेति, संजमेण णवं ण बंधति, तो अकम्मीभूतो मोक्खसुहं अणुभवति। एत्थ तवसंजमग्गहणं किरिया तवसंजमनियत्तत्तिकाउं, सम्मदंसणं पुण णाणग्गहणेण गहितंति न पृथग् उक्तं। एवं णाण-दंसणचरणाण समाओगे सति मोक्खे ख्यापिते सीसो आह—जदि एवं ता साह-भगवं! कंमि पुण भावे ताणि णाणादीणि भवति?, कहं वा एतेसिं अलाभो? को वा लाभक्खमो? कस्स वा किमावरणं? कहं वा कस्स वा आवरणक्खतोवसमो? कहं वा उवसमो खयो वा? इति, एत्थ आयरिया भणंति—

भावे खओवसमिते०॥२-१८॥ खओवसमितो णाम तस्स तस्स कम्मस्य सव्वघातिफड्डगाणं उदयक्खयात्, तेषामेव सदुपशमात् देशघातिफड्डगाणं उदयात् खतोवसमितो भावो भवति, तंमि दुवालसंगंपि होति सुयणाणं, दुवालसंगग्गहणेणं सव्वं सुयनाणं गहितं, अपिसद्देण मतिओहिमणपज्जवनाणाणिवि, केवलणाणं पुण खातिए भावे इति। आह- केवलियणाणलंभो णन्नत्थ खए कसायाणंति सव्वकसायाणं जाव खतो ण संजातो णाणावरणदंसणावरणअंतराइयाण य ण ताव केवलणाणलंभो भवतीत्ति, एत्थ पुण कसायाणं चेव गहणं, कसायक्खया अंतोमुहुत्तेण नियमा सेसघातिकम्मक्खय इति। एवं णाणं ताव किंपि खओवसमिते भावे किंपि खाइएत्ति भणितं, सम्मत्तचरित्ताणि पुण खतोवसमिते वा उवसमिते वा खातिए वा?, तत्थ सम्मदंसणं दंसणमोहस्स खओवसमे वा उवसमे वा खए वा भवति. दंसणमोहस्स खतोवसमेण अणंताणुबंधिअणुदए मिच्छत्तस्स सव्वघातिफड्डगाण उदयक्खते तेषामेव सदुवसमे सम्मत्तमोहणीयस्स उदये इति। उवसमखया पुण उवरिं भन्निहिंति। चरित्तंपि चरित्तमोहस्स खतोवसमे वा उवसमे वा खए, वा, चरित्तमोहखतोवसमे णाम बारसकसायोदयक्खये सदुवसमे य, संजलणचउक्कअन्नतरदेसघातिफड्डगोदए

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

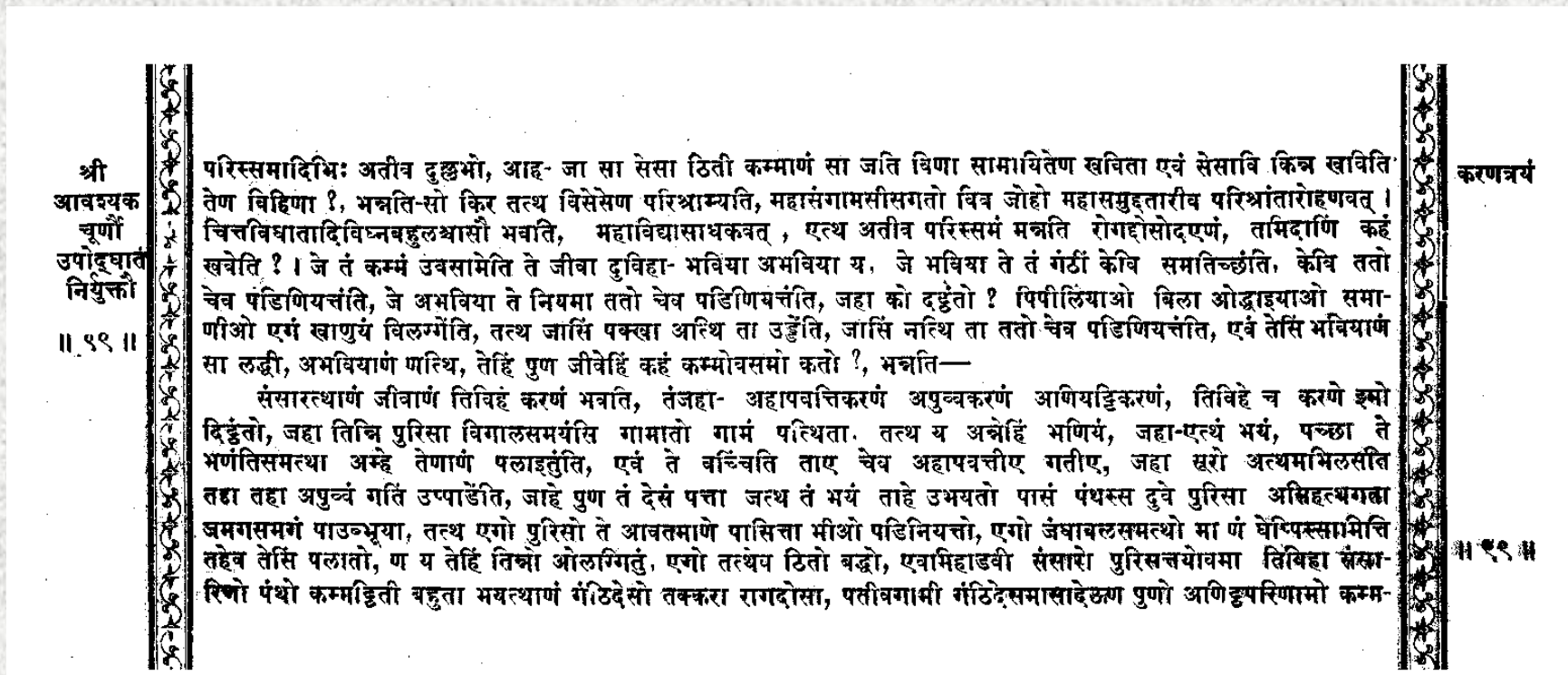
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

णोकसायनवगस्स य यथासंभवोदये इति । चरित्ताचरित्तं पुण खओवसमिते चेव, कसायट्ठगोदयक्खए सदुवसमे य, पच्चक्खाण-कसायसंजलणचउक्कदेसघातिफड्डगोदये णोकसायणवगस्स जहासंभवोदये य इति । जंमि भावे णाणादीणि भवंति एतं भणितं, जहा एतेसिं लाभो ण भवति तं भन्नति—

अट्ठण्हं० ॥ २-२६ ॥ किह पुण अट्ठण्हं पगडीणं उक्कोसट्ठिती भवति ?, एत्थ ताव सव्वासिं पगडीणं उक्कोसट्ठिती भाणि-यव्वा, जया मोहणिज्जस्स कम्मस्स उक्कोसिया ठिती भवति तदा आउगवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं उक्कोसिया ठिती भवति, आउगस्स उक्कोसा वा अजहन्नुकोसा वा ठिती भवति, जदा आउयमोहवज्जाणं उक्कोसिया ठिती भवति तदा आउयमोहणि-ज्जाणं उक्कोसा वा अजहण्णमणुक्कोसा वा, जया आउक्कोसा तया सेसाणं उक्कोसा वा अजहन्नुक्कोसा वा, एवं उक्कोसट्ठितीए अट्ठण्ह कम्मपगडीणं वट्टमाणो जीवो चउण्ह सामाइयाणं एगतरमवि ण लभति, कह पुण ताइं चउरो ?, तंजहा- सम्मत्तसामाइयं सुयसामाइयं चरित्तसामाइयं चरित्ताचरित्तसामाइयं च । अपिशब्दात् मत्यादि च न लभतीति ॥ इयाणिं जहा एतेसिं लाभो भवति तं भन्नति—

सत्तण्हं पगडीणं अब्भिंतर० ॥ २-२७ ॥ आउयवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं उक्कोसट्ठितीओ जदा खवियाओ भवति, अवसेसा एक्केका कोडाकोडी भवति, तीसे य कोडाकोडीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पविट्ठो भवति, एत्थ किल गंठी पाउब्भवइ, गंठी णाम जहा इह रज्जूए दाभविसेसस्स वा घणो अतिगूढो रूढो दुम्मोओ दुब्भेदो य गंठी भवति, एवमेव आत्मनः कम्मविसेसपच्चतो अतिरागद्दोसपरिणामो गंठीत्ति ववदिस्सति, तंमि भिन्ने सम्मत्तादिलाभो भवति, तब्भेदो य मणोविघात-

अत्र निर्युक्ति [२-२७] मध्ये सम्यक्त्व-लाभ: निर्दिष्ट्यते



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घातनिर्युक्तौ ॥ ९९ ॥

परिस्समादिभिः अतीव दुल्लभो, आह- जा सा सेसा ठिती कम्माणं सा जति विणा सामायितेण खविता एवं सेसावि किंन खविति तेण विहिणा ?, भन्नति-सो किर तत्थ विसेसेण परिश्राम्यति, महासंगामसीसगतो विव जोहो महासमुद्दतारीव परिश्रांतारोहणवत् । चित्तविघातादिविघ्नबहुलश्चासौ भवति, महाविद्यासाधकवत् , एत्थ अतीव परिस्समं मन्नति रोगदोसोदएणं, तमिदाणिं कहं खवेति ? । जे तं कम्मं उवसामेति ते जीवा दुविहा- भविया अभविया य, जे भविया ते तं गंठीं केवि समतिच्छंति, केवि ततो चेव पडिणियत्तंति, जे अभविया ते नियमा ततो चेव पडिणियत्तंति, जहा को दट्ठंतो ? पिपीलिआओ बिला ओद्धाइयाओ समाणीओ एगं खाणुयं विलग्गंति, तत्थ जासिं पक्खा अत्थि ता उड्डेंति, जासिं नत्थि ता ततो चेव पडिणियत्तंति, एवं तेसिं भवियाणं सा लद्धी, अभवियाणं णत्थि, तेहिं पुण जीवेहिं कहं कम्मोवसमो कतो ?, भन्नति—

संसारत्थाणं जीवाणं तिविहं करणं भवति, तंजहा- अहापवत्तिकरणं अपुव्वकरणं अणियट्टिकरणं, तिविहे च करणे इमो दिट्ठंतो, जहा तिन्नि पुरिसा विगालसमयंसि गामातो गामं पत्थिता, तत्थ य अन्नेहिं भणियं, जहा-एत्थं भयं, पच्छा ते भणंतिसमत्था अम्हे तेणाणं पलाइतुंति, एवं ते वंचिंति ताए चेव अहापवत्तीए गतीए, जहा सूरो अत्थमभिलसति तहा तहा अपुव्वं गतिं उप्पाडेंति, जाहे पुण तं देसं पत्ता जत्थ तं भयं ताहे उभयतो पासं पंथस्स दुवे पुरिसा असिहत्थगता जमगसमगं पाउब्भूया, तत्थ एगो पुरिसो ते आवतमाणे पासित्ता भीओ पडिनियत्तो, एगो जंघाबलसमत्थो मा णं घेप्पिस्सामित्ति तहेव तेसिं पलातो, ण य तेहिं तिन्नो ओलग्गितुं, एगो तत्थेव ठितो बद्धो, एवामिहाडवी संसारो पुरिसत्तयोवमा तिविहा संसारिणो पंथो कम्मट्ठिती बहुता भयत्थाणं गंठिदेसो तक्करा रागदोसा, पतीवगामी गंठिदेसमासादेऊण पुणो अणिट्टपरिणामो कम्म-

करणत्रयं

॥ ९९ ॥

द्वितिसंवर्धकः, तक्करवरुद्धो पबलरागद्दोसोदयो गंठियसत्तो, इट्ठदेसाणुप्पयातो सम्मदंसणपुरग्गापी, एत्थ य पुरिसत्तयसभाव-गमणोवमितमाद्यं गंठिदेसपावगं अहापवित्तिकरणं, सिग्घतरगामिभावेणोवमितमपुव्वकरणं, इट्ठपुरपावगगतिउवमणियट्टिकरणंति, एत्थ य जाव गंठिट्ठाणं ताव अहापवत्तं, गंठिट्ठाणमतिक्कामतो अपुव्वकरणं, सम्मदंसणलाभाभिमुहस्स अणियट्टिकरणंति । आहउक्तं सव्वस्सेव संसारिणो सजोगतया पतिसमयं कम्मस्स उवचओ अवचयो य, असंजयस्स पुण बहुयतरस्स चओ अप्पतरस्स अवचओ, जओऽभिहितं-'पल्ले महतिमहल्ले कुंभं पक्खिवति सोहए णालिं । अस्संजए अविरए बहु बंधइ, णिज्जरे थोवं ॥ १ ॥ पल्ले महतिमहल्ले कुंभं सोहयति पक्खिवति णालिं । जे संजते पमत्ते बहु निज्जरे, बंधए थोवं ॥ २ ॥ पल्ले महतिमहल्ले कुंभं सोहयति पक्खिवे ण किंचि । जे संजते अप्पमत्ते बहु निज्जरे बंधइ ण किंचि ॥ ३ ॥" एवं च कहमसंजतो मिच्छादिट्ठी एत्तियाए अवणेता भविस्सति ?, जतो एयस्स गंठिदेसप्राप्तिरिति, भन्नति—

पाओवित्ती एसा जमसंजयस्स बहुतरस्सोवचयो अप्पतरस्स वाऽवचयो, बंधणिज्जरणाओ पुण मिच्छद्दिट्ठीणंपि विचित्ताओ, कस्सति कहंचिदिति, तम्हा जहा जो अतिमहति धन्नपल्ले अप्पतरं पक्खिवेज्जा बहुतरं च अवणेज्जा तस्स एवं कालंतरेण उप-क्खीयते धान्यं, एवमणाभोगतो जीवो बहुं बहुतरं च खवयंतो गंठिदेसं पावति अहापवत्तिकरणेणेति ॥ आह--कहं पुण अणाभो-गतो तेण अहापवत्तकरणेण कम्मरासी खवितो ?, तत्थ दिट्ठंतो-गिरिणइपत्थरेहिं, जहा तेसिं णो एवं उप्पज्जति सक्का तिव्वा जहा अम्हे वट्टा वा तंसा वा होमो, तेसिं वा अन्नेसिं पत्थराणं णो एवं उप्पज्जति जहा एते पत्थरा वट्टा तंसा वा होन्तु, एवं ते घोलणाविसोहीए तं कम्मरासिं खवेंति जहा वा वत्तीणो पासाणो ॥ आह-किं पुण सो सम्मदंसणादि उवदेसतो चेव लभति उत

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥१०१॥

अणुवदेसातो वेति?, भन्नति-जहिह कोति पहपब्भट्ठो परिब्भमंतो सयमेव पंथं लभति, कोदि परोपदेसातो कोयि तु ण चेव लभति, एवं अच्चंतपणट्ठसप्पथो जीवो संसाराडविमनुपतन् कोपि गंठिट्ठाणमतिक्कमिऊण तदावराणिज्जाणं कम्माणं खतोवसमोवसमखएण सयं चेव सम्मदंसणादि णिव्वाणपट्ठणपंथं लभति, कोदी परोपदेसातो, कोती पुण ण लभति चेव, जहा वा कोती जरो सयमेवापैति, कोती भेसज्जोवतोगाओ, कोती पुण नैवापैति, एवं मिच्छत्तादिमहज्जरोपि कोती सयमेवापैति, कोयो अरहदादिवयणभेसज्जोवओगाओ, कांती पुण नैवापैति, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खतोवसमे पुण कोद्दवदिट्ठंतो विभासियव्वो, उवसमे जलदिट्ठंतो, खए वत्थदिट्ठंत इति। लाभक्कमो पुण एवं-जे अभविता सो तं गंठिं ण समत्थो भिंदितुं तेण गंठियसत्तो, गंठीए वा सत्तो२, तत्थ पुण अंतरे इड्ढिविसेसं दट्ठूण तित्थगराणं अणगाराणं वा ताहे पव्वयति, तम्मूलगं देवलोगं गच्छति। जो भविओ तस्स तंमि काले जति कोति संबोहेज्ज अहवा कोति सयं चेव संबुज्झति तस्स एत्थ सुयसामाइयस्स लंभो भवति, ताहे संखेज्जाइं सागरोवमाइं गंतूणं सम्मत्तसामाइयलंभो, ताहे अन्नाणिवि संखेज्जाणि सागरोवमाणि गंतूणं चरित्ताचरित्तसामाइयलंभो, एवं संखेज्जेसु चरित्तं उवसमगसेढी खवगसेढी इति.

सम्मत्तसामाइयस्स आवरणे इमे चत्तारि कसाया--अणंताणुबंधी कोहमाणमायालोभा, एते पढमिल्लुगत्तिवि भन्नंति, संजोयणाकसायत्तिवि भन्नंति, सुत्तक्कमपामन्ना पढमिल्लुगा भन्नंति, जम्हा बहूहिं नेरइयतिरिक्खजोणियमणूसदेवभवग्गहणेहिं संजोएंति तम्हा संजोयणाकसायत्तिवि भन्नंति।

॥१०१॥

अत्र सम्यक्त्व-लाभे चारित्र-लाभस्य निर्देश:

पढमिल्लुगाण उदए जीवो संजोयणाकसायाणं ॥२-२९॥ जेवलं तेसिं उदए भवति ताहे भवसिद्धियावि ण लभंति, किमंग पुण अभविया ?, तहा अविसद्दा तस्सहचरितं णाणलंभमवि ण लभंति ॥

बितियकसायाणुदए अप्पच्चक्खाणणामधेज्जाणं। सम्मद्दंसणलंभं॥विभासेज्जा॥विरताविरतिं ण तु लभंति ॥२-३०॥

अप्पमवि एत्थ पच्चक्खाणं ण तु लभंति तेण अप्पच्चक्खाणकसाया ॥

ततियकसायाणुदए पच्चक्खाणावरणणामधेज्जाणं। देसेक्कदेसविरतिं ॥तहेव॥चरित्तलंभं ण तु लभंति ॥ २-३१ ॥

जं मूलगुणपच्चक्खाणं सव्वेसिं मूलगुणाणं तं केवलं पडिपुन्नं आवरेतित्ति तेण पच्चक्खाणावरणा ॥ आह-किं पुण पढमबीय-ततीयकसायाण उदए सम्मत्तदेसविरतीसव्वविरतीओ न तु लभंतित्ति?, भन्नति-इह य सम्मत्तादयो मूलगुणा, एते य पढमिल्लुगादयो कसाया मूलगुणघातिणो, ण य मूलगुणघातीणं कसायाणुदए मूलगुणाणं लंभं, 'ण लभति मूलगुणघातिणो उदये' त्ति, जदा पुण संजलणाणं उदयो भवति ताहे इतरचरित्तलंभं विभासेज्जा, अहक्खायं पुण ण लभंति, तदभावे उ तंपि लभंतीत्ति, सीसो आह-भा भवतु मूलगुणाणं लंभो मूलगुणघातीण उदए, जदा पुण ते लद्धा तदा कहं अतियरति पडिवतति वा इति ?, भन्नइ--

सव्वेऽवि य० ॥२-३३॥ सव्वेविय छेदपज्जंतपायच्छित्तसोज्झा अतियारात्ति वा अविसोहीओत्ति वा एगट्ठा, संजलणंतीति संजलणा, जहा इंधणं लभित्ता अग्गी उज्जलति एवं तेऽवि अणेसणादीहिं उज्जलंति, तुसद्दा जो गुणो जहा अतियरति तं जहा-संभवं विभासियव्वं, जया पुण संजलणवज्जाणं बारसण्हं कसायाणं उदयो भवति तदा मूलच्छेज्जं भवति, किं च मूलं ?, सम्मत्तं, पुणसद्दा अण्णेसिंपि गुणाणं जेसिं उदए मूलछेज्जं भवति तं विभासियव्वं, मूलच्छेज्जंति वा मूलगुणपडिवाओत्ति वा एगट्ठा इति।

एत्थ सीसो आह-जति णाम तेसिं केसिंचि कसायाणं उदए चरित्तस्स लाभो चेव ण भवति, केसिंचि पुण लद्धमवि अतियरति पडिवयति वा, ता साह केसिं पुण कसायाणं कतिविहाणं कम्मि परिणामे वट्टमाणाणं चरित्तलंभो ? कहं वा सो परिणामो ? तेसिं केवतिया य भेदा चरित्तस्स?, के य ते इति ?, भन्नति—

बारस० ॥२-३४॥ **सामाइयत्थ०** ॥ २-३५ ॥ **तत्तो य०** ॥ २-३६ ॥ एत्थ सम्मत्तसामाइयस्सावरणे जे भणिता चत्तारि कसाया ते वज्जित्तु जे सेसा चरित्तावरणा बारसविहा कसाया ते जदा खविता उवसामिता वा, बारसहा खतोवसमतोऽवणीया वट्टंति तदा चरित्तलंभो लब्भति, लब्भतित्ति वा दीसतित्ति वा पज्जायतित्ति वा एगट्ठा, अन्ने पुण खतोवसमे संजलणवज्जा बारस मन्नंति। आह—कहं पुण सो खयादिपरिणामो तेसिं इति ?, भन्नति-जोगेहिंति, जोगोत्ति वा वीरियंति वा सामत्थंति वा परक्कमत्ति वा उच्छाहोत्ति एगट्ठा, अणेगभेदो जोगोत्ति बहुवयणं, तस्स पुण चरित्तस्स सामन्नेण विसेसा-भेदा इमे पंच। ते चेव दरिसिज्जंति सामाइयं इत्तिरियं आवकहियं च, इत्तिरियं जो छेदोवट्ठाणियाणं मेहो, तस्स इत्तिरियसामाइयं, आवकहियं मज्झिमतित्थगराणं, एत्थ चरित्तपंचगे पढमं, छेदोवट्ठावणियं णाम सामाइयमित्तिरियं छेत्तूण उवट्ठाविज्जतित्ति छेदोवट्ठावणियं, बीयं लभातित्ति बीयं, परिहारविसुद्धीओ नाम जो पंचमहव्वतियं विसुद्धं परिहरति सो परिहारविसुद्धीओ, सुहुमो अस्य रागः सुहुमसंपरागः। तत्तो--अणंतरं अहक्खायं णाम अकसायं, किह पुण अकसायं तु चरित्तं ?. सव्वेहिवि जिणवरेहिं पन्नत्तं। एते पंच विसेसा गता ॥ इयाणिं बारसविहे कसाए खविए उवसामिए खतोवसमिते वा भणितं, तत्थ खतोवसमो पुव्वदरिसितो। उवसमणं ताव भन्नति अप्पतरंति काउं, अहवा खवगस्स उवसामणा ण भवति, तेण पुव्वं उवसामणा पच्छा खवणा, अहवा पच्छाणुपुव्वीए, ते

॥१०३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

कहं उवसामेति ?, भन्नति–पसत्थेहि मनवचिकायजोगेहिं, जहा अग्गी विज्झायसरिसो हेट्ठा अच्छति सावसेसो एवं उवसामओ कम्मं उवसामेति, जहा वा जलं कयगफलादीहि णिसंतमलं पसंतं भवति तं च तहेव अच्छति, जहा खंभो अंजणामयो जदि वेढिउं मूले पलीवितो अग्गए ठाति एवं उवसामओऽवि । तत्थ इमा दारगाहा—

अणदंस० ॥ २-३७ ॥ उवसामगसेढिपट्ठवओ नियमा संजओ, खवगसेढीए पुण संजतो वा असंजतो वा संजतासंजतो वा, एवं सो पसत्थेसु अज्झवसाणट्ठाणेसु वट्टमाणो विसुज्झमाणो अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोभे जुगवं उवसामेति, ताहे सम्मद्दंसणं मिच्छादंसणं सम्मामिच्छादंसणं तिविहं जुगवं उवसामेति, ताहे णपुंसगवेदं उवसामेति, ताहे इत्थीवेदं उवसामेति, पच्छा हासरतिअरतिभयसोगदुगुच्छत्ति एते छक्कम्मंसे जुगवं उवसामेति, पच्छा पुरिसवेदं उवसामेति, एवं ता पुरिसे, इत्थीवि एवमेव, णवरं सव्वपच्छा इत्थिवेदं, एवं नपुंसओऽवि, णवरं पच्छा णपुंसगवेदं, पच्छा दो दो एगंतरिते अप्पच्चक्खाणकसायं कोहं पच्चक्खाणावरणं च कोहं दोवि जुगवं उवसामेति, ताहे संजलणं कोहं उवसामेति, पच्छा अपच्चक्खाणमाणपच्चक्खाणावरणमाणा दोवि जुगवं, पच्छा संजलणमाणं उवसामेति, पच्छा अपच्चक्खाणपच्चक्खाणावरणमायाओ दोवि जुगवं उवसामेति, ताहे संजलणमायं उवसामेति, पच्छा अपच्चक्खाणं पच्चक्खाणावरणं च लोभं दोवि जुगवं उवसामेति, जो संजलणलोभो तं संखेज्जाइं खंडाइं करेति, पच्छा उवसामेति, पढमिल्लुगं च भागं उवसामितो एत्थ बादरसंपरागो उवसामओ लब्भति, जं तं संखज्जतिमं खंडं तं असंखेज्जभागे करेति, पढमं च पवेदितो ताहे सुहुमसंपरागो उवसामओ लब्भति, समए समए खंडं एक्केकं उवसामेति। तत्थिमा गाथा विभासियव्वा

॥१०४॥

अत्र 'उपशम-श्रेणि एवं क्षपक-श्रेणि' वर्णयते

लोभाणू वेतेन्तो० ॥२-३८॥ जदा तंपि लोभस्स अणुं उवसामितं भवति तदा उवसामगणियंठो लब्भति, एत्थ जदि अंतरे कालं करेति ताहे सो अणुत्तरोववातिएसु देवेसु उववज्जति, एत्थंतरे कालं ण करेति ताहे से पुणो पडिपतति, किं कारणं ?, तस्स पच्चयावरुद्धा कोहादयो, जदा पुणो किंचि तहाविहं पच्चयं उवलभंति तदा उदयं गच्छंति, जहा वाही ओसहादीहिं थंभितो तहाविहं पच्चयं उवलभित्ता उदिज्जति, एवं जहा रुक्खो अंतो बहिं दवेण दूमितो ताव ण उलुज्झति जाव पाणियाइयं पच्चयं ण लब्भति, लद्धे उल्लुज्झति, एवं इहावि तस्स तत्थ अंतोमुहुत्तावसाणे कम्मिवि लोभहेउंमि संजलणलोभो सुहुमो उदिज्जति, पच्छा जेणेव कमेण उवसामंतो गतो तेणेव पडिवतति जाव अणताणुबंधित्ति । एसा उवसामगसेढी सम्मत्ता। एतेण कमेण एकभवगहणे दो उवसमसेढीओ होज्जत्ति, जंमि भवे उवसामओ ण तंमि खवतो होतित्ति । उवसमणं मोहस्स तु एगम्मि भवे हवेज्ज दो वारे । इयाणिं खवगसेढी भन्नति—

अणमिच्छा० ॥ २-४२ ॥ खवगसेढाए पट्ठवओ नियमा मणुयगतीए, णिट्ठवओ निरएसु असंखेज्जतिभागं पलियस्स सेसं खवेति, देवेसु वेमाणिएसु तिरियमणुएसु असंखेज्जवासाउएसु, एतं बद्धाउयस्स, अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोभा जुगवं खवंति, पच्छा ताणं अणंतभागं मिच्छत्तवेयणिज्जे कम्मे छुभति, ताहे तं खवेति, तस्स तिव्वो परिणामो तो सावसेसे चेव अग्गं आरभति, जहा महाणगरदाहे अग्गी सावसेसे चेव इंधणे अग्गंमि घरे लग्गति, एवं इमोऽवि तंमि सावसेसेवि तिव्वज्झाणग्गिणा अग्गं आढवेति, तस्सवि जं सेसं तं सम्मामिच्छत्ते छुभति, ताहे सम्मामिच्छत्तं खवेति, तस्स जं सेसं तं सम्मत्ते छुभति, ताहे सम्मत्तं खवेति, तत्थ सो खाइयसम्मद्दिट्ठी भवति । सो य पुण बद्धाउगो वा अबद्धाउगो वा, जति बद्धाउगो ताहे ठाति तंमि

चेव, अह अवद्धाउगो ताहे तहपवत्तो चेव अवसेसाइं खवेति, तत्थ तहेव संजलणवज्जे अट्ठवि कसाए एगट्ठे चेव खवेति. जाहे तेसिं अट्ठण्हं कसायाणं संखेज्जतिभागं खवेमाणो गतो भवति ताहे नामस्स कम्मस्स इमाओ तेरस पयडीओ खवेइ, तंजहा-निरयगइनामं एगिंदियजातिनामं बेइंदिय० तेइंदिय० चउरिंदियजातिनामं निरयाणुपुव्वीनामं तिरिक्खजोणियाणुपुव्वीनामं अप्पसत्थविहाओमातिनामं थावरनामं सुहुमनामं साहारणनामं अपज्जत्तं, तहा दरिसणावरणीयस्स इमाओ तिन्नि पगडीओ, तंजहा-निद्दा-निद्दा पयलापयला थीणगिद्धी य । तासिं अट्ठण्हं जं सेसं तंपि । एत्थ गाथा—

गतिआणुपुव्वि दो दो, जातीनामं च जाव चउरिंदी । अपसत्था विहगगती थावरणामं च सुहुमं च ॥२॥४३॥

साहारमपज्जत्तं निद्दानिद्दं च पयलपयलं च । थीणं खवेति ताहे अवसेसं जं च अट्ठण्हं ॥२॥४४॥

ताहे णपुंसगवेदं ताहे इत्थिवेदं ताहे छक्कं हासरतिअरतिभयसोगदुगुंछाओ, ताहे पुमवेदं तिन्नि भागे करेति, दो जुगवं, एगं संजलणकोहे छुभति, ताहे संजलणकोहं तिन्नि भागे करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं भागं संजलणे माणे छुभइ, ताहे तंपि तिन्नि भागे करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं संजलणमायाए छुहइ, ताहे तंपि तिन्नि खंडाइं करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं संजलणे लोभे छुहति, ताहे तंपि तिन्नि भागे करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं भागं संखेज्जाइं खंडाइं करेति, एत्थ बादरसंपराओ खवओ ताहे खवेति, (एगं संखिज्जइमं भागं मोत्तूण सव्वं खवेति) जं संखेज्जतिमं खंडं तं असंखेज्जे भागे करेति, तेऽवि कमेण खवेति, तत्थ खवओ सुहुमसंपराओ, जाहे तंपि खवितं भवति ताहे खवगणियण्ठो लब्भति, एत्थंतरा वीसमति अणाभोगणिव्वत्तिएणं करणोवाएणं, जहा कोति महासमुद्दं तरिऊण जाहे अणेण धाहो लद्धो भवति ताहे मुहुत्तं अच्छिऊण

॥१०६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सेसं तरति, एवं सो अणेगभवसंचितं कम्मं खविऊण ताहे मुहुत्तभंतरं आसत्थो, एत्थंतरा जाव अच्छति ताव नियंठो लब्भति जाव दोहिं समएहिं सेसेहिं केवलणाणमुप्पज्जिस्सतित्ति. ताहे जो एगो समतो तत्थ निद्दं पयलं च खवेति, जो चरिमसमतो तत्थ पंचविहं णाणावरणिज्जं चउव्विहं दंसणावरणिज्जं पंचविहं अंतराइयं एयाओ चोद्दस य कम्मपगडीओ जुगवं खवेत्ता अणंतं केवलणाणदंसणं उप्पाडेति । अन्ने भणंति-जत्थ निद्दं पयलं च खवेति, तत्थ नामस्स इमाओ पगडीओ खवेति, तंजहा-देवगति देवाणुपुव्वी विउव्विदुगं पढमवज्जाइं पंच संघयणाइं अन्नतरवज्जाइं पंच संठाणाइं आहारगं तित्थगरनामं जदि अतित्थगरो, एत्थ गाहा चोद्दसमिऊण० ॥२-४५॥ चरिमे णाणा० ॥ २-४६ ॥ गतत्थाओ, एवं सो उप्पण्णणाणदंसणधरो जातो। संभिन्नं पासंतो० ॥२-४७॥ समस्तं भिन्नं सं एकीभावे वा सत्तामंगीकृत्यैकजीवाजीवादिभावेण भिन्नं संभिन्नं, अहवा दव्वपज्जायभावेण भिन्नं संभिन्नं, सम्यग्भिन्नं वा वज्झब्भंतरतो वा भिन्नं, अहवा संभिन्नमिति जीवादिदव्वं गृहीतं, लोगमलोगं चेति खेत्तं, सव्वतो इति भावाण गहणं, सव्वपगारेण सर्वतः, सर्वं यावत्किंचिदित्यर्थः, भूतं भव्वं भविस्सं चेति कालस्स गहणं, न च द्रव्यादिभ्यो भूतादिकालविशेषेभ्यो अन्यद् ज्ञेयमस्ति यदुपलभ्येतेति, तं नत्थि जं एवं पासतो न पासतित्ति ॥ एवं निज्जुत्तिसमुत्थाणपसंगतो जदिदं सुत्तं यतोऽयमिति, जहा वा एतस्स पवित्ती यदादि यत्पर्यवसानं एवमादि तवनियमणाणरुक्खारोहणादारब्भ जाव भूतं भव्वं भविस्सं चेत्येनेन भणितं। एवं पवयणउप्पत्ती विभासिता चेव भवतित्ति । इयाणिं पवयणएगट्ठियादि विभासियव्वं । जतो एत्थगा चिरंतणदारगाहा- जिणपवयणुप्पत्ती०॥२-४८॥ तत्थ जिणपवयणुप्पत्ती भणिता, तस्स पुण पवयणस्स इमाणि एगट्ठियाणि तिन्नि, तंजहा- पवयणंति वा सुत्तंति वा अत्थोत्ति वा, तत्थ सामन्नेण य सुयनाणमंगीकाऊण पवयणमिति वदिस्सति, तथा अविपुलमत्थतो मुकुलकप्पं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

सुत्तमिति, तदेव हि विवेचितं समुत्फुल्लकमलकल्पं अत्थ इति, स च सूत्राभिप्रायः, एतेसिं तिण्हं एक्केक्कस्स णामा एगट्ठिया पंच, तत्थ पवयणस्स इमे-सुयधम्मोत्ति वा तित्थंति वा मग्गोत्ति वा पावयणंति वा पवयणंति वा एगट्ठा, सुत्तस्स इमे- सुत्तंति वा तंतंति वा गंथोत्ति वा पाढोत्ति वा सत्थंति वा एगट्ठा, अत्थस्स इमे- अणुयोगोत्ति वा नियोगोत्ति वा भासत्ति वा विभासित्ति वा वत्तियंति वा एगट्ठा । पवयणएगट्ठिता गता॥ इयाणिं विभागो, सो य सव्वत्थ विसयविभागादिणा पगारेण विभासिअव्वो, एत्थ पुण एगट्ठितविभागं किंचि दरिसेतित्ति ॥ अणुओगस्स सत्तविहं निक्खेवं भणति—

नामं ठवणा० ॥२४९॥ णामठवणाओ गताओ. जाणगभवियसरीरवतिरित्ता दव्वस्स वा दव्वाण वा दव्वेण वा दव्वेहिं वा दव्वंमि वा दव्वेसु वा अणुयोगो दव्वाणुयोगो, दव्वस्स जहा जीवदव्वस्स अजीवदव्वस्स वा, जीवदव्वस्स चउव्विहो-दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो, दव्वतो एगं जीवदव्वं खेत्ततो असंखेज्जपएसोगाढं कालतो अणादीए अपज्जवसिते भावतो अणंता नाणपज्जवा दंसण० चरित्त० अगुरुलहुयपज्जवा य एवमादि । अजीवदव्वस्सवि, किं पुण अजीवदव्वं ?, परमाणू, तस्स चउव्विहो दव्वओ ४, दव्वतो एगदव्वं खेत्तओ एगपदेसोगाढं कालतो जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं भावतो एगवन्ने एगगंधे एगरसे दुफासे। दव्वाणं अणुतोगो जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य, जीवदव्वाण जधा कतिविहा णं भंते ! जीवपज्जवा पन्नत्ता ?. कतिविहा णं भंते ! अजीवपज्जवा पण्णत्ता ?, दव्वेण अणुतोगो, जहा- कोति पलेवेण वा एगेण वा अक्खेणं, दव्वेहिं जहा बहूहिं अक्खेहिं, दव्वंमि जहा फलए वा एगंमि वा वत्थे, दव्वेसु जहा बहुसु कप्पेसु वा फलएसु वा, तत्थ दव्वस्स अणुतोगो य अणणुतोगो य, तत्थ इमं निदरिसणं—

॥१०८॥

अथ अनुयोगस्य नामादि सप्त-निक्षेपा: वर्णयते

वच्छगगोणी०॥२-५०॥गोदोहओ जो पाडलाए वच्छओ तं बहुलाए भुयति बाहुलगं वा पाडलाए,एवं वितहकरणं अणणुओगो, जया जं जाए तं ताए भुयइ तया तहाकरणं भवति अणुओगो, तस्य चार्थस्य प्रसिद्धिर्भवति, एवमिहापि जइ जीवदव्वलक्खणेणं अजीवं परूवेति तो अणणुयोगो भवति, तेण विसंवदंतेणं अत्थो विसंवदति, अत्थेण विसंवयंतेणं चरणं, चरणविणासे मोक्खाभावो, मोक्खाभावे दिक्खा निरत्थिया। बितिए पसत्थे समोतारो, एवं सव्वत्थ भाणियव्वं। खेत्तेवि छभेदा, खेत्तस्स जंबुद्दीवस्स खेत्ताणं दीवसागरपन्नत्ती खेत्तेण जहा जंबुद्दीवं पत्थयं काऊण अलोके पक्खिप्पंति पुढवीजीवा, खेत्तेहिं अड्ढाइज्जेहिं दीवसमुद्देहिं, बहूहिं वा पत्थयं काऊण जीवादिवियालणा कीरति, खेत्तंमि भरहे अन्नत्थ वा जत्थ अणुतोगो कहिज्जति, खेत्तेसु पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु। तत्थ खेत्तओ अणुतोगये दिट्ठंतो खुज्जाए—सातवाहणो राया, भरुयच्छे नहवाहणं रोहेति, एवं कालो जाति, वरिसारत्ते य सणगरं वच्चति, अन्नदा तेण रोहएण गतेल्लएणं अत्थाणीमंडवियाए णिच्छूढं, पडिग्गहधारी खुज्जा, सा चिंतेति—एस अपरिभोगो, नूणं राया जाइतुकामो, तीसे य जाणसालिओ राउलओ परिजितओ, तस्स सिट्ठ, सो पए जाणगाइं पमज्जितो पयादियाणि य, तं दट्ठूण सेसएणवि लोएण पयट्टिताइं, राया य रहस्सियगं पधाइतो जाव लोगो पए पुरतो गतेल्लओ दिट्ठो, राया चिंतेइ--ण मए कस्सति कहितं, कओ नायं ?, परंपरएणं जाव खुज्जत्ति, खुज्जा पुच्छिता, ताए तहेव अक्खायं ॥ अत्थ खुज्जाए अपरिभोगं खेत्तं जातंति पन्नवयंतीए अणुओगो। अन्नहा पुण अणणुतोगो, एवं समोयारो।

कालस्सवि छ भेदा, कालस्स जहा समयस्स पट्ठसाडितादिट्ठंतेणं, कालाणं जहा ओसप्पिणीए छव्विहो कालो परूविज्जति, कालेण अणुओगो, जहा वाउकाइयाणं वेउव्वियसरीरा ए पलिओवमस्स संखेज्जतिभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, कालेहिं इमीसे णं

॥१०९॥

भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइकालेण अवहीरंति ?, ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति, कालंमि अणुओगो बितियाए पोरुसीए, कालेसु जहा ओसप्पिणीए तिसु कालेसु उस्सप्पिणीए दोसु। एत्थ उदाहरणं— एगो साहू पादोसियं परियट्टंतो रहसेणं कालं ण जाणति, सम्मद्दिट्ठिगा य देवता तस्स हियट्ठाए संबोहयति मिच्छादिट्ठिगाए मएणं, तक्कं विकेइ महता सद्देणं, पुणो पुणो तीसे कन्नारोडगं असहमाणो भणति-अहो तक्कवेलत्ति, जहा तुब्भं सज्झायवेला, उवउत्तो मिच्छामि दुक्कडंति, देवताए अणुसासितो-मा बितियं, मा च्छलिहिसित्ति। तस्स अकाले सज्झायंतस्स अणणुओगो, देवताए कालवेलं साहंतीए अणुओगो। वयणस्स छ भेदा-वयणस्स०, एगस्स वयणस्स जणवयादिस्स, वयणाणं सोलसण्हंपि, वयणेणं अद्धमागहेणं, वयणेहिं अट्ठारसहिं देसीभासाहिं, अहवा एयस्स कहेहित्ति बहूहिं भणितो, वयणंमि खतोवसमिते, वयणेसु णत्थि, सव्वदेसीभासासु वा पवत्तति अणुओगो, अहवा सच्चे य असच्चामोसे य, एत्थ उदाहरणं—

बहिरउल्लावो गामिल्लओ य, बाहिरो हलं वाहेति, पंथं पुच्छितो भणइ-घरजाइगा मज्झ बइल्ला, भज्जाए से भक्तं आणीतं, तीसे कहेति जहा बइल्ला सिंगिता, सा भणति-लोणितं वा अलोणितं वा माताए ते रद्धयं, सा साहूए कहेति, सा भणति-थूलं वा वरट्टं वा थेरस्स पुत्तं होहिति, थेरं सद्दाति, थेरो भणति-पीतु जीएणं एगंपि तिलं ण खामि, एत्थ तेसिं तं वयणं अन्नहा कहंताणं अणणु०। मामेल्लए एगो भग्गकुलपुत्तओ, सो मुतो, तस्स महिला णगरे दुल्लभं तणकट्ठपत्तन्तिकाऊणं गामं गता, पुत्तो से डहरतो, सो वड्ढितो मातं पुच्छति-कहिं मम पिता ?, ताए सिट्ठं जहा मतेल्लओ, का पुण तस्स वित्ती ?, सेवितोइतो, अहंपि सेवामि, तुमं तं ण जाणसि, किह सेविज्जति ?, विणीतेहिं, णागरं विणयं ण जाणसि, किह णगरे विणओ ?, णीओ सव्वहिं होज्जाहि, अहं णीयं वंदिस्सामि-

॥११०॥

त्ति गतो सो, णगरं पहाइतो, पेच्छति वाहे, भट्टि ज्जोत्ति भणइ, मिगा पलाता तस्स सद्देण, तेहिं हतो, तेण सब्भावो कहितो, भणितो य-जदी एरिसे पेच्छसि तदा णिलुको एज्जासि, ततो तेणं रजका दिट्ठा, तेसिं च पोत्ताणि हीरंति, ओड्डएण अच्छंति, सो य णिलुक्कंतो एइ, चोरोत्ति पिट्टितो, सब्भावं कहिते भणितो—भणेज्जा सि सुद्धं नीरयं निम्मलं भवतु ऊसं च पडतु, सो तओ एति, एगत्थ ओच्छुपीया णीणिज्जंति, भणति—भट्टि ! सुद्धं णीरयं ऊसो य पडतु, तत्थवि पिट्टितो, कहेति, मुक्को भणितो य-भण बहुसइयं, मतए णीणिज्जंते भणसि-बहुसतियं होतु. एरिसं मा कदादि तेहिं भणितो, विवाहे भणइ, (तत्थ भणिओ भण) एरिसो मे संजोगो थिरो थावरो य भवतु, तं नियलबद्धए कुलपुत्तए पभणियं, तेहिं भणितो-एवं भणिज्जासि--एतातो ते लद्धं मोक्खो भवतु, अन्ने मित्तसंघाडिं करेंति, तत्थवि पिट्टितो, एगस्स कारणियस्स अल्लीणो, तत्थ अंबेट्ठि, घरपलीवणए, धूवेंतस्स गोभत्तं छूढं, तस्स वयणविभागाणिपुणस्साणणु०, एस वयणे अणुयोगो अणणुयोगो य भणितो । भावे य छ भेदा, भावस्स उदय-यादिस्स, भावाणं छण्हवि, भावेण निज्जराभावेणं कहेति, भावेहिं संगहइयाईहिं पंचहिं, भावंमि खतोवसामिते, भावेसु तेसु चेव ओदतियादिसु अहवाऽऽयारसूयगडाईसु । तत्थ भावे अणुतोगे य अणणुओगे य इमे सत्त उदाहरणा—

सावगभज्जा० ॥२॥५५॥ सड्ढेण सड्ढीए वयंसिया विउव्विता दिट्ठा, अज्झोववन्नो, परिहाइ, निव्वंधे कहितं, ताए भाणियं-आणेमि, तेहिं वत्थाभरणेहिं अप्पा णेवत्थितो, अतिगता, दीवओ णंदवाहितो, अच्छिओ, पुणो अधिइं पगतो, चिरर-क्खियं मग्गीति, ताए पत्तियावितो साहिआणं, एत्थ तस्स तीए य सम्मं साभिप्पायकहणेण अणुओगो, एवं अन्नत्थवि, तत्तो यथाविधिं १ । सत्तवतिए-पच्चंतिओ, साधूआगमणं, गोट्ठीए पडिणिययाए घरं दरिसितं, तेणमस्सासूतियाए दिन्नं, ण कहेयव्वंति,

एतेणं पडियोगेणं दिन्नं, वत्ते वरिसारत्ते आपुच्छंति, भणितो वणसंडउदाहरणेणं, जहा पुप्फफलसमिद्धं, ण तरति किंचिवि घेत्तूणं, मुलगुण उत्तरगुण मधुमज्जविरइं वा, पच्छा सत्तवइगं वयं दिन्नं, चोरो गतो, अवसउणोत्ति नियत्तो, घरं अप्पसारियं अतीति, भगिणी य से पाहुणया आगएल्लया, तीए पुरिसनेवत्थकरणं, निद्दाए तहेव सुत्ता अवत्तासेऊणं, अतिगतो पेच्छइ, असी अंछितो, पयं सरितं, नियत्तो, असीए खणत्ति कयं, पडिबुद्धा, लज्जाए पिच्छिऊणं विसन्नो, समोतारो २। कोंकणगस्स महिला मया, अन्ना ण लभइ सवत्तिपुत्तो अत्थित्ति, पच्छा अडवीए कंडाइ आणेति विद्धो भणति-ताता!, मारितुमिच्छितो, तस्स दारगस्स अभिप्पायं णाऊण भणंतस्स अणु० । एवं समोतारो ३ ॥ नउले-एगा चारभडिया गामे वसति, सा अन्नया कयाइ गब्भिणी जाता, अन्नावि णउली गब्भिणीया तत्थ एति जाति य, ताओ समियाओ पसूयाओ, ताए चिंतियं-मम पुत्तस्स रमणओ भविस्सतित्ति तस्सावि पीहगं खीरं च देति, अन्नया तत्थ सप्पो पविट्ठो, तेण सो खद्धो दारओ मओ, इतरेणोतरंतो दिट्ठो मंसुल्लियाओ, पच्छा खंडाखंडिं कतो, ताहे सो रुहिरलित्तेणं तुंडेणं तीय मूलं गतो, चाडुगाणि काउमारद्धो, ताए भणियं-एएण मम पुत्तो खतितो, खंडंतीए मुसलेण आहतो, पच्छा धावंती घरं पविट्ठा तं पेच्छति सप्पं, ताहे दुगुणं रोयति, पच्छा अणु० ४ ॥ कमलामेला, बलदेवपुत्तो निसढो, तस्स पभावतीए देवीए पुत्तो सागरचंदो कुमारो, इतो य धणदेवओ उग्गसेणस्स णत्तुओ, तस्स कमलामेला णाम रायदुहिता वरिया, णारदो य कलहदलियं विमग्गमाणो कमलामेलाए सगासमुवगतो, तीय पुच्छितो-किं तुमे अब्भुतं दिट्ठंति ?, तेण भणितं-दुवे अब्भुयाणि इहेव बारवतीए, जं च उग्गसेणणत्तुओ रूवेण परमविरूवो बलदेवपुत्तो सागरचंदो उक्किट्ठरूवो, तीए भणितं-भगवं! किह मम सो भत्ता होज्जत्ति ?, तेण भणियं-अहं करेमि तेण ते सह संजोगंति, ततो तीसे रूवं पट्टियाए लिहिऊणं गतो सागर-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥११३॥

चंदसगासं, सागरचंदेण भणिओ-का एसा एवं उक्किट्ठसरीरा दारियत्ति ?, णारएण भणियं-इहेव बारवतीए रायदुहिया कमलामेलत्ति, सो तंमि अज्झोववन्नो न खाति न पिवति, ततो संबो उवागतो, तेणं सो चिंताकुलेण ण णातो एंतो, संबेण सणियं उवल्लिऊण हत्थेहिं अच्छीणि ठइयाणि, सागरचंदेण भणियं-का एसा कमलामेलत्ति ?, संबो हसिऊण भणति-णाहं कमलामेला, कमलामेलो अहं पुत्ता !, सो पाएसु पडिऊणं भणति-तात ! उत्तमपुरिसा सच्चपइन्ना, तो मम कमलामेलं मेलवेहित्ति, संबेण अब्भुवगतं, ततो पज्जुन्नसगासं पाडिहारियं पन्नत्तिविज्जं मग्गति, तेण दिन्ना, ततो कमलामेलाए विवाहदिवसे विज्जाए पडिरूवं विउव्विऊणं अवहरिता कमलामेला चेव, तए उज्जाणे सागरचंदस्स तीए सह विवाहं काऊणं उवललंता अच्छंति, विज्जापडिरूवगंपि विवाहे वट्टमाणे अट्टट्टहासं काऊणं उप्पतितं, ततो जातो खोभो, ण णज्जति केण हारियत्ति ?, णारदो पुच्छितो भणति-रेवतउज्जाणे दिट्ठत्ति, केणवि विज्जाहरेण अवहियत्ति, ततो सबलवाहणो णिग्गतो कण्हो, संबो विज्जाहररूवं काउणं संपलग्गो जुद्धं, सव्वे पराजिता, कण्हेण सद्धिं लग्गो, ततो जाहेऽणेण णातो रुट्ठो तातोत्ति, ततो से चलणेसु पडितो, कण्हेण अंबाडितो, संबेण भणितं-एसा अम्हेहिं गवक्खेणं अप्पाणं मुयंती किहवि संभाविता, ततो कण्हेण उवगमितो उग्गसेणो, पच्छा इमाणि भोगे भुंजमाणाणि विहरंति, अरिट्ठनेमी समोसरितो, ततो सागरचंदो कमलामेला य सामिसगासे धम्मं सोऊण गहिताणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि, ततो सागरचंदो अट्ठमिचउद्दसीसुं सुन्नघरे सुसाणेसु वा एगराइयं पढिमं ठाति, धणदेवेणं आयण्णिऊणं तंवियाओ सूती घडावियाओ, ततो सुन्नघरे पडिमं ठियस्स तस्स वीससुवि अंगुलीणहेसु आहोडियातो, सम्ममहियासेमाणो य वेयणाभिभूतो कालगतो, देवो जातो, ततो चितियदिवसे गवेसंतेहिं दिट्ठो, अक्कंदो जातो, दिट्ठा सूतीतो, गवेसंतएहिं

भावानुयोगे उदाहरणानि

॥११३॥

तंबकुट्ठगसगासे उवलद्धं धणदेवएण कारितातोत्ति, रूसिता कुमारा, धणदेवगं मग्गंति, जुद्धं दोण्हवि बलाणं संप्पलग्गं, ततो सागरचंदो देवो अंतरे ठाऊणं उवसामेति रोहिणिपरंपरगणादेण, पच्छा कमलामेला भगवतो सगासे पव्वइया । एत्तियं पसंगेण भणितं । एत्थ सागरचंदस्स संबकुमारे कमलामेलाभिप्पायं साहेंतस्स अणुतोगो अणणुओगो ५ ॥

संबस्स साहसं-जंबवती भण्णति-किह पुत्तस्स कीलितं पेच्छेज्जामि?, वासुदेवो भणति-किं तो अव्वारिद्विहिं धरिसिज्जिहिसित्ति, सा भणति-अवस्स पेच्छियव्वाणि, एवं होउत्ति, गोवी जाता, इतरो गोवो जातो, महियं पविक्कीया, इतरेण दिट्ठा गोवी, भणिता-एहि तक्कं गेण्हामि, सा अणुगच्छति, गोवो मग्गेण, सो एगं अविउत्थगं पविसति, सा भणति-णाहं पविसामि, किं तु मोल्लं देहि, तो एत्थं चेव ठितओ तक्कं गेण्हाहि, सो भणति-णवि, अवस्स पविसियव्वं, हत्थे लग्गो, एगत्थ गोवो लग्गो, जाहे ण तरति कड्ढिउं ताहे तं मुतितुं हत्थाओ तेण समं लग्गो, णंवरं एगाए चेव हेल्लाए आविहितो, वासुदेवो जातो, इयरंपि मायं पासति, ओगुद्दिं काउं पलातो, बितिए दिवसे मड्डाए आणिज्जंतो खीलगं घडेति, वासुदेवेण पुच्छितो-किं एयं घडेहि ?, सो भणति-जो पारियोसियं बोल्लं करेति तस्स मुहे कोट्टिज्जति, समोतारो ६ ।

चेल्लणा सामिं वंदित्ता वेयालियं माहमासे पविसति, पच्छा साहू दिट्ठो पडिमापडिवन्नो, ताए रत्तिं सुत्तियाए किहवि हत्थो लंबिओ, जया सीतेणं गहितो तदा चेतियं, पवेसितो, सव्वसरीरं सीतेणं गहीतं. ताए भणियं-स तपस्वी किं करोति?, पच्छा रन्ना चिंतितं-एयस्स कोऽवि संगारदिन्नओ, रुट्ठो, कल्लं पाओ अभयं भणति-सिग्घं अंतेपुरं पलीवेहि, सोवि गतो सामिणो मूलं, इतरेणवि सुन्नहत्थिसाला पलीविता, सो गंतुं सामिं भणति-चेल्लणा एगपत्ती अणेगपत्ती ?, सामिणा भणियं-एगपत्ती, ताहे मा डज्झिहितित्ति

॥११४॥

तुरियं नियत्तो, अभयो य निप्फिडाति, तेणं भणितं-पलीवितं ?, आमं सामी !, तुमं किन्न पडितो ?, सो भणति-मम किं ?, अहं सामिस्स मूले पव्वइस्सामित्ति, ताहे अभएण चिन्तियं-मा विणस्सिहिति, पच्छा भणियं, ण डज्झत्ति ७।

एतेसु सव्वेसु अणुयोगो अणणुयोगो य विभासियव्वो। इदाणिं नियोगः, णि आधिक्ये 'राजिच् योगे' अतीव योगो नियोगो, सो चेव अत्थो जदा सुत्तेण समं निउत्तो भवति तदा चरणकरणपसूती भवति, जहा वच्छए गोणीए सम्मं निउत्ते खीरप्पसूती भवति॥ भासा विभासा वत्तियंपि, एताणिवि तिन्निवि संजुत्ताणि चेव वच्चंति। तत्थ सामन्नेण एकप्रकारं अत्थं बुवाणो भासगो, मध्यं बुवाणो विभासगो, सव्वेण प्पगारेण बुवाणो वत्तीकरगो। तत्थ इमे उदाहरणा-

कट्ठे पोत्थे चित्ते०॥२-५६॥जथा देवदत्तो खंदस्स वा रुद्दस्स वा पडिमं काउकामो तदणुरूवपमाणं कट्ठं पगरेति जारिसं तं कट्ठं पुरिमं सुत्तं वा, तं चेव कट्ठं जदा परसुमादितच्छितं भवति तदा णज्जति जहा एत्थ इत्थी वा पुरिसो वा कीरिहिति, एवं चेव कट्ठसमाणे सुत्ते जो जं सुत्तालावगनिप्फन्नं धात्वर्थमात्रं तं चेव भासइ सो भासओत्ति भन्नति। जदा तं चेव कट्ठं वासिथोभणयमादीहिं परिकम्मितं अंगपच्चंगसंठाणाणि बहुं निम्मवियाणि, एवं चेव तस्स सुत्तस्स जो दोहिं वा तिहिं वा चउहिं वा पगारेहिं अत्थपयाणि विभासति सो विभासतोत्ति भन्नति। सो य चोद्दसपुव्वी अत्थे विभासिउं समत्थो। उक्कोसतो विभासतो वत्तियं, जदा तं चेव अंगपच्चंगाणं णिण्णुण्णयरोमकूवदिट्ठिफलकमादीणि णिव्वत्तियाणि, एवं चेव जदा सव्वपज्जवेहिं अत्थं भासति तदा वत्तीकरणे हवइ, सो य उक्कोसओ वत्तीकरगो केवली, केति पुण जेण तिहिं परिवाडीहि अणुओगो सुतो गाहितो य सत्तहिं वा सो वत्तीकरगो इति भणंति। एवं ता कट्ठे। पोत्थे पढमं दव्वादि मिलिता, ते चेव बद्धा पमाणागिती कता भासा, अंगाणि जहिच्छिताणि चेव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अंगपच्चंगाणि णिम्मवियाणि तदा विभासा, जदा दिट्ठिमादि सव्वं कयं तदा वत्तियं। इयाणिं चित्ते-कुड्डे पमाणागिती टिक्किता ताहे भासा, ताणि चेव अंगपच्चंगाणि निम्मवियाणि विभासा, जदा दिट्ठिमाइ सव्वं कयं तदा वत्तियं। सिरिघरि-एगो जाणति, जहा एत्थ रयणाणि संति, एवं सुत्तइत्तो जाणति जहा किर एत्थ महं अत्थो अत्थि, अन्नो सिरिघरिओ जाणति-असुगं इमं रयणं, एवं चेव कोइ सुइत्तो जाणति जहा सुत्तस्स सामन्नेण इमो अत्थो, एवं सुत्तत्थवियाणगो भासगो, अन्नो तेसिं अणुभागं मोल्लं च जाणति, एस विभासओ, अन्नो तेसिं सव्वं जाणति जहिं जहिं जदा जदा विलएतव्वं णिगूहितव्वं च, एवमादी य जाणति, एवं वत्तिओ जो जहिं अत्थो ससमए वा उस्सग्गेण वा अववाएण वा जत्थ जत्थ जदा जदा जहा जहा पउंजियव्वो एवं सव्वं जाणइत्ति। पोण्डं जारिसं एरिसं सुत्तं, ज़दा तं चेव ईसिं विगासितं भवति तदा भासओ, जदा तं चेव वियसियं पंकजं भवति तया विभासओ, जदा तं चेव सव्वपज्जाएहिं विगसितं भवति तदा वत्तियं, पोंडोत्ति गतं। इयाणिं देसिएत्ति, जहा कोति पुरिसो पाडलिपुत्तस्स पंथं जाणति, एवं सुत्तइत्तो जाणति जहा एत्थ अत्थो, अन्नो जाणति जहा ताव अमुगं णगरं गम्मति, जं तस्स अंतरे तं न याणइ, एवं चेव भासओ जाणइ जहा इमो अत्थो, जहा ततिओ पुरिसो समुप्पन्नं तंपि पंथं जाणति उज्जुगंपि वक्कंपि परिमाणंपि जाणति, जहा एत्तियाणि गाउयाणि वा, एवं चेव विभासओवि बहुतर-एहिं पज्जवेहिं जाणति, जो चउत्थो सो एतं चेव सव्वं जाणति, तत्थ सावयभयं वा तेणभयं वा जहा उव्वत्तिउं जाणति, पुणोवि तं मग्गं ओगाहति, एवं सो सव्वेहिं पज्जवेहिं जाणति, एवं चेव वत्तिओत्ति। 'पडिसद्दगस्स सरिसं जो अत्थं भासए तु सुत्तस्स। सय सो इग बालपंडितसाधुजतीमादि सा भासा ॥ १ ॥ एवं एगट्ठिनाविभागोत्ति।

इयाणिं दारविधीपाविस्सी, सा ताव न भन्नति, कम्हा ?, दारविहीए कए किल सत्थं समप्पिहिति, नयावि तदंतग्गता एव इति णयविधीवि तत्थेव भन्निहिति इति मा सीसस्स अविणयपडिवत्ती भविस्सति, ताहे आयरितो भणति- अच्छतु ताव दारविधी य, वक्खाणविहिं भाणिस्सामि, पच्छा किं च वक्खाणविधीए ? इति, वक्खाणविधी नाम जारिसाओ घेत्तव्व जारिसस्स वा सीसस्स दायव्वं जहा य इति, तत्थ इमे आयरियसीसाणं उदाहरणा, एगं आयरियस्स एगं सीसस्स, दोवि वा एगंमि चेव ओतरंति ॥

गोणी चंदण०॥२-५७॥एगस्स गावी भग्गा, सा पुण अतीव खीरदा, ताहे सो चिंतेइ-मा बहुं चुक्किहामि, कंचि वंचेमि, तेण सा तणस्स उवेऊणं गोसंघाए पए चेव उवट्ठविया, तत्थ कतिता आगओ, सो भणइ- विक्काइ गावी ?, तेण भाणियं- विक्काइ, किह लब्भति ?, पंचासतेण, लट्ठत्ति काउं गहिया, सोवि पलाओ, इयरो उट्ठवेइ, सा न तरेइ उट्ठेउं, तेण नायं, अहंपित्थ कंचि वचेमि, अन्नो आगतो, विक्काति ?, आमं, तिएण भणितं- विक्कमावेमि दुद्धं च जोएमि ता गिण्हामि, सो भणति-एत्ताहे चेव उट्ठेट्ठा, तहवि जोएमोत्ति भणति, उट्ठवेउमारद्धो ण उट्ठति, भणति- एवं चेव ठितेल्लगं गेण्हाहि, इतरो न इच्छति, सो भणति- मएवि एवं चेवट्ठिता गहिता, इतरो भणति- जदि तुमं बोद्दो, अहं ण गेण्हामि, एवं एरिसस्स पासे ण गहेयव्वं, जो अक्खितो समाणो भणति- एमेव मए सुयंति, जो अत्थं गाहेति सव्वपज्जवेहिं तस्स पासे सोयव्वं । एतं ता आयरियस्स उदाहरणं । इमं सीसस्स- बारवती णगरी कण्हो वासुदेवो, तत्थ तिन्नि भेरीओ, तंजहा- संगामिया अब्भुतिया कोमुतिया, तिन्निवि गोसीसचंदणमदीओ, देवतापरिग्गहिताओ, तस्स चउत्था भेरी असिवोवसमणी, तीसे उट्ठाणपारियाणियं कहेयव्वं—तेणं कालेणं तेणं समतेणं सक्को दे-

वेंदो, सो तत्थ देवलोगे वासुदेवस्स गुणकित्तणं करेंति-अहो उत्तमपुरिसा एते अवगुणं ण गेण्हंति, णीयं च कम्मं ण करेंति, तत्थ एगो देवो असद्दहंतो आगतो, वासुदेवो य णीति, सो तत्थ कालसुणगरूवं विउव्वित्ता वावन्नदुब्भिगंधं पंथब्भासे पडितो, तस्स लोगो गंधेण सव्वो पराभग्गो, वासुदेवो तेण पंथेण आगतो, तस्स सुणयस्स दंते दट्ठूणं भणति- अहो इमस्स पंडराओ दाढाओत्ति, ताहे सो देवो चिंतेति- ण सक्का एतेण उवाएणंति, ताहे सो वासुदेवस्स जं आसरयणं तं गहाय पधावितो, सो य बहुरायाणएणं णातो जहा आसो हीरति, तेण सिट्ठं, तत्थ कुमारा रायाणो य णिग्गया, तेण ते हतमहितवीरघातिया काऊण विसज्जिता, ताहे वासुदेवो णिग्गतो, सो भणति- कीस मम आसं हरसि ?, मम आसो तुज्झ ण होति, देवो भणति- जुद्धं मम देहि, जो जयति तस्स आसो, इतरो भणति- बाढं, किह जुज्झामो?, तुमं भूमीय अहं च रहेणं, रहो दिज्जतु, णत्थि मम रहेणं(कज्जं), आसो हत्थी पादेहिं बाहुजुद्धं, सव्वेहिवि ण कज्जं, दोवि जुज्झेमो(हि)ट्ठाणजुद्धेण, ताहे वासुदेवो भणति-पराजितोऽहं, णेहि आसं, तत्थ देवो तुट्ठो समाणो सखिखिणी भणति- ब्रूहि वरं किं देमि ?, वासुदेवो भणति- मम असिवप्पसमणिं भेरिं देहि, तेण दिन्ना, तीसे भेरीए एसुप्पत्ती । ताहे छण्हं मासाणं अणुतोगो, पुव्वुप्पन्ना रोगा वाहीओ वा उवसमंति, णवगा वाही छ मासे ण उदीरंति, सद्दं जो तीए सुणेति, तत्थऽन्नदा कयाती आगंतुओ वाणियओ, सो अतीव दाहज्जरेण अभिभूतो, तं भेरिपालयं भणति- गेण्ह तुमं सयं से पलं वा देहि, तेण लोभेण दिन्नं, तत्थ अन्नं चंदणखंडं छूढं, एवं सा सव्वा चंदणकंथा कया । अन्नदा कयायी असिवं वासुदेवेण तालाविता, तं चेव सभं ण पूरेति, तेण भणितं- जोएह मा भेरी विणासिता होज्जा, जोइज्जंती सव्वाणि, विणासिता नाऊणं तं पुरिसं जीयदंडं आणवेति, अन्ना मग्गिता, अन्नो ठवितो, सो आदरेणं रक्खति । एवं इहापि सीसो आयरियपासाओ निग्गतो

समाणो तस्स किंचि पम्हुट्ठं, सो तंमि आलावए णट्ठं अन्नं लोइयं छुभति करेति वा भारहरामायणादीणं एवं तेण कंथाकयं सुत्तं अत्थो य, तारिसस्स ण दायव्वं सुत्तं अत्थो वा, जो तहेव रक्खति तस्स दायव्वं । एस ताव सीसस्स । आयरियस्स—

वसंतपुरे जुन्नसेट्ठिधूता णवगस्स सेट्ठिस्स व धूता, तासिं पीती, तहवि से अस्थि खारो जह अम्हे एतेहिं उव्वट्टिताणि, ताओ अन्नदा कयादी मज्जितुं गताओ, तत्थ जा सा णवगस्स धूया सा तिलगचोद्दसएणं अलंकिता, सा तं तंडे ठवेत्ता ओइन्ना, जुन्नसेट्ठिधूया तं गहाय पहाविता, इमा जाणति- खेडुं करेतित्ति, ताए मातापिऊणं सिट्ठं, ताणि भणंति-तुण्हिक्का अच्छाहि, णवगधूया ण्हाइत्ता णियगं घरं गता पिउमातूणं कहितं, तेहिं मग्गितं, ण देंति, अम्हे उव्वट्टिताणित्ति परिभूताइं, किं आभरणगाणिवि णत्थि ?, एवं कज्जाकज्जे पणट्ठाणि, पच्छा राउले ववहारो, तत्थ णत्थि सक्खी, तत्थ राउलाणि भणंति-चेडीतो वाहिज्जतु, जति तुम्हेच्चयं आमुंचउ चेडी, ताहे सा आमुंचति, जं हत्थे पादे तं न याणति, तं च से असिलिट्ठं, ताहे तेहिं णातं, जहा एतीसे ण होति, ताहे इतरा भणिता, ताए तहच्चेव णिच्चं आमुंचतीए परिवाडीए अ मुक्कं, सिलिट्ठं च से, ताहे सो जुन्नसेट्ठी दंडप्पतो जातो, जहा सो एगभवितं मरणं पत्तो, एवं आयरितोऽवि जं अन्नत्थ तं अन्नहिं संघाडेति, अन्नवत्तव्वयाओ अन्नत्थ परूवेति, उस्सग्गादीयाओ एवं, सोऽवि संसारदंडेणं डंडिज्जति, अणेगाइं जातितव्वगमरियव्वगाइं, तारिसस्स पासे ण अज्झाइतव्वं, जहा सा चेडी जसं पत्ता आविंधणसुहं वा, एवं चेव आयरिओ जो णवि संघाडेति अन्नमन्नाणि तेण अरहंताणं आणा कया भवति, तस्स पासे सुत्तत्थाणि गिण्हियव्वाणि १ । सावगसमाणस्स सीसस्स ण कहेयव्वं, जो सव्वकालं महिलं भोत्तुं तं चेव एगराइं ण याणति अन्नेणवत्थणेवत्थितं, एवं सीसोऽवि सव्वकालं रडिऊण सुत्तं वा अत्थं वा ण ग्गाणति किं इमं सुत्तं समभिहेयं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

परसमइयं उस्सग्गियं वा अववाइयं वा एगवयणं दुवयणं बहुवयणं एवमादि, एवं चेव अत्थेवि, तारिसगस्स ण दायव्वं २। बहिरगोहसमाणस्स आयरियस्स पासे ण सोयव्वं, जो अन्नं वागरेति, अन्नस्स वा सुत्तस्स अत्थं पुच्छितो तो अन्नं चेव वागरेति, अन्नेण वा अभिप्पाएण पुच्छितो अन्नहा वागरेति । अभिप्पायं वा पुच्छगस्स णावगच्छति ।

इयाणिं जहा आयरिएण दायव्वं सीसेण य घेत्तव्वं तत्थ इमं उदाहरणं—उत्तरावहे टंकणा णाम मेच्छा, ते सुवन्नदंतमादीहिं दक्खिणावहगाइं भंडाइं गेण्हंति, ते य अवरोप्परं भासं न जाणंति, पच्छा पुंजे करेंति, हत्थेण उच्छादेंति, जाव इच्छा ण पूरेति ताव ण अवणेंति, पुन्ने अवणंति एवं, तेसिं इच्छियपडिच्छितो ववहारो । एवं चेव आयरियस्स सिस्सेण किंतिकम्मं कायव्वं, तेणवि विहिणा सुत्तत्थाणि दायव्वाणि । एसो एगो आदेसो । बितितो इमो—आयरितेण ताव सिस्सस्स अत्थो भाणियव्वो जाव तस्स गहणं, सिस्सेणवि ताव पुच्छियव्वं जाव उवगयंति, एस टंकणओ ववहारो ॥

स एवाधिकारो वट्टति—० ॥२५७॥ तेण कस्स ण होही वेसो अणब्भुवगतो-अणुवसंपन्नो, अब्भुवगतोवि णिरुवगारी ण किंचि पडिलेहणादि इहलोइयं परलोतियं वा उवगारं करेति, उवगारीवि कोति अप्पच्छंदमती जं से रोयति तं करेति, कोति परच्छंदमतीवि पट्ठितओ जा मे सुत्तत्थाणि लब्भंति अच्छामि अन्नहा वच्चामि । गंतुकामो जदि मे इच्छंतं पूरेंति तोऽहं सुत्ते उद्दिट्ठे समाणिए गमिस्सामि चेव, अन्ने पुण पत्थियतो नामं कोति साधू आगतो कहिं वच्चिहिसि जीवपडिमं (वंदिउं) अहंपि वच्चामि गंतुमणो जो य भणति णवरि इमं सुयखंधं णिट्ठवेमि ताहे वच्चामि, जम्हा एवंभूतो बहूणं एसो अणणुमतो भवति तम्हा एताद्दिपरीतेन होऊण गुरुजणो आराहियव्वो ।

॥१२०॥

तहा विणओणतेहिं॥२-५८॥विणतो सत्तविहो, तंजहा–णाणविणओ दंसणविणओ चरित्तविणओ मणविणओ वयिविणओ कायविणओ उवयारियविणओत्ति। पंचसुवि णाणेसु भत्तिबहुमाणो णाणविणओ, सेसेसु विभासा, तेण विणएण ओणओ२, ओणओ दुविहो-दव्वोणओ भावोणओ य, दव्वोणओ ओणयगाओ, भावोणओ अणुद्धतपरिणामो ' पंजलियडेहिं ' ति कृतप्राञ्जलिभिः, छंदो-अभिप्पातो तमणुअत्तमाणेहिं जहा तुस्सति, एवं च आराहियव्वो गुरुजणो, एवं को गुणो ?, भणितविहिणा आराहितो गुरुजणो सुयं बहुविहं लहुं देति, बहुविहं-अंगाणंगपविट्ठादि बहुपज्जायं च 'लहुं' ति जं सत्तहिं तिहिं वा परिवाडीहिं दिज्जति तं आवज्जितहिययो एगाए चेव परिवाडीए लाएति। पुणो इमा सीसस्स परिक्खा मइं पडुच्च भन्नति—

सेलघण०॥२-५९॥ तत्थ इमं कप्पियमुदाहरणं। तंजहा-मुग्गसेलो पुक्खलसंवट्टओ य महामेहो जंबुद्दीवप्पमाणो, तत्थ किल णारदत्थाणीओ कलहं आयोएति, मुग्गसेलं भणति—तुज्झ नामग्गहणे कए पुक्खलसंवट्टओ भणति-जहा णं एगाए धाराए विरावेमि, माणेणं सीहावितो भणति–जति मे तिलतुसतिभागमेत्तमवि उल्लेति तो णाहं वहामि मुग्गसेलं नाम, पच्छा मेहस्स मूले भणति मुग्गसेलवयणाइं, सो रुट्ठो, सव्वादरेण वरिसितुमारद्धो जुगप्पमाणाहिं धाराहिं, सत्तरत्ते वुट्ठे चिंतेति-इयाणिं गतो विरायोत्ति ठितो, इतरो मिसिमिसेंतो उज्जलतरो जातो दिप्पिउमारद्धो, भणति-जो भट्टित्ति, ताहे मेहो लज्जितुं गतो। एवं चेव कोति सासो मुग्गसेलसमाणो एगमवि पदं ण लग्गति। अन्नो आयरितो गज्जति, आगतो, अहं णं गाहेमित्ति, आह-' आचार्यस्यैव तज्जाड्यं, यच्छिष्यो नावबुध्यते। गावो गोपालकेनैव, अतीर्थेनावतारिताः ॥ १ ॥' ताहे पढाविउमारद्धो, ण सक्को, ता लज्जितो गतो। एरिसमइस्स ण दायव्वं, समोतारो। एयस्स पडिपक्खो कण्हालभूमी, जहा कण्हाले जं पाणियं पडति

तं ण कतोवि ओलुटति, सव्वमाविय्यति, एरिसस्स दायव्वं, चर्चा । इयाणिं कुडा, कुडा दुविहा—णवा य जुन्ना य, जुन्ना दुविहा—भाविता अभाविता य, भाविता दुविहा-पसत्थभाविता, अपसत्थभाविता पसत्था भाविता अगुलुतुलुकमादीहिं, अपसत्था पलंडुमादीहिं, पसत्था भाविता दुविहा-वम्मा अवम्मा य, एवं अप्पसत्थावि, जे अप्पसत्था अवम्मा जे अपसत्था वम्मा ते ण सुंदरा, इतरे सुंदरा, अभाविता ण केणति भाविता णवगा आवागातो ओतारियमेत्तगा । एवं चेव सीसा, णवगा जे मिच्छदिट्ठी तप्पढमताए गाहिज्जंति, जुन्नगा अभाविता ण एगेणवि मतेण भाविता, अपसत्था असंविग्गेहिं पसत्था संविग्गेहिं, जे अप्पसत्था वम्मा संविग्गा य अवम्मा एते लट्ठगा, इतरे अचोक्खता । अहवा घडा चउव्विहा, तंजहा--छिद्दकुडे बोडकुडे खंडकुडे सगलेत्ति, छिद्दो जो मूलच्छिद्दो, बोडो जस्स उद्दा णत्थि, खंडो एगं से ओट्ठपुडं णत्थि, सगलो अव्वंगो चेव, छिद्दे जं छूढं तं गलति, बोडे तावतियं ण ट्ठाति, खंडो तेण पासेण छड्डिज्जइ, जदि इच्छा थोवेणवि रुंभइ खंडे, एस विसेसो खंडबोडाणं, संपुण्णो सव्वं धरेति । एवं चेव सीसा चत्तारि समोतारेयव्वा । सव्वत्थ विराहणा, चर्चा भणियव्वा ।

चालणिसामाणो, उदए चालणी भरितिगा अच्छति, उक्कत्थिता य णत्थि किंचिवि मह (माइ) ॥ अन्नया मुग्गसेलच्छिद्दकुडचालणिसमाणा मिलिता संलवंति-केण वो भो किं गहितं?, तत्थ चालणिसमाणो भणति-जाव आयरियसगासाओ ण उट्ठेमि ताहे सव्वंपि गेण्हामि, जाहे उट्ठितो ताहे न किंचिवि सरामि, छिद्दो भणति-धन्नो तुमं जस्स तंपि कालं अच्छति, मम पविसंतं चेव णीति, सेलो भणति-तुब्भे हि दोवि धण्णा, ममं ण किंचि पविसति,, एतेसिं असंतती य, आयरितो अत्थं गुणेतुकामो मा

शिष्यपरीक्षायां कुटचालनीदृष्टान्तौ

॥१२२॥

णासिहितित्ति, ताहे ते णीसाए गुणेति॥ चालणीए पडिवक्खो तावसं कढिणयं, परिपूणओ घयपुन्नगालणगं, किट्टिसं लएति, एवं सीसोऽवि दोसेसु लग्गति, अणाभोगेण अणाभोगपन्नवणाए वा अववादपयाणि वा। तस्स पडिपक्खो हंसो--

खीरमिव रायहंसो०॥२-६०॥ तस्स किर जिब्भा अंबिला तो दुद्धं फट्टइ, ताहे सारं खाति, इतरं चयतित्ति, चर्चा। महिसो पुरतो जूहस्स गंता सव्वं पाणितं आदुयालेति, पच्छा पिबितुमारभति, ण य सक्को पातुं सो वा, एवं सीसो किंचि तं पसारेति करेति वा जेण णवि तस्स णवि अण्णस्स। तस्स पडिपक्खो मेसो, अवि गोप्पतंमिवि जाणूपादपडितो पाणियं पिबति सयं अन्नाणि य। मसगो दसति ण किंचिवि रुहिरं लभति दुक्खावेति, दुक्खाविज्जति पमारिज्जइ य, एवं सीसोवि तारिसं भणति करेति वा जहा ण लभति णिज्जूहिज्जति वा, चर्चा। पडिवक्खो जलूगा, बहुतरगंपि पियति, ण य दुक्खावेति। एवं सुसीसोवि सकज्जं णिप्फादेति अविय्यत्ति य। बिरालो पुव्वमंडोए दुद्धं तत्थेव ण पिबति, किं तु पादेण ढोलेति, पच्छा अन्नत्थ गयं लिहति, तुरियत्तणेण, तं च तस्स अप्पं आहारितं भवति मइलं च, एवं सीसोऽवि आयरियमूलाओ चेव ण सुणेति, किं तु अणुभासंताणं अन्नतो य तुरियत्तणेण गेण्हति, एवं तस्स थोवं अवधारितं भवति अविसुद्धं च पज्जवेहिंति, चर्चा।

पडिवक्खो जाहगो, मंडीए दुद्धं तत्थेव थोवं पातुं पच्छा पासाणि सेलिहति, तस्स ते दोसा ण भवंति, एवं सीसोऽवि आयरियसगासाओ थोवा थोवं गिण्हिऊण सुपरिजितं करेति, एवं तस्स अणुन्नायं परियट्टितं च बहुं थिरं पज्जवसुद्धं च भवति, चर्चा।

गोणी दुविहा-पसत्था अपसत्था य, एगेण चउण्हं धिज्जातियाण गोणी दिन्ना, ते संपहारेंति परिवाडीते दुज्झंतु, तत्थ एगो पढमे दिवसे चिंतेति-कल्लं अन्नस्स दुज्झहिति किं मम एताए?, चारिमादि ण देति, एवं इतरेवि, सा अचिरेण विणट्ठा, एतेसिं

हाणी य अवन्नवादो य, एरिसत्ति अन्नाओऽवि ण लभंति, एवं आयरियंपि, सीसा पाडिच्छगा करेहिन्ति, पाडिच्छगा सीसत्ति, चर्चा ।

बितिया पसत्था, बंभणस्स दुज्झिहितित्ति, गावी य पुणो मज्झवित्ति, चर्चा । एवं आयरिए सीसा चिंतेति-किं एतेहिं?, अम्हं एस भारो, णिज्जरा, आयरितो य साधूण दाही पुणो अम्हंपेत्ति, चर्चा । एवं पाडिच्छगावि । भेरी सच्चेव वासुदेवस्स भणिया, जह सा जया सुविसुद्धगुणजुत्ता आसि तदा महग्घा आढिता, पच्छा विवरीया, एवं सीसेवि समोतारो । अहवा जहा वासुदेवेण गुणेहिं देवावि अक्खित्ता भेरी य लद्धा एवं सीसो गुणवं गुरुं आराहेति सकज्जं णिप्फादेतित्ति, चर्चा ।

आभीरी, आभीरो भंडीए उवरिं ठितो घयगकुंडं पणामेति, हेट्ठा मे महिला पडिच्छति, तीसे इतरस्स य अंतरागंण्हंतमुयंताणं कहमवि पडितो भिन्नो, ताणि भंडंति-तुमे दुग्गहितं, तुमे दुट्ठु पणामितंति, ताव सव्वं भूमि गयं, परोप्परकोवो वेला फिट्टा अकाले गच्छंताणं सेसघयमुल्लं बहल्लाय चोरेहिं गहिता हाणी अवन्नो य, एवं चेव आलावए आयरिएण दिन्ने अन्नं वा कुट्ठितो भणितो-ण एवं, भणइ-तुमं चेव एवं दिन्नो, सो भणति-ण देमि, तुमं विणासेसित्ति, कलहो, एवं समोतारो । बितिओ दवत्ति ओइन्नो, दोहिवि दवदवस्स कप्पराणि भरिताणि, मणागं णट्ठं, सो आभीरो भणति-मए ण सुट्ठु पणामितं, सा भणति-मए न सुगहितंति, एवं आयरिएणवि आलावओ दिन्नो, पच्छा आयरितो भणति-मा एवं कुट्टेहि, प्रागेव मए आणुवउत्तेण दिन्नो, सो भणति-मते ण सुट्ठु गहितोत्ति, चर्चा । अहवा आभीरी जाणति-धारा एत्तिलिया घडए माहिति, एवं आयरितो जाणति एगं दुगं आलावगं गेण्हिहितित्ति एवं परिक्खिए सीसस्स देज्जा, दुसीसस्स विवेगो, चर्चा ।

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चक्खाणविधिविभागो गतो । इयाणिं दारविधी । तत्थ इह तावेतं सामाइयं इमेहिं दारेहिं अवगंतव्वं । तंजहा–
उद्देसे १ णिद्देसे २ य, णिग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसे ६ य । कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ णये १०
समोतारणा ११ णुमए १२ ॥ २—६१ ॥ किं १३ कतिविहं १४ कस्स १५ कहिं १६ केसु १७ कहं १८
केच्चिरं हवति कालं १९ । कति २० संतर २१ मविरहितं २२ भवा २३ ऽऽगरिस २४ फोसण २५-
णिरुत्ती २६ ॥ २—६२ ॥ दारगाथाओ

तत्थ पढमं उद्देसित्ति दारं, तस्स अट्ठविहो णिक्खेवो । तंजहा--णाम० गाथा--॥२॥६३॥

नामुद्देसो ठवणु० दव्वु० खेत्तु० काल० समासुद्देसो उद्देसुद्देसो भावुद्देसो, नामट्ठवणाओ गताओ, जाणगसरीर-भवियसरीरवइरित्तो दव्वमितिउद्देसो दव्वुद्देसो, अहवा दव्वेण दव्वा दव्वे वा उद्देसो एवमादि, एवं खेत्तादीणंपि योज्यं, तत्र द्रव्यमिदं द्रव्यपतिरयं द्रव्यवानयमित्यादि दव्वुद्देसो, एवं खेत्ते खेत्तवती खेत्ती इच्चादि खेत्तुद्देसो, एवं कालेवि, समासो-संखेवो, समासुद्देसो तिविहो, तंजहा-अंगसमासुद्देसो सुयक्खंधसमासुद्देसो अज्झयणसमासुद्देसो, अंगसमासुद्देसो जो जं उद्देसगं उद्दिसति, ण ताव भणति पढमं बीयं वा, भावुद्देसो भावो भावी भावज्ञः इच्चादि भावुद्देसो । एस ताव उद्देसो अविसेसितो ।

इयाणिं एतेसु चेव पदेसु विसेसितो निद्देसो भवति, णामठवणाओ गताओ, वइरित्तो जो जं दव्वं निद्दिसति, जहा सचित्तं वा अचित्तं वा मीसं वा, सचित्तं जहा गोणो तेणे वा, गोहिं गोमिओ, अचित्तो जहा छत्तं, तेण वा छत्तेण छत्तिओ, मीसं जहा

अथ उपोद्घातस्य उद्देश-आदि २६ द्वाराणि कथयते

रहो तेन वा निर्देश्यः रहेण रहिओ इच्चादि, एस दव्वनिदेसो । खेत्तनिदेसो जो जं खेत्तं निद्दिसति तं० भरहं वा एरवयं वा जो वा जेण खेत्तेण निद्दिसति, तं०-सोरट्ठो मागहो इच्चादि, कालनिदेसो परूवियव्वो। समासनिद्देसो तिविहो, तंजहा-अंगसमासनिद्देसो सुयक्खंध० अज्झयण०, अंगसमासणिद्देसो जो जं अंगं निद्दिसति, तं०-आयारं वा सूयगडं वा एवमादि, एवं सुयक्खंधेपि गाहासोलसाणि महज्झयणाणि वा, एवं अज्झयणं जहा दुमपुप्फियादीणि, उद्देसनिद्देसो जो जं उद्देसं निद्दिसति, तं०-सत्थपरिण्णाए पढमो उद्देसो चितिओ वा इत्यादि, भावनिद्देसो जो जं भावं निद्दिसति, तं०-उदइयं वा, जो वा जेण वा भावेण निद्दिस्सति जहा कोही माणी मायी लोभी, इह किल समासउद्देससमासनिद्देसेहिं अधिगारो, तत्थ अज्झयणं इति समासुद्देसो सामायिकमिति समासनिर्देशः। एते पुण उद्देसनिद्देसे को किह णयो इच्छति इति ?, 'दुविहंपि' अन्ने पुण निद्देसमेव को किह णयो इच्छतित्ति–

दुविहंपि णेगमणयो निद्दिट्ठं संगहो य ववहारो । निद्देसगमुज्जुसुतो उभयसरित्थं च सद्दस्स ॥२॥६५॥

तत्थ णेगमणयस्स य वत्तव्वयाए इत्थी इत्थिं निद्दिसति इत्थिनिद्देसो, इत्थी पुरिसं निद्दिसति पुरिसनिद्देसो इत्थिनिद्देसो य, इत्थी णपुंसगं निद्दिसति इत्थीनिद्देसो य णपुंसगनिद्देसो य, एमेव पुरिसणपुंसगाणंपि संजोगा । संगहववहारणयवत्तव्वता इत्थी इत्थिं निद्दिसति इत्थीनिद्देसो, इत्थी पुरिसं निद्दिसति पुरिसनिद्देसो, इत्थी णपुंसगं निद्दिसति णपुंसगनिद्देसो, एवं पुरिसणपुंसगाणंपि संजोगा, जं दव्वं णिद्दिसति तं संगहववहारा इच्छंति, इत्थी इत्थिं निद्देसति इत्थिणिद्देसो इत्थी पुरिसं निद्दिसति इत्थिनिद्देसो इत्थी णपुंसगं निद्दिसति इत्थिणिद्देसो, एवं पुरिसणपुंसगाणवि, एवं उज्जुसुओ जो निद्देसओ तं इच्छइ, सेसं ण इच्छइत्ति, उभय-

निद्देशः निगमश्च

॥१२६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सचित्तं च सद्दस्स, जदि इत्थी इत्थिं निद्दिसति इत्थिणिद्देसो, अह इत्थी पुरिसणपुंसए णिद्दिसइ सो अणिद्देसो, जदि पुरिसो पुरिसं णिद्दिसति पुरिसणिद्देसो, अह पुरिसो इत्थिणपुंसए निद्दिसइ सो अनिद्देसो, एवं जदि निद्दिसियव्वं च निद्दिसओ य सो चेव तं इच्छति, सेसं णवि इच्छति सद्दो । एवं सेसाणवि विभासा ॥ इयाणिं निग्गमेत्ति दारं । सो य छव्विहो—

नामनिग्गहा ॥२-६६॥ नामनिग्गमो ठवण० दव्व० खेत्त० काल० भाव०, नामस्थापने पूर्ववत्, वतिरित्तो दव्वनिग्गमो, सो सचित्ताओ वा सचित्तस्स निग्गमो चउभंगो, सचित्ताओ सचित्तस्स निग्गमो जहा मूलाओ कंदो कंदाउ खंधो एवं, अहवा जहा इत्थीओ गब्भो, सचित्ताओ अचित्तस्स, जहा केसमंसुणहरोमादीणि, अचित्ताओ सचित्तस्स जहा—कट्ठाओ पावगस्स, अहवा कट्ठाओ घुणस्स, अचित्ता अचित्तस्स, जहा खीराओ दहिं, दहितो णवणीतं, णवनीताओ घयं, अहवा उच्छुरसाउ गुलो । अहवा दव्वाओ दव्वस्स निग्गमो, दव्वाओ वा दव्वाण, चउभंगो, दव्वाओ दव्वस्स, जहा—रुवआ पयुत्ता रूवओ चेव पच्चाओ जातो, दव्वाओ दव्वाणं जहा—एगेण रूवएणं बहव रूवया लद्धा, दव्वेहिंतो एगस्स दव्वस्स, जहा—बहूहिं पउत्तेहिं एगो रूवओ लद्धो, बहूहिं पउत्तेहिं बहवे चेव लद्धा इति । खेत्तनिग्गमो—जंमि खेत्ते निग्गमो वण्णिज्जति, जो वा जाओ खेत्ताओ णिग्गओ एमादि, कालनिग्गमो-जंमि काले निग्गमो वण्णिज्जति, जो वा जातो कालाओ निग्गतो, भावणिग्गमो-जो जातो भावाओ निग्गतो जेण वा भावेण निग्गओ इचादि, अहवा इह एतेसिं चेव दव्वखेत्तकालभावाणं भगवं पुरिमं गमणिज्जत्तिकट्टु तम्हा भगवतो चेव निग्गमो परूवेतव्वो, तंथिमा णिग्गमे पढमगाहा—

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

पंथं किर देसेत्ता साधूणं अडविविप्पणट्ठाणं । सम्मत्तपढमलंभो बोधव्वो वद्धमाणस्स ॥ २ ॥ ६७ ॥

अवरविदेहे तत्थ एगंमि गामंमि गामस्स चिंतओ, सो रायाएसवसेण सगडिसागडं गहाय एगं महं अडविं अणुपविट्ठो दारुग-निमित्तं, अन्ने य साधुणो सत्थपरिभट्ठा दिसामूढा पंथं अयाणमाणा तेण अडवीपंथेण मज्झण्हदेसकाले तण्हाए छुहाए य परज्झहिता तं देसं गता जत्थ सो सगडसंनिवेसो, सो य ते पासित्ता साधुणो महता संवेगमावन्नो-अहो इमो साधुणो अदेसिया तवस्सिणो अडविं अणुपविट्ठा, तेसिं सो अणुकंपाए विपुलं अन्नं पाणं दाऊणं भणति-एह भगवं ! जाहे पंथं समोतारेमि, पुरतो संपत्थितो, ताहे ते साधुणो तस्सेव सम्मं समणुगच्छंति । तत्थ य एगो धम्मकहियलद्धिसंपन्नो तस्स धम्मं कहेउमारद्धो, धम्मकहावसाणे य से उवगतं सम्मत्तं, समोतारेत्ता ताहे नियत्तो. ते पत्ता सदेसं। सो य पुण संवेगसम्मद्दिट्ठी कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पलितोवमट्ठि-तीएसु देवेसु उववन्नो, ततो चुतो समाणो इक्खागकुले जाओ उसभसुतसुतो मिरीचित्ति, इक्खागकुले जातो इक्खागकुलस्सुप्पत्ती भाणियव्वा, तद्दारेण कुलगरवंसा, तीते कालो, कुलगरुप्पत्ती, उसभतो भरहो, तस्स सुतो मिरीची तो उसभुप्पत्ती । तत्थ कुलगरु-प्पत्तीए इमा गाथा= ⊗

पुव्वभवे पुव्वविदेहे दो वणिज्जा मित्ता वन्नेयव्वा, तत्थ एगो मायी एगो उज्जुओ,ते पुण एगतो चेव ववहरंति,तत्थ जो सो मायी सो तं उज्जुगं अतिसंधेति-वंचेति, इतरो सव्वं अगूहेन्तो सम्मं सम्मेणं ववहरति, जो सो उज्जुओ सो कालमासे कालं किच्चा इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए बहुवीतिकंताए पलितोवमट्ठभागे सेसे इहेव भरहे वासे अड्ढभरहमज्झिल्लतिभागे

॥१२८॥

⊗ *** वृत्ति मध्ये अत्र भाष्यगाथा निर्दिष्टा:, वीर-आदि भगवंतानां कथानकं आरभ्यते

अत्र भाष्यम् आरब्धं, तद् अन्तर्गत भगवन्-महावीरस्य प्रथमभवस्य वर्णनं

गंगासिंधूणं मज्झे एगस्स मणुयजुयलस्स मिहुणत्ताए पच्चायातो, तेण पुण किह माणुसत्तणं लद्धं ?, तेणं उज्जुगत्तेणं, इतरो तेणं वंकत्तेणं दाणरुती य आसि, सो तंमि चेव पदेसे हत्थिरयणं जातं, वन्नेण सेतो चउद्दंतो, जाहे ते पडुप्पन्ना वएणं ताहे तेसिं अन्नमन्नं दट्ठूणं अतीव पीइ समुप्पन्ना 'यं दृष्ट्वा०' अतिसंधणताए य आभितोगं विनिव्वत्तियं तं ताहे उदिन्नं, तेण हत्थिणा मिहुणयं खंधे विलइतं, तं जुयलयं विलइयं दट्ठूणं सव्वो सो लोगो अब्भहियमणूसो इमो इमं व से विमलं वाहणंति तेण से णामं करेंति विमलवाहणोत्ति, तेसिं च जातिस्सरणं जातं, ताहे कालदोसेण तेसिं मणूसाणं तेसु रुक्खेसु ममत्तीभावो जातो, जो ममत्ते समल्लितति तं न सातिज्जति, ताहे तं असहंता एस विमलवाहणो अम्हेहिंतो अहिगो जस्स एस दाहि ते रुक्खे तस्स भविहिंति, ते तं उवट्ठिता, ताहे सो भणति- मा भंडह, तुब्भं इमे रुक्खा, जो तुब्भं एत्थ अवरज्झति तं मम उवट्ठावेज्जाह, एतं च मज्जातं तुब्भं परंपरएण सव्वत्थ ठवेह, जत्थ सा ठविता ते आयरिया जाता, तेण परमणारिया, एवं तेण मेरा ठविता, अहं च से डंडं वत्तेहामि, ताहे तेसिं जो कोति अवरज्झति सो तस्स उवट्ठविज्जति, ताहे सो तस्स डंडे वत्तेति, को पुण डंडो?, हक्कारो, हा तुमे दुट्ठु कयं, सो तेण हक्कारेण जाणति सीसं पडितं, छायाघातो, वरिज्हं मओत्ति, तस्स पुण चंदसिरी णाम भारिया, तीसे पुत्तो चक्खुमं णाम, एवं परंपरएण जसवं अभिचंदे पसेणई मरुदेवे णाभी, एतेसिं चेव महिलाओ चंदकंता सुरूवा पडिरूवा चक्खुमंता सिरिकंता मरुदेवा, तेसिं पुण उच्चत्तं पढमस्स णव धणुसया अट्ठ सत्त अद्धसत्तमा छस्सया अद्धछट्ठा सता पंच पणुवीसा सया णाभिस्स ।

ताओ य कुलगरभज्जाओ ईसिं तेसिंतो ऊणातो, ते सव्वे वज्जोसभसंघयणा, समचउरंससंठाणसंठिता, ताओवि एत्तिए चेव, संघयणसंठाणाइं परूवेयव्वाइं, वज्जरिसभं नाम-वज्जबंधो वज्जवेढो वज्जकीलिया य, बितिए वेढओ णत्थि, ततिए ण वेढओ णावि

कुलकर-वक्तव्यता

॥१२९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

खीलिया, चउत्थं एगओ बद्धं, पंचमं दुहओवि अबद्धं, छट्ठं णवरं कोडीए मिलितं ॥ समचउरंसं संठाणं जत्तिओ उव्वेहो तत्तिओ विक्खंभोऽवि, जारिसं वा एगं चक्खुं तारिसं बीयंपि, एवं सव्वंगा, नग्गोहं- जस्स बाहाओ दीहाओ उच्चत्तं थोवं उवरि विसालो, सादी दिग्घो वाहडहरिका, वामणं रहस्सं, खुज्जं ईषदानतं, हुंडं असंठितमेव, एतं छव्विहं संठाणं छव्विहेवि संघयणे भणितं ॥

तेसिं पुण पढमं संघयणं संठाणं च, तेसिं वण्णो भाणियव्वो 'चक्खुम जसमं च पसेणई य एते पियंगुवन्नाभा, अभिचंदो ससिगोरो, निम्मलकणगप्पभा सेसा ॥ तातो तेसिं भज्जातो सव्वातो पियंगुवन्नाओ ॥ इयाणिं तेसिं आउगं- पलिओवमदसभागो पढमस्सायुं ततो असंखेज्जा । अवसेसाणं असंखेज्जा पुव्वा, ते य आणुपुव्विहीणा नाभिस्स पुण संखेज्जा पुव्वा इति । जं तेसिं आउगं तं भज्जाणवि सव्वेसिं चेव, तेसिं हत्थिरयणाणि होत्था, तेसिं च समाउया, तो जं जस्स आउगं तं तस्स समदसभागा काऊणं जो पढमो भागो सो कुमारभावो, जो पच्छिमो सो वुड्ढभावो, मज्झिमा अट्ठ भागा कुलगरभावो, एवं सव्वेसिं, ते पयणुपेज्जदोसा सव्वे देवेसु उववन्ना ॥

कस्स पुण कहिं उववाओ ?, यथासंख्यं दो चेव सुवन्नेसुं उदहिकुमारे ॥ जे य हत्थी मरुदेववज्जाओ य इत्थियाओ ताओ णागेसु उववन्ना, एगे पुण भणंति-जहा पढमो य हत्थी छच्च इत्थियातो णागेसु, सेसेसु णत्थि अधिकारो, मरुदेवा सिद्धिं गता । एतेसिं सत्तण्हंपि इमाओ दंडणीतीओ-हक्कारो मक्कारो धिक्कारो चेव दंडणीतीतो । वोच्छं तासिं विसेसं जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥ पढमस्स बितियस्स पढमा दंडणीती, ततियस्स चउत्थस्स बितिया, अभिणवा णाम णवा इति भणितं

नीतीनां सद्भावः

॥१३०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

होइ, जस्स अप्पोऽवराहो तस्स पढमा, जस्स गाढतरो तस्स णवा, पंचमच्छट्ठसत्तमए (तइया णवा) तेसिं जस्स चंडतरो उ तस्स तइओ धिक्कारो दिज्जइ, सो य अज्जवि अणुपरियट्टति । सेसा चउव्विहावि डंडणीती माणवगणिधीतो भरहस्स उप्पन्ना, परिभासा मंडलबंधो चारए छविच्छेदो, अन्नेसिं परिभासा मंडलबंधो य उसभसामिणा उप्पातितो, चारगच्छविच्छेदा माणवगणिधीतो, आहारणीती पुण गिहिवासे उसभस्स तु असक्कतो आसि आहारो जाव किल उसभसामिणो गिहावासकालो ठिओ ताव, सव्वेसिंपि असक्कतो आहारो आसि, असक्कतो णाम असंस्कारितः, स्वभावस्थ एव फलादि, भगवतो पुण उसभसामिस्स जाव गिहवासो आसि ताव देवकुरुउत्तरकुरुकाणि फलाणि खीरोदपाणियं च सक्कवयणसंदेसेण देवा उवणेंता, अच्छउ ताव आहारो, उसभसामिस्स ताव जाणामो का उप्पत्ती ?, तेणं कालेणं तेणं समएणं अवरविदेहे वासे धणो णाम सत्थवाहो होत्था, सो पुण धणसत्थाहो खितिपतिट्ठियातो णगराओ वसंतपुरं पत्थितो वाणिज्जाते, जहा दावद्दवणाए, ताए चेव विहीए संपत्थितो, णवरं इह साहूणं तेण समं पत्थितो गच्छो, को य पुण कालो ?, चरिमणिदाहो, सो य सत्थो जाहे अडविमज्झं पत्तो ताहे वासारत्तो उवग्गो, तत्थ पाउसो जहा उक्खित्तनाए, उक्खित्तनाए तारिसो जातो, ताहे सो सत्थवाहो अतिचिक्खिल्लिच्चिया दुग्गमा पंथत्तिकाऊणं तत्थेव सत्थनिवेसं काऊणं वासावासं ठितो, तंमि ठिते वासावासं सव्वो सत्थो ठितो, जाहे य तेसिं अन्नसत्थेल्लयाणं निट्ठियं भोयणं ताहे कंदमूलाइं समुद्दिसंति, साहुणो दुहिया जति किहवि आहापवत्ताइं लब्भंति ताहे गेण्हंति ॥ एवं काले वच्चंते बहुए काले समइच्छिए थोवावसेसे वासारत्ते ताहे तस्स धणस्स चिंता जाया-को एत्थ सत्थे दुक्खितोत्ति ?, ताहे तेण सरितं, जह-मए समं पव्वइया आगता, तेसिं च कंदमूलाणि ण कप्पंति, ते दुक्खिता तवस्सिणो, कल्लं देमि

अत्र भगवंत ऋषभस्य कथानक आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३२॥

तेसिं, ते पभाए निमंतिता पभणंति- जं परं अम्ह कप्पियं भवेज्ज तं परं गेण्हेज्जामो, किं पुण तुब्भं कप्पति ?, जं अकतम-कारितमसंकप्पितं अधारद्धातो पाकातो भिक्खामेत्तं जं वा घयं वा गुलं वा एवमादि, एवं तेण साधूणं तं फासुगं विपुलं दाणं दिन्नं, सो अहाउयं पालइत्ता तेण दाणफलेण उत्तरकुरुमणुतो जातो, ततो आउक्खएण उव्वट्टिऊणं सोहम्मे कप्पे तिपलिओवमठितीओ देवो जाओ, (महाबल ललितो वइरजंघ मिथुनकं च सोधम्मसुर, एतद्भवपंचकमत्र त्यक्तं) ततो आउक्खएण उव्वट्टिऊणं महाविदेहे वासे वेज्जपुत्तो आयातो, तस्स पुण इमे सरिसगा सरित्तया सरिव्वया एगदिवसजाता अणुरत्ता अविरत्ता वन्नओ जहा अंडगणाते। ते इमे चत्तारि वयंसा तं०—रायपुत्तो सेट्ठिपुत्तो अमच्चपुत्तो सत्थाहपुत्तोत्ति, एवं ते अन्नया कयाइ तस्स वेज्जस्स घरे एगतओ सहिता सन्निसन्ना अच्छंति, तत्थ य साधू महप्पा सो किमिकुट्ठेण गहितो अतिगतो भिक्खस्स, तेहिं सप्पणयं सहासं सो भन्नति- तुब्भेहिं नामं सव्वलोगो खाइयव्वो, ण तुब्भे तवस्सिस्सं वा अणाहस्स वा किरिया कायव्वा, सो भणति-करेज्जामि, काणिवि पुण ओसहाणि मम णत्थि, ते भणंति- अम्हे मोल्लं देमो, किं ओसहं जा किणिज्जतु ?, सो भणति- कंबलरयणं गोसीसचंदणं च, ततियं तेल्लं तं मम अत्थि, ताहे मग्गिउं पवत्ता, आगमितं च णेहिं जहा अमुगस्स वाणियगस्स अत्थि दोऽवि एताइं, ते गता दोन्नि सयसहस्साइं गहाय तस्स पासं, देहि अम्हं कम्बलरयणं गोसीसचंदणं च, सो जाणति ते कुमोरे, तेण पुच्छितं- किं कज्जं ?, भणंति-साधुस्स किरिया कायव्वा, तेण भन्नति-अलाहि मोल्लेण, एत्तिए चेव गेण्हह करेह, ममवि धंमोत्ति, ण सक्का एक्कजिब्भाए (वोत्तुं) बे अत्था, तस्स ताव वणियस्स संवेगो जातो, जदि ताव एतेसिं बालाणं एरिसा सद्धा मम णाम मंदपुन्नस्स इहलोगपडिबद्धस्स णत्थि, सो संवेगमावन्नो, ताहे चेव तहारूवाणं थेराणं अंतिए पव्वइओ जाव सिद्धो बुद्धो। इमेऽवि ताव घेत्तूण ताणि ओसहाणि

श्री ऋषभस्य भवाः

॥१३२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

गता तस्स साधुणो पासं जत्थ उज्जाणे ठितो, पासंति तं पडिमावरगतं, ते तं दट्ठूणं पडिमं ठितं वंदिऊणं अणुन्नवेंति-अणुजाणह भगवं ! अम्हे तुब्भं धम्मविग्घं काउं उवट्ठिता, ताहे तेहिं तेण तेल्लेण सो साधू अब्भंगिओ, तं च तेल्लं रोमकूवेहिं सव्वं अतिगतं, तंमि य अतिगते ते किमिया सव्वे संखुद्धा, तेहिं चलंतेहिं तस्स साधुणो उज्जला विउला वेयणा पाउब्भूता, ताहे ते निग्गते दट्ठूणं कंबलरयणेण साहू पाउतो, तं सीयलं, तं च तेल्लं उण्हवीरियं, ते किमिया तत्थ लग्गा, ताहे तं पप्फोडितं, ततो सव्वे पडिता, ताहे आलिंपितो, एवं एक्कसिं दो तिन्नि वारे अब्भंगेऊणं साधू तेहिं नीरोगो काओ, ताहे खमावेऊणं जेणागता तेणेव पडिगता, ते अहाउयं पालेउं सामन्नं तंमूलागं देवलोगेसु उववन्ना पंचवि जणा ते, ततो देवलोगातो आउक्खतेणं चइऊणं जंबूदीवे पुव्वविदेहे पोक्खलावइंमि चक्कवट्टिविजए पुंडरिगिणीय नगरीए वइरसेणस्स रन्नो धारिणीय देवीए पढमे वइरणाभे णाम पुत्ते जो सो वेज्जपुत्तो, अवसेसा कमेण बाहुसुबाहुपीढमहापीढात्ति, एवं ते संवड्ढिया पंचलक्खणे भोते भुंजंति। सो य वइरसेणो राया पव्वइतो, तित्थगरो भगवं जातो, इयरे य संवड्ढिया महामंडलिया जाता, इमस्स वइरनाभस्स चक्कवट्टिनामगोयाइं कम्माणि उइन्नाणि तेण साधुवेयावच्चेण, जद्दिवसं पितुस्स केवलं उप्पन्नं तद्दिवसं इमस्स चक्कं उप्पन्नं, विजए चक्की जातो, एवं ते भोगे भुंजंता विहरंति। अन्नया णलिणिउम्मे उज्जाणे वइरसेणो समोसरितो, ते पंचवि पव्वइया, तत्थ वइरणाभेण चोद्दस पुव्वाणि अहिज्जियाणि, अवसेसा एक्कारसंगवी चउरो, तत्थ बाहू सो तेसिं सव्वेसिं वेयावच्चं करेति, जो सो सुबाहू सो भगवतां कितिकम्मं करेति, एवं ते करेंते वइरनाभो भगवं अणुवूहति- अहो सुलद्धं जम्मजीवियफलं जं साधूणं वेयावच्चं कीरइत्ति, परिसंता वा साधुणो वीसामिज्जंति, एवं पसंसति, एवं पसंसिज्जंतेसु तेसु तेसिं दोण्हमग्गिल्लाणं अपत्तियं भवति, अम्हे सज्झायंता ण

॥१३३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

पसंसिज्जामो, जो करेइ सो पसंसिज्जइ । तत्थ पढमेण वइरणाभेण बीसाए कारणेहिं तित्थयरत्तं निबद्धं । काणि पुण ताणि जेहिं तित्थकरत्तं लब्भति ? । भन्नति—

अरहंत० ॥२-१०६॥ दंसण० ॥२-१०७ ॥ अप्पुव्व० ॥२-१०८॥ पढम०॥२-१०९॥पढमाते अट्ठ बीयाए णव ततियाए तिन्नि, तंजहा-अरिहंत १ सिद्ध २ पवयण ३ गुरु ४ थेर ५ बहुस्सुत ६ तवस्सीसु ७, तत्थ पवयणं-संघो, गुरू-धम्मोवदेसादिदातारो, धम्मे थिरीकरेति जो सो थेरो, सेसा पसिद्धा । एतेसिं वच्छल्लता-अतीव भत्तिबहुमाणो जं जुज्जति तं करेति, अभिक्खणाणोपयोगो अणुप्पेहादिसु णीसंकितादिकरणं वा८, दंसण९ विणए१० आवस्सय ११सीले-अट्ठारससीलंगसहस्सेसु उत्तरगुणेसु १२वएमूलगुणेसु १३,एतेसु निरतियारो, खणलव१४ तव१५ च्चियाए१६ वेयावच्चं१७,एतेसु समाहिते, तत्थ खणलवसमाही णाम खणलवमेत्तमवि कालं णो असमाधिते भवति, तदुक्तं-'संजमरतिबहुले' त्ति । एवं तवरतिबहुलोत्ति, चियागरतिबहुलोत्ति, दुविहो-दव्वचिताओ, भावचिताओ, दव्वचिताओ आहारउवहिसेज्जादीणं अप्पातोग्गाणं चियागो पायोग्गाणं दाणं, भायचियायो कोहादीणं, वेयावच्चरतिबहुले, वेयावच्चं दसविहं, तंजहा-'आयरिय उवज्झाते थेर-तवस्सी गिलाण सेहाणं। साहम्मिय कुल गण संघसंगयं तमिहं कायव्वं ॥१॥ तं एक्केकं तेरसविहं, तंजहा-भत्ते १ पाणे २ आसण ३ पडिलेहा ४ पाद ५ अच्छि ६ भेसज्जे ७ । अत्थाण ८ दुट्ठ ९ तेणे१० दंडग ११ गेलन्न १२ मन्नंति १३ ॥१॥ पाएणं नियतं करेति, समाहिं च उप्पाएति, उग्गहेसु जो वा जेण (विणा) विसीदति । अपुव्वणाणग्गहणं १८ सुयभत्ती, तज्जातीयं बहुमाणंपि १९ पवयणपभावणा य २० पवयणे बहूणं अत्थं जणयति । एतेहिं कारणेहिं तित्थगरत्तं लभति जीवो । किं समुदितेहिं उदाहु पत्तेयमवि ?, उभयथावि । यतो—

अत्र विंशति-स्थानकानि वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३५॥

पुरिमेण य पच्छिमेण य एते सव्वेऽवि फासिया ठाणा । मज्झिमएहिं जिणेहिं एगं दो तिन्नि सव्वे वा ॥२-१०९॥
तं च कहं वेतिज्जति?, आगिलाए धम्मदेसणादीहिं । वज्झति तं तु भगवतो, तत्तियभव ओसक्कित्ताणं ॥२-११०॥
पढवतो नियमा मणुयगतीए इत्थी वा पुरिसो वा इतरो णपुंसओ वा सुभलेसाए, अन्नतरेहिं कारणेहिं बहुलं बहुहा आसेवितेहिं । एवं तेण तित्थगरत्तं निबद्धं, बाहुणा वेयावच्चेण भोगा निव्वत्तिया, सुबाहुणा बाहुबलं, तेहिं दोहिवि इत्थीनामगोत्तं कम्मं निबद्धं, एवं वतिरणाभो भगवं चतुरासितं पुव्वलक्खाइं सव्वाउं पालइत्था, तत्थ कुमारो तीसं मंडलिओ सोलस चउव्वीसं महाराया, दंतचक्के चोद्दससामन्नपरियाओ, ततो सव्वट्ठे उववन्नो, तेऽवि तत्थेव, उववातो सव्वट्ठे सव्वेसिं, पढमं वइरणाभो चुओ, इमीसे ओसप्पिणीए समाए सुसमसुसमाए वितिकंताए सुसमाए वितिकंताए सुसमदुस्समाए तितियाएवि बहुवितिकंताए चउरासीए पुव्वसयसहस्सेहिं सेसएहिं एगूणणउइए य पक्खेहिं सेसएहिं आसाढबहुलपक्खे चउत्थीए उत्तरासाढाजोगजुत्ते मियंके विणीताए भूमिए नाभिस्स कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्नो । चोद्दस सुमिणा उसभगयसीहमादी पासित्ता पडिबुद्धा णाभिस्स कहेति, तेण भणियं-तुज्झ पुत्तो वड्ढो कुलगरो होहितित्ति, सक्कस्स आसणं चलितं, सिग्घं आगमणं, भणति-देवाणुप्पिया ! तव पुत्तो सयलभुवणमंगलालओ पढमधम्मवरचक्कवट्टी महई महाराया भविस्सइ, केयी भणंति-बत्तीसंपि इंदा आगंतूण वागरेंति, ततो मरुदेवा हट्ठतुट्ठा गब्भं वहतित्ति, तएणं णवण्हं मासाणं अट्ठट्ठमाणं च राईदियाणं बहुवितिकंताणं अड्ढरत्तकालसमयंसि चेत्तबहुलट्ठमीए उत्तरासाढाणक्खत्तेणं जाव अरोगा अरोगं पयाता, जायमाणेसु तित्थयरेसु सव्वलोए उज्जोओ भवति, तित्थयरमायरो य पच्छन्नगब्भाओ भवंति, जरुहिरकलमलाणि य न भवंति--

श्री ऋषभस्य जन्म ॥१३५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

एत्थ-जम्मणं० ॥ २-११३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरिगाओ सएहिं२ कूडेहिं सएहिं २ भवणेहिं सएहिं २ पासादवडंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसहस्सेहिं चउहि य महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महताहयणट्टगीतवादित जाव भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, तंजहा-भोगंकरा भोगवती सुभोगा भोगमालिणी। तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिया ॥ १ ॥ तएणं तासिं भगवंते तित्थगरे समुप्पन्ने य पत्तेयं २ आसणाइं चलंति, ताणि पासेत्ता ओहिं पउंजंति, भगवं तित्थगरं ओहिणा भोएंति, भोएत्ता ताहे पणामं करेंति, जहा वद्धमाणसामिस्स सक्के जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था, उप्पन्ने खलु भो जंबुद्दीवे भगवं तित्थगरे, तं जीतमेतं तीतपच्चुप्पन्नमणागयाणं अहोलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारिमहत्तरियाणं जम्मणमहिमं करित्तएत्ति, तं गच्छामो णं अम्हेऽवि भगवतो जम्मणमहिमं करेमोत्तिकट्टु एवं संपेहेंति संपेहेत्ता पत्तेयं २ अभितोगे देवे सद्दावेंति, २ खिप्पामेव भो अणेगखंभसयसंनिविट्ठे लीलट्ठित एवं विमाणवन्नओ भाणियव्वो जाव जोयणविच्छिन्ने जाणविमाणे विउव्वह। तेऽवि तहेव करेंति, तएणं ताओ हट्ठतुट्ठ पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडाओ ते दिव्वे जाणविमाणे दुरुहिति, दुरुहित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जावघणमुदिंगपवादितरवेणं ताए उक्किट्ठाए जाव देवगतीए जेणेव भगवतो जम्मणत्थाणे तेणेव उवागच्छित्ता तं ठाणं तेहिं दिव्वेहिं जाणविमाणेहिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करेत्ता उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे ईसिं चउरंगुलमसंपत्ते धरणितले ते दिव्वे विमाणे ठवेंति ठावेत्ता पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणिय जाव पडिवुडाओ विमाणाहिंतो पच्चोरुहित्ता सव्विड्ढीए जाव नादितरवेणं

अत्र भगवंत ऋषभस्य जन्म कल्याणक वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जेणेव भगवं तित्थगरे तित्थगरमाता य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छेत्ता भगवंतं मातरं च तिक्खुत्तो पयाहिणं करेत्ता पत्तेयं पत्तेयं करतलपरिग्गहितं जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी--णमो त्थु ते रयणकुच्छिधारिए ! जगप्पतीवदाइए ! सव्वलोयणाहस्स सव्वजगमंगलस्स सव्वजगजीववच्छलस्स हितकारगाउ मग्गदेसितया गढिवज्जुप्पभुस्स जिणस्स णाणिस्स णागयस्स बुद्धस्स बोहगस्स चक्खुणो य मुत्तस्स निम्ममस्स, पवरकुलसमुब्भवस्स जातियखत्तियस्स जेसी लोउत्तमस्स जणणी धन्नासि पुण्णासि, तं कतत्थे, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! अहेलोगवत्थव्वाओ जाव मयहरिगाओ भगवतो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेस्सामो, तण्णं तुब्भाहि ण भातियव्वंतिकट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमेत्ता वेउव्विय जाव समोद्धन्नंति, समोद्धन्नेत्ता संखेज्जाइं जाव संवट्टगवाए विउव्वंति विउव्वेत्ता तेणं सिवेणं मउतेणं मारुतेणं अणुद्धएणं भूमितलविमलकरणेणं मणहरेणं सव्वोउयसुरभिकुसुमगंधाणुवासिएणं पिंडिमणीहारिमेणं गंधुद्धुरेणं तिरियं पवादिएणं तस्स जम्मणट्ठाणस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमंडलं जं तत्थ तणं वा जाव अचोक्खं पूइतं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिय २ एगन्ते एडंति, एडेत्ता जेणेव भगवं माता य तेणेव उवागच्छंति, भगवतो माताए य अदूरसामंते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहत्तरिगाओ सएहिं सएहिं तहेव जाव विहरंति । तंजहा-मेहंकरा मेहवती, सुमेहा मेहमालिणी। सुवत्था वत्थमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥ १ ॥ जाव अब्भवद्दलएणं वासंति २ णिहयरयं णट्ठरयं जाव पसंतरयं करेंति, करेत्ता पुप्फवद्दलगं विउव्वंति, विडव्वेत्ता पुप्फवासं कालागरुपवरजाव सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति । करेत्ता जेणेव भगवं तित्थगरे तित्थगरमाता य तेणेव उवागच्छंति जाव आगायमाणीओ चिट्ठंति ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरच्छिमरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ सएहिं सएहिं कूडे तहेव जाव तंजहा-नंदुत्तरा य नंदा, आणंदा णंदिवद्धणा । विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिता ॥ १ ॥ सेसं तहेव, जाव तं तुब्भेहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स तित्थगरमाउए य पुरत्थिमेणं आदंसहत्थगयाओ आगायमाणीओ चिट्ठंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं दाहिणरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसा तहेव जाव विहरन्ति, तंजहा-समाहारा सुप्पादिन्ना य, सुप्पबुद्धा जसोधरा । लच्छिमती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥ १ ॥ तहेव जाव ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स तित्थगरमाउए य दाहिणेणं भिंगारहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ य चिट्ठंति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पच्चत्थिमरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ सएहिं जाव तंजहा-इलादेवी सुरादेवी, पुहवी पउमावती । एगणासा णवमिया, भद्दा सीया य अट्ठमा ॥ १ ॥ तहेव जाव तं तुब्भेहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु जाव भगवतो तित्थगरस्स तित्थगरमाऊए य तालियंटहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ य चिट्ठंति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरिल्लरुवगवत्थव्वाओ जाव तंजहा-अलंबुसा मिस्सकेसी य. पुंडरीका य वारुणी । हासा सव्वप्पभा चेव, हिरी सिरी चेव उत्तरओ ॥१॥ तहेव जाव वंदित्ता तहेव तित्थगरमाऊए य उत्तरेणं चामरहत्थगताओ आगायमाणीओ पगायमाणीओ य चिट्ठंति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ तहेव जाव विहरंति, तंजहा-चित्ता य चित्तकणगा, सतेरा सोयामणी ॥ तहेव जाव न भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स तित्थयरमाऊए य चतुसु विदिसासुं दीवियाहत्थगताओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ य चिट्ठंति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मज्झिमरुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरि-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

यातो सतेहिं सतेहिं कूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तंजहा-रुया रुयंसा सुरुया रुयगावती ॥ तहेव जाव तं तुब्भेहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स चउरंगुलवज्जं नाभिं कप्पेंति कप्पेत्ता वियरगं खणंति खणेत्ता वियरगे णाभिं निहणंति निहाणित्ता रयणाण य वइराण य पूरेंति, पूरेत्ता हरियालियापेढं बंधंति, बंधित्ता तिदिसिं तओ कयलीहरगे विउव्वंति, ततेणं तेसिं कयलीहरगाणं बहुमज्झे देसभागे ततो चाउस्सालए विउव्वंति, तए णं तेसिं चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभागे ततो सीहासणे विउव्वंति, तेसिं सीहासणाणं अयमेतारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, सव्वो वन्नगो भाणियव्वो, तएणं रुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ भगवं तित्थगरं करतलपुडेणं तित्थगरमातं च बाहाहिं गिण्हंति, जेणेव दाहिणिल्ले कयलीहरगे जेणेव चाउस्सालगे जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थगरं तित्थगरमातरं च सीहासणे निसीयावेंति, सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगिंति, अब्भंगित्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टेंति, उव्वट्टेत्ता भगवं तित्थगरं करयलपुडेहिं तित्थगरमायरं च बाहासु गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले कयलीघरए जेणामेव चाउस्साले सीहासणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भगवं सभायरं सीहासणे णिसीयावेंति, णिसीयावेत्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावेंति, तंजहा-गंधोदतेण पुप्फोदएणं सुद्धोदगेणं, २ जाव सव्वालंकारविभूसिते करेंति, करेत्ता भगवं करतलपुडेहिं मातुं च बाहाहिं गेण्हंति, गेण्हेत्ता जेणेव उत्तरिल्ले कदलीघरके जाव सीहासणे निसीयावेत्ता आभिओगे देवे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो चुल्लहिमवंताओ गोसीसचंदणकट्ठे साहरह, तेऽवि तहेव जाव साहरंति, तए णं ताओ सरगं करेंति, करेत्ता अरणिं घट्टेंति घट्टेत्ता सरएणं अरणिं महेंति, महेत्ता अग्गिं पाडेंति पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केंति संधुक्केत्ता गोसीसचंदणकट्ठे पक्खिवंति पक्खिवेत्ता अग्गिं उज्जालेंति उज्जालेत्ता अग्गिहोमं करेंति करेत्ता भूति-

कम्मं करेंति २ रक्खापोट्टलियं बंधंति बांधित्ता णाणामणिरयणभत्तिचित्ते दुवे पहाणवट्टगे गहाय भगवतो सामिस्स कन्नमूलंसि टिट्टियावेंति, भवतु भगवं पव्वयाउगे भवतु भगवं पव्वतायुगे, तएणं भगवंतं करतलपुडेहिं जाव मातारं बाहाहिं गेण्हेत्ता जेणेव भगवतो जम्मणट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता मातरं सयणिज्जंसि णिसीतावेंति २ भगवंतं मातूए पासे ठवेंति, ठवेत्ता जाव आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवरायां मघवं पागसासणे जाव अद्धुट्ठाहिं अच्छराकोडीहिं सद्धिं जाव विहरति, तए णं तस्स सक्कस्स आसणे चलति, से तं पासेत्ता ओहिं पउंजति, पउंजित्ता भगवंतं ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता हट्ठतुट्ठ एवं जहा वद्धमाणसामिस्स अवहारद्दारे जाव सन्निसन्ने जीयकप्पं सरति, सरित्ता तं गच्छामि णं अहंपि भगवतो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता हरिणेगमेसिं पादत्ताणीयाधिवतिं देवं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसितं गभीरतरमधुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुघोसं सुसरघंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे २ महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयाहि–आणवेति णं भो ! सक्के देविंदे देवराया, गच्छेति णं भो सक्के जावराया जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं भगवतो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेत्तए, तं तुब्भेऽवियणं देवाणुप्पिया! सव्विड्ढीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्व-विभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वनाडएहिं सव्वोवरोहेहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारविभूसाए सव्वदिव्वतुडितसद्दसन्नि-णादेणं महता इड्ढीए जाव रवेणं णियगपरियालसंपरिवुडा सताइं जाणवाहणविमाणाइं रूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स जाव अंतियं पाउब्भवह । तए णं से पादत्ताणीयाहिवती देवे तं विणएणं पडिसुणेत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सा घंटा तेणेव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

उवागच्छति उवागच्छित्ता जाव तिक्खुत्तो उल्लालेति, तए णं तीए उल्लालिताए समाणीए सोहम्मे कप्पे अन्नेहिं एगूणेहिं बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्सेहिं अन्नाइं एगूणाइं बत्तीसं घंटासयसहस्साइं जमगसमगं कणकणरवं काउं पयत्ताइंपि होत्था । तए णं सोहम्मे कप्पे पासादविमाणनिक्खुडावडितसद्दघंटापडेंसुकासयसहस्ससंकुले जाते यावि होत्था, तते णं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरतिपसत्तनिच्चपमत्तविसयसुहमुच्छिताणं सुसरघंटारसितविपुलबोलतुरितचवलपडिबोहणे कए समाणे घोसणकोऊहलदिन्नकन्नएगग्गचित्तउवउत्तमाणसाणं स पादत्ताणीयाहिवती देवे तेसिं घंटारवंसि णिसंतसपडिसंतंसि समाणंसि तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणो उग्घोसेमाणे एवं वयासी–हंदि सुणंतु भवंतो ! बहवे सोहम्मकप्पवासी वेमाणिया देवा य देवीओ य सोहम्मकप्पवइणो इणमो वयणं हितसुहत्थं, आणवेति णं भो ! सक्के तं चेव जाव अंतियं पाउब्भवह। तए णं ते देवा य देवीओ य एयमट्ठं सोच्चा हट्ठजाव हिदया अप्पेगतिया वंदणवत्तियं एवं पूयणवत्तियं सक्कार० सम्माण०दंसण०कोउहल्ल०अप्पे०सक्कवयणमणुवत्तमाणा अप्पे०अन्नमन्नमणुवत्तमाणा अप्पे०जीतमेतं एवमादित्तिकट्टु जाव पाउब्भवंति। तए णं से सक्के पालयं णामं अभितोगितं देवं आणवेति-खिप्पामेव भो ! देवा० अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालिभंजिया-कलियं ईहामियउसभतुरगणरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलतपउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गवइरवेइतापरिगताभिरामं विज्जाहरजमलजुगलजंतजुत्तं पिव अच्चिसहस्समालिणीयं रुयगसहस्सकलितं भिसमणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिचलितमधुरमणहरसरसुरभिसुभकंतदरिसणिज्जं णिउणोवितं मिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सवित्थिन्नं पंचजोयणसयमुव्विद्धं सिग्घतुरियजइणणेव्वाहि दिव्वं जाणविमाणं विउव्वाहि २ जाव पच्चप्पिणाहि, सेऽवि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

तहेव करेति, तस्सणं दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोमाणपडिरूवगा वन्नओ, तेसि णं पडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं तोरणे वन्नओ, जाव पडिरूवा, तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे से जहा णामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव दीवियचम्मेति वा अणेगसंकुकीलगसहस्सवितताआवट्टपच्चावट्टसेढीपडिसेढीसोत्थियसोवत्थियवद्धमाणपूसमाणमच्छगसुसुमारअंडगजरामंडाफुल्लावलिपउमपत्तसागरतरंगवसंतलतपउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवन्नेहिं मणीहिं उवसोभिते, तेसिं मणीण वण्णो गंधे फासे य माणियव्वे, जहा रायप्पसेणइज्जे, तस्स णं भूमिभागस्स मज्झदेसभाए पेच्छाघरमंडवे अणेगखंभसयसंनिविट्ठे वन्नओ जाव पडिरूवे, तस्स उल्लोये पउमलताभत्तिचित्ते जाव सव्वतवणिज्जमए जाव पडिरूवे, तस्स णं मंडवस्स समरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागंमि महेगा मणिपेढिता अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमती वन्नओ, तीए उवरिं महेगे सिंहासणे वन्नओ, तस्सुवरिं महेगे विजयदूसे सव्वरयतामए वन्नओ, तस्स मज्झभागे एगे वइरामए अंकुसे, एत्थ णं महेगे कुंभिगे मुत्तादामे से णं अन्नेहिं तद्दुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो संपरिक्खित्ते, ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवन्नपतरगमंडिता णाणामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभितसमुदया ईसिं अन्नमन्नमसंपत्ता पुव्वादीएहिं वातेहिं मंदं मंदं एज्जमाणा जाव निव्वुइकरेणं सद्देणं ते पएसे आपूरमाणा जाव अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सक्कस्स चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं चउरासीइं भद्दासणसाहस्सीओ, पुरत्थिमेणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भितरपरिसाए दुवालसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणेणं मज्झिमाए चोद्दसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए

सोलसण्हं देवसाहस्सीणं, पच्चत्थिमेणं सत्तण्ह अणियाधीवतीणं, तएणं तस्स सीहासणस्स चउद्दिसिं चउण्हं चउरासीणं आतरक्ख-देवसाहस्सीणं, एवमादि विभासियव्वं सूरियाभगमेणं जाव पच्चप्पिणइ।

तते णं से सक्के जाव हट्ठदेहए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोग्गं सव्वालंकारविभूसितं उत्तरविउव्वितं रूवं विउव्वति, विउव्वेत्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं नट्टाणीएणं गंधव्वाणीएण य साद्धिं तं विमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुव्विल्लेणं तिसोवाणेणं दुरुहति, दुरुहित्ता जाव सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे निसन्ने, तए णं एवं चेव सामाणियावि उत्तरेणं तिसोमाणेणं दुरुहित्ता पत्तेयं पत्तेयं पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीदंति, अवसेसा य देवा य देवीओ य दाहिणिल्लेण दूरुहित्ता तहेव निसीदंति। तएणं सक्कस्स तंसि दूरुढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणु०, तदणंतरं पुन्नकलसभिंगारं जाव गगणतलमणुलिहंतं पुरतो अहाणु०, तदणं० छत्तभियारं, तदणं० महिंदज्झए, तदणं० सरूवणेवत्थहत्थपरिवारित्थतप्पवेसा सव्वालंकारविभूसिता पंच अणिया पंच अणिया-धिवतिणो, तदणं० बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य सएहिं सएहिं रूवेहिं जाव निओगेहिं सक्कं देविंदं पुरतो य मग्गतो य पासतो य अहा०, तदणं० बहवे सोहम्मवासी देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव दूरुढा समाणा मग्गतो य जाव संपट्ठिता ॥

तए णं से सक्के तेणं पंचाणीयपरिक्खित्तेणं जाव महिंदज्झएणं पुरतो पकड्ढिज्जमाणेणं २ चउरासीतीए सामाणिय जाव परिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं जाव उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे जेणेव सोहम्मस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे य वीतीवयमाणे य ताए उक्किट्ठाए जाव देवगतीए वीतीवयमाणे २ तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदीसरे दीवे जेणेव दाहिणपुरत्थि-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मिल्ले रतिकरगपत्थते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छेत्ता तं दिव्वं देविड्ढिं जाव दिव्वं जाणविमाणं पडिसाहरमाणे पडिसाहरमाणे जेणेव जंबुद्दीवे जाव जेणेव भगवतो जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छेत्ता तं भवणं तेणं दिव्वेणं विमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, करेत्ता तस्स उत्तरपुरत्थिमे जाव विमाणं ठवेति, ठवेत्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं एवं जहा वीरस्स निक्खमणे जाव रवेणं जेणेव भगवं तित्थकरे तित्थगरमातरं च तेणेव उवागच्छति, उवागच्छेत्ता आलोए चेव पणामं करेति, करेत्ता सामिं समातरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति वंदित्ता नमंसति नमंसित्ता एवं वयासी- नमोत्थु ते रयण-कुच्छिधारिए, एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव वन्नओ सपुत्ताणि तं कयत्थे!, अहं णं देवाणुप्पिए! सक्के नामं देविंदे भगवतो सामिस्स जम्मणमहिमं करेस्सामि, तं तुब्भे न भाइयव्वंतिकट्टु ओसोवणिं दलयति, दलयित्ता तित्थयरपडिरूवगं विउव्वति, विउव्वेत्ता तं भगवतो मातूए पासे ठावेति ठावेत्ता पंचसक्के विउव्वति, विउव्वेत्ता एगे सक्के आयंते चोक्खे परमसुइभूए सरससुरभिगोसीस-चंदणचिलित्तकरजुगे कयप्पणामे अणुजाणंतु मं भगवं ! तिकट्टु भगवं तित्थगरं करतलपुडेहिं गेण्हइ सहरिसं ससंभमं, एगे सक्के पिट्ठतो चलं आतपत्तं गेण्हति, वन्नओ, उभयो पासिं दुवे सक्का चामरुक्खेवं करेंति वन्नओ, एगे सक्के पुरतो वज्जं पाणीए कट्ठति, तए णं से सक्के चउरासीतीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहिं देवेहि य देवीहि य ताए उक्किट्ठाए जाव वीतिवयमाणे जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव पंडगवणे मंदरचूलियाए दाहिणेणं अतिपंडुकंबलसिलाए अभिसेयसीहासणे तेणेव उवा-गच्छति उवागच्छेत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने । तेणं कालेणं तेणं समतेणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी वस-भवाहणे सुरिंदे उत्तरड्ढलोगाहिवती अट्ठावीसविमाणवाससयसहस्साहिवती अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सक्के, इमं णाणत्तं- महाघो-

सा घंटा लहुपरक्कमो पादत्ताणियाधिवती पुप्फओ विमाणकारी दक्खिणा णिज्जाणभूमी उत्तरपुरत्थिमिल्लो रतिकरपव्वतो मंदरे समोसरितो जाव पज्जुवासति । एवं अवसेसावि इंदा आणियव्वा जाव अच्चुओत्ति । इमं णाणत्तं–चउरासीतिमसीती बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी या । पन्ना चत्तालीसा, तीसा वीसा दससहस्सा ॥ १ ॥ एते सामाणियाणं ॥ बत्तीस अट्ठवीसा, बारस अट्ठेव चतुरो सयसहस्सा । पन्ना चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥ २ ॥ आणयपाणयकप्पे, चत्तारि सया अच्चुते उ तिन्नि सता । एते विमाणा ॥ इमे जाणविमाणकारी देवा, तंजहा-पालय पुप्फय सोमणस, सिरिवच्छे य णंदियावत्ते । कामगते पीइगमे मणोरमे विमल सव्वतोभद्दे ॥ सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं बंभलोयगाणं महासुक्कगाणं पाणयगाणं इंदाणं सुघोसा घंटा हरिणेगमेसी पादत्ताणीयाहिवती उत्तरिल्ला णिज्जाणभूमी दाहिणपुरत्थिमिल्लो रतिकरगपव्वतो, ईसाणगाणं माहिंदलंतकसहस्सारअच्चुआण इंदाणं महाघोसा घंटा लहुपरक्कमे पादत्ताणीयाहिवती दक्खिणिल्लिए णिज्जाणमग्गे उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, परिसाओ णं जहा जीवाभिगमे ॥ आयरक्खा समाणियचउग्गुणा सव्वेसिं, जाव विमाणा सव्वेसिं जोयणसयसहस्साविच्छिन्ना, उच्चत्तेणं सविमाणप्पमाणा, महिंदज्झया सव्वेसिं जोयणसाहस्सिया, सक्कवज्जा मंदरे समोतरंति जाव पज्जुपासेंति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं तित्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं पंचहि अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणीएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं चउहिं चउसट्ठीहिं आयरक्खसाहस्सीहिं णं अन्नेहि य जहा सक्के, णवरि इमं णाणत्तं–

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

दुमो पादत्ताणीयाहिवती ओघस्सरा घंटा विमाणं पन्नासं सहस्साइं महिंदज्झतो पंच जोयणसयाइं विमाणकारी आभितोगिओ देवो, अवसिट्ठं तं चेव, जाव मंदरे समोसरति पज्जुवासति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिंदे एमेव, णवरं सट्ठिं सामाणिय-साहस्सीओ चउगुणा आतरक्खा महादुमो पादत्ताणियाधिवती महाओघस्सरा घंटा, सेसं तं चेव, परिसाओ जहा जीवाभिगमे। तेणं कालेणं तेणं समएणं धरणे तहेव, णाणत्तं- छ सामाणियसाहस्सीओ छ अग्गमहिसीओ चउगुणा आयरक्खा मेघस्सरा घंटा रुद्दसेणो पादत्ताणीयाधिवती विमाणं पणुवीसं जोयणसहस्साइं महिंदज्झओ अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं, एवं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीइंदाणं, णवरं- असुराणं ओघस्सरा घंटा णागाणं मेघस्सरा सुवन्नाणं हंसस्सरा विज्जूणं कोंचस्सरा अग्गीणं मंजुस्सरा दिसाणं मंजुघोसा उदहीणं सुसरा दीवाणं मधुरस्सरा वाऊणं नंदिस्सरा थणियाणं नंदिघोसा 'चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा उ असुरवज्जाणं । सामाणिया उ एए चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ १ ॥ दाहिणिल्लाणं पादत्ताणाधिवती रुद्दसेणो उत्तरिल्लाणं दक्खो ॥ वाणमंतरजोइसिया णेयव्वा एवं चेव, णवरं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चत्तारि अग्गमहित्तीओ सोलस आयरक्खसहस्सा, विमाणा सहस्सं महिंदज्झया पणुवीसं जोयणसयं, घंटा दाहिणाणं मंजुस्सरा उत्तराणं मंजुघोसा, पादत्ताणीयाहिवई विमाणकारी य आभियोगा देवा ॥ जोइसियाणं सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसा घंटाओ, एवं पज्जुवासंति ।

तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया महं देवाधिवे आभियोग्गे देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं तित्थगराभिसेयं उवट्ठवेह, तएणं ते हट्ठतुट्ठ जाव पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमेत्ता वेउव्वि-

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥१४७॥

यसमुग्घाएणं जाव समोहनित्ता अट्ठसहस्सं सोवण्णियकलसाणं एवं रूप्पमयाणं मणिमयाणं सुवन्नरूप्पमयाणं सुवन्नमणिमयाणं रूप्पमणिमयाणं सुवन्नरूप्पमणिमयाणं अट्ठसहस्सं भोमेज्जाणं, अट्ठसहस्सं चंदणकलसाणं, एवं भिंगाराणं आदंसाणं थालाणं पातीणं सुपतिट्ठाणं रयणकरंडगाणं पुप्फचंगेरीणं, एवं जहा सूरियाभस्स सव्वचंगेरीओ सव्वपडलगाइं विसेसियतराइं भाणियव्वाइं, सीहासणछत्तचामरतेल्लसमुग्गा जाव सरिसवसमुग्गता, तालियंटा जाव अट्ठसहस्सं कडुच्छुयाणं विउव्वित्ता साभाविए य वेउव्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गेण्हेत्ता जेणेव खीरोदसमुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदोदं गेण्हंति गेण्हेत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, एवं पुक्खरोदाओ, जाव भारहेरवयाणं मागहाईणं तित्थाणं उदगं मट्टियं च गेण्हंति, एवं गंगादीणं महाणदीणं जाव चुल्लहिमवंताओ सव्वतुयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले जाव सव्वोसहीओ सिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हेत्ता पउमद्दहाओ दहोदगं उप्पलादीणि य, एवं सव्वकुलपव्वएसु वट्टवेयड्ढेसु सव्वमहद्दहेसु सव्ववासेसु सव्वचक्कवट्टिविजएसु वक्खारपव्वएसु अंतरणदीसु विभासेज्जा जाव उत्तरकुरुसु जाव सुदंसणभद्दसालवणे सव्वतुयरे जाव सिद्धत्थए य गेण्हंति, एवं णंदणवणाओ सव्वतुयरे जाव सिद्धत्थए सरसं च गोसीसं चंदणं दिव्वं च सुमणदामं गेण्हंति, एवं सोमणसपंडगवणाओ य सव्वतुयरे जाव सुमणदामं, दद्दरमलयसुगंधिए य गंधे गेण्हंति, एगंतओ मिलंति मिलित्ता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छेत्ता तं महत्थं जाव तित्थगराभिसेयं उवट्ठावेंति ॥

तए णं से अच्चुयदेविंदे सद्धिं सामाणियसाहस्सीहिं तावत्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वर-

श्री ऋषभस्य जन्माभिषेकः

॥१४७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

कमलपतिट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपुन्नेहिं चंदणकयचच्चाएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलप्पिहाणेहिं करतलसुमालपरिग्गहितेहिं अट्ठसहस्सेहिं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्सिएणं भोमेज्जाणं जाव सव्वोदएहिं सव्वमाट्टियाहिं सव्वतुयरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महता महता तित्थकराभिसेगेणं अभिसिंचति । तए णं सामिस्स महता महता अभिसेगंसि चेव वट्टमाणंसि सव्वे इंदा छत्तचामरकलसधूवकडुच्छुयपुप्फगंधजाव हत्थगया हत्थतुट्ठ जाव पुरतो चिट्ठंति वज्जसूलपाणी, अन्नेऽवि य णं देवा य देवीओ य चंदणकलसहत्थगया एवं भिंगार जहा वद्धमाणसामिस्स निक्खमणे जाव पंजलिकडत्ति । एवं अप्पेगतिया देवा आसितसंमज्जियोवलित्तं करेंति जहा विजयस्स जाव गंधवट्टिभूयं करेंति, अप्पे० हिरन्नवासं वासेंति, एवं सुवन्नरयणवइरआभरणपत्तपुप्फफलबीयमल्लगंधवन्नजाव चुन्न०वासंति । अप्पे०हिरन्नविधिं भाएंति, एवं जाव चुन्नविधिं भाएंति, अप्पे०चउव्विहं वज्जं वाएंति ततं विततं घणं झुसिरं । अप्पे० चउव्विहं पगायंति, तंजहा-उक्खित्तं पयत्तं मंदं चोइदगं, अप्पे०चउव्विहं णट्टं णच्चेंति, तंजहा-अंचितं दुतं आरभडं भसोलंति, अप्पे०चउव्विहं अभिणयं अभिणेंति, तंजहा-दिट्ठंतियं पाडियंतियं सामंतोवाइयं लोगमज्झवसियं, अप्पे० बत्तीसइविहं दिव्वं नट्टविधिं उवदंसेंति, अप्पे० उप्पयणिययपव्वयं संकुचितपसारितं । जाव भन्तं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पे० पीणेंति एवं वक्खारेंति तंडवेंति लासेंति अप्फोडेंति वग्गंति सीहणादं णदंति, अप्पे० सव्वाइं करेंति, अप्पे० हयहेसियं, एवं हत्थिगुलगुलाइतं रहघणघणाइतं, अप्पे० तिन्निवि, अप्पे० अच्छोलेंति अप्पे० पच्छोलेंति एवं तवंति अच्छिदंति पाददद्दरं करेंति भूमिचवेडं दलयंति, अप्पे० महता महता सद्देणं रावेंति, एवं संजोगावि विभासियव्वा, अप्पे० हक्कारेंति एवं पुक्कारेंति वक्कारेंति ओवयंति उप्पयंति परिप्पवन्ति जलंति तवंति गज्जंति विज्जुयंति वासंति देवुक्कलियं करेंति एवं देवकुहुकु-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

हुगं देवहुहुगं करेंति अप्पे० विकितभूतादिरूवाइं विउव्वित्ता पणच्चन्ति, एवमादि विभासेज्जा जहा विजयस्स जाव सव्वतो समंता आहावेंति परिधावंति ।

तए णं से अच्चुइंदे सपरिवारे सामिं तेणं महता महता अभिसेगेणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करतलपरिग्गहितं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं जाव जयजयसद्दं पउंजति, पउंजित्ता पम्हलसुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गाताइं लूहेति, एवं जहा वद्धमाणसामिस्स णिक्खमणे जाव णट्टविहिं उवदंसेति, उवदंसेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं रयतामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं भगवतो सामिस्स पुरतो अट्ठट्ठमंगलगे आलिहति, तं० दप्पण भद्दासण वद्धमाण वरकलस मच्छसिरिवच्छा । सोत्थिय णंदावत्तं लिहिता अट्ठट्ठमंगलगा ॥ १ ॥ काऊण करेंति उवयारं, किं ते ?, पाडलमल्लियचंपगअसोगपुन्नागचूयमंजरिणवमालियबउलतिलयकणवीरकुंदकुज्जककोरंटदमणकवरसुरभिसुगंधिकस्स कयग्गहगहियकरतलपब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवन्नस्स कुसुमसंचतस्स तत्थ चित्तं जंणुस्सहप्पमाणमेत्तं ओहनिकरं करेत्ता चंदप्पभरयणवइरवेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहेतुं पयते धूवं दाऊण जिणवरिंदस्स सत्तट्ठपयाइं ओसरित्ता दसंगुलिं अंजलिं करिअ मत्थगंमि पयतो अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संथुणति, संथुणित्ता वामं जाणुं अंचेति अंचेत्ता जाव करतलपरिग्गहितं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

णमो त्थु ते सिद्ध बुद्ध निरय समाहित समण संमत्तसमणजोगि सल्लगत्तण नीभय नीरागदोस निम्मम निस्संग नीसल्ल माणमूरण गुणरयण सीलसागर मणंतमप्पमेय भविय धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी णमोऽत्थु ते अरहंतोत्तिकट्टु वंदति नमंसति, नमंसइत्ता

॥१४९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

णच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासति, एवं जस्स जो परिवारो तमुच्चारेन्ति तमुच्चारेत्ता जहा अच्चुतो तहा पाणतादीयावि देवेंदा परिवाडीए भाणियव्वा जाव भवणवतिवाणमंतरजोइसिंदा पत्तेयं पत्तेयं अभिसिंचंति सूरपज्जवसाणे, सक्कवज्जा, णवरं ते दिव्वकलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा इति । तए णं से ईसाणे देविंदे पंच ईसाणे विउव्वइ, एगे तहेव जाव तित्थगरं गहाय सीहासणंसि णिसन्ने जाव एगे पूरतो सूलपाणी चिट्ठति, तए णं से सक्के देविंदे० आभियोगे आणवेति, खिप्पामेव भो ! महत्थं तहेव जाव उवट्ठवेंति, तए णं से सक्के तित्थगरस्स चउद्दिसिं चत्तारि धवलवसभे विउव्वति, सेते संखदलसंनिकासे जाव दरिसणिज्जे, तए णं तेसिं चउण्हं वसभाणं अट्ठसु सिंगग्गेसु अट्ठ तोयधाराओ णिग्गच्छंति, तए णं ताओ उड्ढं वेहासं उप्पयंति, उप्पयित्ता एगतो मेलायंति २ सामिस्स मुद्धाणंसि निवातंति, तए णं से सक्के सपरिवारे सामिं जहेव अच्चुते तहेव साभाविएहिं जाव पज्जुवासति । णवरं ते च्चेव अणुप्पविट्ठा इति। तए णं से सक्के सामिं वंदति० नमंसित्ता तहेव पंच सक्के विउव्वति जाव वज्जपाणी पकड्ढति । तए णं चउरासीतीए सामाणिय जाव रवेणं ताए उक्किट्ठाए जेणेव सामिस्स माया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तित्थगरपडिरूवगं साहरति साहरेत्ता सामिं माऊए पासे ठावति, ओसोवणिं पडिसाहरति, एगं महं खोमजुगलं कुंडलजुयलं च सामिस्स उस्सीसगमूलंसि ठवेति, ठवेत्ता एगं महं सिरिदामगंडं तवणिज्जलंबूसगं सुवन्नपतरगमंडितं णाणामणिविविहरयणहारद्धहारसोभितसमुदयं सामिस्स उल्लोयंसि णिक्खिवति,जम्मं सामी देहमाणे सुहं सुहेण अभिरममाणे २ चिट्ठति ।

तए णं से सक्के वेसमणं आणवेति, खिप्पामेव भो ! बत्तीस हिरन्नकोडिओ बत्तीसं सुवन्नकोडीओ बत्तीसं नंदाइं बत्तीसं भद्दाइं सुभग्गसोभग्गरूवजोव्वणगुणलावन्नं च भगवतो सामिस्स जम्मणभवणंसि साहराहि, सेवि जंभगदेवेहिं साहरावेत्ता जाव पच्चप्पिणंति।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

वंशस्थापन

तए णं से सक्के अभिओगिए सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह-हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवतिवाणमंतरजोतिसवेमाणिया देवा य देवीओ य जे णं देवाणुप्पिया ! केई भगवतो तित्थगरस्स वा तित्थगरमाऊए वा असुभं मणं संपहारेति तस्स णं अज्जगमंजरिकाविव सतहा मुद्धाणं फुट्टउत्तिकट्टु घोसणं घोसह घोसित्ता जाव पच्चप्पिणह । तेऽवि तहेव करित्ता जाव पच्चप्पिणंति ।

तते णं ते बहवे भवणवति जाव वेमाणिया देवो भगवं तित्थगरं तित्थगरजम्माभिसेगेणं अभिसिंचित्ता जेणेव नंदीसरवरदीवे तेणेव उवागच्छंति, तए णं से सक्के देविंदे पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते अट्ठाहियं महामहिमं करेति, तए णं सक्कस्स चत्तारि लोगापाला चउसु दहिमुहगपव्वतेसु अट्ठाहियाओ महामहिमाओ कीरंति, एवं ईसाणे देविंदे उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वतेसु, चमरो य दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वतेसु, बली पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए, तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वतेसु, तए णं ते बहवे भवण० जाव महिमाओ करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव पडिगयत्ति, एवं जहा जम्बूदीवपन्नत्तीए, अहवा ' जम्मणमहो य सव्वो जह भणिओ मल्लिणायंमि ॥ ' ऊरूसु उसभलंछणं उसभो सुमिणंमि तेण कारणेण उसभोत्ति णामं कयं । एयं सो उसभो उप्पन्नो ॥

एयस्स गिहावासे असकतो आसि आहारो । किं च-सव्वे तित्थगरा बालभावे जदा तण्हातिया छुहातिया वा भवंति तदा अप्पणो अंगुलियं वयणे पक्खिवंति, तत्थ देवा सव्वभक्खे परिणामयंति, एस बालभावे आहारो सव्वेसिं, ण ते थणं धावंति,

॥१५१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

॥१५२॥

पच्छा सिद्धमेव भुंजंति महतोभूता, उसभस्स पुण सव्वकालं देवोवणीतयाइं उत्तरकुरुफलाइं जाव पव्वतितो । किंच-तित्थगरमायरो लीणगब्भातो भवंति, जायमाणेसु य जररुहिरकलमलादीणि न भवंतित्ति ।

जाहे देसूणं वासं जायस्स तित्थगरस्स ताहे सक्कस्स इच्छा जाया-जीतमेतं तीतपडुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं पढमतित्थगराणं वंसट्ठवणं करेत्तएत्तिकट्टु जाव आगतो, पच्छा किह रिक्कहत्थओ पविसामित्ति, इतो य णाभिकुलगरो उसभसामिणो अंकवरगतेणं एवं च विहरति, सक्को य महप्पमाणाओ इक्खुलट्ठीओ गहाय उवगतो जयावेइ, भगवता लट्ठीसु दिट्ठी पाडिता, ताहे सक्केण भणियं-किं भगवं ! इक्खु अक्कु ? अक्कु भक्खणे, ताहे सामिणा पसत्थो लक्खणधरो अलंकितविभूसितो दाहिणहत्थो पसारितो, अतीव तंमि हरिसो जातो भगवंतस्स, तएणं सक्कस्स देविंदस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते-जम्हा णं तित्थगरो इक्खुं अभिलसति तम्हा इक्खागुवंसो भवतु, एवं सक्को वंसं ठवेऊण गतो, अन्नेऽवि तंकालं खत्तिया इक्खुं भुंजंति तेण इक्खागवंसा जाता इति उवरिं आहारद्दारे निरुत्तंमि 'आसीत इक्खुभोदी इक्खागा तेण खत्तिया होंति'त्ति भन्निही, पुव्वभा य भगवतो इक्खुरसं पिबिताइता तेण गोत्तं कासवंति, इक्षवश्च तदा पानीयवल्लीवद्रसं गलंति, छिन्ना बद्धा वा ॥

इतो य भगवं सुमंगलाए भगिणीए सद्धिं सुहंसुहेण विहरति संवड्ढति य, तेणं कालेणं तेणं समएणं एगस्स मिहुणस्स मिथुणगं जायमेत्तगं, ताणि तं मिथुणगं तलरुक्खहेट्ठा ठवेऊण अभिरमंति कयलीघरगाईसु, ततो य तलरुक्खाओ तलफलं पक्कं समाणं वातेण आहतं तस्स दारगस्स उवरि पडितं, तेण सो अकाल चेव जीवितातो ववरोवितो, ताहे तं मिथुणगं तं एक्कलियं दारियं कंचि कालं संवड्ढेऊण पयणुपेम्मरागेण तं उज्झित्ता गताणि, सा य अतीव उक्किट्ठसरीरा देवकण्णाविव तेसु णं वणंतरेसु जह वणदेवता

॥१५२॥

अथ भगवंत ऋषभस्य विवाह एवं अपत्य-वर्णनं कथयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तहा वियरति, तं च एक्कलियं दट्ठुं केति पुरिसा नाभिस्स साहंति, ताहे नाभी तं दारियं गहाय भणति-उसभस्स भारिया भविस्सतित्ति, सयमेव संगोवेमाणो विहरति, ताहे सामी ताहिं दोहिं दारियाहिं समं वड्ढति । एवं ता **जम्मणं नामंति** गतं । इयाणिं अभिवड्ढित्ति दारं । **सो वड्ढति भगवं तो दियलोयचुत्तो अणोवमसिरीओ । देवीदेवपरिवुडो, सुहं सुहेण अभिवड्ढति (नंदाइ समंगलासहिओ वृ.)** ॥ २ ॥११८॥ सो य पुण भगवं पुव्वजातिस्सरो तिण्णाणोवगतो उम्मुक्कबालभावो भिन्नजोव्वणो जातो । **विवाहेत्ति** दारं—

तए णं सक्कस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिते-जीतमेतं तीतपडुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं पढमतित्थगराणं विवाहमाहिमं करेत्तएत्ति-कट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता आगतो सिग्घमेव महता रिद्धिसक्कारसमुदएणं, ताहे सक्को उसभभगवतो सयमेव वरकम्मं करेति, तंजहा-पमक्खणगण्हाणगीतवातिय अविधवं एवं वरकम्मं करेति, तासिं पुण दारियाणं सक्कग्गमाहिसीओ महता रिद्धिसक्कारसमुदएणं, विवाहं काऊण जामेव दिसं पाउब्भूता तामेव दिसं पडिगताणि । **अवच्चत्ति** दारं–

छप्पुव्वसयसहस्सा ॥२॥ १२३ ॥तए णं सुमंगलाए बाहू य पीढो य अणुत्तरेहिंतो चइऊणं मिहुणयं जातं, भरहो बंभी य, सुणंदाए सुबाहू य महापीढो य पच्चायाता, ते पुण बाहुबली य सुंदरी य, तते णं सा सुमंगलादेवी अन्नाणि एगूणपन्नं पुत्तजुयल-गाणि पसवति, तेऽवि ताव कुमारा एवं संवड्ढंति ।

आभिसेगोत्ति दारं– ते य मणुया तं दंडणीतिं अतिक्कमंति, भगवं च पुव्वजातिस्सरं अब्भाहियं च णाऊणं विन्नाणेणं तं उवट्ठायंति, जा सा दंडणीती तं इमे पेल्लेंति, तं इयाणिं किं कीरउ ?, ताहे भगवं पन्नवेति जहा राया भवति, ते पुच्छंति- केरिसो

अपत्याभि-षेकादीनि

॥१५३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

राया ?, सामी साहति-जहा जो राया भवति तस्स कुमारामच्चा दंडा आरक्खिगा य भवंति, ताहे तस्स उग्गा दंडणीती भवति, तं च ताहे लोगा ण वोलेंति, तो सो किह भवति, ?, सो रायाभिसेगेणं अभिसिच्चति, ताहे तेहिं भणितं- तुम्भे होह रायाणोत्ति, तेण भणियं-णाभिं जायह, ते गंतुं णाभिं जायंति, तेण भणितं- अहं महल्लो, गच्छह तुम्भे उसभं रायाणं ठवेह, एवं होउत्ति गता पोमसरं, पोमिणीपत्तेहिं पाणियं गेण्हंति जाव आणेन्ति य, सक्कस्स आसणचलणं, ताहे सव्विड्ढीए सक्को सलोगपालो आगतो, रायाभिसेगेणं अभिसिंचति, जतिओ य रायारिहो अलंकारो सो सव्वो उवणीतो, एवं भगवं रायाभिसेगेण अभिसित्तो, अथ ते य पुरिसा आगता पेच्छंति भगवं रायाभिसेगेण अभिसित्तं सव्वालंकारविभूसितं, ताहे परितोसवियसियमुहा जाणंति- किह अम्हे अलंकितविभूसियस्स उवरिं पाणियं छुभामो ?, तम्हा पाएसु छुभामोत्ति, ताहे तेहिं पाएसु पाणियं छूढं, ताहे सक्को देवराया चिंतेति- अहो इमे विणीता मणुस्सा, तम्हा एत्थ विणीता चेव णगरी भवतुत्ति, ततो णं से सक्के देवराया वेसमणं महारायं आणवेति-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बारसजोयणदीहं णवजोयणविच्छिण्णं जहा वीतसोगा रायहाणी, रज्जसंग्गहेत्ति दारं ॥ एवं तस्स अभिसित्तस्स चउव्विहो रायसंगहो भवति, तंजहा-उग्गा भोगा राइन्ना खत्तिया, उग्गा जे आरक्खियपुरिसा तेसिं उग्गा दंडणीती ते उग्गा, भोगा णाम जे पितित्थाणिया सामिस्स, राइन्ना नाम जे सामिस्स समव्वया, अवसेसा खत्तिता ॥ दारं । इयाणिं विविहाए लोगट्ठितीए णिबंधणं दरिसिज्जति—

आहारे जाव० ॥ २ ॥१३१॥ आसि य कंदाहारा ॥ २ ॥ १३५ ॥ तेसिं पढमं कंदादी आहारो आसि, पच्छा तेण ण जीरंतेण ते उसभं उवट्ठायंति, जहा अम्ह ण जीरति, ताहे उसभसामी भणति- जहा तुम्भे हत्थेहिं मलेत्ता तयं अवणेत्ता ताहे

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

आहारेह, एवं ते पाणिधंसी आसी, तहवि ण जीरितुं पवत्तं कढिणत्तणेणं ओसहीणं, ताहे भणेति- धंसित्ता तिम्मेत्ता खाह, तहवि न जीरति, ताहे धंसेत्ता तिम्मेत्ता पवालपुडेसु मुहुत्तं धारेह, तहवि ण जीरति, ताहे धंसेत्ता तिम्मेत्ता पवालपुडेसु मुहुत्तगं धरेत्ता, तओ पुणो हत्थपुडंसि मुहुत्तगं धरेत्ता खाह, जाहे तहवि ण जीरति, ताहे कक्खंतरेसु उण्हवेत्ता पच्छा आहारेंति, कीसकारणेणं अग्गिं ण उप्पाएंति ?, सामी जाणति- जदा एगंतणिद्धो कालो भवति तदा अग्गी ण उट्ठेति, एगंतरुक्खेणवि, जदा वेमादाणिद्धलुक्खो भवति तदा अग्गी उट्ठेति, तेण सामी अग्गिं ण उट्ठावेति । अहवा इमं निरुत्तं इक्खागवंसस्स—

आसी य इक्खुभोती इक्खागा तेण खत्तिया होंति । खणसत्तरसं धन्नं आमं ओमं च भुंजीया ॥ २ ॥ १३६ ॥

ओमं णाम थोवं । ताहे- आसी पाणीधंसी ॥ २ ॥ १३८ ॥ एवं च णाम ते कक्खंतरेसु छोढूण आहारेंति । इतो य कालसभावेण रुक्खसंघंसेण अग्गी उट्ठाइतो, ताहे सो अग्गी भूमिं पत्तो, जाणि तत्थ सुक्कपत्तकयवराणि ताणि दहितुमारद्धो, ते मणुसा तं दट्ठूण अब्भुत्तयं ततोहुत्ता पधाइता ताहे गेण्हामोत्ति इमाणि रयणाणि, गेण्हितुमारद्धा जाव डज्झंति ताहे ओसरंति, ताहे भीता समाणा उसभसामिस्स साहंति, ताहे उसभो भणति- पासेसु विलग्गिऊणं मंडलिं परियेरंतेसु छिंदह, ताहे हत्थीहि य आसेहि य तं सव्वं तणं मलितं, ताहे सो उवसंतो अग्गी, ताहे सो अग्गी गेण्हावितो, ताहे भणिया- पाकं करेह, ते ण जाणंति किह पाको कीरति ?, ते अग्गिमि छुभंति, सो अग्गी तं डहति, ते पुणो उवट्ठिता, तंमि जं छुब्भति तं जरग्गतो जहा खाति, भगवं भणति-मत्तियं आणेह, भगवं हत्थिखंधे चडितओ णीति, तेहि य चिक्खल्लो उवणीतो, ताहे सामिणा हत्थिस्स कुंभए

काऊण दरिसितं पत्तयं, भणिता-एयारिसयाणि काऊण एत्थं चेव पयह, पच्छा कुसलेहिं कालेण सुंदरतरगाणि कयाणि, पच्छा पइऊण अग्गिमि तहिं पागं करे करेंति । एवं ता पढमं कुंभकारा उप्पन्ना, एवं ता आहारो गतो ॥

इयाणिं सिप्पाणि उप्पाएयव्वाणि, तत्थ पच्छा वत्थरुक्खा परिहीणा, ताहेऽणंतिका उप्पाइया, पच्छा गेहागारा परिहीणा, ताहे वड्ढती उप्पाइता, पच्छा रोमणखाणि वड्ढंति ताहे कम्मकरा उप्पाइता ण्हाविया य, एताइं च पंच मूलसिप्पाणि-कुंभकारा चित्तगारा णंतिका कम्मगारा कासवगत्ति । एक्केक्कस्सावि वीसं भेया, एवं सिप्पसयं, एवं ता सिप्पाण उप्पत्ती ।

इयाणिं कम्माणि-तणहारगादीणि, आचार्यकं सिल्पमनाचार्यकं कर्म, ताहे जे दूरिट्ठिता मणुस्सा ते विणीयतासमीपत्थे मणुसे भणंति-ओ! कुसलत्ति, तेण कोसला. कालदोसेण ममत्तिभावे जाते मामणा, मामणाणाम ममता, मम आसमो वणं काननानि, एस मामणा । विभूसणा णाम जं चेव सामी विभूसिज्जंतो दिट्ठो तप्पभिति लोगो आढत्तो विभूसेउं ।

लेहत्तिदारं–बंभीय दाहिणहत्थेण लेहो दाइतो, सुंदरीय वामहत्थेण गणितं, भरहस्स चित्तकम्मं उवदिट्ठं, बाहुबलिस्स लक्खणं थीपुरिसमादीणं माणं ओमाणं पडिमाणं, एवं तदा पवत्तं । पोत्तए णामं जं मणिपादओ पोइज्जंति, वहणाणि वा तदा उप्पन्नाणि । अवलवितुमारद्धेसु ववहारो तप्पभितिं चेव आढत्तो। णीतीओ उसभसामिम्मि चेव उप्पन्नाओ। निउद्धाणि इस्सत्थाणि य । ओवासणा णाम कम्मं जं कायव्वं तं तदा आढत्ताणि वड्ढिउं रोमाणि, पढमं ण वड्ढित्था, अहवा उवासणा जं सेवेति इस्सरं वा, चिंगिच्छावि तदा आढत्ता, पढमं रोगा ण होंसु, अत्थसत्था कोडिल्लयमादी तदा उप्पन्ना, वंधे घाते य मारणा, एतं अत्थातो

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चेव जातं, जहा बंधे, जन्नगा णागजण्णकादी, उस्सवा इंदमहाइया, समवादो दोण्हं तिण्हं जणाणं, मंगलाणि पुव्वं भट्टारगस्स देवेहिं कयाणि, कोउयाणि भूइकम्माणि रक्खा य बद्धा, पुव्वं अलंकारो भट्टारगस्स देवेहिं कतो, लोगोऽवि ताए चेव अणुवित्तीए आढत्तो, वत्थगंधमल्लअलंकाराणि तदप्पभिति, परिभोगोवभोगाणि उवणयणा, पुव्वं सद्धे कप्पंडु साधूणं उवणिज्जंती, विवाहो य भगवतो पढमं तदप्पभिइं दिन्नं परिणेंति, दत्ती जदा सामी पव्वइतो तदा पयचा भिक्खा, सडगपूयणा मा देवाय पढमं पढमसिद्धत्तिकाऊण देवेहिं कया, झामणा सामिस्स पढमं सरीरं झामितं देवेहिं, धूभावि तदा चेव उप्पन्ना, महो पढमं भट्टारए कालगते देवेहिं आणंदअंसुपातो कतो, छेलावणयं छेलणं णाम उक्कट्ठीहसितादि, चेडरूवाण य छेलणा-इच्छा, इंखिणियाओ घंटियाओ, कन्नेसु किणाकिणावेंति जक्खा साहंति, पुच्छणा किं कीरतु ? मा वा कीरतु ?, अहवा पुच्छणा सुहसातयादीणि इच्चेवमादिपाये । एवं ता जणपदपरूवणा गता ॥

पढमं सामी संबोहितो, परिच्चाओ-पढमं सामिस्स चेव संवच्छरियो दायो जं च परिच्चइऊणं पव्वतितो, एताणि सव्वाणि तदा उप्पन्नाणि, पत्तेयं णाम को तित्थयरो पत्तेयं पव्वइतो ? को वा कीस परिवारो ?

एगो भगवं वीरो, पासो० ॥ ३-४ ॥ उग्गाणं भोगाणं० ॥ ३-५ ॥ उवहिम्मि दारं—सव्वेऽवि एगदूसेण निग्गया०॥ ३-७ ॥ तित्थगरा तित्थगरलिंगेणं पव्वइया, जं साधूण लिंगं तं तेसिं अन्नलिंगं भवति, गिहिलिंगं गिहत्थाणं, तंपि ण होइ, कुलिंगं णाम कुत्सितं लिंगं कुलिंगं, जं तावसपरिव्वायगादीणं, तंपि ण भवति, गामधम्मा सेविता ण वा सेविता ?, गामणगरादी वा तदा चेव उप्पन्ना, अहवा जे उवसग्गा ते तदा उप्पन्ना, परीसहा कस्स आसी णासी वा ?, सव्वेऽवि तित्थगरा

संबोधनादि

॥१५७॥

जीवादिणवपयत्थे उवलभिऊण पव्वइता, सुतलंभे उसभसामी पुव्वभवे चोद्दसपुव्वी, अवसेसा एक्कारसंगी, पच्चक्खाणं पुरिमपच्छिमाणं पंचजामं, अवसेसाणं चाउज्जामं, संजमो पुरिमचरिमाणं दुविहो—इत्तिरियं च सामाइयं छेदोवट्ठावणियं च, मज्झिमगाणं सामाइयं आवकहियं, सत्तरसंगो य सव्वेसिं, अन्ने संजमो इति सव्वे तित्थगरा सामाइयसंजमे पव्वइता। को वा केच्चिरं कालं छउमत्थो ? केण वा को तवो अणुचिन्नो ? कस्स वा काए वेलाए णाणं उप्पन्नं? —

तेवीसाए तित्थगराणं सूरुग्गमणमुहुत्ते एगराइयाते पडिमाए णाणं उप्पन्नं, वीरस्स पाईणगामिणीए जहा दसाए तहा, अन्ने भणंति—बावीसाए पुव्वण्हे मल्लिवीराणं अवरण्हे, कास केवतिओ सीससंगहो ?, भन्नइ—उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीति समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपदा होत्था, धंभिसुंदरिपामोक्खाणं अज्जियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपदा होत्था, सेज्जंसपामोक्खाणं समणोवासगाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ पंचासयसहस्सा उक्कोसिया समणोवासगसंपदा होत्था, सुभद्दापामोक्खाणं समणोवासियाणं पंच सयसाहस्सीओ चउप्पन्नं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियासंपदा होत्था, चत्तारि सहस्सा सत्त सया पन्नासा चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था, णव सहस्सा ओहिनाणीणं उक्कोसिया०, वीससहस्सा केवलणाणीणं उक्कोसिया०, वीससहस्सा छच्च सया वेउव्वियाणं उक्कोसिया०, बारस सहस्सा छच्च सया पन्नासा विपुलमतीणं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणमाणाणं पासमाणाणं उक्कोसिया विपुलमतिसंपया होत्था. बारस सहस्सा छच्च सया वादीणं पन्नासा उक्कोसिया०, बावीस सहस्सा णव य सया अणुत्तरोववातियाणं गतिकल्लाणाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया०, उसभस्स णं वीसं समणसहस्सा सिद्धा,

चत्तालीसं अज्जियासहस्सा सिद्धा, सट्ठिं अंतेवासिसहस्सा सिद्धा. एवं जहा पढमाणुओगे जाव अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स वरदत्तपामोक्खाओ अट्ठारस समणसाहस्सीओ, जक्खिणिपामोक्खाओ चत्तालीसं अज्जासाहस्सीओ, णंदप्पामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणत्तरिं च सहस्सा उक्कोसिया०, महासुव्वयपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ छत्तीसं च सहस्सा, चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणं, पन्नरस सता ओहीनाणीणं, पन्नरस सया केवलनाणीणं, पन्नरस सता वेउव्वियाण, दस सता विपुलमतीणं, अट्ठसया वादीणं, सोलस सया अणुत्तरोववादियाणं। पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स अज्जदिन्नपामोक्खाओ सोलस समणसाहस्सीओ, पुप्फचूलापामोक्खाओ अट्ठत्तीसं अज्जियासाहस्सीओ, सुणंदापामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी चउसट्ठिं च सहस्सा, णंदिणिपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्सा उक्कोसिया०, अट्ठुट्ठसया चोद्दसपुव्वीणं, चोद्दस सया ओहिन्नाणीणं, दस सया केवलनाणीणं, एक्कारस सया वेउव्वियाणं, अट्ठट्ठमा सता विपुलमतीणं, छस्सया वादीणं, बारस सया अणुत्तरोववाइयाणं। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स इंदभूतिपामोक्खाओ चोद्दससमणसाहस्सीओ, अज्जचंदणापामोक्खाओ छत्तीसं अज्जियासाहस्सीओ, संखसतगपामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणट्ठिं च सहस्सा, सुलसारेवतिपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ अट्ठारस य सहस्सा, तिन्नि सया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवादीणं जिणोविव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था, तेरस सया ओहिन्नाणीणं अतिसेसप्पत्ताणं उक्कोसिया०, सत्त सया केवलनाणीणं संभिन्नवरणाणदंसणधराणं उक्कोसिया०, सत्त सया वेउव्वीणं अदेवाणं देविड्ढिपत्ताणं उक्कोसिया०, पंच सया विउलमतीणं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पज्जत्तयाणं पंचिंदियाणं मणोगते भावे जाणंति

पासंति उक्कोसिया०, चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजिताणं उक्कोसिया०, अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गतिकल्लाणाणं ठितीकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववातियाणं संपदा होत्था ॥

तित्थं गणो० ॥ २ ॥ १६५ ॥ तित्थं चाउव्वन्नो संघो, गणा जस्स जत्तिया गणहरा य, धम्मोवातो पवयणं, परियाओ गिहत्थच्छउमत्थकेवलिपरियाओ जस्स जत्तिओ, अंतकिरिया केण कहिं काए वेलाए कस्स व केण तवोकम्मेण अंतकडा केवति परिवाराए, एतं सव्वं गाहाहिं जहा पढमाणुयोगे तहेव इहंपि वन्निज्जति वित्थरतो। एत्थ पढमतित्थगरस्स निक्खमणं वन्नेयव्वं, तं गाहाहिं भणितं· तहवि विभासाइ इच्छावेति—

से य उसभे कोसलिए पढमराया पढमभिक्खायरे पढमजिणे पढमतित्थयरे, दक्खे दक्खपइन्ने पडिरूवे अल्लीणे भद्दए विणीते वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसति, तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं रज्जवासमज्झे वसइ ते०वसमाणो लेहादीयाओ गणितप्पहाणाओ, सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ तेवट्ठिं च महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिन्निवि पयाहियट्ठाए उवदिसति, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसते अभिसिंचति, पुणरवि लोयंतिएहिं जीयकप्पितेहिं देवेहिं संबोहिते संच्चच्छरियं दाणं दाऊणं भरहं विणीताए, बाहुबलिं बहलीए, अन्ने य कच्छमहाकच्छादयो ठवेत्ता, अन्ने भणंति-एते साहस्सियपरिवारा अणुपव्वतिया तदा, सामी चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं पव्वतितो, चेत्तबहुलट्ठमीए दिवसस्स पच्छिमे भाए सुदंसणाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे जाव विणीतं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सिद्धत्थवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता असोगस्स हेट्ठा जाव सतमेव चउमुट्ठिओ, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं णक्खत्तेहिं० उग्गाणं

॥१६०॥

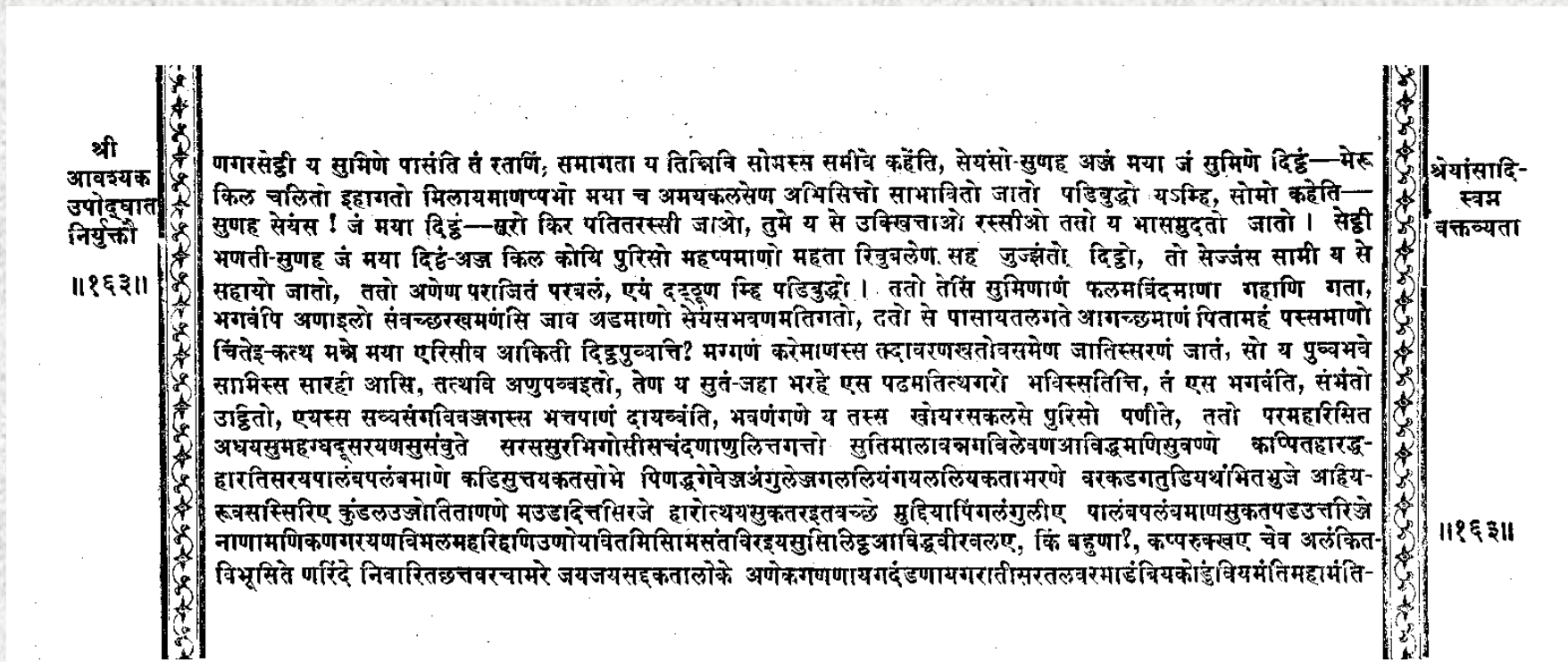
भोगाणं राइण्णाणं खत्तियाणं चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं एगं देवदूसमादाय जाव पव्वइते, उसभे णं अरहा कोसालिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था, तेसिं पंचमुट्ठिओ लोओ सयमेव, भगवतो पुण सक्कवयणेण कणगावदाते सरीरे जडाओ अंजणे रेहाओ इव रेहंतीओ उवलभातिऊणट्ठिताओ तेण चउमुट्ठिओ लोओ, सव्वतित्थगरावि य णं सामाइयं करेमाणा भणंति-करेमि सामाइयं,सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव वोसिरामि, भदंतित्ति ण भणंति, जीतमिति । एवं भगवं सामाइयादि अभिग्गहं घेत्तुं वोसट्ठचत्तदेहो विहरति, वोसट्ठोत्ति निप्पडिक्कम्मसरीरतया, चत्तो उवसग्गादिसहिष्णुतया,तथा च अच्छिंपि णो पमज्जिज्जा णोवि य कंडूइयए मुणी गातं। एवं जाव विहरति, ताव दुवे नमिविणमिणो कच्छमहाकच्छाणं पुत्ता उवट्ठिता, भगवं विन्नवेन्ति-भगवं ! अम्हं तुब्भेहि संविभागो ण केणवि वत्थुणा कतो, स पट्ठे बद्धकवया ओलग्गंति विन्नवेंति य, तातं ! तुब्भेहिं सव्वेसिं भोगा दिन्ना अम्हेऽवि देह, एवं तिसञ्झं ओलग्गंति, एवं कालो वच्चति, अन्नया धरणो णागकुमारिंदो भगवं वंदओ आगओ, इमेहि य विन्नवितं, सो ते तह जातमाणे भणति-भो सुणह भगवं चत्तसंगो गतरोसतोसो ससरीरेऽवि णिम्ममत्तो अकिंचणो परमजोगी णिरुद्धासवो कमलपलासाणिरुवलेव-चित्ती, मा एयं जायह, अहं तु भगवतो भत्तीए मा तुब्भं सामिस्स सेवा अफला भवतुत्तिकाउं पढितसिद्धाइं गंधव्वपन्नगाणं अडयालीसं विज्जासहस्साइं देमि, ताण इमाओ चत्तारि महाविज्जाओ, तंजहा-गोरी गंधारी रोहिणी पन्नत्ती, तं गच्छह तुब्भे विज्जाहररिद्धीए सजणजणवयं उवलोभेऊण दाहिणिल्लाए य गगणवल्लभपामोक्खे रहणेउरचक्कवालया (पमुहे य) पन्नासं सट्ठिं च विज्जाहरणगरे णिवेसिऊणं विहरह, तेऽवि तं सव्वमाणत्तियं पडिच्छिऊणं वेयड्ढ उत्तरसेढीए विणमी सट्ठिं णगराणि गगणवल्लु-भप्पमुहाणि णिवेसेति, णमी दाहिणसेढीए रहनेउरचक्कवालादीणि पन्नासं णिवेसेति, जे य जतो जणवयातो णीता मणुया तेसिं

तन्नामा जणवदा वेयड्ढेवि विज्जाणं वसतिकाया जाता, तंजहा-गोरीणं गोरिगा, मणूणं मणुपुव्वगा, गंधारीणं विज्जाणं गंधारा, माणवीणं माणवा, केसिकाणं केसिकपुव्विका, भूमीतुंडगविज्जाहिवतयो भूमीतुंडका, मूलवीरियाणं मूलवीरिया, संतुकाणं संतुका, पट्टकीणं पट्टका, कालीणं कालिकेया, समकीणं समका, मातंगीणं मातंगा, पव्वतीणं पव्वतेया, वंसालयाणं वंसालया, पंसुमूलियाणं पंसुमूलिया, रुक्खमूलियाणं रुक्खमूलिया। एवं तेहिं विणमिणमीहि विभत्ता अट्ठट्ठ णिकाया, ततो देवा इव विज्जाबलेणं सयणपरियणसहिता मणुयदेवभोगे भुंजंति, पुरेसु य भगवं उसभसामी देवयसभासु थावितो विज्जाधिट्ठायी य देवता ता सके सके णिकाए दोहिवि जणेहिं पविभत्ताणि पुराणि सुताणं खत्तियाण य संबंधीणं च।

णमि विणमि० ॥ ३ ॥ ९८ ॥ भगवंपि पितामहो मंगलालयो निराहारो परमधितिसततसारो सयंभूसागरो इव थिमितो अणाइलो विहरति, चतुहिं सहस्सेहिं परिवुडो, जदि भिक्खस्स अतीति तो सामितो णे आगतोत्ति वत्थेहिं आसेहि य हत्थीहिं आभरणेहिं कन्नाहि य निमंतेन्ति।

णवि ताव जणो०॥३॥९७॥ जेण जणो भिक्खं ण जाणति दाउं तो जे ते चत्तारि सहस्सा ते भिक्खं अलभंता तेण माणेण घरंपि ण वच्चंति भरहस्स य भएणं, पच्छा वणमतिगता तावसा जाता, कंदमूलाणि खातिउमारद्धा, भगवं च वरिसं आणसितो जत्थ जत्थ समुदाणस्स अतीति तत्थ तत्थ एस परमसामी अम्हंति, ण जाणंति दायव्वं किंति,

भगवंऽपदीण० ॥३॥ ९९ ॥ गयपुरसेज्जंसो खोयरसदाण० ॥ ३ ॥ १०३ ॥ छउमत्थो य वरिसं बहलीअंडबइल्लेहिं विहरिऊणं गजपुरं गतो, तत्थ भरहस्स पुत्तो सेज्जंसो. अन्ने भणंति---बाहुबलिस्स सुतो सोमप्पभो सेयंसो य, ते य दोऽवि जणा



श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१६२॥

णगरसेट्ठी य सुमिणे पासंति तं रत्तिं, समागता य तिन्निवि सोमस्स समीवे कहेंति, सेयंसो-सुणह अज्ज मया जं सुमिणे दिट्ठं—मेरू किल चलितो इहागतो मिलायमाणप्पभो मया च अमयकलसेण अभिसित्तो साभावितो जातो पडिबुद्धो यऽम्हि, सोमो कहेति—सुणह सेयंस ! जं मया दिट्ठं—सुरो किर पतिततस्सी जाओ, तुमे य से उक्खित्ताओ रस्सीओ ततो य भासमुदतो जातो। सेट्ठी भणती-सुणह जं मया दिट्ठं-अज्ज किल कोयि पुरिसो महप्पमाणो महता रिद्धबलेण सह जुज्झंतो दिट्ठो, तो सेज्जंस सामी य से सहायो जातो, ततो अणेण पराजितं परबलं, एयं दट्ठूण म्हि पडिबुद्धो। ततो तेसिं सुमिणाणं फलमचिंदमाणा गहाणि गता, भगवंपि अणाइलो संवच्छरखमणंसि जाव अडमाणो सेयंसभवणमतिगतो, ततो से पासायतलगते आगच्छमाणं पितामहं पस्समाणो चिंतेइ-कत्थ मन्ने मया एरिसीव आकिती दिट्ठपुव्वत्ति? भगवं करेमाणस्स तदावरणखतोवसमेण जातिस्सरणं जातं, सो य पुव्वभवे सामिस्स सारही आसि, तत्थवि अणुपव्वइतो, तेण य सुतं-जहा भरहे एस पढमतित्थगरो भविस्सतित्ति, तं एस भगवंति, संभंतो उट्ठितो, एयस्स सव्वसंगविवज्जगस्स भत्तपाणं दायव्वंति, भवणंगणे य तस्स खोयरसकलसे पुरिसो पणीते, ततो परमहरिसित अधयसुमहग्घदूसरयणसुसंवुते सरससुरभिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्तो सुतिमालावन्नगविलेवणआविद्धमणिसुवण्णे कप्पितहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणे कडिसुत्तयकतसोभे पिणद्धगेवेज्जअंगुलेज्जगललियंगयललियकतामरणे वरकडगतुडियथंभितभुजे अहियरूवसस्सिरिए कुंडलउज्जोतितताणणे मउडादित्तसिरजे हारोत्थयसुकतरइतवच्छे मुद्दियापिंगलंगुलीए पालंबपलंबमाणसुकतपडउत्तरिज्जे नाणामणिकणगरयणविमलमहरिहणिउणोयवितमिसिमसंतविरइयसुसिलिट्ठआविद्धवीरवलए, किं बहुणा?, कप्परुक्खए चेव अलंकितविभूसिते णरिंदे निवारितछत्तचमरचामरे जयजयसद्दकतालोके अणेकगणणायगदंडणायगरातीसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंति-

॥१६३॥

श्रेयांसादि-स्वप्न वक्तव्यता

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

गणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दगणिगमसेट्ठिसेणावतिसत्थवाहदूतसंधिपाल संपरिवुडे खिप्पामेव अब्भुट्ठेति अब्भुट्ठेत्ता पाउया-ओ ओमुयति ओमुयेत्ता एगसाडितं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे भगवंतं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, नमंसित्ता ताहे सयं चेव खोयरसघडगं गहाय दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे भगवतो उवगते, भगवं कप्पेतित्ति?, सामिणा पाणी पसारिए सव्वो णिसट्ठो पाणीसु, अछिद्दपाणी भगवं,उवरिं सिहा,ण य छद्दिज्जइ,भगवतो एसा लद्धी,सो भगवता पारितो, एवं से पडिलाभेमाणेऽवि तुट्ठे पडिलाभितेऽवि तुट्ठे, तते णं तत्थ पंच दिव्वाणि पाउब्भूयाणि, तंजहा-वसुहारा वुट्ठा. दसद्धवन्ने कुसुमवासे णिवतिते, चेलुक्खेवे कते, पहतातो देवदुंदुभिओ, अंतरावियणं आगासे अहो दाणेरत्ति घुट्ठे, तं च देवपूजणादि सेज्जंसस्स सोऊण रिसयो रायाणो सोमप्प-भादयो लोगा य परेण कोऊहल्लेण पुच्छंति सेज्जंसकुमारं-सुमुह! किमेतं?, ताहे सो ते पन्नवेति-एरिसा भिक्खा दिज्जतित्ति, एरिसा भिक्खा एरिसगाणं दिज्जति, एतेसिं दिन्ने सोग्गइं गम्मतित्ति, ते भणंति—कहं तुमे विन्नायं जहा भगवतो परमगुरुस्स भिक्खं दायव्वन्ति, कहेहि णे परमत्थं, ताहे सो तेसिं पकहितो, जहा-मम पितामहस्स दिक्खियस्य रूवदंसणे चिंता समुप्पन्ना-कत्थ मन्ने एरिसरूवं दिट्ठपुव्वंति? वियारेमाणस्स बहुभवितं जातीस्सरणं समुप्पन्नं, ततो मया णायं भगवतो भिक्खादाणं, ततो ते परमविम्हिता भणंति-साह केरिसोऽसि केसु भवेसु आसी ?, ताहे सो तेसिं अप्पणो सामिस्स य अट्ठभवग्गहणाणि कहेति, जहा वसुदेवहिंडीए, ताणि पुण संखेवतो इमाणि, तंजहा—

सेयंसो भणति- इतो सत्तमे भवे मंदरगंधमायणणीलवंतमालवंतमज्झवत्तणीय सीतामहानतीमज्झविभिन्नाय उत्तरकुराय अहं

॥१६४॥

अत्र भगवंत ऋषभ एवं श्रेयांसस्य पूर्वभवानां संबंधानां वर्णनं क्रियते

मिथुणइत्थिया भगवं तु पुण मम पितामहो मिथुणपुरिसो आसि, ततो वयं तंमि देवलोगभूते दसविहकप्पतरुप्पभवभोगे समुदिताइं कदाति उत्तरकुरुद्दहतीरदेसे असोगपादवच्छायाए वेरुलियमणिसिलातले णवणीतसरिसफासे सुनिसन्नाइं अच्छामो, देवो य तंमि दहरे मज्जिउं उप्पतितो गगणदेसं, ततो तेण नियगप्पभावेण दसदिसाओ पभासिताओ, ततो सो मिहुणपुरिसो तमुप्पिंजलकं पस्समाणो किंपि तेण चिंतेऊण मोहं उवगतो, कहमवि लद्धसन्नो भणति- हा सयंप्पभे! कत्थसि ?, देहि मे पडिवयणं-ति, तं च तस्स वयणं सोऊणं इत्थियावि कत्थ मन्ने मया सयंप्पभाभिहाणं अणुभूतपुव्वंति चिंतेमाणी य तहेव मोहमुवगता, पच्चा-गतसण्णा भणति-अज्जउहं सयंप्पभा, जीसे मे गहितं णामंति, ततो सो पुरिसो परं तुट्ठिमुव्वहंतो भणति- अज्जे ! कहेहि मे कहं तुमं सयंप्पभा ?, ततो सा भणति-कहेह मे जं मया सुयाणुभूतं, अत्थि ईसाणो नाम कप्पो, तस्स मज्झदेसाओ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिप्पभं णाम विमाणं, तत्थ य ललितंगयो पभू, तस्स सयंपभा अग्गमहिसी, सा य बहुमया आसि, तस्स य देवस्स तीए सह चेव दिव्वविसयसुहसागररतस्स बहू कालो दिवसो इव गतो, कयाइं च चिंतारो अप्पतेओ मल्लदामो अहोदिट्ठी ज्झाय-माणो विन्नवितो मया सपरिसाए- देव ! कीस विमणा दीसह ?, को मे माणसो संतावो ?, ततो भणति-मया पुव्वभवे थोवो कतो तवो, ततो मे तुब्भेहिं विप्पजुज्जिहामित्ति परो संतावो, ततो अम्हेहिं पुणरवि पुच्छिओ- कहेह तुब्भेहिं कहं तवो कतो ? किह वा इमो देवभवो लद्धोत्ति ?, ततो भणइ-जंबुदीवगअवरविदेहे गंधिलावतिविजए गंधमायणवक्खारगिरिवरासन्ना वेयड्ढपव्व-ते गंधारा णाम जणवतो, तत्थ समिद्धजणसेवितं गंधसमिद्धं णगरं, राया राजीवविबुद्धणयणो जणवयहितो सतबलस्स रन्नो नत्तुतो अतिबलसुतो महाबलो नामं, सो अहं पितुपितामहपरंपरागयं रज्जासिरिमणुभवामि, मम य बालसहा खत्तियकुमारो सयंबुद्धो,

जिणवयणभावितमयी संभिन्नसोतो पुण मे मंती बहूसु कज्जेसु पडिपुच्छणिज्जो, समतित्थिए काले बहुंमि कदायि गीयपडिरत्तो णच्चमाणिं णट्ठियं पासामि, सयंबुद्धेण विन्नवियं-देव! गीयं विलवितं वियाणउ पुरिसस्स णट्टं विडंबणा आभरणाणि भारो कामो दुहावहो, परलोगहिते चित्तं निवेसियव्वं, अहितो विसयपडिबंधो असासते जीवितेत्ति, ततो मया रातिणा भणितो-कहं गीतं सवणामतं विलावो ? कहं वा णट्टं णयणब्भुदयं विडंबणा? कहं वा देहविभूसणाणि भूसणाणि भारं भाससि? लोगसारभूते य कामे रतिकरे दुक्खावहेत्ति ?, ततो असंभंतेण सयंबुद्धेण भणितं- सुणह सामी ! पसन्नचित्ता जहा गीतं विलावो, जहा- काइ इत्थिया पवसितपतिका पतिणो सुमरमाणी तस्स समागमकंखिता समतीय भत्तुणोऽतिगुणे विकप्पेमाणी य दोसु पच्चूसेसु दुहिता विलवति, भिच्चो वा पभुस्स पसायणनिमित्तं जाणि वयणाणि भासिति पणतो दासभावे अप्पाणं ठवेऊण सो विलावो, तहेव इत्थी पुरिसो वा अन्नोऽन्नसमागमाभिलासी कुवितपसायणणिमित्तं वा जाओ काई मणवाइयाओ किरियाओ पउंजंति, ततो कुसलजणचिंतिताओ विविहजोणिनिबद्धाओ गीतंति वुच्चति, तं पुण चिंतेह सामी ! किं विलावपक्खे वट्टतित्ति ?। इयाणिं णट्टं सुणह जह विलंबणा, इत्थी पुरिसो वा जो जक्खाइट्ठो परवत्तव्वो मज्जापीतो वा जातो कायविक्खेवाईओ किरियातो दंसेति, जाणि वा वयणाणि भासति सा विलंबणा, जति एवं०, जोऽवि इत्थी पुरिसो वा पभुणो परितोसणिमित्तणितोयितो धणवइणो वा विउसजणणिवद्धविहिमणुसरंतो जे पाणिपादीसरणयणाधरादी संचालेति सा विडंबणा। परमत्थओ आहरणाणिवि भारोत्ति गहेयव्वाणि, जो सामिणो णियोगेण मउडादीणि आभरणाणि पलगिताणि वहेज्ज सो अवस्सं पीलिज्जति भारेण, जो पुण परविम्हयनिमित्तं ताणि चेव जोग्गेसु सरीरत्थाणेसु संनिवेसिताणि वहति सो रागेण ण गणेति भारं, अत्थि पुण सो, जोऽवि परितोसनिमित्तं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१६७॥

रंगगतो नेवत्थितो सुमहंतंपि भरं वहेज्ज, ण मे परिस्समोत्ति भावेमाणो कज्जगरुयभारे ण मण्णिज्ज वा भारं तस्सवि भारो। परमत्थतो कामा दुविहा- सद्दा रूवा य, तत्थ सद्दमुच्छितो मिगो सद्दं सुहंति मन्नमाणो मूढताए अपरिगणितविणिवातो वहबंध-मरणाणि य पावति, तहेव इत्थी पुरिसो वा सोइंदियवसगतो सद्दाणुवाती सद्दे साहारण ममत्तबुद्धी तस्स हेतुसारक्खणपरो परोप्परस्स कलुसहिययो पदुस्सति, ततो रागदोसपहपडितो रयमादियति, तंनिमित्तं च संसारे दुक्खभायणं भवति। तहा रूवे रत्तो रूवे मुच्छितो साहारणे विसए ममत्तबुद्धी रूवरक्खणपरो परस्स पहसति संकिलट्ठचित्तो य पावं कम्मं समज्जिणति, तप्पभवं च संसरमाणो दुक्खभायणं भवति, एवं भोगेसुवि गंधरसेसु फासेसु य मज्जमाणो परंपि य पहसेंतो मूढताए कम्ममादीयति, ततो जातिजरामरणबहुलं संसारं परीति, तेण दुक्खावहा कामभोगा परिचिंतिअव्वा सेयत्थिणा, एवं भणंतो सयंबुद्धो मया भणितो-मम हिते वट्टमाणस्स अहितोऽसि दुट्ठु य मंतिं वहसि जो मं संसइयपदपरलोयसुहेण विलोभंतो संपतसुहं निंदंतो दुहे पाडेतुमिच्छसि, ततो संभिन्नसोएण भणितो-सामी! सयंबुद्धो जंबुक इव मच्छकंखी मंसपेसिं विहाय जहा निरासो जातो तहा दिट्ठसुहं संदिद्धसुहासया परिच्चयंतो सोतिहिति, सयंबुद्धेण भणितो–तुमं जं तुच्छयसुहमोहितो भणसि को तं सच्चेयणो पमाणं करेज्ज?,जो कुसलजणसंसितं रयणं मुहागयं कायमणीए रत्तो णेच्छति तं केरिसं मन्नसि?, तं संभिन्नसोय! अणिच्चतादि जाणिऊण सरीरविभवादीणं वीरा भोगे पजहिय तवंसि संजमे य णेव्वाणसुरसुहसंपादए जतंति। संभिन्नसोतो भणति-सयंबुद्ध! सक्का मरणं होहिइत्ति सुसाणे थाइउं?, जहा टिट्टिभी गगणपडणसंकिता धरेउकामा उद्धप्पाया सुयति तहा तुमं मरणं किर होहिइत्ति अतिपयत्तकारी संपदसुहपरिच्चायमकालियं पसंससि, पत्ते य मरणसमये परलोगहितमायरिस्सामो, सयंबुद्धेण भणियं-मुद्ध! ण जुज्झे संपलग्गे कुंजरतुरगदमणं कज्जसाहणकं, ण वा णगरे

भगवद्-श्रेयांस-भवाः

॥१६७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

उवरद्धे जवसमत्तिंधणोपादाणं, ण य गेहे पलित्ते कूवक्खणणं कज्जकरं, जति पुण दमणभरणखणणाणि पुव्वकयाणि भवंति तदा परबलमहणचिरसहणजलणनिव्वावणाणि सुहेण भवंति, तहेव जो अणागयमेव परलोगहिते ण उज्जमति सो उक्कमंतेसु पाणेसु छिज्जमाणेसु ममत्तत्थाणेसु विसंवदितदेहबंधो परमदुक्खाभिभूतो किह परलोगहितमणुट्ठेहिति ?, एत्थ सुणाहि वियक्खणकहितं उवदेसं-कोति किर हत्थी जरापरिणतो गिम्हकाले कंचि गिरिणदिं समुत्तरंतो विसमे तीरे पडितो, सो सरीरगरुयत्ताए दुब्बलत्तणेण य असत्तो उट्ठेउं तत्थेव कालगतो, वगसियालेहिं अपाणदेसे परिक्खइतो, तेण मग्गेण वायसा अतिगता, मंसमुयगं च उवजीवंता ठिता, उण्हेण य डज्झमाणकलेवरो सो पएसो संकुचितो, वायसा तुट्ठा, अहो निराबाहं जातं वसियव्वं, पाउसकाले य गिरिनइपूर-वेगेण य विच्छुब्भमाणं महानतिसोते पडितं तं, पत्तं समुद्दं, मच्छमयरेहिं य छिन्नं, ततो ते जलपूरितकलेवरा तेऽवि वायसा णिग्गया, तीरं अपस्समाणा तत्थेव निधणमुवगता, जदि पुण अणागतमेव णिग्गता होंता तो दीहकालं सच्छंदपयारं विविहाणि मंसोदगाणि आहारेंता, एयस्स दिट्ठंतस्स उवसंथारो-जहा वायसा तहा संसारिणो जीवा, जहा हत्थिकलेवरपवेसो तहा मणुस्सबोंदीलाभो, जहा गयब्भंतरं मंसोदकं तहा विसयसंपत्ती, जहा मग्गसन्निरोहो तहा तब्भवपडिबंधो, जहा उदगसोयविच्छोभो तहा मरणकालो, जहा विवसणिग्गमो तहा परभवसंकमो, एवं जाण संभिन्नसोय ! जो तुच्छपणस्सरे थोवकालिए कामभोगे परिचइत्ता तवसंजमुज्जोयं काहिति सो सुगतिगतो ण सोयिहिति, जो पुण विसएसु गिद्धो मरणसमयमुदिक्खाति सो सरीरभेदे अगहितवाहेयो चिरं दुही होहिति, मा जंबुक इव तुच्छपक्कप्पणामेत्तसुहपडिबद्धो विउलदीहकालियं सुहमवमन्नसु, संभिन्नसोओ भणति- कहंति?, सयंबुद्धेण भणितो- सुणाहि, कोति किर वणयरो वणे संचरमाणो वयत्थं हत्थिं पस्समाणो विसमे पदेसे ठिओ एककंडसुप्पहारपाडितं गजं

॥१६८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जाणिऊण धणुं सजीवमवकिरिय परसुं गहाय दंतमोत्तिहेतुं गयं संलियमाणो हत्थीपडणपेल्लितेण महाकाएण सप्पेण खतितो तत्थेव पडितो, जंबुकेण परिभमंतेण दिट्ठो हत्थी, समणुस्से भीरुत्तणेण य अवसरितो, मंसलोलुयताए पुणो पुणो अल्लियति निज्झायति य, निस्संकितो तुट्ठो अवलोकेति चिंतेति य-हत्थी मे जावज्जीवियं भत्तं, मणुस्सो सप्पो य कंचि कालं पहोहिति जीवाबंधं य तके ताव खायामित्ति तूरंतो मंदबुद्धी, धणुकोडी पच्छिन्नपडिबंधा य, तालुदेसे भिन्नो मओ, जदि पुण अप्पसारं तुच्छंति हत्थीमणुस्सोरगकलेवरेसु सज्जंतो तो ताणि अन्नाणि य चिरं खायंतो, एवं जाण जो माणुसयसोक्खपडिबद्धो परलोगसाहणकज्जनिरवेक्खो सो जंबुको इव विणास्सिहिति, जंपि य जंपह संदिद्धं परलोगं तप्पभवं च सोक्खं, तं अत्थि, सामि ! तुब्भे कुमारकाले सह मया णंदणतोवणं देवुज्जाणमुवगता, तत्थ देवा ओवतिता, अम्हे ते दट्ठूण अवसरिता, देवो य दिव्वाय गतीय खणेण पत्तो अम्ह समीवं, भणिता यऽणेण अम्हे सोमरूविणा- अहं सयबलो महबल ! तव पितामहो, रज्जसिरिमवउज्झिऊण चिन्नव्वओ लंतए कप्पे अहिवती जातो, तं तुब्भेऽवि मा पमादी होह, जिणवयणे भावेह अप्पाणं, ततो सुगतिं गमिहिहत्ति, एवं वोत्तूण गतो देवो, जति सामि! तं सुमरह ततो अत्थि परलोगोत्ति सद्दहह, मया भणितो- सयंबुद्ध ! सुमरामि पितामहदरिसणंति, लद्धावकासो भणति- सुणह पुव्ववत्तं-तुब्भं पुव्वको कुरुयंदो नाम राया आसि, तस्स देवी कुरुमती, हरियंदो कुमारो, सो य राया णत्थियवादी, इंदियसमागममेत्तं, पुरिसस्स परिकप्पणा मज्जंगसमवादे मदसंभव इव, ण एत्तो वतिरित्तो, ण परभवसंकमसीलो अत्थि, ण सुकयदुक्कयफलं देवणेरइएसुं कोति अणुभवातीत्ति ववसितो बहूणं सत्ताणं वहाय समुट्ठितो खुर इव एगंतधारो निस्सीलो णिव्वतो, ततो तस्स एतकम्मस्स बहू कालो अतीतो, मरणकाले य अस्सातवेयणीयबहुलताए णरगपडिरूवकपोग्गलपरिणामो संवुत्तो, गीतं सुतिमधुरं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

अक्कोसंति मन्नति, मणोहराणि रूवाणि विकताणि पस्सति, खीरं खंडसक्करोवणीतं पूतियंति मन्नति, चंदणाणुलेवणं मुम्मुरं वेदेति, हंसतूलमउइं सेज्जं कंटकिसाहासंचयं पडिसंचेतेति, तस्स य तहाविहं विवरीतभावं जाणिऊण कुरुमती देवी सह हरियंदेण पच्छन्नं पडियरति, सो य कुरुचंदो राया एवं परमदुक्खितो कालगतो, तस्स य नीहरणं काऊण हरियंदो सजणवयं गंधसमिद्धं णातेण पालेति, तो य से तहाभूतं पितुणो मरणमणुचितयंतस्स एवं मती समुप्पन्ना-अत्थि सुकयदुक्कताण फलंति, ततो यऽणेण एगो खत्तियकुमारो बालवयंसो संदिट्ठो- भद्दमुह ! तुमं पंडियजणोवदिट्ठं धम्मसुइं मे कहयसु, एसा ते सेवत्ति, ततो सो तेण णियोगेण जं जं धम्मसंसितं वयणं सुणइ तं तं राइणो निवेदेति, सोऽवि सद्दहंतो सीलताए तहेव पडिवज्जति, कयाइं च णगरा णाइदूरे तहारूवस्स साधुणो केवलणाणुप्पत्तीमहिमं काउं देवा उवागता, तं च उवलभिऊण सुबुद्धिणा खत्तियकुमारेण रन्नो निवेदितं हरियंदस्स, सोऽवि देवागमणविम्हितो जतिणतुरगारूढो गतो साधुसमीवं, वंदिऊण विणएण णिसन्नो सुणति केवलिविणिग्गयं वयणामयं संसारकहं मोक्खकहं सो, सोऊण अत्थि परभवजम्मोत्ति नीसंकितं जातं, ततो पुच्छति कुरुचंदो राया- मम पिता भगवं ! कं गइं गतोत्ति ?, ततो से भगवता कहितं विवरीतविसयोपलंभणं सत्तमपुढविनेरइयत्तं च, हरियंद ! तव पिता अणिवारितपावासवो बहूणं सत्ताणं पीलाकरो पावकम्मगरुयताए णरगं गओ, तत्थ परमदुव्विसहं निरुवमं निप्पडिकारं निरंतरं सुणमाणस्सवि सचेयणस्स भयजणणं दुक्खमणुभवति, तं च तहाविहं केवलिणा कथितं पितुणो कम्मविवागं सोऊण संसारमरणभीरू हरियंदो राया वंदिऊण परमरिसिं सणगरमतिगतो, पुत्तस्स रायसिरिं समप्पेऊण सुबुद्धिं संदिसति-तुमं मम सुयस्स उवदेसं करेज्जासित्ति, तेण विन्नवितो-सामि ! जदि अहं केवलिणो वयणं सोऊण सह तुब्भेहिं ण करेमि तवं तो मे ण सुतं, जो पुण उवदेसो दायव्वोत्ति संदिसह तं मम

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

पुत्तो सामिणो काहितित्ति, राया पुत्तं संदिसति- तुमे सुबुद्धिसुतसंदेसो कायव्वो धम्माहिगारेत्ति, तुरितं निग्गतो सीहो इव पलित्तगिरिकंदराओ, पव्वइतो केवलिसमीवे सह सुबुद्धिणा, परमसंवेगो सज्झायअपसत्थचिंतणपरो परिक्खवितकिलेसजालो समुप्पण्णणाणातिसतो परिणिव्वुतोत्ति । सुणिमो तस्स य हरियंदस्स रायरिसिणो वंसे संखातीतेसु णरवतीसु धम्मपरायणेसु समतीतेसु तुब्भे संपयं सामिणो, अहं पुण सुबुद्धिवंसे, तं एस अम्ह नियोगो बहुपुरिसपरंपरागओ धम्मदेसणाहिगारे, जं पुणेत्थ मया अकंड विन्नवितो तं कारणं सुणह-अज्ज णंदणवणं अहं गतो आसि, तत्थ य मया दिट्ठा दुवे चारणसमणा--आदिच्चजसो अमियतेयो य, ते मया वंदिऊण पुच्छिया- भगवं ! महाबलस्स रन्नो केवतियं आउं धरतीत्ति ?, तेहिं णिद्दिट्ठं-मासो सेसो, ततो संभंतोमि आगतो, एस परमत्थो, जं जाणह सेयंति तं कीरतु अकालहीणं, ताणि य उवदेसवयणाणि सयंबुद्धकहियाणि सोऊण अहं धम्माहिमुहो आउपरिक्खयसुतीतो आमकमत्तियभायणमिव सलिलपूरिज्जमाणमवस्सं ण हिताय भीतो सहसा उट्ठितो कयंजली सयंबुद्धं सरणमुवगतो, वयंस ! किमिदाणिं मासमेसजीवितो करिस्सं परलोगहितंति ?, तेण चऽम्हि समासासितो-सामि ! दिवसोऽवि बहुओ परिचत्तसव्वसावज्जजोगस्स, किमंग पुणो मासो ?, ततो तस्स वयणेण पुत्तसंकामियपयापालणवावारो ठितो म्हि सिद्धायतणे, कयभत्तपरिच्चातो संथारकसमणो सयंबुद्धोवदिट्ठजिणमहिमासंपायणसुमणसो अणिच्चयं संसारं दुगुंछं पातोवगमणकहं च वेरग्गजणणिं सुणमाणो कालगतो इहायातो । एवं थोवो मे तवो चिन्नोत्ति । एवं च अज्जललितंगएण देवेण कहितं मम सपरिवाराए, ईसाणदेवरायसमीवातो य दढधम्मो नाम देवो आगतो भणति-ललियंगय ! देवराया णंदीसरदीवं जिणमहिमं काउं च अतिन्तित्तिगच्छामि अहं, विदितं ते होउत्ति सो गतो, तओ अहं अज्जदेवसाहिता इंदाणत्तीय अवस्सगमणं होहिति

॥१७१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

इयाणिं चेव वच्चामित्ति गतोमि णंदिस्सरं दीवं खणेण, महिमा कया जिणाययणेसु, तिरियलोगे य तित्थयरवंदणं कुणमाणो सासयचेतियपूयं च, चुतो ललियंगतो , परमसोगग्गिडज्झमाणहियया चिंतासो० गता सपरिवारा सिरिप्पभं विमाणं, परिमुच्चमाणसोभं च ममं दट्ठूण आगतो सयंबुद्धो भणति-सयंपभे! जिणमहिमं कुणसु चयनकाले,ततो ते बोहिलाभो भविस्सतित्ति, तस्स वयणं परिग्गहेऊण णंदीसरदीवे तिरियलोगे कयपूया य अहमवि चुता समाणी जम्बुद्दीवकविदेहे पुक्खलावतिविजये पोंडरिगिणीय णगरीय वइरसेणस्स चक्कवट्टिस्स गुणवतीय देवीय दुहिता सिरिमती णाम जाया, साहं पितुभवणपतुमसररायहंसी धातीजणपरिग्गहिता जमगपव्वयसंसिता इव लता सुहेण वड्ढिया, गहिता य कलाओ अभिरमिताओ, कयाइं च पदोसे सव्वतोभद्दकपासादमभिरूढा पस्सामि णगरबाहिं देवसंपातं, ततो चिंतापराय मे सुमरिया देवजाती, सुमरिऊण य दुक्खेणाहता मुच्छिता,परियारियाहिं जलकणकासित्ता,ततो य पबुद्धागता चिंतेमि-कत्थ मन्ने पिओ मे ललितंगतो देवोत्ति?,तेण य मे विणा किं जणेण आभट्ठेणंति मूगत्तणं पगता, भणंति परियणो-जंभकेहिं से वाया अक्खिता, कतो य तिगिच्छिएहिं पयत्तो बलिहोममंतरक्खाविहाणेहिं, अहंपि मूललक्खं ण मुयामि,लिहिऊण य आणत्तिं देमि परियारिकाणं,पमदवणगं तं च,मम अम्मधाती पंडितिया णाम विरहे भणति-धाती मम हिययगतं अत्थं पसाहेहित्ति, कहेमि से सब्भूयं, ततो मया भणिता-अम्मो ! अत्थि कारणं जेणहं मूकत्तं करेमित्ति,ततो सा तुट्ठा भणति-पुत्ते ! साहसु मे कारणं, सोऊण जह भणसि तह चेट्ठिस्सं, ततो मया भाणिता, सुणाहि-अत्थि धातकीखंडे दीवे पुव्वविदेहे मंगलालए मंगलावतिविजए णंदिग्गामो णाम संनिवेसो, तत्थ अहं इतो तइयभवे दरिद्दकुले सुलक्खणसुमंगलवनिकुज्जितातीणं छण्हं भातिणीणं पच्छतो जाता, ण कतं च मे णामं अम्मापिऊहिं, निन्नामियत्तितम्हामि, सकम्मपडिबद्धा य तेसिं अव-

विवसा अणुभवमाणा बहुकालं गमेंति, तिरियावि सपक्खपरपक्खजणिताणि सीउण्हखुहप्पिवासादियाणि य जाणि अणुभवंति बहुणावि कालेणं ण सक्का वत्तेउं, तव पुण साहारणसुहदुखं, पुव्वसुकयसमज्जियं अन्नेसिं रिद्धिं पस्समाणा दुहितमप्पाणं तक्केसि, जे तुमातो हीणा बंधणाकारेसु किलिस्संति, आहारंपि तुच्छकमाणिट्ठं भुंजमाणा जीवितं पालेंति, तेऽवी ताव पस्ससुत्ति, मया पणताए जह भणह तहत्ति पडिस्सुतं, तत्थ य धम्मं सोऊण केऽवि पव्वइया केऽवि गिहवासजोग्गाणि सीलव्वयाइं पडिवन्ना, मया विन्नविता-जस्स नियमस्स पालणे सत्ता मि तं मे उवदिसहउत्ति, तओ मे तेहिं पंच अणुव्वयाइं उवदिट्ठाणि, वंदिऊण परितुट्ठा जणेण सह णंदिग्गाममागता, पालेमी वताणि संतुट्ठा, कुडुंबसंधिभागेण परिणताय संतीये चउत्थच्छट्ठट्ठमेहिं खमामि, एवं काले गते कम्मिवि कयभत्तपरिच्चाया गतो देवं पस्सामि परमदंसणीयं. सो भणति—निन्नामिके! पस्स मं, चिंतेहि य होमि एयस्स भारियात्ति, ततो मे देवी भविस्ससि, मया य सह दिव्वे भोए भुंजिहिसित्ति वोत्तूण अट्ठसणं गतो, अहमवि परितोसविसप्पितहिदया देवदंसणेण लभेज्ज देवत्तंति चिंतेऊण समाहीय कालगता ईसाणे कप्पे सिरिप्पभे विमाणे ललितंगयस्स देवस्स अग्गमहिसी सयंप्पभा नाम जाता, ओहिणाणोवयोगविन्नातदेवभवकारणा य सह ललियंगएण जुगंधरे गुरुवो वंदितुमवतिन्ना, तं समयं च तहेव अंबरतिलके मणोरमे उज्जाणे समोसरितो सगणो, ततोऽहं परितोसविसप्पितमुही तिगुणपयाहिणपुव्वं णमिऊण णिवेतियणामा णट्टोपहारेण महेऊण गता सविमाणं, दिव्वे कामभोगे देवसाहिता णिरुस्सुगा बहुं कालं अणुभवामि, देवो य सो आउपरिक्खएण अम्मो ! चुतो, ण याणं कत्थ गओत्ति?, अहमवि य तस्स विओगदुक्खिता चुता समाणी इह आयाता, ओवुज्जोयदंसणसमुप्पन्नजातिस्सरणा य तं देवं मणसा परिवहंती मूयत्तणं करेमि, किं मे तेण विणा सलावेणं कतेणंति ?, एस

साणं जीवामि, ऊसवे य कदाति अट्ठकडिंभाणि णाणाविहभक्खहत्थकयाणि सगेहेहिंतो निग्गयाणि, ताणि य दट्ठूण मया माया जाइता-अम्मो ! देहि मे मोदकं अन्नं वा भक्खं जाव डिंभेहि समं रमामित्ति, तीय रुट्ठाय हता णिच्छूढा य गेहातो, कतो ते इहं भक्खं ?, वच्चसु अंबरतिलकपव्वयं, फलाणि खादिसु मरसु वत्ति, तो रोवंती निग्गया निसरणं विमग्गमाणी, दिट्ठो व मया जणो अंबरातिलकप-व्वयाभिमुहो पत्थितो, गता मि तेण सहिता, दिट्ठो मया पुहवितिलको विविहफलनमिरपादवसंकुलो कुलगरभूतो सकुणभिगाणं सिहरकरेहिं गगणतलमिव मिणितुं समुज्जतो अंबरतिलको गिरिवरो, तत्थ य गेण्हति जणो फलाणि, मयावि य रुक्खपडितानि सादूणि फलाणि भक्खिताणि, रमणिज्जताए य गिरिवरस्स संचरमाणी सह जणेण सुणामि सद्दं सुतिमनोहरं, तं च अनुसरंती गता मि तं पदेसं सह जणेण, दिट्ठा य मया जुगंधरा णाम आयरिया विविहनियमधरा चोद्दसपुव्वी चउन्नाणी, तत्थ य समा-गता देवा मणुया य, तेसिं जीवाणं बंधमोक्खविहाणं कहयंता संसए विसोहेंता, ततो अहं तेण जणेण सह पणिवतिऊण णिसन्ना एगदेसे, सुणामि तेसिं वयणं परममधुरं, कहंतरे य मया पुच्छिता भगवं!, अत्थि मन्ने ममातो कोति दुक्खितो जीवो जीवलोगेत्ति?, ततो ते भणंति—निन्नामिए! तुहं सद्दा सुभासुभा सुतिपहमागच्छंति रूवाणिवि सुंदरमंगुलाणि पासंसि गंधे सुभासुभे अग्घायसि रसेवि मणुन्नामणुन्ने आसादिसी फासेवि इट्ठाणिट्ठे पडिसंवेदेसि, अत्थि य ते पडिक्कारो सीउण्हतण्हाछुहाणं निद्दं सुहागतं सेवासि निवायपच्छन्नसरणा, सायावि ते अत्थि, तमसि जोतिपकासेण कज्जं कुणसि, जे य दासभतगा परवत्तव्वा नाणाविहेसु देहपीलाक-रेसु निउत्ता किलिस्संति, निच्चमसुभा सद्दरूवरसगंधफासा णिप्पडिकाराणि य परमदारुणाणि सीउण्हाणि छुहापिवा-साओ य, ण य खणंपि निद्दासुहं दुक्खसयपीलियाणं, निच्चंधकारेसु णरकेसु चिट्ठमाणा णिरयपालकीलमाणकरणसयाणि

परमत्थो, तं च सोऊण अम्मधाती ममं भणति-पुत्ते सुट्ठु ते कहितं, एतं पुण पुव्वभवचरितं पडिलेहिज्जतु, ततो णं अहं हिंडावेहामित्ति, सो य ललियंगतो जति माणुसत्ते आयातो होहिति तो सचरितं दट्ठूण जाइं सुमरिहिति, तेण य सह णिव्वुया विसयसुहमणुभविहिसित्ति, ततो तीय अणुमते सज्जितो पडो विविहवण्णाहिं वट्टिकाहिं दोहिवि जणीहिं, तत्थ य पढमं नंदिग्गामो लिहितो, अंबरतिलगपव्वयसंसितकुसुमितासोगतलसन्निसन्ना गुरवो य, देवमिथुणं च वंदणागतं, ईसाणो कप्पो सिरिप्पभं विमाणं सदेवमिथुणं, महाबलो राया सयंबुद्धसंभिन्नसोयसहितो, निन्नामिका य तवसोसितसरीरा, ललियंगतो सयंपभा य सणामाणि, ततो णिप्फन्नलक्खे धाती पट्टकं गहेऊण धावइसंडं दीवं वच्चामित्ति उप्पतिता जावइकेसपासकुवलयपलाससामं णभतलं, खणेण य णिवत्ता, पुच्छिता मया-अम्मो ! कीस लहुं नियत्तासित्ति !, सा भणति-पुत्ते !, सुणसु कारणं--इह अम्हं सामिणो तव पितुणो वरसवड्ढभाणणिमित्तं विजयवासिणो राइणो बहुका समागता, तं जति इहेव होहिति ते हिदयसद्धीणो दट्ठो ततो कतमेव कज्जंति चिंतेऊण णियत्ता मि, जति ण होहिवि इहं तो परिमग्गणे करिस्सं जत्तंति, सुट्ठुत्तिय मया भणिता. अवरज्जुगे गता पट्टगं गहाय पच्चावरण्हे आगता पसन्नमुही भणति-पुत्ते! णिव्वुता होहि, दिट्ठो ते मया ललियंगतो, मया पुच्छिया-अम्म! साहसु कहंति ?, सा भणति-पुत्ते ! मया रायमग्गे पसारितो पट्टको, तं च पस्समाणा आलक्खकुसला आगमपमाणं करेंता पसंसंति. जे अकुसला ते वन्नरूवादीणि पसंसंति । दुमरिसणरायसुतो य दुइंतो कुमारो सपरिवारो सो मुहुत्तमेत्तं पस्सिऊण मुच्छितो पडितो, खणेण आसत्थो पुच्छितो मणुस्सेहिं- सामि ! कथं मुच्छिता ?, सो भणति-चरित्तं णियकं पट्टगलिखितं दट्ठूण मे सुमरिता जाती, अहं ललियंगओ देवो आसि, सयंपभा मे देवित्ति, मया य पुच्छितो-पुत्त ! साहसु को एस संनिवेसो ?, भणति-पुंडरि-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

गिणी णगरित्ति, पव्वतं मेरुं साहइ, अणगारो कोऽवि एस वीसरियं ता मे णामं, कप्पं सोहम्मं कहेति, राया मंतिसहितो कोऽवि एसोत्ति, काऽवि एसा तवस्सिणी ण याणं से णामंति, ततो उच्चावच्चेत्ति जाणिऊण मया भणितो-पुत्त! संवतति सव्वं ते जम्मंतरे, वीसरितं तेण किं ?, सच्चं तुमं स ललितंगओ, सा पुण ते सयंपभा णंदिग्गामे पंगुलिया कम्मदोसेण जाता, आगमे सुकुसलाए तं वण्णाए चरितं लिहितं तव मग्गणहेउं, मम य धायइसंडं गयाय दिन्नो पट्टको, मया य अणुकंपाय तीसे तव परिमग्गणं कयं, एहि पुत्त जा ते णेमि धायइसंडंति, अवहसितो मित्तेहिं-गम्मतु पोसिज्जतु पंगुलिन्ति, ततो अवक्कंतो, मुहुत्तमेत्ते य आगतो लोहग्गलओ घणो णाम कुमारो, सो वच्चंतो लंघणाचरणेसु असमाणोत्ति वइरजंघो भण्णते, सो उवगतो पट्टगं दट्ठूण ममं भणति-केणेतं विलिहितं चित्तंति, ? मया भणितो-किं निमित्तं पुच्छसि ?, सो भणति-मम एयं चरितं, अहं ललितंगओ णाम आसि, सयंपभा मे देवी, असंसयं तीय लिहितं, तीय वा उवदंसवसेणंति तक्केमि, ततो मया पुच्छितो-जदि ते चरितं साहसु को एस संनिवेसोत्ति ?, णंदिग्गामो, एस पव्वतो अंबरतिलओ जुगंधरा आयरिया, एसा खमणकिलिन्ना णिण्णामिया, महब्बलो राया सयंबुद्धसंभिन्नसोएहिं सह लिहितो, एस ईसाणो कप्पो. सिरिप्पभं विमाणं, एवं सव्वं सपच्चयं कहितं तेण, ततो मया तुट्ठाए भणितो-जा एसा सिरिमती कुमारी पितुच्छाए ते दुहिता सा सयंप्पभा जाव रन्नो निवेदेमि ताव ते लब्भतित्ति, सुमणसो गतो, ततो मि कयकज्जा आगता, पुरतो रन्नो निवेदेमि, ततो पियसमागमो भविस्सतित्ति एवं वोत्तूण गता ।

ततो अहं सद्दाविता रन्ना, देविसमीवे य पकहितो, सुणह- जो वसुमतीय ललियंगतो देवो आसि, जह णं अट्ठं जाणं ण तहा सिरिमती, अवरविदेहे सलिलावतिविजए वीतिसोगा य णगरी, जियसत्तु नाम राया, तस्स मणोहरी केकयी य दुवे देवीओ, तासिं

॥१७६॥

अयलो विभीसणो य पुत्ता, उवरे पितुंमि विजयद्धं भुंजंति बलदेववासुदेवा, मणोहरी य बलदेवमाया, कंमिवि काले गते पुत्तं आपुच्छति-अयल ! अणुभूता मे भत्तुणो सिरी पुत्तसिरी य, पव्वयामि परलोगहियं करिस्सं, विसज्जेहि मंति, सो णेहेण ण विसज्जेति, निब्बंधे कए भणति-अम्मो ! जति णिच्छओ ते कतो तो मं देवलोगयाओ वसणे पडिबोहेज्जासित्ति, तीय पडिवन्नं, पव्वतिता य, परमद्धितिबलेण एक्कारसंगवी वासकोडीतवमणुचरिऊण अपडिवतितवेरग्गा समाहीय कालगता लंतए कप्पे इंदो आयातो, तं ताव जाणह ममं, बलकेसवा य बहुं कालं समुदिता भोगे भुंजंति, कताइं च णिग्गया आणुयत्तं आसेहिं वातजोगेण अवहिता अडविं पवेसिता, गोरहसंचरेण य ण विन्नातो मग्गो जणेण, दूरं गंतूण आसा विवन्ना, विभीसणो यं कालगतो, अयलो णेहेण ण याणति, मुच्छितोत्ति, णेणं मि सीतलाणि वणगहणाणि सत्थो भविस्सीतित्ति, अहं च लंतगकप्पगतो पुत्तसिणेहेण संगारं च सुमरिऊण खणेणागतो, विभीसणरूवं विकुरुव्विऊण रहगतो भणिओ बलो- तात ! अहं विज्जाहरेहिं समं जुज्झउं गतो, ते मे पसाहिता, तुब्भे पुण अंतरं जाणिऊण केणवि मम रूवेण मोहिता, वच्चिमो णगरं, एयं पुण अहंति तुब्भेहिं वूढं कलेवरं, सक्कारेसु णं तु डहिऊण रहेण सणगरमागता, पूतिज्ज णे णयरे, घरे य एक्कासणणिसन्ना ठिता, ततो मया मणोहरिरूवं दंसितं, संभंतो अयलो- अम्मो! तुब्भेत्थ कतोत्ति?, पव्वज्जाकालो संगारो य कहितो, विभीसणमरणं, अहं लंतगाओ इहागतो तव पडिबोहणाणिमित्तं, परलोगहितं चिंतेहि अणिच्चयं मणुयरिद्धिं च जाणिऊणंति गतोमि सगकप्पं। अयलोऽवि पुत्तसंकामितसिरी णिव्विन्नकामभोगो पव्वतितो, तवमणुचरिऊण ललियंगतो देवो जातो, अहं पुण सदेवीयं लंतगं कप्पं नेमि अभिक्खणं, जाहे सुमरामि, सो सत्तणवभागे सागरोवमस्स भोत्तूण देवसुहं चुतो, तत्थऽन्नो उववन्नो, तंपि ललियंगयं एस मे पुत्तो चेवत्ति णेमि, एतेण कमेणं गता य सत्तरस, सिरिमती य

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जं जाणति एसावि मे णीतपुव्वा सिणेहेण लंतयं कप्पं बहुसो, जाणामि णं सद्दावेह य वइरजंघंति, आणत्तो कंचुती आगतो य दिट्ठो मया परितोसविकसियच्छीए अच्छेरयभूतो सकलरयणिकरसोम्मवयणचंदो तरुणरविरस्सिबोहितपुंडरियलोयणो मणिमंडियकुंडलघट्टितपीणगंडदेसो गरुलातयतुंगणासो सिलपवालकोमलसुरत्तदसणवसणो कुंदमउलमालासिरिकरसिणिद्धदसणपंती वयत्थवसभअवगणितखंधो वयणतिभागसितरयणावलिपरिणद्धगीवो पुरफलिहायामदीहबाहू णगरकवाडोवमाणमंसलविसालवच्छो करयलसंगेज्झमज्झदेसो विमउलपंकयसरिच्छणाभी मिगपत्थिवतुरगवट्टितकडी करिकरकरणिज्जउरुजुयलो णिगूढजाणुपदेससंगतहारिणसमाणरमणिज्जजंघो सुपतिट्ठियकणगकुम्मसरिससकललक्खणसंबद्धचलणजुयलो पणतो य राइणो, भणितो य-पुत्त ! वइरजंघ ! पडिच्छसु पुव्वभवसयंपभं सिरिमतिंति, अवलोकिता यऽणेण अहं कलहंसेणेव कमलिणी, विहिणा य पाणिं गाहितो मम तातेणेव वइरजंघत्ति मधुरमाभासमाणेण दिन्नं च उवलंबणं परियारिओ य, विसज्जिताणि य अम्हे गयाणि लोहग्गलं, भुंजामु णिरुव्विग्गं भोगे, वइरसेणोऽवि राया लोगंतियदेवपडिबोहितो संवच्छरं किमिच्छियं दाणं दाऊण णिग्गयसुतेहिं णरवतीहि य भरितवससमेतेहिं सह पव्वतितो पोक्खलपालस्स रज्जं दाऊणं, उप्पण्णकेवलणाणो य धम्मं देसेति । ममवि कालेण पुत्तो जाओ, सो सुहेण वड्ढितो, कदाइं च पोक्खलपालस्स केति सामंता विसंवतिता, तेण अम्हं पेसितं, एतु वइरजंघो सिरिमती य, अम्हे विउलेण खंधावारेण पत्थिताइं पुत्तं णगरे ठवेऊणं, सरवणस्स य मज्झेण पंथो, पडिसिद्धा य मे जाणकजणेण, दिट्ठीविसो सरवणे सप्पो, ण जाति ततो गंतुंति, परिहरता कमेणं पत्ता पोंडरिगिणीं, सुतं च तेहिं णरवतीहि वइरजंघागमणं, ततो ते संकिता पडिता, अम्हेऽवि पोक्खलपालेण रन्ना पूएऊण विसज्जिता, पत्थिताणि सणगरं, भणति य जणो- सरवणुज्जाणमज्झेण गंतव्वं, सप्पो णिव्विसो जातो,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

केवलणाणं तत्थट्ठियस्स साधुणो उप्पन्नं, देवा य ओवतिता, देवुज्जोएण य पडिहतं दिट्ठिगतं विसं सप्पाणंति, ततो अम्हे कमेण पत्ताइं सरवणं, आवासिताइं, सागरसेणमुणिसेणा य मम भातरो अणगारा सगणा तत्थेव ठिता, ततो अम्हेहिं दिट्ठा तपलच्छिपडिहत्था सरदसरजलपसंतहिदया सारदसगलससिसोमदंसणा, ते य सपरिवारा परेण भत्तिबहुमाणेण वंदिता, सपरिवारा य फासुएण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभिता, ततो अम्हे तेसिं गुणे अणुगुणंताइं- अहो महाणुभावा सागरसेणमुणिसेणा, अम्हेवि मुक्करज्जधुरवावाराइं कथाइं मन्ने णिस्संगाइं विहरिस्सामोत्ति विरागमग्गमोइन्नाइं कमेण पत्ताइं सणगरं, पुत्तेण य णे अम्हं विरहकाले मिच्चयवग्गो दाणमाणेहिं रंजितो वासघरे य विसभूमो पयोजितो, विसज्जितपरियणाणि य विगाले पतोसे अतिगयाणि वासगिहं साधुगुणरयाणि, धूमदूसितधातूणि कालगयाणि इहायाताणि उत्तरकुराएत्ति जाणामि, तं अज्ज ! जा णिण्णामिया जा य सयंपभा जा य सिरिमती सा अहंति जाणह, जो महब्बलो राया जो य ललियंगतो जो य वइरजंघो ते तुब्भे, एवं जीसे णामं गहितं मे सा अहं सयंपभा । ततो सामिणा भणितं- अज्जे ! जातिं सुमरिऊण देवुज्जोयदंसणेणं चिंतेमि देवभवे वट्टहित्ति, ततो मे सयंपभा आभट्ठा, तं सच्चमेयं कहितति, परितुट्ठमाणसाणि पुव्वभवसुमरणसंधुक्खितसिणेहाणि सुहागतावियसुहाणि तिन्नि पलितोवमाणि जीविऊण कालगताणि सोहम्मे कप्पे देवा जाता । तत्थवि णे परा पिती आसित्ति ।

पलिओवमट्ठितिं पालेऊण चुता वच्छतावतिविजए पभंकराइ णगरीय, तत्थ सामी पितामहो सुविहिवेज्जस्स पुत्तो केसवो णाम जातो, अहं पुण सेट्ठिसुतो अभयघोसो, तत्थवि णे सिणोहादी कता, तत्थेव नयरे रायपुत्तो पुरोहितो मंतिसुओ सत्थवाहसुओ य, तेहिवि सह मेत्ती जाया, कथाइं च साधू महप्पा किमिकुट्ठेण गहितो जहा पुव्वं जाव तेणेव पडिगता, सुतधम्मा य सव्वेऽपि पडि-

॥१७९॥

वन्ना सावगधम्मं, केसवो साधुवेयाच्चपरो विसेसेण, ततो सीलव्वततवोविहाणेहिं अप्पाणं भावेऊण समाहीय कालगता अच्चुए कप्पे इंदसामाणा देवा जाता, ततो ठितीक्खए चुता कमेण केसवो वइरसेणसस्स रन्नो मंगलावतीए देवीय धारिणिवीयणामाए पुत्तो जातो, वइरणाभो णाम, रायसुतादी य कणगणाभरुप्पणाभपीढमहापीढा कमेण जाता, कणगणाभरुप्पणाभाण बाहुसुबाहु बितियणाम, अहं तत्थेव णगरे रायसुतो जातो, बालो चेव वइरणाभं समछीणो, सारही जातो सुजसो णाम, सेसं जहापुव्वं जाव उववाओ सव्वट्ठे, सव्वेसिं पढमो वइरनाभो चुओत्ति, णवरं अहमवि पुव्वासिणेहाणुरागेण वइरणाभमणु पव्वइतो, भगवता य वइरणाभो भरहे पढमतित्थगरो उसभो णाम भविस्सतित्ति णिद्दिट्ठो, कणगणाभो चक्कवट्टी भरहो इति, रुप्पणाभादीण य मणुसस्सभवलाभि(णाभि)णो अंतकरात्ति, ततो अम्हे छप्पि जणा बहुकीतो वासकोडीओ तवमणुचरिऊण समाहीय कालगता, कमेण सव्वट्ठे देवा जाता, ततो चुया इहायाता ॥मया वइरसेणतित्थगरो एरिसीए आगीइए तत्थ दिट्ठोत्ति पितामहलिंगदरिसणेण पोराणाओ जातिओ सरिताओ, विन्नातं च अन्नपाणादि दायव्वं तवस्सीणंति। एवं च कहं सोऊण सेयंसो पहट्ठमाणसेहिं पूजितो णरवइमादीहिं, ताहे लोगो जाणिउमारद्धो। इतो य सेज्जंसो एत्थ मम गुरू सामी ठितो, तो मा अहं एतं पादेहिं अक्कमामि, तत्थ तेण रयणपेढिता कया, जाहे से देसकालो तहिं अच्चणियं काऊण जेमेति, तं दट्ठूण लोगोऽवि करेति सएहिं घरदारेहिं, ज तं सेज्जंसेणं कयं तं कालंतरेणं संवउरपेढं जायं ॥

ततो भगवं विहरमाणो बहलीविसयं गतो, तत्थ बाहुबलियस्स रायहाणी तक्खसिला णामं, त भगवं वेतालेय पत्तो, बाहुबलिसस्स वियाले णिवेदितं जहा सामी आगता, कल्लं सव्विड्ढीए वंदिस्सामित्ति ण णिग्गतो, पभाते सामी विहरंतो गतो, बाहु

॥१८०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

बलीवि सव्विड्ढीए णिग्गतो जहा दसण्णविभासा जाव सामीं ण पेच्छति, पच्छा अद्धितिं काऊण जत्थ भगवं वुत्थो तत्थ धम्मचक्कं चिन्धकारेति, तं सव्वरयणामयं जोयणपरिमंडलं, जोयणं च ऊसितो दंडो. एवं केइ इच्छंति, अन्ने भणंति-केवलणाणे उप्पन्ने ताहिं गतो, ताहे सलोगेणं धम्मचक्कविभूती अक्खाता, तेण कतंति ।

एवं विहरंतो सामी आगतो विणीयं, तत्थ पुरिगतालं णगरं उज्जाणं सगडमुहं, तत्थ ट्ठितो, सुरुग्गमणवेलाए णग्गोहहेट्ठा णिविट्ठस्स जाव केवलणाणं उप्पन्नं । देवा आगता महिमं करेंति, सव्वतित्थगराण य केवलणाणे उप्पण्णे सक्को अवट्ठितं केसमंसुरोमणहं करेइ, उसभसामिस्स पुण जडाओ सोभयंतित्ति ण छिन्नाओ, कणकगिरी अंजनरेखावत्, भरहस्स य चारपुरिसा णिच्चमेव-दिवसदेवासियं वद्धमाणिं णिवेदेंति, तेहिं तस्स णिवदितं, जहा--तित्थगरस्स णाणं उप्पन्नंति, आयुहघरिएणऽवि णिवेदितं, जहा--चक्करयणं उप्पन्नं, ताहे सो चिंतेउमारद्धो, दोण्हंपि महिमा कायव्वा, कतरं पुव्वं करेमित्ति, ताहे भणति--तातंमि पूतिए चक्के पूयितमेव भवति, चक्कस्सवि सामी पूयणिज्जो, ताहे सव्विड्ढीए पत्थितो, भगवतो य माता भणति भरहस्स रज्जविभूतिं दट्ठूणं--मम पुत्तो एवं चेव णग्गओ हिंडति, ताहे भरहो भगवतो विभूतिं वण्णेति, सा ण पत्तियति, ताहे गच्छंतेण भणिता---एहि जा ते भगवतो विभूतिं दरिसेमि, जदि एरिसिया ममं सहस्सभागेणवि अत्थित्ति, ताहे हत्थिखंधेण णीति, भगवतो य छत्तादिच्छत्तं पेच्छंतीए चेव केवलनाणं उप्पन्नं, तं समयं च णं आयुं खुड्डं सिद्धा, देवेहि य से पूया कता, पढमसिद्धोत्ति काऊणं खीरोदे छूढा ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

तत्थ समोसरणे भगवं सक्कादीणं धम्मं परिकहेति, तत्थ उसभसेणो णाम भरहस्स रन्नो पुत्तो सो धम्मं सोऊण पव्वइतो, तेण तिहिं पुच्छाहिं चोद्दसपुव्वाइं गहिताइं, उप्पन्ने विगते धुते, तत्थ बंभीवि पव्वइया, भरहो सावओ, सुंदरीए ण दिन्नं पव्वइउं, मम इत्थिरयणं एसत्ति, सा साविगा, एस चउव्विहो समणसंघो । ते य तावसा भगवतो णाणं उप्पन्नंति कच्छसुकच्छवज्जा सव्वे भगवतो सगासे पव्वइता, एत्थ समोसरणे मिरीतिमादिया बहवे कुमारा पव्वइता, किं कारणं मिरीयत्ति भन्नति ?, सो जातमेत्तओ मिरीइओ मुयतीति तेण मिरीयी ।

पंच य पुत्त सयाइं० ॥३-॥ १२६ ॥ सो य गामचिंतओ देवलोगाओ चइत्ता भरहस्स रन्नो धम्माए देवीए उववन्नो, भरहो तु सामिस्स अट्ठाहियमहिमं काऊणं अतिगतो, इयाणिं चक्करस पूजं काउकामो जाव सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता आणवेति-खिप्पामेव भो ! विणीतं रायहाणिं सब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जितोवलित्तं जाव गंधवट्टिभूतं करेहित्तिकट्टु जेणामेव मज्जणघरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता मुत्ताजालाउलाभिरामे जाव सस्सिव्व पियदंसणे णरवती धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगते पडिणिक्खमति २ जेणामेव आयुधघरसाला जेणेव से दिव्वे चक्करयणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं तस्स बहवे रातीसरतलवरमाडंबिय जाव सत्थवाहप्पभितओ अप्पेगतिया उप्पलहत्थगता जाव सयसहस्सपत्तहत्थगता भरहरायं पिट्ठतो पिट्ठतो अणुगच्छंति । तए णं तस्स बहुओ खुज्जाओ चिलातीओ वडभीतो जाव णिउणकुसलाओ विणीताओ अप्पेगतिताओ कलसहत्थगताओ अप्पे०भिंगार जाव धूवकडुच्छुयहत्थगयाओ भरहं रायं पिट्ठतो पिट्ठतो अणुगच्छंति, तते णं से भरहे राया सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं जेणेव आउहघरसाला जेणेव

भगवंत ऋषभस्य केवलज्ञान एवं समवसरणं वर्णनं

चक्रवर्ती भरतस्य दिग्विजय-यात्राया: वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

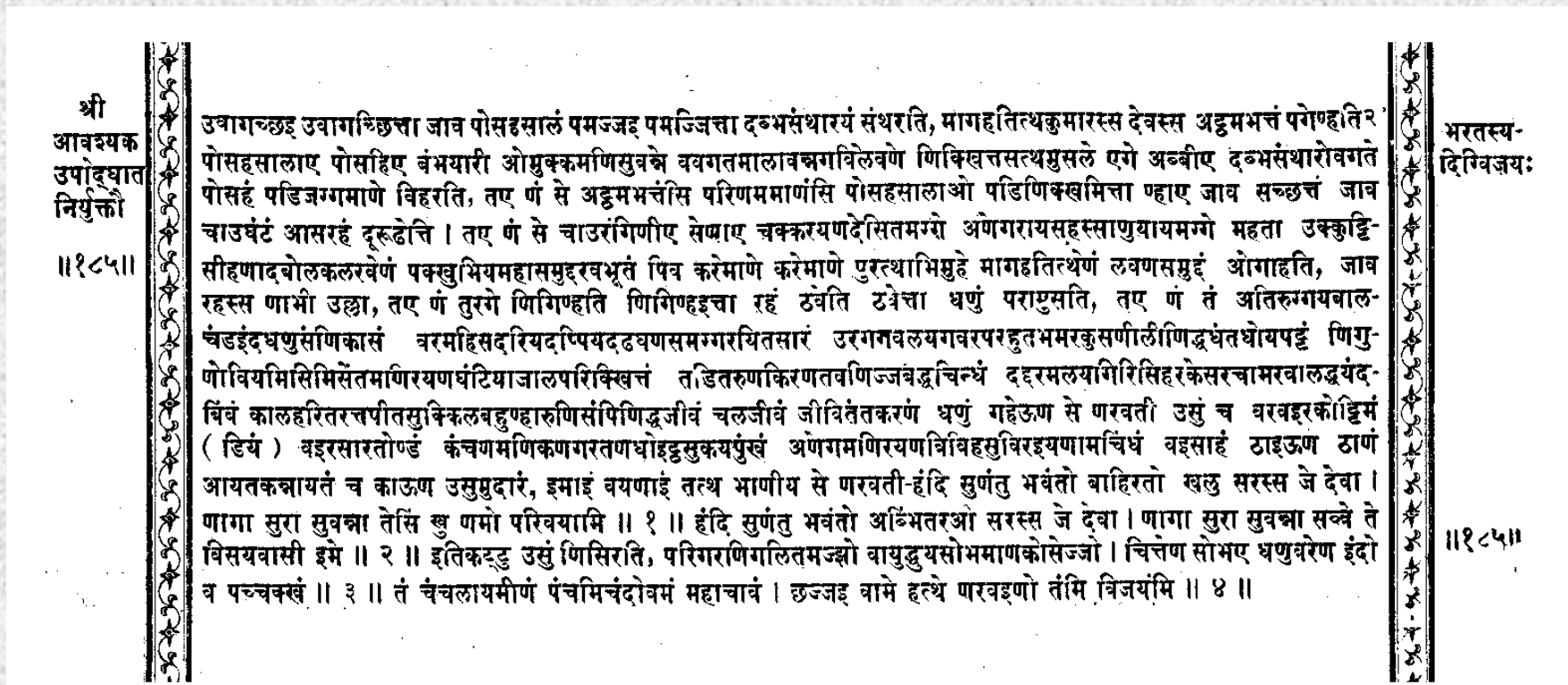
दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

से दिव्वचक्करयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चक्करयणस्स आलोए पणामं करेति करेत्ता लोमहत्थगं परामुसति २ चक्कं चक्कं लोमहत्थएणं पमज्जति पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलेणं चच्चिक्कं दलयति दलयित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य चुण्णेहि य वासेहि य अच्चेति अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मालारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं वण्णारुहणं आभरणारुहणं करेति करेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं सेतेहिं रयतामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं चक्करयणस्स पुरतो अट्ठट्ठमंगलए आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गाहग्गहितकरतलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता चेंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं जाव धूवं दलयति २ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति करेत्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कति २ वामं जाणुं अंचेति अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवाडेति णिवाडेत्ता ईसिं पच्चुन्नमति २ करतलपरिग्गहितं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेति करेत्ता आयुधघरसालाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जेणामेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे णिसीदइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणिपसेणीओ सद्दावेति सद्दावेत्ता खिप्पामेव भो ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अदंडकुदंडिमं गणियावरणाडइज्जकलितं अणेगतालायराणुचरितं अणुद्धुयमुतिंगं अमिलायमल्लदामं पमुदितपक्कीलितसपुरजणुज्जाणवंतं विजयवेजयंचक्करयणस्स अट्ठाहितं महामहिमं करेत्ता ममं एमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह, तेऽवि तहेव करिंति जाव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से चक्करयणे अट्ठाहियाए णिव्वत्ताए समाणीए आयुधघरसालाओ पडिणिक्खमति २ अंतलिक्खपडिवन्नजक्खस-

हस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसन्निनाएण पूरेंते चेव अंबरतलं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थाभिमुहे पयाए यावि-होत्था, तए णं से भरहे राया हट्ठतुट्ठजाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासि--खिप्पामेव भो ! हयगयरहपवरजोहकलितं चाउ-रंगिणिं सेणं सन्नाहेह, आभिसेगं च हत्थिरयणं पडिकप्पेहत्तिकट्टु मज्जणघरं अणुपविसति, तहेव जाव ससिव्व पियदंसणे णरवती मज्जणघराओ पडिणिक्खमति २ हयगयरहपवरवाहणभडचडकरपहकरसंकुलाए सेणाए पहितकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अंजणगिरिकूडसंनिभं गयवतिं णरवती दूरुढे, तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थसुकतरचितवच्छे कुंडलउज्जोइयाणणे मउउदित्तसिरये णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसभे मरुयरायवंसप्पसूते कप्पे अब्भधियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे पसत्थमंगलसतेहिं संथुव्वमाणे जयसद्दकतालोए हत्थिखंधवरगते सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयचामरादिं उद्धुव्वमाणीहिं २ जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवती अमरवतीसंनिभाए इड्ढीए पहितकित्ती गंगाए महाणदीए दक्खिणिल्लेणं कूलेणं गामागरनगरखेडखव्वडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडितं थिमितमेदिणीयं वसुहं अभिजिणमाणे २ अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे २ तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे २ जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे २ जेणेव मागहतित्थे तेणेव उवागच्छति । तं च किल चक्करयणं जोयणं गंतूण ठाति, तत्थ किल जोयणाण संखा जाता, तए णं से मागहतित्थस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिन्नं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं करेति करेत्ता वड्ढतिरयणं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया मम आवासं पोसहसालं च करेहि, एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणाहि, तए णं ते जाव पच्चप्पिणंति । तएणं से राया आभिसेगाओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहति २ जेणेव पोसहसाला तेणेव



श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१८५॥

उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव पोसहसालं पमज्जइ पमज्जित्ता दब्भसंथारयं संथरति, मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हति२ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी ओमुक्कमणिसुवन्ने ववगतमालावन्नगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले एगे अब्बीए दब्भसंथारोवगते पोसहं पडिजग्गमाणे विहरति, तए णं से अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमित्ता ण्हाए जाव सच्छत्तं जाव चाउघंटं आसरहं दूरूढेत्ति । तए णं से चाउरंगिणीए सेण्णाए चक्करयणदेसितमग्गे अणेगरायसहस्साणुयायमग्गे महता उक्कुट्ठि-सीहणादबोलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूतं पिव करेमाणे करेमाणे पुरत्थाभिमुहे मागहतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहति, जाव रहस्स णाभी उल्ला, तए णं तुरगे णिगिण्हति णिगिण्हइत्ता रहं ठवेति ठवेत्ता धणुं पराणुसति, तए णं तं अतिरुग्गयबाल-चंडइंदधणुसंणिकासं वरमहिसदरियदप्पियदढघणसमग्गरयितसारं उरगगवलयगवरपरहुतभमरकुसणीलणिद्धधंतधोयपट्ठं णिगु-णोवियमिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं तडितरुणकिरणतवणिज्जबद्धचिन्धं दद्दरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालद्धयंद-बिंबं कालहरितरत्तपीतसुक्किलबहुण्हारुणिसंपिणिद्धजीवं चलजीवं जीवितंतकरणं धणुं गहेऊण से णरवती उसुं च वरवइरकोट्टिमं (डियं) वइरसारतोण्डं कंचणमणिकणगरतणधोइट्ठसुकयपुंखं अणेगमणिरयणविविहसुविरइयणामचिंधं वइसाहं ठाइऊण ठाणं आयतकन्नायतं च काऊण उसुमुदारं, इमाइं वयणाइं तत्थ भाणीय से णरवती-हंदि सुणंतु भवंतो बाहिरतो खलु सरस्स जे देवा । णागा सुरा सुवन्ना तेसिं खु णमो परिवयामि ॥ १ ॥ हंदि सुणंतु भवंतो अब्भिंतरओ सरस्स जे देवा । णागा सुरा सुवन्ना सव्वे ते विसयवासी इमे ॥ २ ॥ इतिकट्टु उसुं णिसिरति, परिगरणिगलितमज्झो वायुद्धुयसोभमाणकोसेज्जो । चित्तेण सोभए धणुवरेण इंदो व पच्चक्खं ॥ ३ ॥ तं चंचलायमीणं पंचमिचंदोवमं महाचावं । छज्जइ वामे हत्थे णरवइणो तंमि विजयंमि ॥ ४ ॥

भरतस्य-दिग्विजयः

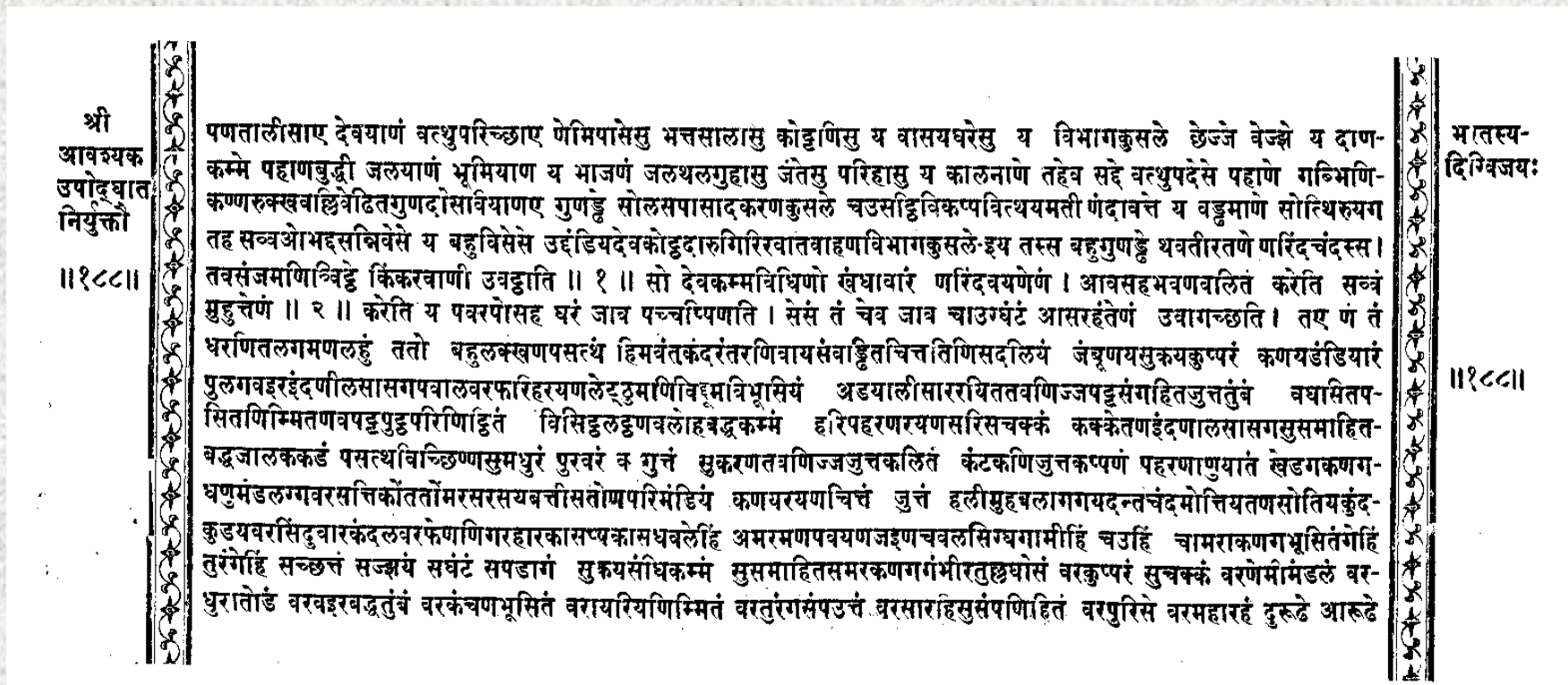
॥१८५॥

तएणं से सरे दुवालस जोयणाइं गंता मागहतित्थकुमारस्स भवणंसि णिवदिते महता सद्देणं, से तं दट्ठूण आसुरुत्ते जाव तिवलितं भिउडिं णिलाडे साहट्टु एवं वयासी- केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए० हिरिसिरिपरिवज्जिते हीणपुण्णचउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे जे णं ममं इमाए एतारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए दिव्वाए देवजुत्तीए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते भवणंसि सरं णिसिरतित्तिकट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ता तं सरं गेण्हति, गेण्हेत्ता णामगं अणुप्पवाएत्ति । तत्थ इमे एयारूवे अब्भत्थिए० संकप्पे समुप्पजित्था- उप्पन्ने खलु भो जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे भरहे नामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीतमेतं तीतपच्चुपण्णमणागताणं मागहतित्थकुमाराणं चक्कवट्टीणं उवत्थाणियं करेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता हारं मउडं कुंडलाइं कडगाणि तुडियाणि य वत्थाणि महरिहाणि आभरणाणि य सरं च णामाहयंकं मागहतित्थोदगं च गेण्हति, गेण्हेत्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति, अंतलिक्खपडिवन्ने सखिखिणियाइं पंचवन्नाइं वत्थाइं पवर परिहिते करतलजाव जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी-अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे, पुरत्थिमेणं मागहतित्थमेराए, तं अहं णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी अहं णं देवाणुप्पियाणं आणत्तीकिंकरे अहं णं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अंतपाले, तं पडिच्छंतु णं देवा०! मम इमं एतारूवं पीतिदाणंतिकट्टु हारं जाव तित्थोदगं च उवणेति, सेऽवियं णं पडिच्छति २ तं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेति । तएणं से भरहे राया रहं परावत्तेति, लवणसमुद्दातो मागहतित्थेणं पच्चुत्तरति २ जेणेव विजयखंधावारणिवेसमागंतूणं रहातो पच्चोरुहित्ता मज्जणघरंसि उवगते मज्जणघरवत्तव्वता णेयव्वा जाव पडिणिक्खमति, भोयणमंडवंसि सुहासणवरगते अट्ठमभत्तं पारेति पारेत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव पुरत्थाभिमुहे णिसीदति णिसीदित्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति सद्दा-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

वेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं जाव मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहितमहामहिमं करेह २ जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से दिव्वे चक्करयणे वइरामयतुंबे लोहियक्खमयारए जंबूणयणेमीए णाणामणिखुरप्पवालिपरिगते मणि-मुत्ताजालभूसिते सणंदिघोसे सखिखिणीए दिव्वतरुणरविमंडलणिभे णाणामणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्ते सव्वोउयसुरभिकुसुम-आसत्तमल्लदामे अंतलिक्खपडिवन्ने जक्खसाहस्सपडिवुडे दिव्वतुडियसद्दसन्निणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं णामेण य सुदंसणे णरव-इस्स पढमे चक्करयणे तस्स देवस्स ताए महिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आयुधघरसालातो पडिणिक्खमति पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था, भरहेवि य णं तहेव जाव हत्थिखंधवरगते सेतवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं मागइयवरफलगपवरपरिगरखेडयवरवम्मकवयमाढीसहस्सकलिते उक्कडवरमउडतिरीडपडागज्झयवेजयंतिचामरचलं-तच्छत्तंधकारकलिते असिखेवणिखग्गचावणारायकणगकप्पणिसूललउडाभिंडिमालधणुतोणसरपहरणेहिं य कालणीलरुहिरपीत-सुक्किल्लअणेगचिंधसयसण्णिविट्ठं अप्फोडितसीहणायच्छेलितहयहेसितहत्थिगुलुगुलाइतअणेगरहसयसहस्सघणघणंतणिहम्ममाणसद्द-सहितेण जमगं समकं भंभाहोरंभकिणितखरमुहिमुगंदसंखीयपरिलिवव्वयपरिव्वायणिवंसवेणुवीणा[illegible]यंचिमहतिकच्छभिरिगिसिगि-कलतालकंसतालकरघाणुत्थिदेण संनिनादेण सकलमवि जीवलोगं पूरयंते बलवाहणसमुदएणं जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवती अमरवतीसंनिभाए इड्ढीए पहितकित्ती गामागर तहेव जाव वरदामतित्थंतेणं उवागच्छति जाव खंधावारनिवेसं करेति, करेत्ता वड्ढतिरयणं सद्दावेति २ एवं वयासी--खिप्पामेव भो ! ममं आवसहं पोसहसालं च करेहि २ जाव पच्चप्पिणाहि, तए णं स आसमदोणमुहगामपट्टणपुरवरखंधावारगिहावणविभागकुसले एगासीतिपदेसु सव्वेसु चेव वत्थूसु णेगगुणजाणगे पंडिए विहिन्नू



श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१८८॥

पणतालीसाए देवयाणं वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु भत्तसालासु कोट्ठणिसु य वासयघरेसु य विभागकुसले छेज्जे वेज्झे य दाण-
कम्मे पहाणबुद्धी जलयाणं भूमियाण य भाजणं जलथलगुहासु जंतेसु परिहासु य कालनाणे तहेव सद्दे वत्थुपदेसे पहाणे गब्भिणि-
कण्णरुक्खवल्लिवेढितगुणदोसावियाणए गुणड्ढे सोलसपासादकरणकुसले चउसट्ठिविकप्पवित्थयमती णंदावत्ते य वड्ढमाणे सोत्थिरुयग
तह सव्वओभद्दसन्निवेसे य बहुविसेसे उद्दंडियदेवकोट्ठदारुगिरिरवातवाहणविभागकुसले इय तस्स बहुगुणड्ढे थवतीरतणे णरिंदचंदस्स।
तवसंजमणिव्विट्ठे किंकरवाणी उवट्ठाति ॥ १ ॥ सो देवकम्मविधिणो खंधावारं णरिंदवयणेणं। आवसहभवणवलितं करेति सव्वं
मुहुत्तेणं ॥ २ ॥ करेति य पवरपोसह घरं जाव पच्चप्पिणति। सेसं तं चेव जाव चाउग्घंटं आसरहंतेणं उवागच्छति। तए णं तं
धरणितलगमणलहुं ततो बहुलक्खणपसत्थं हिमवंतकंदरंतरणिवायसंवड्ढितचित्ततिणिसदलियं जंबूणयसुकयकुप्परं कणयदंडियारं
पुलगवइरइंदणीलसासगपवालवरफारिहरयणलेट्ठुमणिविद्दूमविभूसियं अडयालीसाररयिततवणिज्जपट्टसंगहितजुत्ततुंबं वधासितप-
सितणिम्मितणवपट्टपुट्ठपरिणिट्ठितं विसिट्ठलट्ठणवलोहवद्धकम्मं हरिपहरणरयणसरिसचक्कं कक्केतणइंदणालसासगसुसमाहित-
बद्धजालककडं पसत्थविच्छिण्णसुमधुरं पुरवरं व गुत्तं सुकरणतवणिज्जजुत्तकलितं कंटकणिजुत्तकप्पणं पहरणाणुयातं खेडगकणगम-
धणुमंडलग्गवरसत्तिकोंततोमरसरसयबत्तीसतोणपरिमंडियं कणयरयणचित्तं जुत्तं हलीमुहबलागगयदन्तचंदमोत्तियतणसोतियकुंद-
कुडयवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहारकासप्पकासधवलेहिं अमरमणपवयणजइणचवलसिग्घगामीहिं चउहिं चामराकणगभूसितंगेहिं
तुरंगेहिं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं सुकयसंधिकम्मं सुसमाहितसमरकणगगंभीरतुल्लघोसं वरकुप्परं सुचक्कं वरणेमीमंडलं वर-
धुरातोडं वरवइरबद्धतुंबं वरकंचणभूसितं वरायरियणिम्मितं वरतुरंगसंपउत्तं वरसारहिसुसंपणिहितं वरपुरिसे वरमहारहं दुरूढे आरूढे

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१८८॥

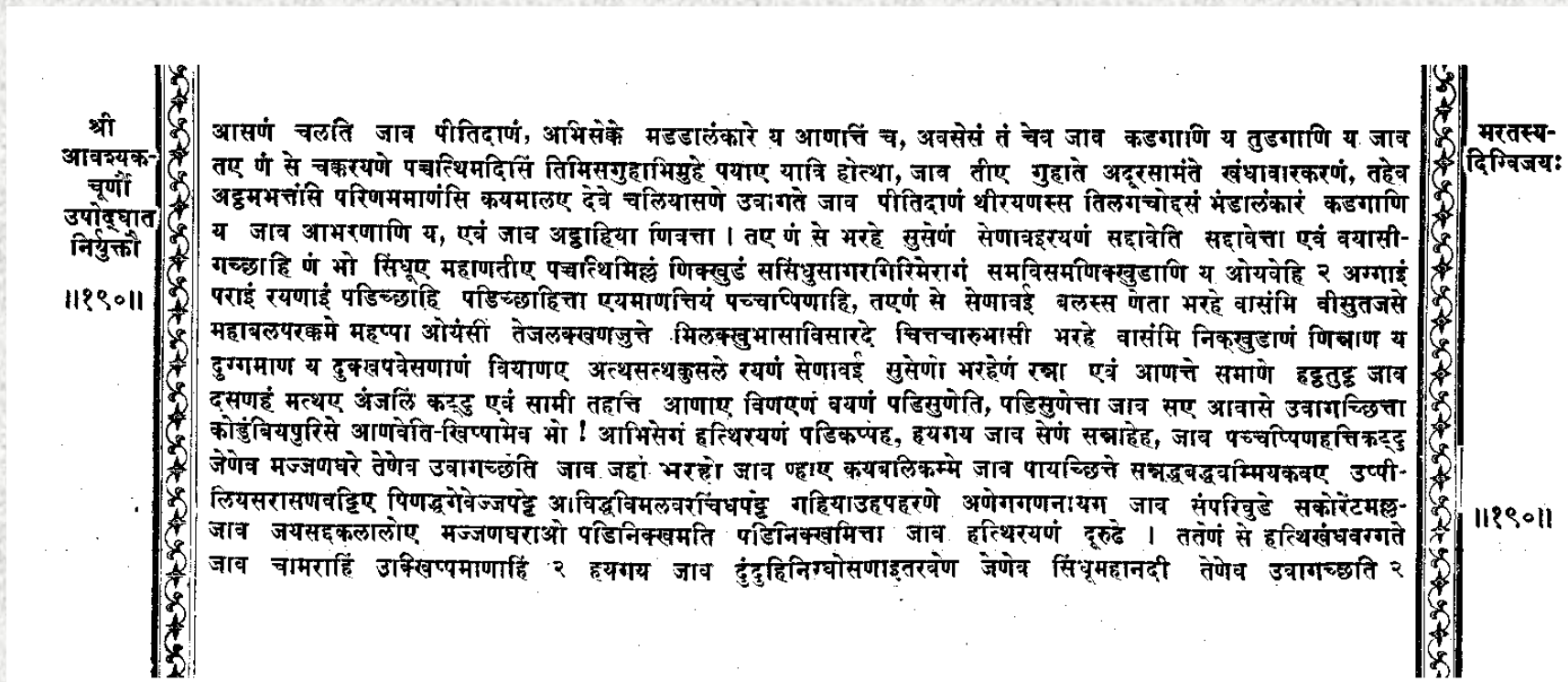
श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१८९॥

य वररयणपरिमंडितं कणगखिखिणीजालसोभितं अयोज्झं सोदामणिकणकतवितपंकजजासुयणाजलणजलितसुयतुंडरागं गुंजद्धबंधुजीवगरत्तहिंगुलुयणिगरसिंदूररुइलकुंकुमपोरवयचलणणयणकोइलदसणावरणरइतातिरेगरत्तासोगकणगकेसुयगजतालुमुरिंदगोवगसमप्पभपगासं बिंबफलसिलप्पवालउट्ठेतसूरसरिसं सव्वोउयसुरभिकुसुमआसत्तमल्लदामं ऊसितसेतज्झयं महामेहरासितगंभीरणिद्धघोसं सत्तुहिदयकंपणं पभाए सस्सिरीयं णामेणं पुहविविजयलंभेति वीसुतं लोगवीसुतजसे, अह तं चाउग्घंटं आसरहं पोसहिए णरवती दुरूढे सेसं तहेव, णवरं दाहिणाभिमुहे, पीतदाणं मालं मउलिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य, सेसं तं चेव जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहे पयाते, जाव पच्चत्थिमदिसाभिमुहे पभासतित्थेणं लवणं ओगाहति, सेसं तं चेव, पीतिदाणं चूलामणी दिव्वं उरत्थं गेवेज्जं सोणीसुत्तं च कडगाणि य तुडियाणि य । तते णं से दिव्वे चक्के पभासतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महिमाए णिव्वत्ताए अंतलिक्खपडिवण्णे जाव अंबरतलं सिंधूए महाणदीए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं सिंधुदेविभवणाहिमुहे पयाते यावि होत्था, भरहेऽवियणं तहेव जाव तीए भवणस्स अदूरसामंते विजयखंधावारनिवेसणं तहेव अट्ठमभत्तग्गहणं तंमि परिणममाणंसि सिंधुदेविए आसणचलणं ओहिपउंजणं जीतकप्पसरणं जावकरेमित्तिकट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगभद्दासणाइं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हित्ता जाव उवागच्छति जहा मागहकुमारे जाव आभरणाणि य उवणेति, रायावि तं सक्कारेति जाव अट्ठाहियाए महिमाए णिव्वत्ताए समाणीए से चक्करयणे आयुधसालाओ णिक्खमित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसिं वेयड्ढपव्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था, एयं सव्वं पुव्ववन्नियं जाव वेयड्ढपव्वयस्स दाहिणे णितंबे खंधावारं णिवेसेति, एवं जहा चेव सिंधुदेवीए तहेव वेयड्ढगिरिकुमारस्सवि

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१८९॥



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१९०॥

आसणं चलति जाव पीतिदाणं, अभिसेके मउडालंकारे य आणत्तिं च, अवसेसं तं चेव जाव कडगाणि य तुडगाणि य जाव तए णं से चक्करयणे पच्चत्थिमदिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था, जाव तीए गुहाते अदूरसामंते खंधावारकरणं, तहेव अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि कयमालए देवे चलियासणे उवागते जाव पीतिदाणं थीरयणस्स तिलगचोद्दसं भंडालंकारं कडगाणि य जाव आभरणाणि य, एवं जाव अट्ठाहिया णिवत्ता । तए णं से भरहे सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-गच्छाहि णं भो सिंधूए महाणतीए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओयवेहि २ अग्गाइं पराइं रयणाइं पडिच्छाहि पडिच्छाहित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से सेणावई बलस्स णेता भरहे वासंमि वीसुतजसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओयंसी तेजलक्खणजुत्ते मिलक्खुभासाविसारदे चित्तचारुभासी भरहे वासंमि निक्खुडाणं णिच्चाण य दुग्गमाण य दुक्खपवेसणाणं वियाणए अत्थसत्थकुसले रयणं सेणावई सुसेणो भरहेणं रन्ना एवं आणत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव दसणहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जाव सए आवासे उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे आणवेति-खिप्पामेव भो ! आभिसेगं हत्थिरयणं पडिकप्पह, हयगय जाव सेणं सन्नाहेह, जाव पच्चप्पिणहत्तिकट्टु जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छंति जाव जहा भरहो जाव ण्हाए कयबलिकम्मे जाव पायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणवट्टिए पिणद्धगेवेज्जपेट्ट आविद्धविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहपहरणे अणेगगणनायग जाव संपरिवुडे सकोरेंटमल्ल-जाव जयसद्दकलालोए मज्जणघराओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जाव हत्थिरयणं दूरुढे । ततेणं से हत्थिखंधवरगते जाव चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं २ हयगय जाव दुंदुहिनिग्घोसणाइतरवेण जेणेव सिंधूमहानदी तेणेव उवागच्छति २

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१९०॥

दिव्वं चम्मरयणं परामुसति, तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं मुत्तातारयद्धचंदचित्तं अयलमकंपं आभिज्जकवयं जं तं सलिलासु सागरेसु य उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं सणसत्तरइयं सव्वधन्नाइं जत्थ रोहंति एगदिवसेण वाविताइं, वासं णाऊण चक्कवट्टीणं परामट्ठे दिव्वचम्मरयणे दुवालसजोयणाइं तिरियं पवित्थरति तत्थ साहियाइं, तएणं से चम्मरयणे खिप्पामेव णावाभूते जाते, तए णं से सेणावइ सखंधावारबले चम्मरयणं दूरुहति २ सिंधुं महानइं विमलजलतुंगवीइयं णावाभूतेणं चम्मरयणेणं उत्तरति, ततो महाणदिं उत्तरित्तु सिंधुं अपडिहयसासणे य सेणावति कहिंचि गामागरणगरपव्वयाणि खेडकब्बडमडंबाणि पट्टणाणि य सिंहलए बब्बरे य सव्वं च अंगलोकं विलायलोगं च परमरम्मं जवणदीवं च पवरमणिकणगरयणकोसागारं समिद्धं आरबकरोमके अलसंडविसयवासी य पिक्खुरे कालमुहे जोणए य उत्तरवेयड्ढसंसिताओ य मेच्छजाती बहुप्पगारा दाहिणअवरेण जाव सिंधू ससागरंतोत्ति य सव्वपवरकच्छं च ओवेऊण पडिणियत्तो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे य तस्स कच्छस्स सुहनिसन्ने, ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जे य तहिं सामिया पभूतागरपती य मंडलपती य पट्टणपती य सव्वे घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि रयणाणि य वत्थाणि य महारिहाणि अन्नं च जं वरिट्ठं रायरिहं जं च इच्छियव्वं एतं सेणावइस्स उवणेंति, मत्थए कयंजलिपुडा पुणरवि काऊण अंजलिं मत्थयंमि पणता तुब्भे अम्हत्थ सामिया, देव! तं च सरणागता मो, तुब्भं विसयवासिणोत्ति विजयं जंपमाणा सेणावइणा जहारिहं ठवितपूजिता विसज्जिता णियत्ता सगाणि णगराणि पट्टणाणि य अणुपविट्ठा।

ताहे सेणावती सविणतो घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि रयणाणि भूसणाणि य पुणरवि तं सिंधुणामाधिज्जं उत्तिन्ने अणहसासणबले तहेव रन्नो भरहाहिवस्स णिवेदइत्ता य अप्पिणित्ता य पाहुडाइं सक्कारियसंमाणितसहरिसे विसज्जिते सगं पडमंडव-

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१९२॥

मतिगते। तए णं से सुसेणे सेणावती ण्हाते जाव पायच्छित्ते जिमितभुत्तुत्तरागते समाणे जाव सरसगोसीसचंदणोकिन्नगसरीरो उप्पिं पासादवरगते कुट्टिमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ महताऽहयणट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवादितरवेण इट्ठे सद्द जाव पंचविहे माणुसस्ए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति।

तते णं से भरहे अन्नया कयाती सेणावइं सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ णं भो ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विघाडेहि २ जाव पच्चप्पिणाहि, तए णं से सेणावती तहेव जहा भरहो जाव अट्ठमभत्तं गेण्हति, तंमि य परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिनिक्खमित्ता ण्हाते जाव धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगते मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ जेणेव तिमिसगुहाए से दारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तए णं तस्स बहवे राईसर जाव पभितओ उप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव पिट्ठतो अणुगच्छंति, तए णं तस्स बहुओ खुज्जाओ जाव विणी(चिला)ताओ अप्पेगइयाओ कलहसत्थगताओ जाव धूवकडुच्छुयहत्थगताओ अणुगच्छंति, तए णं से सव्विड्ढीए जाव णादितरवेणं जेणेव ताणि कवाडाणि तेणेव उवागच्छइ २ आलोए पणामं करेइ, एवं जहा भरहो चक्करयणस्स तहेव जाव मंगलए आलिहइ, आलिहित्ता दंडरयणं परामुसइ, तए णं तं भवे दंडरयणं पंचलइयं वइरसारमतियं विणासणं सव्वसत्तुसेन्नाणं खंधावारेणरवइस्स गड्डदरिविसमपब्भारगिरिपव्वताणं समीकरणं संतिकरणं सुभकरं रन्नो हिदइच्छितमणोरहपूरगं दिव्वं पडिहतं दंडरयणतं गहाय सत्तट्ठपदे पच्चोसक्कइ, ते कवाडे तेण महता महता सद्देणं तिक्खुत्तो आउडेइ, तए णं ते दारा महता महता सद्देणं कुंचारयं करेमाणा सरसरस्स सकाइं सकाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ततेणं सेणावती जाव भरहस्स तं निवेदेइ॥

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१९२॥

भरहेवि यणं ण्हाते जाव गयवतिं णरवतीं दूरुढे, तए णं से भरहे मणिरयण परामुसइ, तो तं चउरंगुलप्पमाणमेत्तं च अणग्घेयं तंसं छलंसं अणोवमजुतिं दिव्वं मणिं रयणपातिसमं वेरुलियं सव्वभूतकंतं जेण य मुद्धागतेणं दुक्खं न किंचि जाव हवति, अरोगे य सव्वकालं, तेरिच्छियदिव्वमाणुसकता य उवसग्गा सव्वे ण करेंति तस्स दुक्खं, संगामेऽविय असत्थवज्झो होहिति णरो, मणिवरं धरेंतो ठितजोव्वणकेसअवट्ठितणहो, हवति य सव्वभयविप्पमुक्को, तं मणिरयणं गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिल्लाए कुंभीए निक्खिवेइ। तए णं से भरहाहिवे नरिंदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छेजाव अमरवतीसंनिभाइड्ढीए पहियकित्ती मणिरयणकउज्जोवे चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुजातमग्गे महता उक्किट्ठिसिंहनादबोलकलकलरवेणं पक्खुभियसमुद्दरवभूयंपिव करेमाणे करेमाणे तिमिसिगुहं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अतीति ससिव्व मेहंधकारणिवहं।

तए णं से भरहे छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णिकं अहिकरणसंठितं अट्ठसोवन्तिकं कागणिरयणं परामुसति, तए णं तं चउरंगुलप्पमाणमेत्तं अट्ठसुवन्नं च विसहरणं अतुलं चउरंससंठाणसंठियं समतलं माणुम्माणपमाणजोगजुत्तोलंगे चरंति सव्वजणपन्नवणका णवि चंदे ण किर तत्थ सूरे णवि अग्गी ण इव तत्थ मणिं णो तिमिरं नासेति अंधकारे जत्थ तेहिं तकं दिव्वप्पभावजुत्तं, दुवालसजोयणाणि तस्स लेसाउ विवड्ढंति तिमिरणिगरपडिसिहिकाओ, रत्तिं च सव्वकालं खंधावारे करेंति आलोकं दिवसभूतं, जस्स पहावेण चक्कवट्टी तिमिसगुहमतीति सेन्नसहिते अभिजेतुं बितियमड्ढभरहं, रायपवरे कागिणिं गहाय तिमिसगुहापुरत्थिमपच्चत्थिमिल्लेसु कडएसु जोयणंतरियाइं पंचधणुसयायामविक्खंभाइं जोयणुज्जोयकराइं चक्कनेमिसंठियाइं चंदमंडलपडिणिकासाइं एगूणपन्नमंडलाइं आलिहमाणे २ अणुपविसइ, जाव धरति चक्कवट्टी ताव किर ताणि मंडलाणि धरंति, गुहा य किर तहा उग्घाडिया चेव॥

तए णं सा तिमिसगुहा तेहिं मंडलेहिं आलोयभूता उज्जोयभूता जाता यावि होत्था, तीसे णं गुहाए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं उम्मुग्गनिमुग्गाजलाओ नामं दुवे महानदीओ पण्णत्ताओ, जाओ णं तिमिसगुहाए पुरत्थिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूढाओ पच्चत्थिमेणं सिंधुमहानइं समप्पेंति, जन्नं उम्मग्गजलाए तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा आसे वा हत्थी वा रहे वा जोहे वा मणुस्से वा पक्खिप्पति तन्नं सा तिक्खुत्तो आहुणिय आहुणिय एगंते थलंसि एडेइ, जन्नं निमुग्गजलाए तन्नं सा अंतोजलंसि णिमज्जावेति ।

तए णं से वड्ढतिरयणे भरहवयणसंदेसेणं तासु णदीसु अणेगखंभसयसहससंनिविट्ठं अचलमकंपं सालंबणबाहगं सव्वरयणामयं सुहसंकमं करेइ, तए णं से भरहे जाव चक्करयणदेसितमग्गे जाव समुद्दरवभूतं पिव करेमाणे सिंधूए पुरत्थिमिल्लेणं कूलेणं ताओ णदीओ तहिं संकमेण जाव सुहेण उत्तरति, तए णं तीसे गुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सतमव महता महता कोंचारवं करेमाणे सरसरसरस्स सयाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरद्धभरहे वासे बहवे आवाडा णाम चिलाता परिवसंति, अड्ढा दित्ता वित्ता विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ना बहुधणा बहुजातरूपरयया जाव बहुदासीदासगोमहिसगवेलगयप्पभूता बहुजणस्स अपरिभूता सूरा वीरा विक्कंता विच्छिन्नविपुलबलवाहणा बहुसु समरसंपराएसु लद्धलक्खा यावि होत्था, तएणं तेसिं विसयंमि बहूइं उप्पातितसताइं पाउब्भवित्था, तए णं ते ताणि पासित्ता जाव ओहतमणसंकप्पा झियायंति । तए णं से भरहे राया चक्करयण जाव रवभूतंपिव करेमाणे तीए गुहाए उत्तरिल्लेणं दुवारेणं णीति ससिव्व मेहंधकारणिवहाओ । तए णं ते चिलाता तं पासित्ता आसुरत्ता जाव अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! केई अप्पत्थियपत्थगे जाव अम्ह

॥१९४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

विसए बलविरिएणं हव्वमागच्छति तं तहा णं धत्तामो जहा णं णो आगच्छतित्तिकट्टु (तं) अन्नमन्नस्स पडिसुणेत्ता सन्नद्धबद्ध जाव आउहप्पहरणा भरहस्स अग्गाणीएण सद्धिं संपलग्गा। तए णं तं अग्गाणीयं हतमहित जाव दिसोदिसिं पडिसेहंति, तए णं से सुसेणे सेणावती तं तहा पातित्ता आसुरुत्ते कमलामेलगं णाम आसरयणं दूरुहति, तएणं तं असीतिमंगुलमूसितं णवणउतिमंगुलपरिणाहं अट्ठसयमंगुलमायतं बत्तीसंगुलमूसितासिरं चउरंगुलकन्नाकं वीसतिअंगुलबाहाकं चतुरंगुलजन्नुकं सोलसअंगुलजंघाकं चतुरंगुलमूसित-खुरं मुत्तोलीसंवत्तवलितमज्झं ईसी अंगुट्ठपणतपट्ठं सण्णतपट्ठं संगयपट्ठं पसत्थपट्ठं सुजातपट्ठं विसिट्ठपट्ठं एणीजाणुण्णयवित्थयतत्थपट्ठं वेत्तलतकसंणिवातं अंकेल्लणपहारपरिवज्जितंगं तवणिज्जथासकामिल्लाणवरकणकसुफुल्लथासकविचित्तरयणरज्जुपासं कंचणमणिकण-गपतरकणाणाविहघंटियाजालमुत्तियजालगेहिं परिमंडितेण पट्ठेणं सोभमाणेण सोभमीणं ककेतणइंदनीलमरगतमसारगल्लमुहमंड-णरतितं आविद्धमाणिक्कसुत्तकविभूसितं कणकामयपउमसुकयतिलकं देवमतिविकप्पितं सुरवरिंदवाहणजोग्गं च तं सुरूवं दूइज्ज-माणयं च चारुचामरामेलगं धरेंतं अणट्ठब्भवाहं अभेलणयणं कोकासियबहलपत्तलच्छं सतावरणणवकणगतावितवणिज्जतालुजीहा-सयं सिरियाभिसेकघोणं पुक्खरपत्तमिव सलिलबिंदुजुयं अचंचलं चवलसरीरं चोक्खचरकपरिव्वाजको विव हिलीयमाणं २ खुरचलणचच्चपुडेहिं धरणितलं अभिहणमाणं २ दोहिय चलणं जमकसमकं मुहाओ विणिग्गमंतं व सिग्घताए मुणालतंतुउदगम-वि णिस्साए पक्कमंतं जातिकुलरूवपच्चयपसत्थबारसावत्तकविसुद्धलक्खणं सुकुलप्पसूतं मेहाविं भद्दकं विणीतं अणुकतणुकसुकुमाल-लोमणिद्धछविं सुजातं अमरमणपवणगरुलजइणचवलसिग्घगामिं ईसिमिव खंतिखमए सुसीसमिव पच्चक्खतो विणीतं उदगहुतवह-पासाणपंसुकद्दमससक्करसवालुइल्लतडकडग्विसमपब्भारगिरिदरीसु लंघणपीलणणित्थारणासमत्थं, अचंडपडियं डंडयाइं अणंसु-

॥१९५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

याइं अकालहीणं च कालेहिं जियनिंद गयसगं जितपरीसहं जच्चजातीयमच्छिहरिणसुकयत्तसुवन्नकोमलं मणाभिरामं कमलामेलं नामेणं आसरयणं सेणावती कमेण समभिरूढे कुवलयदलसामलं च रयणिकरमंडलनिभं सत्तुजणविणासणं कणकरतणडंडं णवमालियपुप्फसुरभिगंधिं णाणामणिलतकभत्तिचित्तं च पधोतमिसिमिसेंतं निक्खधारं दिव्वं खग्गरयणं लोके अणोवमाणं, तं च पुणो वंसरुक्खसिंगट्ठिदंतकालायसविपुललोहदंडकवरवइरभेदयं जाव सव्वत्थ अप्पडिहतं, किं पुण देहेसु जंगमाणं ?, पन्नासंगुलदीहो सोलस सो अंगुलाइं विच्छिन्नो । अट्ठंगुलसोणीको जेट्ठपमाणो असी भणितो ॥ १ ॥ असिरयणं णरवइस्स हत्थातो तं गहेऊणं आवाधचिलाएहिं सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ।

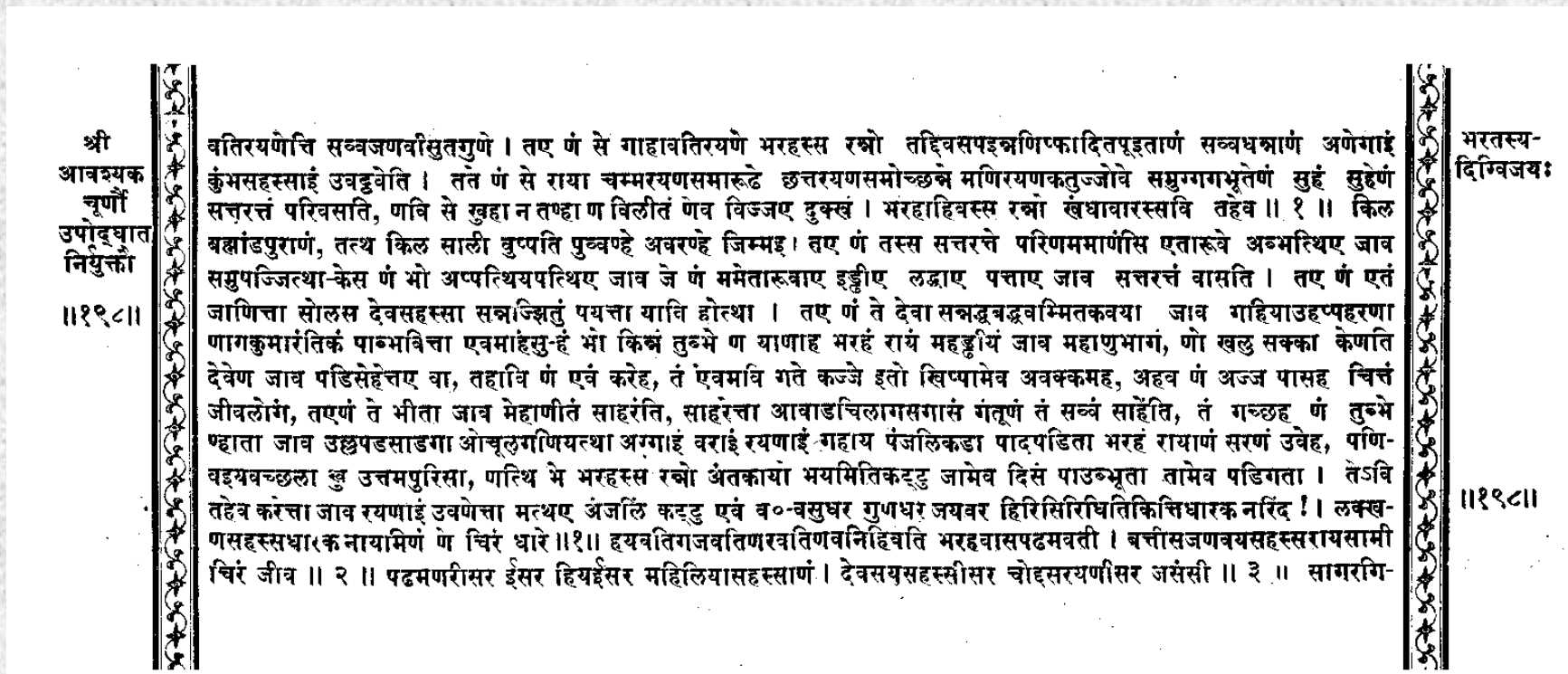
तए णं ते हतमहिते जाव पडिसेहेति, तए णं ते वरागा भीता तत्था वहिता उव्विग्गा अत्थामा अपुरिसपरक्कमंता अधारणिज्जत्तिकट्टु अणेगाइं जोयणाइं अवक्कमंति, एगंतओ मिलायंति २ जेणामेव सिंधूमहाणदी तेणामेव उवागच्छन्ति उवागच्छइत्ता वालुयासंथारके संथरंति २ तत्थ दुरुहंति २ अट्ठमभत्ताइं पगेण्हंति२ उत्ताणगा अवसणा कुलदेवते मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा करेमाणा चिट्ठंति । तएणं तेसिं अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तेसिं देवाणं आसणाइं चलेंति, ते ओहिणा आभोएंति. अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता तेसिं अंतियं पाउब्भवंति, अंतलिक्खपडिवन्ना जाव एवं वयासी-भणह णं किं करामो केव भे मणसाइते?, तएणं ते चिलाता हट्ठा जाव विजएणं वद्धावेत्ता एवं व०-एस णं केइ अप्पत्थियपत्थए जाव तहणं घत्तेह जहन्नं नो आगच्छतित्ति, तए णं ते देवा एवमाहंसु-एस णं देवाणुप्पिता ! भरहे णाम राया चातुरतचक्कवट्टी महिड्ढीए महाजुत्तीए जाव महासक्खे, णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरकिंपुरिसगंधव्वमहोरगेण वा सत्थपतोगेण वा अग्गिपओगेण वा विसप्पतो-

॥१९६॥

गेण वा मंतप्पतोगेण वा उद्दवेत्तए वा पडिसेहेत्तए वा, तहावियं णं तुब्भं पियट्ठताए एयस्स उवसग्गं करेमोत्तिकट्टु तेसिंतियाओ अवक्कमंति २ जाव खंधावारनिवेसस्स उप्पिं जुगमुसलप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं उपरोप्पिं सत्तरत्तं पवासंति ॥

तएणं से भरहे राया तं पासित्ता दिव्वं चम्मरयणं परामुसति, सेऽवि यणं खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं तिरियं पवित्थरति, तत्थ साहियाइं. तए णं से भरहे सखंधावारबले तंसि दूरुहति २ दिव्वं छत्तरयणं परामुसति, तए णं तं णवणवतिसहस्सकंचणसलागपरिमंडितं महरिहं अतोज्झं णिव्वणसुपसत्थविसिट्ठलट्ठकंचणसुपुट्ठदंडं मिदुरायतवट्टलट्ठअरविंदकन्नियसमाणरूवं वत्थिपदेसे य पंजरविराजितं विविहभत्तिचित्तं मणिमुत्तपवालतत्ततवणिज्जपंचवण्णियघंतरयणरूवरइतं रयणमिरीइसमोप्पणाकप्पकारमणुरंजिएल्लियं रायलच्छीचिंधं अज्जुणसुवण्णपंडुरपच्चत्थुयपट्टदेसभागं तहेव तवणिज्जपट्टकम्मंतपरिगतं अधिकसस्सिरीयं सारदरयणिकरविमलपडिपुन्नचंदमंडलसमाणरूवं नरिंदवामप्पमाणपगतीपवित्थडं कुमुदसंडधवलं रन्नो संचारिमं विमाणं सुरातववातवुट्ठिदोसाण खतकरं तवगुणेहिं लद्धं 'अहतं बहुगुणदाणं उट्ठणविवरीतसुहकयच्छायं । छत्तरयणं पहाणं सुदुल्लभं अप्पपुन्नाणं ॥ १ ॥ पमाणरातीणं तवगुणाणं फलेक्कदेसभागं विमाणवासेवि दुल्लभतरं वग्घारितमल्लदामकलावं सारदधवलब्भयंदाणिगरप्पगासं दिव्वं छत्तरयणमहिवइस्स धरणितलपुन्नयंदो । तए णं से दिव्वे छत्तरयणे भरहेणं रन्ना परामुट्ठे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं पवित्थरइ साहियाइं तिरियं, तं खंधावारस्स उवरिं ठवेति, ठवित्ता मणिरयणं परामुसइ परामुसित्ता छत्तरयणस्स वत्थिभागे ठवेति ।

तस्स य अणइवरं चारुरूवं सिलणिहिअत्थमंतसेतू सालिजवगोधूममुग्गमासतिलकुलत्थसट्ठिगणिप्फावचणकोद्दवकोत्थुंभरिकंगुवरालकअणेगधन्नावरत्तहारितगअल्लकमूलकहलिद्दिलाउकतउसतुंबकालिंगकविट्ठअंबअंबिलियसव्वणिप्फादए सुकुसले गाहा-



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१९८॥

वतिरयणेत्ति सव्वजणवयसुतगुणे । तए णं से गाहावतिरयणे भरहस्स रन्नो तद्दिवसपइन्नणिप्फादितपूइताणं सव्वधन्नाणं अणेगाइं कुंभसहस्साइं उवट्ठवेति । तते णं से राया चम्मरयणसमारूढे छत्तरयणसमोच्छन्ने मणिरयणकतुज्जोवे समुग्गगभूतेणं सुहं सुहेणं सत्तरत्तं परिवसति, णवि से खुहा न तण्हा ण विलीतं णेव विज्जए दुक्खं । भरहाहिवस्स रन्नो खंधावारस्सावि तहेव ॥ १ ॥ किल बम्हांडपुराणं, तत्थ किल सालो वुप्पति पुव्वण्हे अवरण्हे जिम्मइ। तए णं तस्स सत्तरत्ते परिणममाणंसि एतारूवे अब्भत्थिए जाव समुपज्जित्था-केस णं भो अप्पत्थियपत्थिए जाव जे णं ममेतारूवाए इड्ढीए लद्धाए पत्ताए जाव सत्तरत्तं वासति । तए णं एतं जाणित्ता सोलस देवसहस्सा सन्नज्झितुं पयत्ता यावि होत्था । तए णं ते देवा सन्नद्धबद्धवम्मितकवया जाव गहियाउहप्पहरणा णागकुमारंतिकं पाब्भवित्ता एवमाहंसु-हं भो किन्नं तुब्भे ण याणाह भरहं रायं महड्ढीयं जाव महाणुभागं, णो खलु सक्का केणति देवेण जाव पडिसेहेत्तए वा, तहावि णं एवं करेह, तं एवमवि गते कज्जे इतो खिप्पामेव अवक्कमह, अहव णं अज्ज पासह चित्तं जीवलोगं, तएणं ते भीता जाव मेहाणीतं साहरंति, साहरेत्ता आवाडचिलायसगासं गंतूणं तं सव्वं साहेंति, तं गच्छह णं तुब्भे ण्हाता जाव उल्लपडसाडगा ओचूलुगणियत्था अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिकडा पादपडिता भरहं रायाणं सरणं उवेह, पणिवइयवच्छला खु उत्तमपुरिसा, णत्थि भे भरहस्स रन्नो अंतकायो भयमितिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूता तामेव पडिगता । तेऽवि तहेव करेत्ता जाव रयणाइं उवणेत्ता मत्थए अंजलिं कट्टु एवं व०-वसुधर गुणधर जयवर हिरिसिरिधितिकित्तिधारक नरिंद ! । लक्खणसहस्सधारक नायामिणं णे चिरं धारे ॥१॥ हयवतिगजवतिणरवतिणवनिहिवति भरहवासपढमवती । बत्तीसजणवयसहस्सरायसामी चिरं जीव ॥ २ ॥ पढमणरीसर ईसर हियईसर महिलियासहस्साणं । देवसयसहस्सीसर चोद्दसरयणीसर जसंसी ॥ ३ ॥ सागरगि-

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१९८॥

रिपेरंतं उत्तरपाईणमभिजितं तुमए । तं अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥ ४ ॥ अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुत्ती जसे बले विरिए पुरिसकारपरक्कमे दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते तं दिट्ठा णं देवाणं इड्ढी एवं चेव जाव अभिसमन्नागया, तं खामेमु णं देवा० खमंतु देवा० खमंतु रहंतु णं देवा० णाइभुज्जो भुज्जो एवं करणताएत्तिकट्टु पादपडिता सरणं उवेंति ।

तए णं से राया तेसिं तं अग्घं पडिच्छति २ एवं वयासी-गच्छह णं भो तुब्भे मम बाहुच्छायापरिग्गहिता णिब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसह, णत्थि भे कुतोऽवि भयमत्थित्तिकट्टु सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेति । तए णं सेणावती भरहादेसेणं पुव्वभणितविहाणेणं दोच्चंपि पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य तहेव ओयवेत्ता जाव पंचविहे भोगे पच्चणुभवमाण विहरति ।

तए णं से चक्करयणे अन्नया कयादी पडिणिक्खमति तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसं चुल्लहिमवंतपव्वयाभिमुहं पयाते यावि होत्था, तए णं भरहेवि तहेव जाव चुल्लहिमवंतस्स दाहिणिल्ले णितंबे दुवालसजोयणायामं जाव चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हति, तहेव जहा मागहकुमारस्स, णवरं उत्तरदिसाभिमुहे जेणेव चुल्लहिमवंते तेणेव उवा० तं पव्वयं तिक्खुत्तो रहस्सीसेणं फुसति फुसित्ता तुरए णिगिण्हति२ तहेव उड्ढं वेहासं सरं णिसिरति, सेऽवि य बावत्तरिं जोयणाइं गंता तस्स देवस्स मेराए णिवडिते, सेऽवि तहेव आसुरत्ते, सेसं तं चेव, णवरं अहं देवाणुप्पियाणं उत्तरिल्ले अंतपाले, पीतिदाणं सव्वोसहिं च मालं च सरसं च गोसीसचंदणं कडगाणि य जाव दहोदगं च उवणेति ।

तए णं से भरहे रहं परावत्तेत्ता जेणेव उसभकूडे पव्वते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता तं पव्वयं तिक्खुत्तो रहसीसेणं फुसति रहं ठवेति, कागणिरयणं परामुसति २ उसभकूडस्स पुरत्थिमिल्लंसि कडगंसि णामगं आउडेति । 'ओसप्पिणीइमीसे ततियाए समाए पच्छिमे भाए । अहयंमि चक्कवट्टी भरहो इति णामधेज्जेणं ॥ १ ॥ अहमंसि पढमराया इहाहि भरहाहिवो णरवरिंदो । णत्थि महं पडिसत्तू जितं मए भारहं वासं ॥ २ ॥ तिकट्टु रहं परावत्तेति २ तेणेव विहिणा खंधावारमागंतूण चुल्ल०कुमारस्स अट्ठाहियं संदिसति ।

तए णं से चक्करयणे जाव णिव्वत्ताए समाणीए दाहिणं दिसिं वेयड्ढाभिमुहे पयाए यावि होत्था, सेसं तं चेव जाव उत्तरणियंवे खंधावारणिवेसं काऊण भरहराया पोसहिए णमिविणमी विज्जाहररातीं मणसी करेमाणे करेमाणे चिट्ठति, तए णं तंसि परिणममाणंसि णमिविणमी दिव्वाए मतीए चोदितमती अन्नमन्नस्स अंतियं पाउब्भवंति २ एवं वयासी- उप्पन्ने खलु जाव चक्कवट्टी तं जीतमेतं जाव विज्जाहरराईणं चक्कवट्टीणं उवट्ठाणियं करेत्तए, तं गच्छामो णं अम्हेऽवि जाव करेमोत्तिकट्टु विणमी णाऊण चक्कवट्टिं दिव्वाए मतीए चोदितमती माणुम्माणप्पमाणजुत्तं तेयंसी रूवलक्खणजुत्तं ठितजोव्वणं केसव ट्ठितणहं सव्वामयणासणिं बलकरिं इच्छितसीउण्हकासजुत्तंति-तिसुब्भितणुकं तिसुतं तिवलीकं तिउन्नतं तिगंभीरं। तिसु कालं तिसु सेत तिआयतं तिसु त विच्छिन्नं ॥ १ ॥ समसरीरं भरहे वासंमि सव्वमहिलप्पहाणं सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणं सिरिसिरजदसणजणहिदयरमणमणहरिं सिंगारागारचारु० जाव जुत्तोवयारकुसलं अमरवहूणं सुरूवं रूवेण अणुहरंति, सुभद्दं भद्दंमि जोव्वणे वट्टमाणिं विणमी इत्थिरयणं णमी य रयणाणि कडगाणि य तुडगाणि य गेण्हति २ ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगतीए अंतलिक्खपडिवन्ना

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सखिखिणियाइं जाव विजएणं वद्धावेंति वद्धावेत्ता एवं वयासी- अभिजिते णं देवा० जाव अम्हे देवाणु० आणत्तिकिंकरित्तिकट्टु तं समप्पेंति । तए णं भरहो ते सक्कारेति जाव पडिविसज्जेति, सेसं तं चेव. अन्ने भणंति- णमिविनमिणो रायाणो णायाणन्ति, तेहिं समं जुद्धं बारस वरिसा, पच्छा ते पराजिता समाणा विणमी इत्थिरयणं णमी रयणाणि य गहाय उवागतत्ति । तए णं से चक्के णमिविणमीणं अट्ठाहिताए णिव्वत्ताए समाणीए तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसं गंगादेविभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था । भरहे तहेव जहा सिंधुदेवीए, णवरं सा से कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाइं उवणति जाव से चक्करयणे गंगाए महामाहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए तहेव जाव दाहिणं दिसिं खंडगप्पवाताभिमुहे पयाए यावि होत्था । तहेव कुडुंबियाणत्ती य हत्थिरयणसेणापडिकप्पणा पोसहसाला णट्ठमालगणमीकरणं, णवरं आलंकारियभंडदाणं सक्कारणयाए पडिविसज्जणया साहणाणत्ती आणुपुव्वि णेयव्वा ।

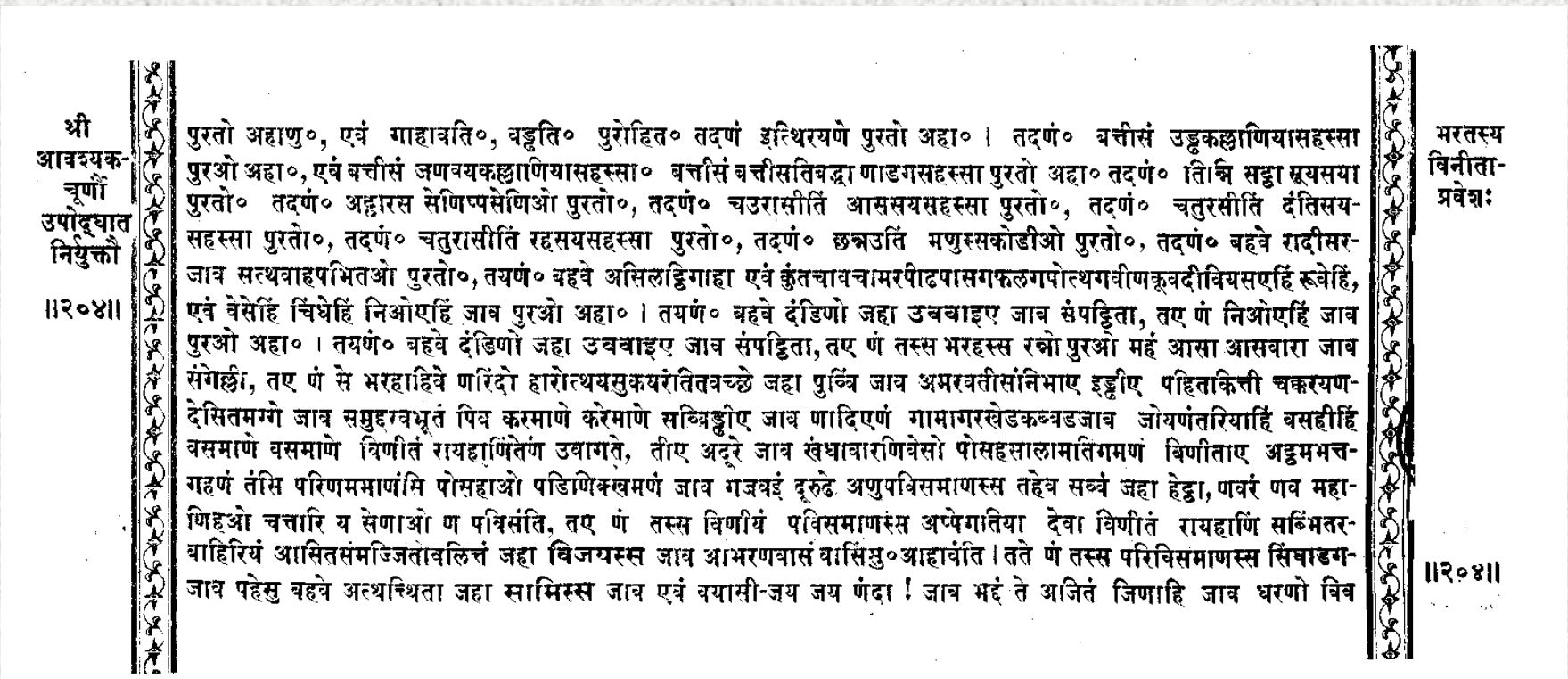
तए णं से भरहे णट्ठमालगस्स अट्ठाहिताए णिव्वत्ताए समाणीए सेणावतिं आणवेति- गच्छ णं भो ! गंगाए पुव्विल्लं निक्खुडं जाव ओतवेहि, एवं सिंधुणिक्खुडवत्तव्वया णेयव्वा, जाव उप्पिं पासादगते विहरति । भरहो तु किल गंगादेवीए समं भोगे भुंजति वाससहस्संति । तए णं से भरहे अन्नया कयादी सेणावतिं आणवेति- गच्छ णं भो ! खंडगप्पवातगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि, एवं भाणियव्वं जाव पियं निवेयणता कोडुंबियाणत्ती गुहापवेसो मंडलालिहणा संकमकरणं, णवरं ताओ णदीओ पच्चत्थिमिल्लाओ कडगाओ पवूढाओ पुरत्थिमेणं गंगाणदिं समप्पेंति जाव दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाण सयमेव पच्चोसक्कणया, जाव तीसे गुहाए दाहिणिल्लेणं दारेणं णीति ससिव्व मेहंधकारणिवहाओ । तए णं से राया गंगाए णदीए

पच्चत्थिमिल्लंसि कूलंसि खंधावाराणिवेसं काऊणं जाव णिहिरयणाणं अट्ठमभत्तं पगेण्हति, णिधिरयणे मणसी करमाणे २ चिट्ठति,
तस्स य अपरिमितरत्तरयणा धुवमक्खयमव्वया सदेवा लोकोपचयंकरा उवगता णव निहओ लोगवीसुतजसा । तंजहा—
णेसप्पे १ पंडुयए २ पिंगलये ३ सव्वरयण ४ महापउमे५ । काले६ य महाकाले७माणवग८महाणिही संखे ९॥१॥
णेसप्पंमि णिवेसा गामागरणगरपट्टणाणं च । दोणमुहमडंबाणं खंधावारावणगिहाणं ॥ २ ॥
गणियस्स य उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं पमाणं च । धन्नस्स य बीयाण य णिप्फत्ती पंडुए भणिता ॥ ३ ॥
सव्वा आहरणविही पुरिसाणं जा य होति महिलाणं । आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ॥४॥
रयणाणि सव्वरतणे चउदसवि वराइं चक्कवट्टिस्स । उप्पज्जंती पंचेंदियाइं एगिंदियाइं च ॥ ५ ॥
वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रंगाण य धोव्वाण य सव्वा एसा महापउमे ॥ ६ ॥
काले कालन्नाणं भव्व पुराणं च तिसुवि वंसेसु । सिप्पसयं कम्माणि य तिण्णि पयाए हितकराणि ॥ ७ ॥
लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च । रूप्पस्स सुवण्णस्स य मणिमुत्तिसिलापवालाणं ॥ ८ ॥
जोहाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च । सव्वा य जुद्धणीती माणवगे डंडणीती य ॥ ९ ॥
णट्टविहि णाडगविही कव्वस्स य चउविहस्स उप्पत्ती । संखे महाणिहिम्मी तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥ १० ॥
चक्कट्टपतिट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभो । बारस दीहा मंजूस संठिता जण्हवीय मुहे ॥ ११ ॥
वेरुलियमणिकवाडा कणगमया विविहरयणपडिपुन्ना । ससिसूरचक्कलक्खण अणुसमवयणोववत्तीया ॥ १२ ॥

पलिओवमट्ठितीया णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा। जेसिं ते आवासा अक्केज्जा आहिवच्चाय ॥ १३ ॥
एते णव णिहिरयणा पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा। जे चक्कमणुगच्छंती भरहाहिवचक्कवट्टीणं ॥ १४ ॥
तए णं भरहे जाव णिहिरयणाणं अट्ठाहियं महिमं करेति ॥

तए णं ताए णिव्वत्ताए सेणावतिं आणवेति-गच्छ णं भो! गंगाए पुरत्थिमिल्ले दोच्चं णिक्खुडं ओयवेहि, सेऽवि तहेव जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणति, पडिविसज्जिते जाव भोगाइं भुंजमाणे विहरति। तए णं से चक्करयणे अन्नया कयाई अंतलिक्खपडिवन्ने जाव दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीतं रायहाणिं अभिमुहं पयाए, तए णं से भरहे राया पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो! आभिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति।

तए णं से राया अज्जितरज्जो णिज्जितसत्तू उप्पन्नसमत्तरयणचक्करयणप्पहाणे णवणिहिसमिद्धकोसे बत्तीसारायवरसहस्साणुयातमग्गे सट्ठीए वाससहस्सेहिं केवलकप्पं भरहवासं ओयवेत्ता मज्जणघरं पयाते, एवं सव्वा मज्जणघरवत्तव्वया णेयव्वा, जाव ससिव्व पियदंसणे णरवती मज्जणघराओ पडिनिक्खमति २ त्ता जेणामेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेके हत्थिरयणे जाव अंजणगिरिकूडसंनिभं गजवतिं णरवती दुरूढे। तए णं भरहस्स रन्नो तं हत्थिं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलका पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया,तं० सोत्थिय जाव भिंगारा। तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं जाव अहाणुपु०। तदणंतरं सत्त एगिंदियरयणा पुरतो अहाणु० तं०-चक्करयणे एवं छत्त० चम्म० दंड० आसे मणि० कागणि०, तदणं० णव महाणिहतो पुरतो अहाणु०, तं०-णेसप्पे जाव महानिही य संखे, तदणं० सोलस देवसहस्सा पुरतो अहा०, तदणं० बत्तीसं रायवरसहस्सा पु० अहा०, तयणं० सेणावतिरयणे



पुरतो अहाणु०, एवं गाहावति०, वड्ढति० पुरोहित० तदणं इत्थिरयणे पुरतो अहा० । तदणं० बत्तीसं उडुकल्लाणियासहस्सा पुरओ अहा०, एवं बत्तीसं जणवयकल्लाणियासहस्सा० बत्तीसं बत्तीसतिबद्धा णाडगसहस्सा पुरतो अहा० तदणं० तिन्नि सट्ठा सूयसया पुरतो० तदणं० अट्ठारस सेणिप्पसेणिओ पुरतो०, तदणं० चउरासीतिं आससयसहस्सा पुरतो०, तदणं० चतुरसीतिं दंतिसयसहस्सा पुरतो०, तदणं० चतुरासीतिं रहसयसहस्सा पुरतो०, तदणं० छन्नउतिं मणुस्सकोडीओ पुरतो०, तदणं० बहवे रादीसर-जाव सत्थवाहपभितओ पुरतो०, तयणं० बहवे असिलट्ठिगाहा एवं कुंतचावचामरपीढपासगफलगपोत्थगवीणकूवदीवियसएहिं रूवेहिं, एवं वेसेहिं चिंधेहिं निओएहिं जाव पुरओ अहा० । तयणं० बहवे दंडिणो जहा उववाइए जाव संपट्ठिता, तए णं निओएहिं जाव पुरओ अहा० । तयणं० बहवे दंडिणो जहा उववाइए जाव संपट्ठिता, तए णं तस्स भरहस्स रन्नो पुरओ महं आसा आसवारा जाव संगेल्ली, तए णं से भरहाहिवे णरिंदो हारोत्थयसुकयरतितवच्छे जहा पुव्विं जाव अमरवतीसंनिभाए इड्ढीए पहितकित्ती चक्करयण-देसितमग्गे जाव समुद्दरवभूतं पिव करमाणे करेमाणे सव्विड्ढीए जाव णादिएणं गामागरखेडकव्वडजाव जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे वसमाणे विणीतं रायहाणिंतेणं उवागते, तीए अदूरे जाव खंधावारणिवेसो पोसहसालामतिगमणं विणीताए अट्ठमभत्त-गहणं तंसि परिणममाणंसि पोसहाओ पडिणिक्खमणं जाव गजवइं दूरुढे अणुपविसमाणस्स तहेव सव्वं जहा हेट्ठा, णवरं णव महा-णिहओ चत्तारि य सेणाओ ण पविसंति, तए णं तस्स विणीयं पविसमाणस्स अप्पेगतिया देवा विणीतं रायहाणिं सब्भितर-बाहिरियं आसितसंमज्जितोवलित्तं जहा विजयस्स जाव आभरणवासं वासिंसु०आहावेंति । तते णं तस्स परिविसमाणस्स सिंघाडग-जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिता जहा सामिस्स जाव एवं वयासी-जय जय णंदा ! जाव भद्दं ते अजितं जिणाहि जाव धरणो विव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

णागाणं जाव बहुईतो पुव्वकोडाकोडीओ विणीताए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहवासस्स गामागरणगर-जाव संनिवेसस्स संमं पयापालणोवज्जितलद्धजसे महता इस्सरियं कारेमाणे पालेमाणे सुहं सुहेणं विहराहिंत्तिकट्टु अभि-णंदंति य अभित्थुणंति य। तए णं से णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे २ एवं जहा सामी जाव अपडिबुज्झमाणे २ जाव सगभवणवरवडेंसगपडिदुवारे उवागच्छित्ता हत्थिरयणं ठवेति तातो पच्चोरुहति, सोलसदेवसहस्से सक्कारेति २ एवं बत्तीसं राय-वरसहस्से सक्कारेति सेणावतिरयणे १ गाहावतिरयणे २ वड्ढति०३ पुरोहिय० तिन्नि सट्ठा सूयसया२ अट्ठारस सेणिप्पसेणी० ओ अन्ने य बहवे रातीसरप्पभितयो सक्कारेत्ता जाव विसज्जेत्ता इत्थीरयणेणं बत्तीसाए य उडुकल्लाणियासहस्सेहिं बत्तीसाए य जणवयकल्लाणिया-सहस्सेहिं बत्तीसाए य बत्तीसतिबद्धेहिं णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे भवणवरवडेंसगं अतीति जहा कुबेरोव्व देवराया केलास-सिहरिसिंगभूतं। तए णं से राया मित्तणादिणियगसयणसंबंधिपरियणं पच्चुवेक्खति २ मज्जणगरं उवागच्छति तहेव जाव ण्हाते मित्तणादिजाव भोयणमंडवंसि अट्ठमभत्तं पारेति पारेत्ता उप्पिं पासादवरगते फुट्टंतेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसबद्धएहिं नाडएहिं उवलालिज्जमाणे २ उवणच्चिज्जमाणे२उवगिज्जमाणे२महता जाव भुंजमाणे विहरति। विहरेत्ता तए णं तस्स अन्नया कयादी ते देवादीया महारायाभिसेयं विन्नवेंति, सेवियणं तहेव अट्ठमभत्तं गेण्हति, तंसि परिणममाणंसि ते आभिओगिया देवा विणीताए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एगं महं अभिसेयमंडवं विउव्विंसु जहा विजयस्स जाव पेच्छाहरतिसोमाणगअभिसेगपेढसीहासणादि सव्वं भाणियव्वं।

तए णं से भरहे राया पोसहसालातो पडिणिक्खमति २ ण्हाते एवं जहा विणीतं पविसंतस्स गमो तहेव णिगच्छंतस्स जाव थीरयणेणं उडुकल्ला० जणवयकल्ला० णाडगसहस्सेहि य परिवुडे अभिसेगमंडवं अणुपविसाति जाव पेढमणुप्पयाहिणीकरेमाणे

भरतस्य-राज्या-भिषेकः

॥२०५॥

चक्रवर्ती भरतस्य राज्याभिषेकस्य वर्णनं क्रियते

पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणेणं दुरुहति जाव सीहासणे पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे, तएणं ते बत्तीसं रायसहस्सा उत्तरिल्लेणं तिसोमाणेणं जाव भरहस्स णच्चासन्ने सुस्सूसं जाव पज्जुवासंति। तए णं सेणावतीरयणे गाहावती० वड्ढति०पुरोहित० जाव सत्थवाहप्पभितयो तेऽवि तहेव णवरं दाहिणिल्लेण तिसोवाणेणं, तए णं आभिओग्गा देवा महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेगं उवट्ठवेंति जहा विजयस्स जाव पंडगवणे एगओ मेलायंति एवमादि।

ततेणं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा सोहणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तरपोट्ठवयाविजयंसि तहिं साभाविएहि य उत्तरवेउव्वियेहि य वरकमलपतिट्ठाणेहिं जहा विजए जाव महता महता रायाभिसेगेणं अभिसिंचंति २ पत्तेयं करतल जाव विहराहित्तिकट्टु आभिणंदंति अ अभिथुणंति य। तए तं रायाणं सेणावई०गाहावती० वड्ढती० पुरोहिते तिन्नि य सट्ठा सूयसया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभितयो एवं चेव अभिसिंचंति सोलस देवसहस्सा एवं चेव, णवरं पम्हलसुमालाए जाव मउडं पिणिद्धेंति।

तदणं० दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गंधेहिं गाताइं भुकुंडेंति, दिव्वं च सुमणदामं पिणद्धंति, एवं जहा विजयस्स, किं बहुणा?, गंथिमवेढिमजाव कप्परुक्खगंपिव अलंकितविभूसितं करेंति देवा। तए णं से राया कोडुंबिए एवं वयासी-खिप्पामेव भो! हत्थिखंधवरगता विणीताए सिंघाडग जाव पहेसु महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उस्सुकं उक्करं जाव जणजाणवदं दुवालससंवच्छरितं पमोयं घोसेह। तेऽवि तहेव करेंति जाव पच्चप्पिणंति।

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२०७॥

तए णं से राया सीहासणाओ अब्भुट्ठित्ता इत्थिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं साद्धिं संपरिवुडे पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणेणं पच्चोरुहित्ता जाव गजवतिं दुरूढे, रायमातीवि जेणं दूरूढा तेणं पच्चोरुहंति २ रायाणं तहेव परिवारंति, तए णं अट्ठट्ठमंगलमादि सव्वं भाणियव्वं तहेव जावसिं गच्छंतएणं मज्जणघरअणुप्पवेसो, जाव अट्ठमभत्तं पारेति जाव उप्पिं विहरति। तए णं से राया दुवालससंवच्छरियंसि पमोयंसि निव्वत्तंसि समाणंसि ण्हाते जाव बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगते सोलस य देवसहस्से सक्कारेति संमाणेति सत्थवाहप्पभितयो, सक्कारेत्ता संमाणेत्ता उप्पिं पासादजाव विहरति।

भरहस्स णं रन्नो चक्करयणे छत्त० दंड० असि० एते णं चत्तारि एगिंदियरयणा आयुधसालाए समुप्पन्ना, चम्मरयणे मणि० कागणि० णव य महाणिहओ, एते णं सिरिघरंसि समुप्पण्णा. सेणावतिरयणे गाहावति० वड्ढति० पुरोहित० एते णं चत्तारि मणुयरयणा विणीताए रायहाणीए समुप्पन्ना, आसरयणे हत्थि० एते णं दुवे पंचेंदियरयणा वेयड्ढगिरिपादमूले समुप्पण्णा, इत्थिरयणे उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए समुप्पन्ने, तए णं से भरहे राया महता हिमवंतमलयमंदरजावरज्जं पसाहेमाणे विहरति॥ बितियो गमो रायवन्नगस्स इमो—

तत्थ य संखेज्जकालवासाउए जसंसी उत्तमअभिजातसत्तवीरियपरक्कमगुणे पसत्थवन्नसरसारसंघतणतणुकवुद्धिधारणमेहासंठाणसीलपगती पहाणगोरवच्छायागति अणेगवयणप्पहाणे तेजआउबलविरियजुत्ते अज्झुसिरघणनिचितलोहसकलणारायणवइरउसभसंघयणदेहधारी उज्जुगभिंगारवद्धमाणगभद्दासणसंखच्छत्तवीयणिपडागचक्कणंगलमुसलरहसोत्थियंकुसचंददिव्वअग्गिजूवसागर-

भरतवर्णनं

॥२०७॥

इंदज्झयपुहविपउमकुंजरसीहासणडंडकुम्मगिरिवरतुरंगवरमउडकुंडलणंदावत्तधणुकोंतगागरभेगभवणविमाणअणेगलक्खणपसत्थसुविभत्तचित्तवरकरचरणदेसभागे उद्धामुहलोमजातसुकुमालणिद्धमउयआवत्तपसत्थलोमविरइतासिरिवच्छच्छन्नविउलवच्छे देहखेत्तसुविभत्तदेहधारी तरुणरविरस्सिबोहितवरकमलविबुद्धगब्भवन्ने हयणासणकोसिसन्निभपसत्थपिट्ठन्तणिरुवलेवे पउमुप्पलकुंदजातिजूतवितवरचंपगणागपुप्फसारंगतुल्लगंधी छत्तीसाएवि पसत्थपत्थिवगुणेहिं जुत्तो अव्वोच्छिन्ननवत्तपागडउभओजोणीविसुद्धनियगकुलपुत्तयं देवेंद इव सोमताए णयणमणणिव्वुइकरे अक्खोभे सागरोव्व थिमिते फणवतिव्व भोगसमुदयसहव्वताए समेरु अपराजिते परमविक्कमगुणे अमरवतिसमाणसरिसरूवे मणुयवती भरहचक्कवट्टी चोद्दसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं सोलसण्हं देवसहस्साणं बत्तीसाए रायसहस्साणं बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए बत्तीसतिबद्धाणं णाडगसहस्साणं तिण्हं तेसट्ठाणं सूयसताणं अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउरासीए आससयसहस्साणं चउरासीए दंतिसयसहस्साणं चउरासीए रहसयसहस्साणं छण्णवइमणुस्सकोडीणं बावत्तरीए पुरवरसहस्साणं बत्तीसाए जणवयसहस्साणं छन्नउइगामकोडीणं णवणउतीए दोणमुहसहस्साणं अडयालीसाए पट्टणसहस्साणं चउव्वीसाए कव्वडसहस्साणं चउवीसाए मडंबसहस्साणं वीसाए आगरसहस्साणं सोलसण्हं खेडगसयाणं चोद्दसण्हं संवाहसहस्साणं छप्पन्नाए अंतरोदगाणं एगूणपन्नाए कुरज्जाणं विणीताए रायहाणीए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहवासस्स अन्नेसिं च बहूणं रादीसर जाव सत्थवाहप्पभितीणं आहेवच्चं मट्ठित्तं जाव पालेमाणे ओहतविहतेसु कंटएसु उद्धितमलितेसु सव्वसत्तूसु णिज्जितेसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चियंगमंगे वरहाररयितवच्छे वरमउडविसिट्ठए वरवत्थचारुभूसणधरे सव्वोउयसुरभिकुसुमवरमल्लसोभितसिरे वरणाडगणाडइज्जवरभोगसंप-

ललिते वरइत्थीगुम्म सद्धिं संपरिवुडे सव्वोसहिसव्वरयणसव्वसमितिसमग्गे संपुन्नमणोरहे हतामित्तसत्तुपक्खे पुव्वकततवप्पभावणिव्विट्ठसंचितफले भुंजति माणुस्सए सुभे भरहणामधेज्जो ।

एवं जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए भरहोवयणे तहा सव्वं भाणियव्वं । एवं जाहे बारस वरिसाणि महारायाभिसेगो वत्तो रायाणो विसज्जिता ताहे णियगवग्गं सारिउमारद्धो, ताहे दाइज्जंति सव्वे णीयल्लगा, एवं पडिवाडीए सुंदरी दाइता, सा पंडुल्लुइतमुही, सा य जदिवसं रुद्धा चेव तद्दिवसमारद्धा चेव आयंबिलाणि करेति, तं पासित्ता रुट्ठो ते कोडुंबिये भणति- किं मम णत्थि, जं एसा एरिसी रूवेणं जाता ?, वेज्जा वा नत्थि ?, तेहिं सिट्ठं- जहा आयंबिलेण पारेति, ताहे तस्स पयणुरागो जाओ, भणति- जदि तातं भजसि तो वच्चतु पव्वयतु, अह भोगट्ठी तो अच्छतु, ताहे पादेसु पडिता विसज्जिया पव्वइया ।

अन्नया भरहो तेसिं भातुगाणं पत्थवेति, जहा- ममं रज्जं आयाणह, ते भणंति- अम्हवि रज्जं ताएहिं दिन्नं तुज्झवि, एतु ता तातो ताहे पुच्छिज्जिहित्ति, जं भणिहीति तं काहामो ।

तेणं समएणं भगवं अट्ठावयमागतो विहरमाणो, एत्थ सव्वे कुमारा समोसरिता, ताहे ते भणंति- तुब्भेहिवि दिन्नाइं रज्जाइं णे हरति भाया, ताहे भणंति- अम्हे णं किं करेमो-किं जुज्झामो उदाहु आयाणामो ?, ताहे सामी भोगेसु नियत्तावेमाणो तेसिं धम्मं कहेति- ण मुत्तिसरिसं सुहं अत्थि, ताहे इंगालदाहगदिट्ठंतं कहेति, जहा—

एगो इंगालदाहगो, सो एगं भायणं पाणियस्स भरेऊण गतो, तं तेण उदगं णिट्ठवितं, उवरिं आदिच्चो पासे अग्गी पुणो परिस्समो दारुगाणि कोट्टेंतस्स घरं गतो, तत्थ पाणितं पीतो, एवं असब्भावपट्ठवणाए कूवतलागणदिदहसमुद्दा य सव्वे पीता, ण य

तण्हा छिज्जति, ताहे एगंमि तुच्छकुहितविरसपाणिए जुन्नकूवभिरिंडे तणपूलितं गहाय उस्सिंचति, जं पडितसेसं तं जीहाए लिहति, से केस णं?, एवं तुब्भेहिवि अणंतरं सव्वट्ठे अणुत्तरा सव्वेऽवि सव्वलोए सद्फरिसा अणुभूतपुव्वा तहवि तित्तिं ण गता, तो णं इमे माणुस्सए असुइए तुच्छे अप्पकालिए विरसे कामभोगे अभिलसह, एवं वेयालीयं णाम अज्झयणं भासति, 'संबुज्झह किन्न बुज्झह' एवं अट्ठाणउईए वित्तेहिं अट्ठाणउई कुमारा पव्वइता, कोइ पढमिल्लुएण संबुद्धे कोति बितिएणं तातिएणं०। जाहे ते सव्वे पव्वइता ताहे भरहेण बाहुबलिस्स पत्थवितं, ताहे सो ते पव्वइते सोऊण आसुरत्तो भणति- ते बाला तुमे पव्वाविता, अहं पुण जुद्धसमत्थो, किं वा ममंमि अजिते तुमे जितंति?, ता एहि अहं वा राया तुमं वा?, ताहे ते सव्वबलेण दोवि देसंते मिलिया, ताहे बाहुबलिणा भणितं- किं अणवराहिणा लोगेण मारिएण ?, तुमं अहं च दुयगा जुज्झामो, एवं होउत्ति, तेसिं पढमं दिट्ठिजुद्धं जातं, तत्थ भरहो पराजितो, पच्छा वायाए, तहिंपि भरहो पराजितो, एवं बाहुजुद्धेऽवि पराजितो, ताहे मुट्ठिजुद्धं जायं, तत्थवि पराजितो, ताहे सो एवं जिव्वमाणो विधुरो अह णरवती विचिंतेति-किं मन्ने एस चक्की जह दाणिं दुब्बलो अहयं, तस्सेवं संकप्पे देवता आउहं देंति डंडरयणं, ताहे सो तेण गहितेण धावति, बाहुबलिणा दिट्ठो गहितदिव्वरयणो, सगव्वं चिंतितं च अणेण-सममेतेणं भंजामि एतं, किं पुण तुच्छाण कामभोगाण कारणा?, भट्ठणिययपइन्नं मम अइवाइतुं ण जुत्तं, सोहणं मम भाउएहिमणुट्ठियं, धिरत्थु भोगाणं, जदि भोगा एरिसा अलाहि मम भोगेहिं, भावो, णहू जुज्झीहं अहंमजुज्झे पवत्तंमि, ताहे सो भणति- एतं ते रज्जं, अहं पव्वयामि, तेण तहिं भरहेण बाहुबलिस्स पुत्तो रज्जे ठवितो, पच्छा बाहुबली चिंतेति-अहं किं तायाणं पासं वच्चामि ?, इहं चेव अच्छामि जाव केवलणाणं उप्पज्जति। एवं सो पडिमं ठितो, पव्वयसिहरो सामी जाणति तहवि ण पत्थवेति, अमूढ-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

लक्खा तित्थगरा, ताहे संवच्छरं अच्छति काउस्सग्गेणं वल्लीवितारणेण वेढितो पादा य वम्मिएण, पुन्ने संवत्सरे भगवं बंभी-सुंदरीओ पत्थवेति, पुव्विं ण पत्थिताओ जेण तदा सम्मं ण पडिवज्जिहिति, ताहे सो मग्गंतीहिं वल्लीहि य तणेहि य वेढितेण य महल्लेणं कुच्चेणं तं दट्ठूणं वंदितो ताहिं, इमं च भणितो- 'ण किर हत्थि विलग्गस्स केवलनाणं उप्पज्जइ'। एवं भणिऊण गताओ। ताहे सो पचिन्तितो 'कहिं एत्थ हत्थी ?, तातो य अलियं न भणंति।' एवं चिंतितेण णातं, जहा माणहत्थी अत्थित्ति, को य मम माणो ?, तं वच्चामि भगवं वंदामि ते य साहुणोत्ति, पाओ उक्खित्तो, केवलनाणं च उप्पन्नं, ताहे गंतूणं केवलिपरिसाए ट्ठितो। भरहोऽवि रज्जं भुंजति ताव मिरीयी सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जितो।

अह अन्नया कयाती० ॥ ३ ॥ १३७ ॥ मेरुगिरि० ॥ ३ ॥१३८॥ एवं विचिंतयंतस्स० ॥ ३ ॥ १३९ ॥ सो माणेण ण तरति गिहत्थत्तणं काउं, इहेव तल्लेसाए अच्छामित्ति इमं कुलिंगं विचिंतेति—

समणा तिदंडविरया० ॥ ३ ॥ १४० ॥ मणाई दंडो, अहं च एतेण पराजितो, तम्हा एते चेव वट्टामि वरं संभरंतो एतं मम चिंधं,

लोइंदियमुंडा संजता अहगं खुरेण ससिहाओ। थूलगपाणवहाओ वेरमणं मे सदा होउ॥ ३ ॥ १४१ ॥

इंदिएहिवि मज्झ इंदियाणि ण मुंडियाणि तो इंदिएहिं अमुंडिएहिं किं मम दव्वमुंडेणं ? तम्हा मम छिहली भवतु, खुरेण य करेमि, साधुणो य सव्वतो सव्वविरया, अहं च देसाओ करेमि।

निक्किंचणा य समणा मज्झ य किंचणं कज्जेसु। पवित्तयं भवतु किंचणियावि भवतु (॥ ३ ॥ १४२ ॥)

मरीचेर-धिकारः

भगवंत महावीरस्य तृतीय-भव मरीचि:, तस्य अधिकारो अत्र वर्तते

साधू सीलसुगंधा, अहगं च सीलेण दुग्गंधो, अहं वासेमि वत्थाणि सरीरगं च ।

ववगतमोहा समणा० गाथा ॥ ३ ॥ १४३ ॥ मोहो णाम अन्नाणं । सुक्कंबरा य समणा ० गाथा ॥३।१४४॥

सुक्कंबरा णिरंबरा य साधुणो, मम कासायाणि भवंतु सकसायस्स ।

वज्जेति वज्जभीरू० गाथा ॥ ३ १४५ ॥ वज्जणं नाम कम्मं तस्स भीता वज्जभीरू, बहूहिं जीवेहिं समाउलं जलारंभं, होउ मम परिमितेणं जलेण ण्हाणं च पियणं च, सव्वं मुसावायं, सव्वं अदिन्नादाणं, सव्वं बंभचेरं परिग्गहाओ सव्वतो इय विरतो।

एवं सो भइयमती० गाथा ॥ ३ ॥ १४६ ॥ तद्धितैर्हेतुभिर्युक्तं तस्स हिता तद्धिता सुट्ठु जुत्तां श्लिष्टमित्यनर्थांतरं, परिव्राजामिदं पारिव्राजं, पवत्तेति, सो तेसिं मज्झे उब्भट्ठो दीसति तेण तस्स पासे सव्वो अल्लियति, जया तं पुच्छति ताहे अणगारधम्मं पन्नवेति, ताहे ते भणंति-किं तुमं ण करेसि ?, सो भणति-अहं ण तरामि मेरुगिरीसमभारे, जाहे तेण ते अक्खित्ता भवंति ताहे सामिस्स उवट्ठवेति । एवं सो तित्थगरेण समं विहरति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं भगवतो, ताहे भरहो रज्जं ओयवेत्ता ते य भाउए पव्वइए णाऊणं अद्धितीए भणति-किं मम इयाणिं भोगेहिं? अद्धितिं करेति, **किं ताए पीवराएवि सिरीए ? जा सज्जणा ण पेच्छति० (गाथा)** जदि भातरो मे इच्छंति तो भोगे देमि, भगवं च आगतो, ताहे भाउए भोगेहिं निमंतेति, ते ण इच्छंति वंतं असितुं, ताहे चिंतेति-एतेसिं चेव इमाणिं परिचत्तसंगाणं आहारादिदाणेणावि ताव धम्माणुट्ठाणं करेमीति पंच सयाणि सगडाण भरेऊणं असणं ४ ताहे निग्गतो, वंदिऊणं निमंतेति, ताहे सामी भणति-इमं आहाकम्मं पुणो य आहडं ण कप्पति साधूणं, ताहे सो भणति-ततो मम पुव्वपव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

त्तापि गेण्हंतु, तंपि ण कप्पति रायपिंडोत्ति, ताहे सो महदुक्खेण अभिभूतो भणति-सव्वभावेण अहं परिचत्तो तातेहिं, एवं सो ओहयमणसंकप्पो अच्छति, एत्थ य अंतरा सक्को देविंदो देवराया एयस्स अद्धितिं अवणेमित्ति ओग्गहं पुच्छति, सामी कहेति, पंचविहे उग्गहे--देविंदोग्गहे रायोग्गहे गिहवति० सागारिए० साहम्मिउग्गहे, ते पुण उत्तरुत्तरिया, देविंदोग्गहे रायोग्गहेण बाहिते ताहे सक्को भणति 'जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा णिग्गंथा विहरंति एतेसि णं अहं ओग्गहं अणुजाणामित्ति वंदित्ता सुस्सूसति, ताहे भरहो भणति-अणुजाणामि जे भरहे वासे समणा णिग्गंथा०, ताहे सो तं भत्तपाणं आणीतं भणति किं कायव्वं ?, ताहे सक्को भणति-जे तव गुणुत्तरा ते पूएहि, ताहे तस्स चिंता जाता, जातिकुलबलपरिभोगेहिं णत्थि ममाहिंतो गुणुत्तरो, साहुणो गुणुत्तरा एए अम्हे निच्छंति, ताहे तस्स पुणोऽवि चिंता जाया, जहा-ममाहिंतो सावगा गुणुत्तरा, ताहे तं सावगाणं दिन्नं ।

ताहे सो सक्कं भणति-तुब्भेहि केरिसेण रूवेण तत्थ अच्छह?, ताहे सक्को भणति-ण सक्का तं माणुसेण दट्ठुं,ताहे सो भणति-तस्स आकितिं पेच्छामि, ताहे सक्को भणति-जेण तुमं उत्तमपुरिसो तेण ते अहं दाएमि एगपदेसं, ताहे एगं अंगुलिं सव्वालंकारविभूसितं काऊण दाएति, सो तं दट्ठूण अतीव हरिसं गतो, ताहे तस्स अट्ठाहियं महिमं करेति ताए अंगुलीए आकितिं काऊण, एस इंदज्झयो, एवं वरिसे वरिसे इंदमहो पव्वत्तो पढमउस्सवो। भरहो भणति-'तुम सि देविंदो, अहं मणुस्सिंदो, मित्तामो, एवं होउ ।

ताहे भरहो सावए सद्दावेत्ता भणति 'मा कम्मं पेसणादि वा करेह, अहं तुब्भं वित्तिं कप्पेमि, तुब्भेहिं पढंतेहिं सुणंतेहिं जिणसाधुसुस्सूसणं कुणंतेहिं अच्छियव्वं, ताहे ते दिवसदेवसियं भुंजंति, ते य भणंति-जहा तुब्भं जिता अहो भवान् वर्द्धते भयं मा हणाहित्ति, एवं भणितो संतो आसुरुत्तो चिन्तेति-केण हि जितो ?, ताहे से अप्पणो मती उप्पज्जति कोहादिएहिं जितो मित्ति, एवं

माहनोत्पात्तः

॥२१३॥

भोगपमत्तं संभारेंति, ताहे तस्स धम्मज्झाणं भवति किंचि कालं जाव सद्दाहिसु ण अक्खिप्पति, ताहे तं लोगेणं भुञ्जितुमारद्धं, ते महाणसिया जाणंति इमा अणवत्था, ताहे उवट्ठिता भरतरायिणो, ताहे राया भणति-पुच्छिज्जंतु को भवान् ?, श्रावकः ?, ताहे जे सावगा महंता ते पुच्छज्जंति-को भवान् ? श्रावकः, श्रावकाणां कति व्रतानि ?, अस्माकं व्रतानि न सन्ति, अस्माकं पंच अनुव्रतानि सप्त शिक्षापदानि, ताहे पंचसु अणुव्वएसु सत्तसु सिक्खावएसु जे णिक्खमणपवेसं जाणंति तं जुतका कता, पच्छा रज्जो उवणीता, ते सव्वे कागणिरयणेण लंछिता, पुणरवि वुत्ता-छण्ह छण्ह मासाणं अणुयोगो जहा भवति, एवं ते उप्पन्ना माहणा णाम, जे तेसिं पुत्ता उप्पज्जंति ते साहूणं उवणिज्जंति, जति णित्थरंति तो लट्ठं,अहं न णित्थरंति ताहे अभिगयाणि सड्ढाणि भवंति, अन्नोऽवि जो कोऽवि तत्थ उवट्ठाइ तंपि ते उवणेति भरहस्स, ताहे सो काकणिरयणेण अंकिज्जति, जेऽवि ते चेडा निम्माया भवंति तेसिंपि भरहो कागणिरयणेण चिंधं करेति, पुणरवि वुं (भु) त्ता जहा छण्हं छण्हं मासाणं अणुओगो भवति । एवं ते उप्पन्ना माहणा, कामं जदा आइच्चजसो जातो तदा सोवन्नियाणि जन्नोवइयाणि । एवं तेसिं अट्ठ पुरिसजुगाणि ताव सोवन्नियाणि । राया आइच्चजसे, महाजसे अतिबले य बलभद्दो । बलविरिय कत्तविरिते, जलाणाविरि दंडाविरिए य ॥ ३ ॥ १५० ॥

एतेहिं अट्ठहिं राइहिं जो उसभसामिस्स महामउडो आसि सो चातितो वोढुं, सेसेहिं न चाइओ । एत्थंतरे चित्तंतरगंडिता विभासियव्वा जाव सगरो जातोत्ति । आदिच्चजसादीहिं अट्ठहिं अट्ठभरहं भुत्तं , सेसेहिं भयणा ॥

एवं अस्सावगपडिसेहे छट्ठे छट्ठे य मासि अणुओगो । कालेण य मिच्छत्तं [जओ] जिणंतरे साधुवोच्छेदो ॥ ३ ॥ १५२ ॥ दाणं च० चिरंतनगाथा ॥ ३ ॥ १५३ ॥ भरहेण दिन्नं, लोगोऽवि दातुं पवत्तो भरहपूजितत्ति-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

काउं, आरिया वेदा कता भरहादीहिं तेसिं सज्झातो होउत्ति, तेसु वेदेसु तित्थगरथुतीओ जतिसावगधम्मो संतिकम्मादि य वन्निज्जति, अणारिया पुण पच्छा सुलसायाज्ञयवल्क्यादिभिः कृता ॥ इति पुच्छात्ति दारं ॥

पुणरवि समोसरणे० ॥ ३ ॥ १५४॥ जिण चक्कि० ॥ ३ ॥१५५॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं अट्ठावयमागतो विहरमाणो, समोसरणं, भरहो णिग्गओ महिड्ढिए, वंदित्ता जिणिंदमहिमं पेच्छंतो पुच्छति, जहा–ताता ! जारिसया लोगगुरू केवली तुम्भे सरिसया एत्थ किमन्नेवि भविस्संति ?, आमं, भगवं ! केवतिया ?, अह भणति जिणवरिंदो एरिसिया तेवीसं अजितादि, तेसिं वन्नो पमाणं णामं गोत्ताइं आयुआइं मातिपितरो परियायो गती य सव्वा वत्तव्वया विभासियव्वा ।

ताहे पुच्छति जारिसोमि अहं एरिसा अन्ने ताता !, अह भणति--एक्कारस सगरादि होहिंति, तेसिं वन्न पमाणादि । ताधे सामी इमाणि णव जुगलगाणि अपुट्ठो चेव वागरेति । णव बलदेवा णव वासुदेवा । वन्नादि धम्मायरिया, को वा कहिं तित्थगरे अंतरे वा सव्वा वत्तव्वता विभासियव्वा ।

उसभे भरहो अजिते सगरो मघवं सणंकुमारो य । धम्मस्स य संतिस्स य, जिणंतरे चक्कवट्टिदुगं ॥ ३-२१३ ॥
संती कुंथू य अरो अरहंता चेव चक्कवट्टी य । अरमल्लि अंतरंमि य । हवति सुभूमो य कोरव्वो ॥ ३-२१४ ॥
मुणिसुव्वए णमिंमि य होंति दुवे पउमनाभ हरिसेणा । णमिणेमिसु जयनामा अरिट्ठपासंतरे बंभो ॥ ३-२१५ ॥
पंच सत अद्धपंचम, बायाला चेव अद्धधणुयं च । चत्ता दिवड्ढ धणुयं च चउत्थे पंचमे चत्ता ॥

चक्रिवासुदेवादिः

॥२१५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पणुतीसा तीसा पुण अट्ठावीसा य वीस धणुगाणि । पन्नरस बारसेवय अपच्छिमा सत्त य धणूणि ॥
एस ताव उस्सेहो चक्कीणं, इयाणिं आउगं तेसिं ।

चउरासीति बावत्तरी य पुव्वाण सयसहस्साइं । पंच य तिन्नि य एगं च सयसहस्सा उ वासाणं ॥
पंचणउतिसहस्सा चउरासीती य अट्ठमे सट्ठी । तीसा य दस य तिन्नि य अपच्छिमे सत्त वाससया ॥
एवं ता आयुगं गतं, इयाणिं गती-'अट्ठेव गता मोक्खं' ॥

पंचऽरिहंते वंदंति केसवा पंच आणुपुव्वीए । सेज्जंस तिविट्ठादी धम्म पुरिससीह पेरंता ॥ ३-२०६ ॥
अरमल्लिअंतरे दोन्नि केसवा पुरिसपोंडरिय दत्ता । मुणिसुव्वयणमि अंतरे णारायण कण्ह नेमिमि ॥ ३-२०७ ॥
पढमो धणूणमसिती सत्तरि सट्ठी य पन्न पणयाला । अउणत्तीसं च धणू छव्वीसा सोलस दसेव ॥
उच्चत्तं गतं—चउरासीति बिसत्तरि सट्ठी तीसा य दस य लक्खाइं । पन्नट्ठि सहस्साइं छप्पन्ना बारसेगं च ॥
आउगं गतं —एगो य सत्त० (३-२००) । ॥ अणिदाणकडा० (३-२०१) । ॥ अट्ठंतकडा रामा० (३-२०२) । ॥
चक्किदुगं हरिपणगं पणगं चक्कीण केसवो चक्की । केसव चक्की केसव दुचक्कि केसी य चक्की य ॥३-२०८ । तिविट्ठ० (३-४० भा.) अयले (३-४१) आसग्गीवे (३-४२) । ॥ एते खलु पडिसत्तू० (३-४३ भा.) । ॥ इयाणिं जो चक्कवट्टी वासुदेवो वा जेमि जिणंतरे आसि तं भण्णति, एतेण संबंधेण जिणंतराणि कालतो णिदंसिज्जंति । तं जहा—

वासुदेव और बलदेवानां वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

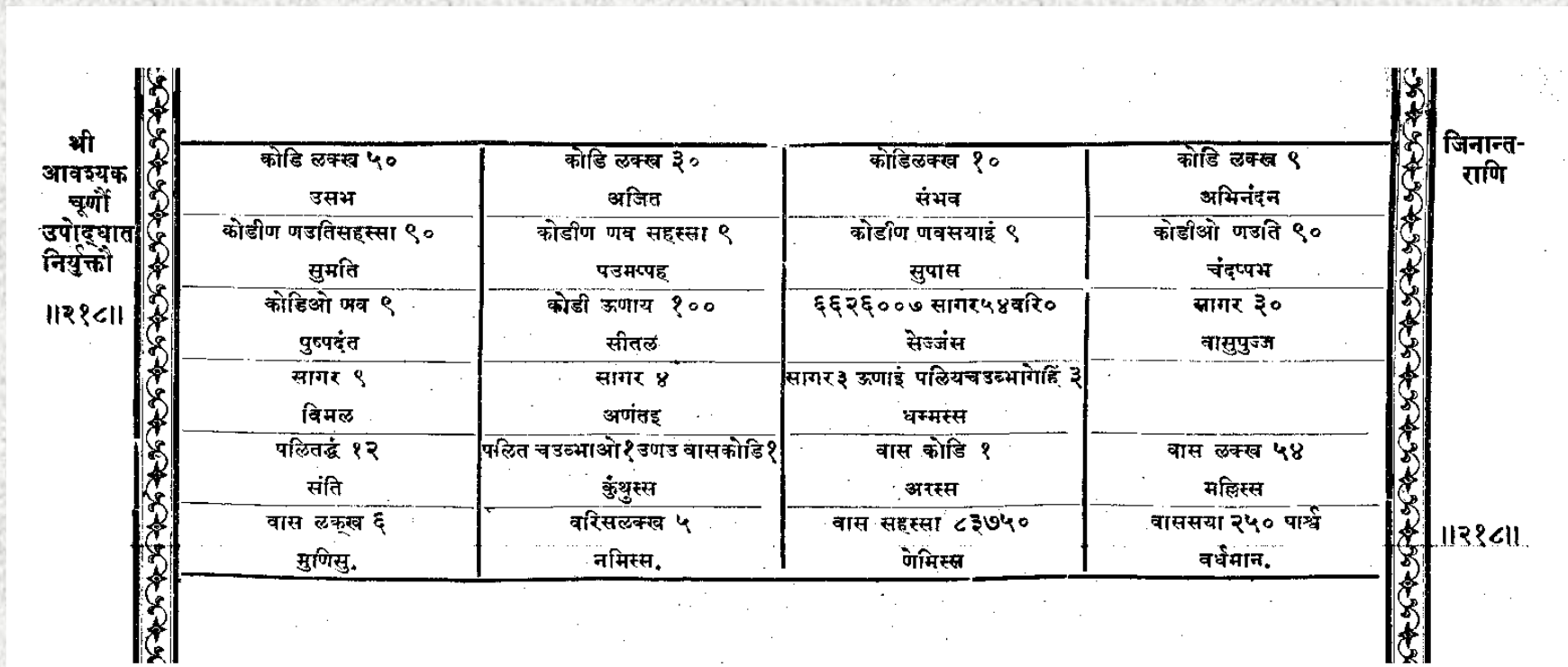
उसभो वरवसभगती ततियसमापच्छिमंमि कालंमि । उप्पन्नो पढमजिणो भरहपिता भारहे वासे ॥ १ ॥ पन्नासा लक्खेहिं कोडीणं सागराण उसभाओ । उप्पन्नो अजियजिणो ततिओ तीसाए लक्खेहिं ॥ २ ॥ जिणवसभसंभवाओ दसहिं लक्खेहिं अयर-कोडीणं । अभिणंदणो य भगवं एवइकालेण उप्पन्नो ॥ ३ ॥ अभिणंदणाओ सुमती णवहिं लक्खेहिं अयरकोडीणं । उप्पन्नो सुहपन्नो सुप्पभनामस्स वोच्छामि ॥ ४ ॥ णउईय सहस्सेहिं कोडीणं सागराण पुन्नाणं । सुमतिजिणाओ पउमो एवति कालेण उप्पन्नो ॥ ५ ॥ पउमप्पभनामाओ णवहिं सहस्सेहिं अयरकोडीणं । सुहपुन्नो संपुन्नो सुपासनामो समुप्पन्नो ॥ ६ ॥ कोडीसएहिं णवहिं उ सुपासणामा जिणो समुपन्नो । चंदप्पभो पभाए पभासयंतो उ तेलोक्कं ॥ ७ ॥ णउतीय तु कोडीहिं ससीत सुविहिजिणो समुप्पन्नो । सुविहिजिणाओ णवहिं कोडीहिं सीतलो जातो ॥ ८ ॥ सीतलजिणाउ भगवं सेज्जंसो सागराण कोडीए । सागरसय-ऊणाए वरिसेहिं तथा इमेहिं तु ॥ ९ ॥ छव्वीसाए सहस्सेहिं चेव छावट्ठिसयसहस्सेहिं । एतेहिं ऊणिया खलु कोडी मग्गिल्लिया होति ॥ १० ॥ चउपन्ना अयराणं सेज्जंसाओ जिणो उ वसुपुज्जो । वसुपुज्जाओ विमलो तीसहिं अयरेहिं उप्पन्नो ॥ ११ ॥ विमलजिणा उप्पन्नो णवहिं तु अयरेहि अणंतइजिणोवि । चउसागरणामेहिं अणंतईओ जिणो धम्मो ॥ १२ ॥ धम्मजिणाओ संती तिहिं तिचउभागपलियऊणेहिं । अयरेहिं समुप्पन्नो पलियद्धेणं तु कुंथुजिणो ॥ १३ ॥ पलियचउब्भागेणं कोडिसह-स्सूणएण वासाणं । कुंथूओ अरणामा कोडिसहस्सेण मल्लिजिणो ॥ १४ ॥ मल्लिजिणाओ मुणिसुव्वओऽवि चउपन्नवासलक्खेहिं । सुव्वयनामातो णमी लक्खेहिं छहिं तु उप्पन्नो ॥ १५ ॥ पंचहिं लक्खेहिं ततो अरिट्ठनेमी जिणो समुप्पन्नो । तेसीतिसहस्सेहिं सतेहिं अद्धट्ठमेहिं वा ॥ १६ ॥ नेमीओ पासजिणो पासजिणाओ य होइ वीरजिणो । अड्ढाइज्जसएहिं गतेहिं चरिमो समुप्पन्नो ॥१७॥ ठवणा

अत्र भगवंत ऋषभात् आरभ्य भगवंत वीर पर्यन्त जिनानाम् अन्तरं दर्शयते ।

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१८॥

कोडि लक्ख ५०	कोडि लक्ख ३०	कोडिलक्ख १०	कोडि लक्ख ९
उसभ	अजित	संभव	अभिनंदन
कोडीण णउतिसहस्सा ९०	कोडीण णव सहस्सा ९	कोडीण णवसयाइं ९	कोडीओ णउति ९०
सुमति	पउमप्पह	सुपास	चंदप्पभ
कोडिओ णव ९	कोडी ऊणाय १००	६६२६००७ सागर५४वरि०	सागर ३०
पुप्पदंत	सीतल	सेज्जंस	वासुपुज्ज
सागर ९	सागर ४	सागर३ ऊणाइं पलियचउब्भागेहिं ३	
विमल	अणंतइ	धम्मस्स	
पलितद्धं १२	पलित चउब्भाओ१उणउ वासकोडि१	वास कोडि १	वास लक्ख ५४
संति	कुंथुस्स	अरस्स	मल्लिस्स
वास लक्ख ६	वरिसलक्ख ५	वास सहस्सा ८३७५०	वाससया २५० पार्श्व
मुणिसु.	नमिस्स.	णेमिस्स	वर्धमान.

जिनान्त-राणि ॥२१८॥

एत्थ य असंमोहत्थं जिणचक्किवासुदेवाणं जो जम्मि काले अंतरे वा जं वा पमाणं आयुं वा एयस्स सुहपरिन्नाणत्थं इमो उवाओ–बत्तीसं धरयाइं काउं तिरियाययाहिं रेहाहिं । उड्ढायहाहिं काउं पंच धरयाइं तो पढमे ॥ १ ॥ पन्नरस जिण निरंतर सुन्न दुगं ति जिण सुन्नतियगं च। दो जिण सुन्न जिणिंदो सुन्न जिणो सुन्न दोन्नि जिणा॥२॥ बितियपंतिठवणा-दो चक्की सुन्न तेरस पण चक्की सुन्न चक्की दो सुन्ना । चक्की सुन्न दु चक्की सुन्नं चक्की दुसुन्नं च ॥ ३ ॥ ततियपंतिठवणा–दस सुन्न पंच केसव पण सुन्नं केसी सुन्न केसी य । दो सुन्न केसवोऽविय सुन्नदुगं केसव तिसुन्नं ॥४॥ चउत्थपंतीए पमाणं पुव्वभणितं, पंचमपंतीए आउयं तहेव, तत्थ इमा ठवणा (४४ भा.) अह भणति णरवरिंदो

तत्थ मिरीई नामं० (३-२०९) तं दाएइ (३-२१०) आदिगरो दसाराणं० (३-२११) पोतणाणामं णगरी तस्स पहाणा, तहा महाविदेहे मूयाए णगरीए पियमित्तो णाम चक्कवट्टी ।

तं वयणं सोऊणं (३-२१२) अंचिताणि तणूरुहाणि-रोमाणि सरीरे जस्स ' सो विणएणमुववओ० (३-२२३) तिक्खुत्तोत्ति त्रिकृत्वः तिन्नी वारे इत्यर्थः । वग्गुत्ति वा वायात्ति वा वयणंति वा एगट्ठा ॥

लाभा हु ते सु० (३-२१४) लाभा नाम लाहगा । दस चोद्दसमो णाम चउव्वीसतिमो ।

आदिगरो दसाराणं (३-२११) णवि ते पारिव्वज्जं वंदामि अहं, इमं च ते जम्मं । जं होहिसि तित्थगरो अपच्छिमो तेण वंदामि ॥ (३-२१५)

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥२२०॥

शलाकायंत्रं

ऋषभ	अजित	संभव	अभिनंदन	सुमति	पद्म	सुपार्श्व	चंद्र	सुविधि	शीतल	श्रेयांस	वासुपूज्य	विमल	अनन्त	धर्म	०	०
भद्र	सगरो	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मघवा	सनत्कुमा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तिविठू	दुविठू	सयंभू	पुरिसोत्तम	पुरिस०	०	०
५००	४५०	४००	३५०	३००	२५०	२००	१५०	१००	९०	८०	७०	६०	५०	४५	४२	४०॥
८४पूर्वलक्ष	७२	६०	५०	४०	३०	२०	१०	२	१	८८लक्षवर्ष	७२	६०	३०	१०	५	३
संति-णाहो	कुंथू	अरो	०	०	०	मल्लि	मुणि-सुव्वय	०	णमि	०	नेमि	०	पास	वीरो		
संति-णाहो	कुंथू	अरो	०	सुभूम	०	०	पउम	०	हरिस	जयना	०	बंभदत्त	०	०		
०	०	०	पुरिसपुंड	०	दत्त	०	०	णाराय	०	०	कण्हो	०	०	०		
धणु ४०	धणु ३५	धणु३०	धणुह२९	धणुह२८	धणुह२६	धणुह२५	धणुह२०	धणु. १६	धणु.१५	धणु. १२	धणु.१०	धणु.७	हत्था-९	हत्थ-७		
वरि-सल० १	वाससह-स्स ९५	वास-सह० ८४	वासस० ६५	वाससह-स्स ६०	वासस० ५६	वासस० ५५	वासस० ३०	वासस० १२	वासस० १०	वासस० ३	वासस० १	वाससत ७	वाससया १	वरिस ७२		

॥२२०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

एवन्नं थोऊणं०(३-२२६)तं वयणं सोऊणं०(३-२२७)जदि वासुदेव०(३-२२८)अहयं च दसाराणं पिया य मे चक्कवट्टिवंसस्स। अज्जो तित्थगराणं[पढमोत्ति वट्टति]अहो कुलं उत्तमं मज्झ।(३-२२९)एत्थं नीयागोयं कम्मं निबद्धं। पुच्छति गतं इयाणि नेव्वाणंति दारं—

एवं च सामी विहरमाणो थोवूणगं पुव्वसयसहस्सं केवलिपरियायं पाउणित्ता पुणरवि अट्ठावए पव्वए समोसढो, तत्थ चोद्दसमेण भत्तेण पाओवगतो, तत्थ माहबहुलतेरसीपक्खेणं दसहिं अणागारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे संपलियंकाणिसन्नो पुव्वण्हकालसमयंसि अभिइणा णक्खत्तेणं सुसमदूसमाए एगूणणउतीहिं पक्खेहिं सेसेहिं खीणे आउगे णामे गोत्ते वेयणिज्जे कालगते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। चुलसीतीए जिणवरो समणसहस्सेहिं परिवुडो भगवं। दसहिं सहस्सेहिं समं निव्वाणमणुत्तरं पत्तो ॥१॥ भरहो य तेलोक्कबंधुणा ताएण भत्तं पच्चक्खातान्ति सोतुं परमसोयसंतत्तहिदयो पादेहिं चेव पधाविंतो, सरुहिरकद्दमेहिं य चालिओ, सो तेण परिस्समो न चेव वेइओ, ताहे सामिं वंदित्ता पज्जुवासति परमदुही, तं समयं च णं सक्कस्स आसणचलणं, ओहीए पउंजण, पणामादिकरणं जीतसरणं देवादिआहूयनं जहा जम्मणे जाव देवेहिं देवीहि य संपरिवुडे जाव जेणेव भगवं तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता विमणो णिराणंदे अंसुपुन्ननयणे तित्थगरं तिक्खुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेति, करेत्ता नच्चासन्ने णाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासति। एवं सव्वे देविंदा सपरिवारा जाव अच्चुए आणेयव्वा, एवं जाव भवणवासीणावि इंदा, वाणमंतराणं सोलस,जोइसियाणं दोन्नि, णियगपरिवारा नेयव्वा ' जाव य असुरावासा जाव य अट्ठावओ णगवरिंदो। देवेहि य देवीहि य अविरहियं संचरंतेहि ॥१॥ एवं सव्वेहिं देवावासेहिं, एवं तत्थ भगवंतो देविंदनरिंदेहिं परिवुडा णिव्वुयाचि। इयाणिं कूडा थूभजिणघरे, एत्थ दो गाथा—

अत्र भगवंत ऋषभस्य निर्वाण-वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

णेव्वाण चितगा ( ) एवं निव्वाणं गते भगवंते तएणं से सक्के ते बहवे भवणवातिवाणमंतरजोतिसवेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरह २ ततो चितगाओ रएह, एगा वट्टा पुव्वेणं सामिस्स, एगा तंसा दक्खिणेणं इक्खागकुलुप्पन्नाणं, एगा चउरंसा अवरेणं अवसेसाणं अणगाराणं, तेऽवि तहेव करेंति। तए णं से सक्के आभिओगे देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी—'खिप्पामेव भो ! खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं साहरह, तेऽवि तहेव साहरंति, तते णं से सक्के तित्थगरसरीरगं खीरोदएणं ण्हाणेइ, ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपति २ हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेति नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेति, तए णं भवणवई जाव वेमाणिया गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाणि य खीरोदएण ण्हावेंति सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपंति २ अहयाइं दिव्वाइं चेव देवदूसजुयलाइं नियंसेंति २ सव्वालंकारविभूसियाइं करेंति। तए णं से सक्के बहवे भवणवति जाव वेमाणितादि एवं वयासी-खिप्पामेव भो! ईहामिगउसभतुरग जाव वणलतभत्ति चित्ताओ ततो सीयाओ विउव्वह, एगं सामिस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं, तेऽवि तहेव करेंति। तते णं से सक्के विमणे जाव अंसुपुन्ननयणे सामिस्स विणट्ठजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीयं आरुभति जाव चितगाए ठवेति, तएणं ते बहवे भवणवति जाव वेमाणिया गणहराणं अणगाराण य विणट्ठ जाव सरीरगाइं सीयं आरुभेति जाव चितगाए ठावेंति। तएणं से सक्के अग्गिकुमारे देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता 'खिप्पामेव भो ! तिसुवि चितगासु अगणिकायं विउव्वह, तएणं ते अग्गिकुमारा विमणा निराणंदा अंसुपुन्ननयणा जाव विउव्वंतित्ति, अग्गिकुमारा देवा मुखतो अग्गिं विधा-सृजः, ततःप्रतीतं अग्गिमुखा वै देवाः इति। ताहे तहेव वाउकुमारा वातं विउव्वंति, जाव अगणिकायं उज्जालेंति। तए णं से सक्के ते बहवे भवणवति जाव एवं वयासी—खिप्पामेव भो तिसुवि चितगासु

अगुरुं तुरुक्कं घतं मधुं च मारग्गसो य कुंभग्गसो य साहरह, तेऽवि जाव साहरंति । ताहे मंसं सोणितं च झामितं, तएणं तहेव मेहकुमारा देवा तिन्निवि चितगाओ खीरोदएणं निव्वावंति । ताहे सक्को सामिस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हति, ईसाणो उत्तरिल्लं गेण्हति, चमरो हेट्ठिल्लं दाहिणं बली हेट्ठिल्लं वामं, अवसेसा भवण जाव वेमाणिया जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं गेण्हंति ।

तए णं से सक्के बहवे भवणवति जाव वेमाणिया एवं वयासी--खिप्पामेव भो तओ चेइअथूभे करेह, एगं सामिस्स एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं, तेऽवि तहेव करेंति । तए णं ते बहवे भवणवति जाव वेमाणिया देवा देवीतो य तित्थगरस्स भयवतो परिणिव्वाणमहिमं करेंति, करेत्ता जेणेव णंदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति । एवं जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव महिमाओ करेत्ता जेणेव साइं साइं विमाणाइं जेणेव साइं साइं भवणाइं जेणेव साओ साओ सभाओ सुहम्माओ जेणेव माणवगा चेतितखंभा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणस्स सकहाओ पक्खिवंति पक्खिवित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंतित्ति ।

लोगो य पच्छा छारं संचिणति, तंमि छारेण डोंगरा कता, तप्पभितिं छारेणं डोंगरा लोगो करेइ, लोको सद्धाए तेण छारेण समालभति, कोइ पोंडगाणिं करेति, तप्पभितिं लोगो छारेण समालभतीति, ते च सड्ढा अग्गिसकधादीणि जायंति, ताहे देवेहिं भणितं--इमे केरिसगा जायगा ?, ततो जायगसड्ढो जातो, ताए अग्गिं घेत्तुं ते सएसु सएसु गेहेसु ठवेंति, एवं ते आहियग्गिणो जाता । ते य अग्गिणो जो सामिस्स तणओ सो दोऽवि संकमति, इक्खागाणं तणओ इतरं संकमति, सेसअणगाराणं तणओ ण संकमतित्ति । भरहो य तत्थ चेतियघरं करेति वट्टतिरयणेणं जोयणायामं तिगाउतुस्सेहं सीहनिसादि सिद्धायतणपलिभागं अणेग-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥२२४॥

खंभसयसंनिविट्ठं । एवं जहा वेयड्ढसिद्धायतणं जंबुदीवपन्नत्तीए जाव झता, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि दारा सेता वरकणगथूभितागा जाव पडिरूवा । तेसिं णं दाराणं उभतो पासं दुहतो निसीहिताओ सोलस सोलस चंदणकलसा वन्नओ एवं नेयव्वं जाव सोलस सोलस वणमालाओ अट्ठट्ठमंगलगा। तेसि णं दाराणं पुरतो पत्तेयं २ मुहमंडवे पन्नत्ते, अणेगखंभसय० सभा वन्नओ, तेसिं णं मुहमंडवाणं पत्तेयं पत्तेयं तिदिसिं तओ दारा पन्नत्ता, सेता वरकणगथूभितागा दारवन्नओ, जाव सोलस वणमालाओ । तेसि णं मुहमंडवाणं उल्लोओ पउमलताभत्तिचित्ता जाव भूमिलताभत्तिचित्ता अंतो बहुसम०, तेसिणं मुहमंडवाणं उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलता पन्नत्ता सोत्थिय जाव कत्थती य छत्ता, तेसिं णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पन्नत्ते, मुहमंडवस्स पमाणवत्तव्वया सरिसा जाव बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं अक्खाडए पन्नत्ते, ते णं अक्खाडगा सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं उप्पिं सीहासणा । तासिं उप्पिं विभाये लंबूसा, वन्नतो। तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिया पन्नत्ता सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा । तासिणं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं पत्तेयं चेइयथूभे पन्नत्ते, ते णं चेतियथूभा संखंक जाव सव्वरयणामया अच्छा उप्पिं अट्ठट्ठमंगलता । तेसिणं चेतियथूभाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ मणिमया । तासिं णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ सव्वरयणामतीतो संपलियंकणिसन्नाओ थूभाभिमुहीओ चिट्ठंति, तंजहा—रिसभा वद्धमाणा, चंदप्पभा, वारिसेणा। तेसिणं चेतियथूभाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिता पन्नत्ता सव्वमणिमतीओ । तासिणं पत्तेयं पत्तेयं चेतियरुक्खा वन्नओ जाव लताओ उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलगा । तेसिणं चेइयरुक्खाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिया सव्वमणिमया ।

अष्टापदे चैत्यं

॥२२४॥

अत्र वैताढ्यपर्वत-स्थित शाश्वत-जिनालयस्य वर्णनं क्रियते

तासिं उप्पिं पत्तेयं पत्तेयं महिंदज्झए वइरामए जाव अट्ठट्ठ मंगलगा, तेसिणं महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं णंदापुक्खरणीतो जाव तिसोणपडिरूवगा तोरणाइं। तत्थणं चेइयघरे अडयालीसं दसगा मणोगुलियाणं पुरत्थिमेणं सोलस दसगा, पच्चत्थिमेणं सोलस दसगा दाहिणेणं अट्ठ दसगा उत्तरेणं अट्ठदसगा। तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवन्नरुप्पमया फलगा । एवं जहा सभाए जाव दामा चिट्ठंति । तत्थणं चेइए अडयालीसं दसगा गोमाणसिगाणं पुरत्थिमेणं सोलस जहा मणगुलिया, तासु बहवे सुवन्नरुप्पमता फलगा । फलएसु णागदंता। णागदंतएसु रजतामया सिक्कगा. सिक्कएसु धूवघडिताओ । तत्थणं चेतियउच्छोओ पउमलताभत्तिचित्तो जहा सूरियाभे । तस्स णं चेतियस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे वन्नओ । तस्सणं बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिया सव्वमणिमया जाव पडिरूवा । तीसे णं उप्पिं देवच्छंदए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे। तत्थ णं देवच्छंदए चउवीसाए तित्थगराणं नियगप्पमाणवन्नेहिं पत्तेयं पत्तेयं पडिमाओ कारेति । तासि णं इमेतारूवे वन्नावासे पण्णत्ते, तंजहा-अंकामयाइं णक्खाइं अंतोलोहितक्खपडिसेकाइं तवणिज्जमया हत्थपायतला कणगमया पादा कणगामयीतो जंघाओ कणगमया जाणू कणगामया ऊरु कणगामयीओ गायलट्ठीओ रिट्ठमईओ रोमरातीओ तवणिज्जमयीओ णाभीओ तवणिज्जमया बुब्बुया तवणिज्जमया सिरिवच्छा कणगामतीओ बाहाओ कणगामईओ गीवाओ रिट्ठामयाइं मज्झाइं पवालमया ओट्ठा फालितामया दंता तवणिज्जमतीओ जीहाओ तवणिज्जमया तालुया कणगमतीओ णासाओ अंतोलोहितक्खपडिसेगाओ रिट्ठामयाइं अच्छिपत्ताइं अंकमयाइं अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेकाइं रिट्ठामतीओ पुलकामतीओ दिट्ठीओ रिट्ठामयीओ भुमुकाओ कणगामया कवोला कणगामया सवणा कणगामया णिडालपट्टा, वइरामतीओ सीसघडीओ तवणिज्जमयीओ केसंतभूमीओ रिट्ठमया उवरिमुद्धया । एवं नियगवन्नवि भासा कायव्वा ।

तासिणं जिणपडिमाणं पिट्ठओ एगमेगा छत्तधरा पडिमा हिमरययकुंदेदुप्पगासं सकोरंटमल्लदामं मणिमुत्तसिलप्प-
वालजालं फलिहदंडं धवलं आतपत्तचयं गहाय सलीलं धोरमाणीओ २ चिट्ठंति । तासिणं जिणपडिमाणं उभतो पासं दो दो
चामरधारपडिमाओ चंदप्पभवइरवेरुलियणाणामणिरयणखचितचित्तदंडाओ सुहुमरयतदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमाथियफे-
णपुंजसंनिकासाओ चवलाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयेमाणीओ २ चिट्ठंति । तासिणं जिणपडिमाणं पुरओ दो दो णागपडि-
माओ दो दो जक्खपडिमाओ दो दो भूतपडिमाओ दो दो कुंडधारगपडिमाओ सव्वरयणामयीओ । तत्थ णं देवच्छंदए चउ-
वीसं घंटाओ चउव्वीसं चंदणकलसा, एवं एतेणं अभिलावेणं भिंगारा आदंसा थाला पातीओ सुपइट्ठा मणगुलिया वातकरगा
चित्ता रयणकरंडा हयकंठा गयकंठा णरकंठा जावा उसभकंठा । पुप्फचंगेरीओ एवं मल्लचुण्णगंधवत्थआभरण०चउव्वीसं पुप्फपडला,
एवं जाव चउव्वीसं आभरणपडलगा, चउव्वीसं लोमहत्थगपडलगा, चउव्वीसं सीहासणा, एवं छत्ता चामरा, चउव्वीसं तेल्लसमुग्गा
एवं जाव चउव्वीसं धूवकडुच्छुयाचि । तस्स णं चितियस्स उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा सेया जाव उप्पलहत्थगा य । एवं तं चेइयं अणे-
गखंभसयसंनिविट्ठं अब्भुग्गतसुकतवयरवेइयागं तोरणवररइयसालिभंजियं सुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठितपसत्थवेरुलियविमलखंभं णाणा-
मणिकणगखतितउज्जलबहुसमसुविभत्तभूमिभागं ईहामियउसभतुरगणरमकरविहगवालकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलतपउमलत-
भत्तिचित्तं खंभुग्गतवइरवेइयापरिगताभिरामं विज्जाहरजमलजंतजुत्तमिव अच्चिसहस्समालिणीयं रूवगसहस्सकलितं भिसमीणं
भिब्भीसमीणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं णाणाविहपंचवन्नघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरं
धवलं मिरीयिकवयं विणिम्मुयंतं लातुल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणददरदिन्नपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं चंदणघडसुकत-

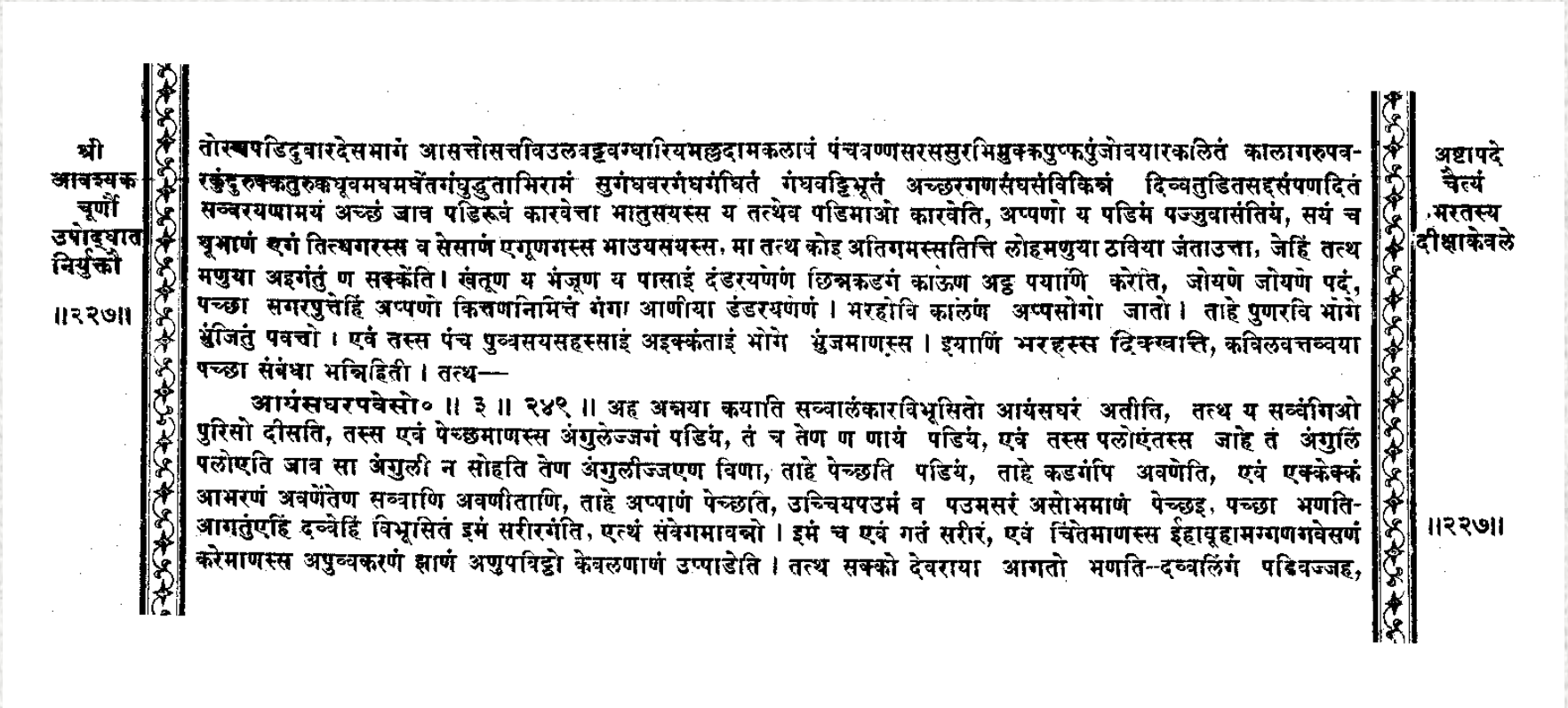
अष्टापदे चैत्यं

॥२२६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२७॥

तोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं कालागरुपवर-रुक्कुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघेंतगंधुद्धुताभिरामं सुगंधवरगंधगंधितं गंधवट्टिभूतं अच्छरगणसंघसंविकिण्णं दिव्वतुडितसद्दसंपणदितं सव्वरयणामयं अच्छं जाव पडिरूवं कारवेत्ता भातुसयस्स य तत्थेव पडिमाओ कारवेति, अप्पणो य पडिमं पज्जुवासंतियं, सयं च भूभाणं एगं तित्थगरस्स व सेसाणं एगूणगस्स भाउयसयस्स, मा तत्थ कोइ अतिगमस्सतित्ति लोहमणुया ठविया जंताउत्ता, जेहिं तत्थ मणुया अइगंतुं ण सक्केंति। खंतूण य भंजूण य पासाइं दंडरयणेणं छिन्नकडगं काऊण अट्ठ पयाणि करेंति, जोयणे जोयणे पदं, पच्छा सगरपुत्तेहिं अप्पणो कित्तणनिमित्तं गंगा आणीया डंडरयणेणं। भरहोवि कालेण अप्पसोगो जातो। ताहे पुणरवि भोगे भुंजितुं पवत्तो। एवं तस्स पंच पुव्वसयसहस्साइं अइक्कंताइं भोगे भुंजमाणस्स। इयाणिं भरहस्स दिक्खत्ति, कविलवत्तव्वया पच्छा संबंधा भन्निहिती। तत्थ—

आयंसघरपवेसो० ॥ ३ ॥ २४९ ॥ अह अन्नया कयाति सव्वालंकारविभूसितो आयंसघरं अतीति, तत्थ य सव्वंगिओ पुरिसो दीसति, तस्स एवं पेच्छमाणस्स अंगुलेज्जगं पडियं, तं च तेण ण णायं पडियं, एवं तस्स पलोएंतस्स जाहे तं अंगुलिं पलोएति जाव सा अंगुली न सोहति तेण अंगुलीज्जएण विणा, ताहे पेच्छति पडियं, ताहे कडगंपि अवणेति, एवं एक्केक्कं आभरणं अवणेंतेण सव्वाणि अवणीताणि, ताहे अप्पाणं पेच्छति, उच्चियपउमं व पउमसरं असोभमाणं पेच्छइ, पच्छा भणति-आगतुंएहिं दव्वेहिं विभूसितं इमं सरीरमिति, एत्थं संवेगमावन्नो। इमं च एवं गतं सरीरं, एवं चिंतेमाणस्स ईहावूहामग्गणगवेसणं करेमाणस्स अपुव्वकरणं झाणं अणुपविट्ठो केवलणाणं उप्पाडेति। तत्थ सक्को देवराया आगतो भणति--दव्वलिंगं पडिवज्जह,

अष्टापदे चैत्ये भरतस्य दीक्षाकेवले

॥२२७॥

अत्र चक्रवर्ती भरतस्य केवलज्ञानस्य वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जाहे णिक्खमणसक्कारं करेमि, ताहे संनिहिताए वाणमंतरीए देवताए लिंगग्गहणं उवट्ठवितं, ताहे सक्केण देविंदेण वंदितो, अन्नेहि य, ताहे भगवं एगं पुव्वसयसहस्सं केवलिपरियागं पाउणित्ता मासिएणं भत्तेणं अपाणगेणं समणेणं णक्खत्तेणं परिनिव्वुए अट्ठावए । भरहसामी दसहिं रायसहसहस्सेहिं सद्धिं पव्वइओ । सेसा णव चक्किणो साहस्सपरिवारा पव्वइया । आइच्चजसो सक्केण अभिसित्तो । एवं अट्ठ पुरिसजुगाणि अभिसित्तत्ति ।

इयाणिं कविलित्ति दारं, तत्थ 'पुच्छंताण कहेती' ॥ ३ ॥ २५० ॥ सो य मिरिती सामिमि परिनिव्वुएवि साधूहिं सयं विहरति, तस्स य विहरमाणस्स जो उवट्ठाति तं पव्वावेऊण साधूणं देति, जाव सो अन्नया कयाती गिलाणो जातो, ताहे साधुणो असंजयस्स वेयावडिया ण कज्जतित्ति तेणं ते ण करेंति, ताहे सो संकिलिट्ठो चिंतेइ--अहो इमे साधुणो निरणुकंपा, इयाणिं जदि उट्ठेमि जो य मे उट्ठावेति तं अप्पणो चेव पव्वावेमि, एवं सो अन्नया रोगविमुक्को विहरति, तत्थ कविलो नाम रायपुत्तो, सो तस्स पासे धम्मं सुणति, इमो य से अणगारधम्मं पन्नवेति, ताहे सो भणति- तुब्भे अन्नहा ठिता, इमं च अन्नहा पन्नवेह, मिरिती भणति- एस साधूणं धम्मो, अहं पावकम्मो ण सक्केमि काउं, सो भणति- एत्थ तुब्भं अत्थि किंचि ?, ताहे सो भणइ- एतेसु अत्थि, इहवि मणागं, एत्थंतरा एएण दुब्भासिएणं संसारो अणेण वड्ढितो कुधम्मं वड्ढंतेण, जेण सागरोवमकोडाकोडिं भमितो ।

तंमूलं संसारो० ॥ ३ ॥ २५२ ॥ सोऽवि कविलो ण किंचि पडिवज्जति साहूणं, ताहे मिरीई चिंतेति- एस साधूणं गाहणं ण गेण्हति, मम य बितिज्जेणं कज्जं तम्हा पव्वावेमि, सो तेण पव्वाविओ । एवं सो तेण समं विहरति, एवं काले वच्चंते अप्पणो

भगवंत वीरस्य कथानक मध्ये कपिलस्य शिष्यत्व-वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

आउक्खए चतुरासीतिं पुव्वसयसहस्से सव्वाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अणालोयियपडिक्कंतो बंभलोए कप्पे दससागरोवमट्ठितीए देवो जातो ४ ॥

सोऽवि कविलो मुक्खो ण किंचि जाणति सत्थं वा पोत्थं वा, जोवि उवट्ठाति ण तस्स कहेतुं जाणति, णवीर आसुरिं पव्वावेति, तस्स आयारगोयरं ववदिसति, एवं जाव सोऽवि कालगतो बंभलोए उववन्नो, ओहिं पउंजति २ आसुरिं पासति, तस्स चिंता जाता, जहा-मम सीसो ण जाणइ कंचि, उवदेसं से देमित्ति सो आगासे पंचवन्नं मंडलं करेत्ता तत्थ ट्ठितो, स च तत्र दर्शयति अव्यक्तप्रभवं व्यक्तं, चतुर्विंशतिप्रकारं ज्ञानं प्रकाशयति, ततः पश्यति अज्ञानावृत्तस्य तत्रैव ग्रलीयते, पश्चात्तत्पृष्टितंत्रं संवृत्तं, एवं कुतित्थं जातं । तं कविलो पढिज्जमिति । इयाणिं जहा कोडाकोडिं भमितो जह य तिविट्ठू वासुदेवो चक्कवट्टी तित्थगरो जातो मिरिती एतं पगतं मिरितीवत्तव्वयं भणति—

इक्खाएसु मिरिई चउरासीतिय बंभलोगंमि । कोसिओ कोल्लागंमी असीतिमायुं च संसारे ॥ ३ ॥ २५३ ॥

एवं सो मिरीयी तातो बंभलोगाओ चइऊणं कोल्लाओ णाम संनिवेसो तत्थ कोसितज्जो बंभणो जातो, तत्थ असीतिं पुव्वसयसहस्साइं परमाउं पालतित्ता ५ संसारं अणुपरियट्टितो. एवं चिरं कालं अणुपरियट्टित्ता थूणाणामं सन्निवेसो, तत्थ पूसमित्तो णाम माहणो आयातो, तत्थ से आउं बावत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं, तत्थवि निव्विन्नकामभोगो परिव्वाओ पव्वतितो ६ । कालमासे कालं किच्चा सोधम्मे उववन्नो अजहन्नुक्कोसट्ठितीओ ७, ततो चुतो चेइए संनिवेसे अग्गिज्जोओ माहणो जातो, चोवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउं, तत्थ परिव्वाओ जाओ ८, ईसाणे उववन्नो अजहन्नुक्कोसट्ठितीओ ९, ततो चुतो मंदिरे संनिवेसे अग्गि-

अथ भगवंत वीरस्य भवानाम् वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

भूतिणाम माहणो छप्पन्नं पुव्वसयसहस्सा सव्वायुं, तत्थवि परिव्वाओ १०, सणंकुमारे मज्झिमट्ठिती उववन्नो ११, ततो चुतो सेयवियाए भारद्दाए उ माहणो जातो, चोतालीसं पुव्वसयसहस्साइं, तत्थवि परिव्वाओ १२, माहिंदे उववन्नो १३, ततो चुतो एत्थंतरे संसारं अणुपरियट्टइ, उव्वट्टिता रायगिहे थावरो माहणो जातो, चोतीसं पुव्वसयसहस्साइं , तत्थवि परिव्वाओ १४, बंभलोए सुरो १५, एताओ छप्पारिवज्जाओ अणुवद्धं, ततो चुतो चिरं संसारं भमिता। ततो भमित्ता रायगिहे णगरे विस्सणंदी, तस्स माता विसाहभूती,सो य जुवराया, तस्स जुवरण्णो धारिणीए देवीए विस्सभूतीत्ति नामेण पुत्तो जाओ, रन्नो पुत्तो विसाहनंदीत्ति।

जातो० । ॥ ३ ॥२५७॥ रायगिहे विस्सनंदी, विसाहभूती य तस्स जुवराया, जुवरन्नो विस्सभूती, विसाहणंदी य इतरस्स, तस्स विस्सभूतिस्स वासकोडी आउं, तत्थ पुप्फकरंडगं णाम उज्जाणं, तत्थ सो विस्सभूती अंतेउरवरगतो सच्छंदसुहं पविहरति, जा सा विसाहणंदिस्स कुमारस्स माया तीसे दासचेडीओ पुप्फकरंडए उज्जाणे पुप्फाणि य पत्ताणि य आणेंति, पेच्छंति य विस्स-भूतिं किड्डंतं, तासिं अमरिसो जातो, ताहे साहंति जहा एवं कुमारो उवलालति, किं अम्हं रज्जेणं वा बलेण वा? जदि विसाहणंदी ण भुंजती भोगे, अम्ह णामं, किं पुण जुवरन्नो पुत्तस्स रज्जं जस्सेरिसं ललितं, सा देवी तासिं अंतियं एवं सोउं ईसाए कोवघरं पविट्ठा, जदि ता रायाए जीवंतेण एस एरिसा अवत्था जाहे राया गतो भविस्सति ताहे एत्थ अम्हे को गणेहिति?, राया गमेति, सा पसादं ण गेण्हति, किं मे रज्जेणं तुमे वत्ति?, ताए कहितं-मम पुत्तो दासो जह अच्छति, संणाविज्जति तहवि ण ठाति, पच्छा तेण अमच्चस्स सिट्ठं, ताहे अमच्चो तं देविं गमेति, तहवि ण ठाति, ताहे सो अमच्चो रायं भणति-मा देवीए वयणाति-क्कमो कीरतु , मा अप्पाणं मारेहिति, को पुण उवातो होज्जा?, ण य अम्ह वंसे अन्नंमि आतिगते उज्जाणं अन्नो अतीति, तत्थ

॥२३०॥

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात-निर्युक्तौ ॥२३१॥

वसंतमासं ठितो मासग्गेसु अच्छति, उवाओ कज्जतु, जो एत्थ य पच्चंतराया तस्स अत्थेण लेहो लिहिज्जतु, अन्ने पुरिसा लेहारिया कीरंतु, ताहे ते लेहारा राउले उवणीता, एवं एतेण कयगेण कूडलेहा रन्नो उवट्ठाविया, ताहे राया जत्तं गेण्हति, कुमारेण सुतं, ताहे भणति—मए जीवमाणे तुब्भे कीस णागच्छह?, ताहे सो गतो, ताहे चेव इमो अइगतो, सो य तं पच्चंतं गतो, किंचि ण पेच्छति उड्डमारंतगं, ताहे आहिंडित्ता जाहे णत्थि कोवि ताहे पुणरवि पुप्फकरंडगं उज्जाणं आगतो। तत्थ दारवाला डंडगहितहत्था भणंति-मा सामी! अतीह, सो भणति-किं निमित्तं?, तेहिं भणितं-एत्थ विसाहणंदी कुमारो रमति, एयमट्ठं सोऊण ताहे कुमरो आसुरुत्तो, तेणं णातं कृतकंति, तत्थ कविट्ठलता अणेगफलभरसमोणता सा मुट्ठिप्पहारेण आहता, जहा तेहिं कविट्ठेहिं भूमी अत्थुता एवं तुब्भं अहं सीसाइं पाडेंतो जादि अहं महल्लपिउणो गोरवं ण करेंतो, अहं भे छव्वेण णीणितो, तम्हा अलाहि भोगेहिं, ततो निग्गतो भोगा अवमाणमूलंति संभूताणं थेराणं अंतियं पव्वइओ। तं पव्वइयं सोउं ताहे राया संतेपुरपरिजणो जुवराया य णिग्गतो, ते तं खमावेंति, णो य सो तेसिं संणतिं गेण्हति, इतरोऽवि बहूहिं छट्ठट्ठमेहिं अप्पाणं भावेमाणो विहरइ। एवं सो भगवं विहरमाणो महुरं णगरिं पत्तो, इमो य विसाहणंदी कुमारो तत्थ मधुराए पितुत्थाए रन्नो अग्गमहिसीए धूता लद्धेल्लिया तत्थ गतओ, तत्थ से रायमग्गे आवासो दिन्नो, सो य विस्सभूती अणगारो मासखमणपारणए हिंडंतो तं देसं आगतो जत्थ ठाणे कुमारो विसाहनंदी कुमारो अच्छति तं देसं पत्तो, तत्थ तेहिं पारिसिच्चएहिं पुरिसेहिं भन्नति-सामी! एतं पव्वइतगं तुब्भे जाणह?, सो भणति-ण जाणामि, तेहिं भणितं-एस विस्सभूतिकुमारो, तं दट्ठूण तस्स ताहे चेव कोवो जातो। तत्थंतरा सो सातियाए गावीए सोल्लितो पडिततो, ते तेहिं उक्कट्ठिकलकलो कतो, इमं च णेहिं भाणियं-तं बलं तुज्झ कवित्थ-

श्रीवीरस्य भवाः

॥२३१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पाडणं च कहिं गतं?, ताहे तेण ततो पलोइतं, दिट्ठो य तेण सो पावो, ताहे अमरिसेणं तं गावि अग्गासिंगेहिं गहाय उड्ढं उव्विहति, सुदुब्बलस्सावि सीहस्स किं सियालेहिं बलं लंघिज्जति ?, ताहे चेव नियत्तो, इमो दुरप्पा मम अज्जवि रोसं ण मुयति, ताहे सो णियाणं करेति, जदि इमस्स तवनियमबंभचेरस्स अत्थि फलं तो आगमेस्साणं अपरिमियबलो भवामि १६, ताहे सो तत्थ अणालोइयपडिक्कंतो महासुक्के उववन्नो १७, तत्थ उक्कोसाट्ठिती । ततो चुतो पोयणपुरे पुत्तो पयावइस्स मियावतीकुच्छिसंभवो, भगवं ! तस्स कहं पयावतित्ति णामं ?, तस्स पढमं रिवुपडिसत्तू णामं होत्था, तस्स भद्दा देवी, तस्स पुत्तो भद्दाए अत्तए अचले णाम कुमारो होत्था, तत्थ अचलस्स भगिणी मियावती णामा दारिया अतीव रूवेण जोव्वणेण य, सा उम्मुक्कबालभावा सव्वालंकारविभूषिता पितुपादवंदिया गता, तेण सा उच्छंगे निवेसाविता, सो तीसे रूवेण य जोव्वणेण य अंगफासंमि य मुच्छितो, तं विसज्जेत्ता पउरजणवयं वाहरति, वाहरेत्ता ताहे भणति—जं एत्थ रत्तं वा रयणं वा उप्पज्जति ते कस्स ?, ताहे ते भणंति-तुब्भं, एवं तिन्नि वारा साविते सा चेडी उवट्ठविया, ताहे ओहयमणसंकप्पा ते निग्गता, ताहे तेसिं सव्वेसिं कूवमाणाणं तेण गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिता, उप्पाइता गणेणं, ताहे सा भद्दा पुत्तेणऽयलेण समं दक्खिणावहे माहेसरिपुरिं निवेसेति, महंतीए इस्सरीएत्ति माहेस्सरी, अयलो तत्थ मातं ठावेत्ता पितुमूलं गतो, ताहे लोगेण पजावतित्ति से णामं कतं, वेदेऽप्युक्तं 'प्रजापतीः स्वां दुहितरमकामयत ।' ताहे महासुक्कातो चुतो तीसे मिगावतीए कुच्छिंसि उववन्नो, सत्त सुविणा दिट्ठा, सुविणपाढएहिं पढमवासुदेवो आदिट्ठो, कालेण जातो, तिन्नि पिट्ठकरंडगा तेण से तिविट्ठुत्ति णामं कतं, माताए उण्हतेल्लेण परिमक्खितो, सो जोव्वणगमणुप्पत्तो । इओ य महामंडलीओ आसग्गीतो राया, सो णेमित्तीं

श्रीवीरस्य भवाः

॥२३२॥

अप्पणो मच्चुं पुच्छति, कतो मम भयंति?, तेण भणियं—जो एतं सीहं मारेहित्ति चंडमेहं दूतं आधरिसेहिति ततो भयं ते, तेण य सुतं—जहा पयावतिस्स पुत्ता महाबलवगा, णेमित्तियादिट्ठगा य, ताहे तं दूतं पयावतिस्स मूलं पेसेति, दूतो संपत्तो, तत्थ य अंतेपुरपेच्छणयं वट्टति, तत्थ दूतो पविट्ठो, राया उट्ठितो, तं पेच्छणयं भग्गं, ते कुमारा पेच्छणगेण अक्खित्तगा भणंति—को एसत्ति?, तेहिं भणितं-जहा अहिरण्णो दूतोत्ति, तेहिं भणितं—जया वच्चेज्जा तदा कहेज्जाह, सो अन्नया तेण पडिपूजितो पाहुडेणं, ताहे णिग्गओ, पहावितो अप्पणो विसयस्स, कुमाराणं च मणुसेहिं कहितं, ताहे सो तेहिं गंतूणं हतमहितपवरजाव सव्वं घेत्तूणं णियत्ता, ते य से सव्वे मणूसा दिसोदिसिं पलाया, रन्ना सुतं-जहा आधरिसितो दूतो, ताहे संभमेण गंतूण णिवत्तितो, ताहे रन्ना बिगुणितिगुणं दाऊण भणितो-मा हु रन्नो साहिस्ससि जं कुमारेहिं कतं, तेण भणियं-ण साहेमि, ताहे जे ते पुरतो गता तेहिं सिट्ठं, जथाआधरिसिओ दूतो, ताहे सो राया कुविओ, तेण दूतेण णातं जहा रन्नो पुव्वकहितेलियं, जहावत्तं सिट्ठं तेण, रन्ना भणितं-अन्नो दूतो गच्छतु, तं पयावइं गंतूण भणाहि-मम साली कसिज्जमाणे रक्खाहि, दूतो गतो, रन्ना कुमारा उवलद्धा-किह अकाले मच्चू खवलितो ?, तेण अम्हं अवारए चेव जत्ता आणत्ता, राया पहावितो, कुमारेहिं भणितं-अम्हे वच्चामो, ते रुज्झ तं मड्डाए गता, ताहे ते खेत्तिए पुच्छंति-किह ते रायाणो रक्खिताइया?, ते भणंति-आसहत्थिरहपुरिसपागारं काऊणं, केचिरं ?, जाव करिसणं पविट्ठन्ति, तिविट्ठू भणति-को एच्चिरं कालं अच्छति?, ममं तं पदेसं दावेह, तेहिं कहितं-एयाए गुहाए, ताहे कुमारेण ततो हुत्तो रहो दिन्नो, जाव गुहं पविट्ठो, लोगेण दोहिवि पासेहि कलकलो कतो, ताहे सीहो विरियंभंतो निग्गतो, कुमारो चिंतेति-एस पयाएहिं अहं रहेण, विसरिसं जुद्धं, ताहे असिखेडगहत्थो रहातो उत्तिन्नो, ताहे पुणो चिंतितं-एस दाढणक्खाउधो अहं असिखेडएणं, एवमवि

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ ॥२३४॥

विसमं, ताहे तंपि णेण असिखेडगं छड्डितं, ततो सीहस्स अमरिसो जातो, एगं ता रहेण गुहं अतिगतो एगागी, बितियं भूमिं उत्तिण्णो, ततियं आयुधाणि मुत्तिता ठितो, अज्ज णं विणिवातेमित्ति महया अवद्दालितेण वयणेण उक्खंदं दाऊणं संपत्तो, ताहे तेण कुमारेण एगेण हत्थेण उवरिल्लो ओट्ठो एगेण हेट्ठिल्लो ओट्ठो गहितो, जुन्नपडगोविव विदालेऊण एगंते एडितो, ताहे लोगेण उक्कट्ठिकलयलो कतो, आभरणवत्थवासं च पाडितं, ताहे सो सीहो तेण अमरिसेण फुरुफुरेंतो अच्छति, एवं नाम अहं कुमारएण होंतएण जुद्धे मारिओत्ति, तं च किर कालं गोयमसामी भगवतो सारही आसि, तेण भन्नति-मा तुममंमरिसं वहाहि, एत्थ को रोसो अद्धिती वा ?, एस णरसीहो, तुमं मिगसीहो, जदि सीहो सीहेण मारितो तो एत्थ को अवमाणो !, सो ताणि वयणाणि मधु-मिव पिबति, सो मरित्ता नरएसु उववन्नो। सो कुमारो तं चम्मं गहाय सणगरस्स पधावितो, ते गामेल्लए भणति- गच्छह भो घोडगगीवस्स कहेह जहा अच्छसु वीसत्थोत्ति, तेहिं रन्नो सिट्ठं जहा पयावइपुत्तेण मारितोत्ति, ताहे कुद्धो दूयं पेसेति, जहा एते ते पुत्ते तुमं ममं ओलग्गए पत्थवेहि, तुमं महल्लो अच्छाहि, जाणे अहं पेच्छामि सक्कारेमि रज्जाणि से देमित्ति, तेण भणितं-अच्छंतु कुमारा, सयं चेव अहं ओलग्गामि, ताहे सो पुणो भणति- किं ता पेसेसि आओ जुद्धसज्जो णिग्गच्छसि ?, सो दूतो तेहिं धरिसेत्ता धाडितो, ताहे सो आसग्गीवो सव्वबलेण उवट्ठितो, इतरेवि देसंते ठिता, सुबहुकालं जुज्झिऊण हयगयरहणरादिक्खयं च पेच्छिऊण कुमारेण दूतो पेसितो, जहा अहं च तुमं च दोऽवि अहियपुरिसा, एतेऽन्ने पुरुषा भृत्याः अस्माकं, किंवा बहुणा अकारिजणेण मारितेण ?, अम्हे चेव लियामो, एवं होउत्ति बितियदिवसे दोऽवि रहे संपलग्गा जुज्झंति, जाहे पुण आयुहाणि खीणाणि ताहे आसग्गीवो चक्कं मुयति, तं तस्स तुम्वे णउरे पडियं, पच्छा तेणेव चक्केण आसग्गीवस्स सीसं छिन्नं, देवेहिं उग्घुट्ठं-

श्रीवीरस्य भवाः ॥२३४॥

एस पढमो तिविट्ठू नामेण वासुदेवोत्ति, जहा वासुदेवजरासंधाणं जुद्धं तहा वत्तेयव्वं । ते सव्वे रायाणो ओवतिता, ओयावितं अट्ठं भरहं, कोडियसिला बाहाए धारिता लीलाकट्ठं व, एतं रहावत्तपव्वतसमीवे जुद्धं आसी, एवं परिहायमाणे बले कण्हेण किर किहवि जन्नुगाणि पाविता । तिविट्ठू चुलसीति वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालेत्ता १८ सत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणे नरए उववन्नो १९ ततो य उव्वट्टित्ता सीहत्ताए २० पुणो नरएसु २१ । ताहे कतिवयाइं तिरियमणूसभवग्गहणाइं भमिऊण अवरविदेहे मूयाए रायहाणीए धणंजयस्स पुत्तो धारणीए कुच्छिंसि पियमित्तो णाम चक्कवट्टी जातो, तत्थ चतुरासीतिं पुव्वसयसहस्साइं परमाउयं पालेत्ता चक्कवट्टिभोगे चइत्ता पोट्ठिलाणं थेराणं अंतियं पव्वइतो, वासकोडिं परियागं पाउणित्ता २२ महासुक्के कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवो जातो, सत्तरससागरोवमट्ठितीतो २३ ।

ततो चुत्तो छत्तग्गाए णगरीए जियसत्तुस्स रन्नो पुत्तो भद्दाए अत्तओ णंदणो णामं कुमारो जातो, अचिरेणं रज्जे ठवितो, चउव्वीसं वाससहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता पोट्ठिल्लाणं अंतियं पव्वइतो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता तत्थ मासंमासेणं खममाणो-एगं वाससयसहस्सं परियागं पाउणित्ता इमेहिं वीसाए कारणेहिं आसेवितबहुलीकतेहिं तित्थगरनामगोयं णिव्वत्तेति । तंजहा—

अरहंत सिद्ध० ॥ २ ॥ २६४ ॥ दंसण० ॥ ३ ॥ २६५ ॥ अप्पुव्व० ॥ ३ ॥ २६६ ॥ पढम० ( ) तं च कहं० ( ) ॥ ३ ॥ २६७ ॥ नियमा० ॥ ३ ॥ २६८ ॥ जहा वइरनाभो, तत्थ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं आलोइयपडिकंतो समाहीए कालगतो २४ पाणते कप्पे पुप्फुत्तरवडेंसते विमाणे देवत्ताए उववन्नो २५ तत्थ वीसं सागरोवमाणि दिव्वाणि भोगाणि भुंजिऊण

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

गर्भसंक्रमः

माहणकुंडग्गामे० ॥ ३ ॥ २७० ॥ सुमिणअवधारणाथाहिं जं भणितं जं च पज्जोसवणाकप्पे पढमाणुओगे य तं सव्वं नायव्वं, ठाणासुन्नत्थं पुण किंचि भन्नति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीदिवसेणं महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरियातो महाविमाणाओ वीससागरोवमट्ठितीयातो अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए विइक्कंताए एवं सुसमाए सुसमदूसमाए दुस्समसुसमाए बहुवितिक्कंताए पन्नत्तरीए वासेहिं अद्धनवमेहि य मासेहिं सेसएहिं एक्कवीसाए इक्खागकुलसमुप्पण्णेहिं० गोतमसगोत्तेहिं तेवीसाए तित्थगरेहिं विइक्कंतेहिं चरिमतित्थगरे पुव्वातित्थगरनिद्दिट्ठे माहणकुंडग्गामे णगरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराणक्खत्तेणं जोगमुवागतेणं आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते, से य तिण्णाणोवगते होत्था-चइस्सामित्ति जाणति चयमाणे ण जाणति चुतेमित्ति जाणति, जं रयणिंचणं देवाणंदाए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते तं रयणिं च णं सा सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमे एयारूवे ओराले चोद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तंजहा-गय उसभ सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं । पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ॥ १ ॥ तए णं सा हट्ठतुट्ठा उसभदत्तस्स माहणस्स कहेति । से य एवं वयासी-ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणा दिट्ठा, तंजहा-अत्थलाभो देवाणुप्पिए !, एवं भोग० पुत्त० सोक्ख०, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! णवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाण वितिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं

॥२३६॥

भगवंत वीरस्य गर्भ-संक्रंस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

लक्खणवंजणगुणोववेतं माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजातसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमागारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पजाहिसि। सेऽविय णं उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते रिउव्वेदयजुवेदसामवेदअथव्वणवेद इतिहासपंचमाणं णिघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेयाणं सारए पारए धारए सडंगवी सट्ठितंतविसारदे संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे अन्नेसु य बहूसु बंभन्नएसु णएसु सुपरिणिट्ठिते यावि भविस्सति, ओरालाणं तुमे देवाणुप्पिए! जाव दिट्ठा। तए णं सा देवाणंदा एतमट्ठं सोच्चा जाव एवं वयासी--'एवमेतं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! जाव से जधेयं तुब्भे वयहत्तिकट्टु सम्मं पडिच्छति २ जाव साद्धिं ओरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति॥

इयाणिं अवहारत्ति० तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णाम देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सतकतू सहस्सक्खे मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवती बत्तीसविमाणावाससयसहस्साहिवती एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे णवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे भासुरबोंदी पलंबवणमाले महिद्धीए महजुतीए महाबले महायसे महाणुभागे महासोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि, से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससतसाहस्सीणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाहिवईण चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य, अन्ने पढेंति-अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य अभिओग्गउववन्नगाणं, आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महताहतणट्टगीतवादियतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुपडहवाइयरवेणं दिव्वाइं

स्वप्नोपलंभः

॥२३७॥

भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, इमं च केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे, पासति यऽत्थ समणं भगवं महावीरं जाव गब्भत्ताए वक्कन्तं, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्ते आणंदिते णंदिते पीतिमणे परमसोमणासिते हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयणीमसुरभिकुसुमचंचुमालइयऊसवितरोमकूवे विथसितवरकमलाणणवयणे पयलियवरकडगतुडितकेऊरमउडकुंडलहारविरायंतरयितवच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता पादपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता वेरुलियवरिट्ठरिट्ठअंजणणिउणोयवितमिसिमिसेंतमणिरयणमंडिताओ पाउयाओ मुयति मुयित्ता एगसाडितं उत्तरासंगं करेति करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ २ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवाडेति णिवाडित्ता पच्चुण्णमति२ त्ता कडगतुडियथंभिताओ भुताओ साहरति साहरेत्ता करतलपरिग्गहितं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं० जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं० सिवमतुलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगतिनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवतो महावीरस्स आदिगरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगते, पासतु मे भगवं तत्थ गते इहगतंतिकट्टु वंदति णमंसति २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने । तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

रन्नो अयमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था-उप्पन्ने खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे जाव माहणीए कुच्छिंसि, तं णो एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जन्नं अरिहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा अंतकुलेसु वा पंतकुलेसु वा तुच्छकुलेसु वा दरिद्दकुलेसु वा किवणकुलेसु वा भिक्खागकुलेसु वा आयाइंसु वा आइंति वा आयाइस्संति वा, एवं खलु अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उग्गकुलेसु वा भोगकुलेसु वा राइन्नकुलेसु वा इक्खागकुलेसु वा खत्तियकुलेसु वा हरिवंसकुलेसु वा अन्नतरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजातिउदितोदितकुलवंसप्पसूतेसु मुदितमुद्धाभिसित्तेसु महता रज्जसिरिं कारेमाणेसु पालेमाणेसु गब्भं वक्कमिंसु वा ३ पयाइंसु वा ३, अत्थि पुण एस भावे लोगच्छेरयभूते अणंताहिं ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहिं वीतिक्कंताहिं समुप्पज्जति नामगोयस्स कम्मस्स अक्खीणस्स अवेदितस्स अणिज्जिन्नस्स उदएणं जन्नं अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा अंतकुलेसु वा पंतकुलेसु वा तुच्छ० दरिद्द० भिक्खाग० किविण० आयाइंसु वा ३, णो चेव जोणीजम्मणणिक्खमणेणं णिक्खमिंसु वा णिक्खमंति वा निक्खमिस्संति वा, तं जीतमेतं तीतपच्चुप्पण्णमणागताणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं अरहंते० तहप्पगारेहिंतो जाव कुलेहिंतो तहप्पगारेसु उग्गकुलेसु जाव विसुद्धजातिकुलवंसेसु वा साहरावेत्तए, तं सेयं खलु ममवि समणं भगवं महावीरं चरमतित्थगरं पुव्वतित्थगरानिद्दिट्ठं माहणकुंडग्गामाओ णगराओ जाव कुच्छीओ खत्तियकुंडग्गामे णगरे णाताणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठस्स गोत्ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरावेत्तए, जेविय णं से तिसलाए गब्भे तंपियणं देवाणंदाए जाव कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरावेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहिति, संपेहित्ता हरिणेगमेसिं पादत्ताणीयाधिवतिं देवदूयं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-उप्पन्ने खलु भो देवाणुप्पिता ! समणे भगवं एवं सव्वं

इन्द्र संकल्पः

॥२३९॥

भणति जाव साहरित्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि, तए णं से पादत्ताणीयाधिवति देवे एवं वुत्ते समाणे हट्ठे जाव कट्टु एवं देवत्ति आणाए वयणं पडिसुणेतिर२ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमतिर२ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहन्नतिर२ संखेज्जाइं (जोयणाइं) डंडं णिसरति, तंजहा--रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलयाणं सोगंधियाणं जोतिरसाणं अंजणाणं पुलयाणं रयणाणं जातरूवाणं सुभगाणं अंकाणं फलिहाणं, अधाबादरे पोग्गले परिसाडेति परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियादियतिर२ दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहन्नतिर२उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वतिर२ ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जाव जेणेव देवाणंदा तेणेव उवागच्छतिर२ आलोए समणस्स भगवतो महावीरस्स पणामं करेतिर२ देवाणंदाए सपरिजणाए ओसोवणिं दलयतिर२ असुभे पोग्गले अवहरति सुभे पोग्गले पक्खिवतिर२ अणुजाणतु मे भगवंतिकट्टु दिव्वेणं पभावेणं करतलपुडेहिं अव्वाबाहं अव्वाबाहेणं गेण्हतिर२ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव खत्तियकुंडे गामे णाताणं जाव तिसला खत्तियाणी तेणेव उवागच्छति, तीए सपरिजणाए ओसोवणिं दलयतिर२ असुभे पोग्गले अवहरतिर२ सुभे पोग्गले पक्खिवतिर२ भगवं अव्वाबाहं अव्वाबाहेण ताए कुच्छिंसि गब्भत्ताए साहरति, जेऽवियणं से गब्भे तंपि देवाणंदाए, जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव पडिगते जाव सक्कस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणति। तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं तिण्णाणोवगते यावि होत्था-साहरिज्जिस्सामीति जाणति साहरिज्जमाणे जाणति साहरिएमित्ति जाणइ, तेणं कालेणं तेण समएणं भगवं जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे अस्सोयबहुले तेरसीय बासीतीराइंदिएहिं वितिकंतेहिं तेसीतिमस्स रातिंदियस्स अंतरा वट्टमाणे हिताणुकंपकेणं देवेणं माहणकुंडग्गामाओ जाव अड्ढरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जाव साहरिते, जं रयणिं च णं भगवं देवाणंदाए कुच्छीओ तिसलाए कुच्छिं साहिते तं रयणिं च णं सा देवा-

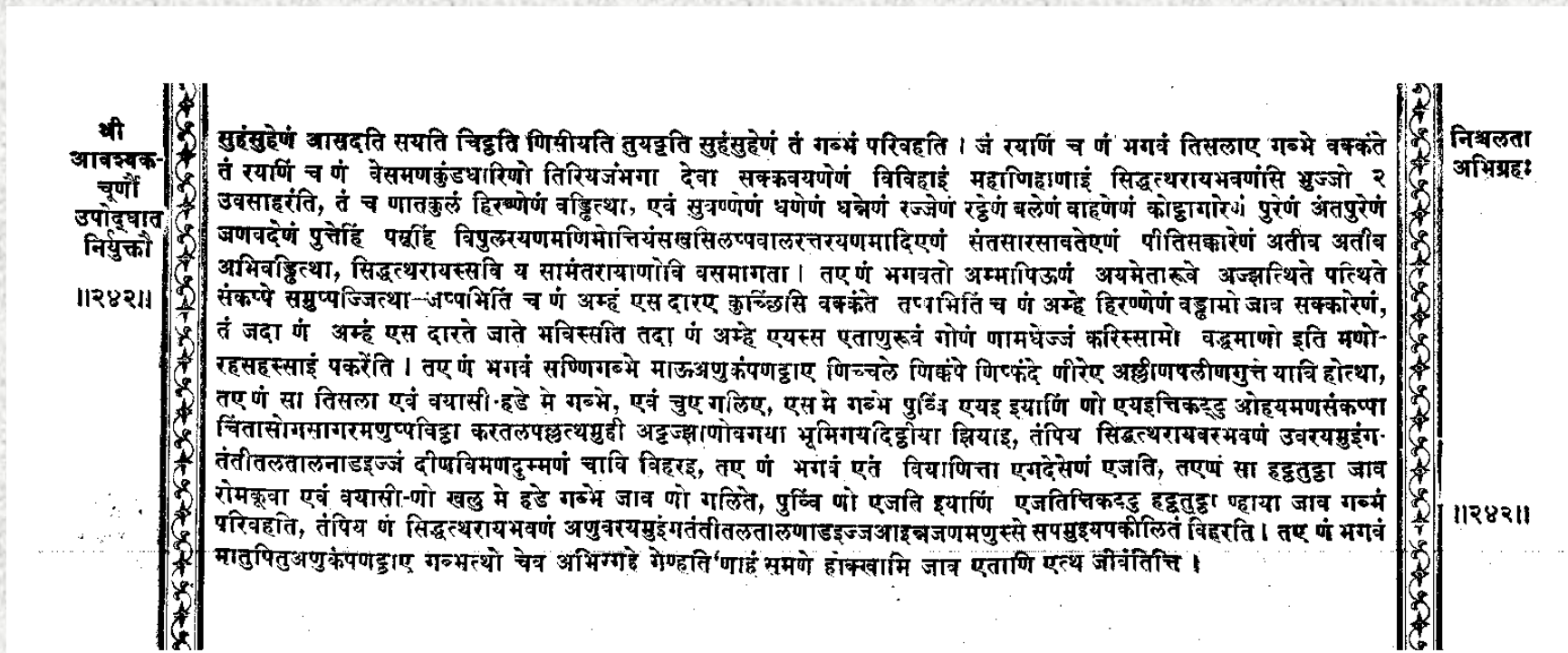
णंदा ते सुमिणे तिसलाए हडे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तिसलावि य णं तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमे चोद्दस सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तंजहा—

गय-- (गाहा) । ॥ जाव सिद्धत्थस्स साहति, सेऽविय णं हट्ठ तुट्ठे जाव चंचुमालइयरोमकूवे ते सुमिणे ओगिण्हित्ता ईहं पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मतिपुव्वेणं बुद्धिविन्नाणेणं तेसिं अत्थोग्गहं करेत्ता तिसले इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी-ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा, जाव अम्हं कुलकेतुं एवं दीवं पव्वयं कप्पवडेंसयं तिलकं कित्तिकरं णंदिकरं जसकरं आधारं पादवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि । सेऽवियणं जाव जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सति, तं उराला णं जाव दोच्चंपि अणुवूहति, साविणं जाव सम्म पडिच्छिऊणं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजायरमाणी २ विहरति । तएणं सिद्धत्थे खत्तिए पच्चूसकालसमयंसि जाव सुमिणपाढए आपुच्छति, तेहिवि तहेव सिट्ठं, णवरं चाउरंतचक्कवट्टी रज्जवई राया भविस्सति जिणे वा तेलोगणायए धम्मवरचक्कवट्टी, एवं सव्वं जाव सयं भवणं अणुप्पविट्ठा ।

इयाणिं अभिग्गहोत्ति—ताहे सा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता पयता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं २ दासीवंदेहिं परिक्खित्ता सएहिं २ परिजणेहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हायाओ कयबलिकम्माओ कयकोउयमंगलपायच्छित्ताओ सव्वालंकारविभूसियाओ मणुण्णं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ परिभाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ एवं च णं विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागयाओ आयंताओ चोक्खाओ परमसुइभूताओ तं गब्भं णातिउण्हेहिं णातिसीएहिं णातितित्तेहिं णातिकडुएहिं णातिकसाएहिं णातिअंबिलेहिं णातिमधुरेहिं उदुभयमाणसुभेहिं भोयणच्छायणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हितं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएसु सयणासणेसु पतिरिक्कसुहाए मणोणुकूलाए विहारभूमिए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला जाव विणीयदोहला ववगतरोगसोगमोहभयपरित्तासा

गर्भान्तरे संक्रमः स्वप्नास्तत्फलं च

॥२४१॥



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२४२॥

सुहंसुहेणं आसदति सयति चिट्ठति णिसीयति तुयट्टति सुहंसुहेणं तं गब्भं परिवहति । जं रयणिं च णं भगवं तिसलाए गब्भे वक्कंते तं रयणिं च णं वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा सक्कवयणेणं विविहाइं महाणिहाणाइं सिद्धत्थरायभवणंसि भुज्जो २ उवसाहरंति, तं च णातकुलं हिरण्णेणं वड्ढित्था, एवं सुवण्णेणं धणेणं धन्नेणं रज्जेणं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतपुरेणं जणवदेणं पुत्तेहिं पसूहिं विपुलरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमादिएणं संतसारसावतेएणं पीतिसक्कारेणं अतीव अतीव अभिवड्ढित्था, सिद्धत्थरायस्सवि य सामंतरायाणोवि वसमागता । तए णं भगवतो अम्मापिऊणं अयमेतारूवे अज्झत्थिते पत्थिते संकप्पे समुप्पज्जित्था—जप्पभिति च णं अम्हं एस दारए कुच्छिंसि वक्कंते तप्पभिति च णं अम्हे हिरण्णेणं वड्ढामो जाव सक्कारेणं, तं जदा णं अम्हं एस दारते जाते भविस्सति तदा णं अम्हे एयस्स एताणुरूवं गोणं णामधेज्जं करिस्सामो वद्धमाणो इति मणोरहसहस्साइं पकरेंति । तए णं भगवं सण्णिगब्भे माऊअणुकंपणट्ठाए णिच्चले णिक्कंपे णिप्फंदे णीरेए अछीणपलीणगुत्ते यावि होत्था, तए णं सा तिसला एवं वयासी-हडे मे गब्भे, एवं चुए गलिए, एस मे गब्भे पुव्विं एयइ इयाणिं णो एयइत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा चिंतासोगसागरमणुप्पविट्ठा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ, तंपिय सिद्धत्थरायवरभवणं उवरयमुइंगतंतीतलतालनाडइज्जं दीणविमणदुम्मणं चावि विहरइ, तए णं भगवं एतं वियाणित्ता एगदेसेणं एजति, तएणं सा हट्ठतुट्ठा जाव रोमकूवा एवं वयासी-णो खलु मे हडे गब्भे जाव णो गलिते, पुव्विं णो एजति इयाणिं एजतित्तिकट्टु हट्ठतुट्ठा ण्हाया जाव गब्भं परिवहति, तंपिय णं सिद्धत्थरायभवणं अणुवरयमुइंगतंतीतलतालणाडइज्जआइन्नजणमणुस्से सपमुइयपक्कीलितं विहरति । तए णं भगवं मातुपितुअणुकंपणट्ठाए गब्भत्थो चेव अभिग्गहं गेण्हति 'णाहं समणे होक्खामि जाव एताणि एत्थ जीवंतित्ति ।

निश्चलता अभिग्रहः

॥२४२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

इत्यादि जम्मणंति—तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं चित्तसुद्धतेरसीदिवसेणं णवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वितिक्कंताणं उच्चट्ठाणगतेसु गहेसु पढमे चंदजोगे सोमासु दिसासु विदिसिरासु विसुद्धासु जइएसु सव्वसउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिसि मारुयंसि पवायंसि णिप्फण्णसस्साए मेदिणीए पमुदितपक्कीलितेसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं अरोगाऽरोगं पयाया, तं रयणिं च णं बहूहिं देवेहि देवीहि य ओवयमाणेहिं उप्पयमाणेहिं एगालोए देवुज्जोए देवुक्कलिया देवसंनिवाए देवकुहुकुहुते देवदुहुदुहुते कए यावि होत्था, बहवे य वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा सिद्धत्थरायभवणंसि हिरन्नवासं वासिंसु सुवण्णवासं वासिंसु एवं रयणवइरवत्थआभरणपत्तपुप्फबीयमल्लगंधवन्नचुन्नवसुहारवासं वासिंसु, तं रयणिं च णं बहवे भवणवइवाणमंतरजोतिसवेमाणिया देवा भगवतो अंतियं आगम्म खत्तियकुंडग्गामे णगरे जोयणपरिमंडलं जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा असुइं पुतिं दुब्भिगंधं अचोक्खं तं सव्वं आहुणिय २ एगंते एडेंति एडेत्ता णच्चोदगणातिमट्टितं पविरलपप्फुसियं दिव्वं सुरभिं रयरेणुविणासगं गंधोदगवासं वासंति वासेत्ता णिहयरयं णट्ठरयं पणट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति करेत्ता भारग्गसो य कुंभग्गसो य पुप्फवासं च मल्लवासं च गंधवासं च चुन्नवासं च भुज्जो भुज्जो वासंति, तस्स य सिद्धत्थभवणवरपोंडरीयस्स परिपेरंतेण आभरणरयणमादी जाव उवाकिरित्था, एवं सव्वं जायकम्मादि ॥ अभिसेगो य जहा उसभसामिस्स ।

तए णं से सिद्धत्थे राया भवणवातिवाणमंतरजोतिसवेमाणिएहिं देवेहिं तित्थगरजायकम्मविहाणे णिव्वत्तिए समाणे पडिवुज्झति पडिवुज्झित्ता णगरगुत्तिए सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कुंडपुरे णगरे चारगसोहणं करेह

॥२४३॥

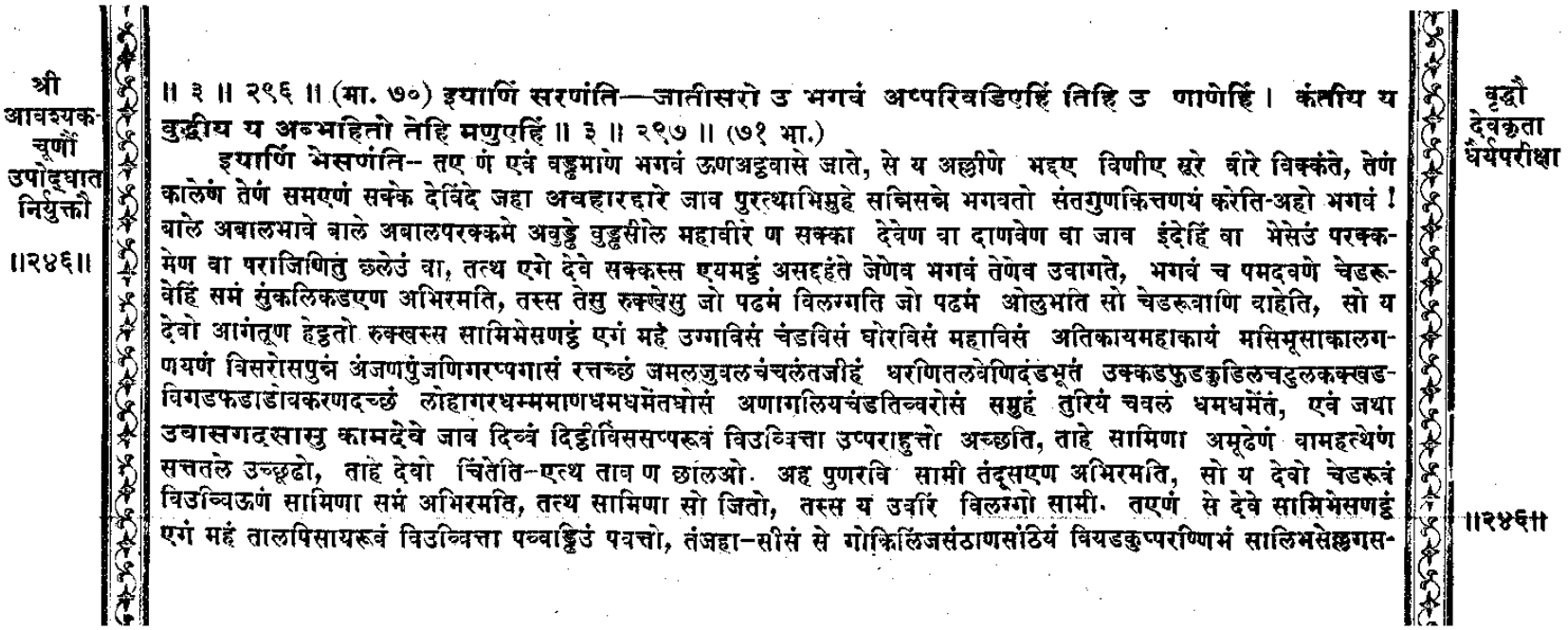
भगवंत वीरस्य जन्म-कल्याणकस्य वर्णनं

करेत्ता माणुम्माणवड्ढणं करेह २ त्ता कुंडपुरं णगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसितसंमज्जितोवलित्तं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु सित्तसुइयसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं मंचादिमंचकलियं णाणाविहरागभूसितज्झयपडागातिपडागमंडितं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितलं उवचितचंदणकलसं चंदणघडसुकततोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारितमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं कालागरुपवरकुंदुरुक्कधूवमघमघेंतगंधुद्धुताभिरामं सुगंधवरगंधगंधितं गंधवट्टिभूतं णडणट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहगपवकलासकआइक्खकमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालाचराणुचरितं करेह जाव कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्सं चक्कसहस्सं च ऊसवेत्ता एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से सिद्धत्थे राया ण्हाए कयबलिकम्मे कतकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपगतीहिं सव्वणाडएहिं सव्वतालायरेहिं सव्वोरोहेणं महया वरतुरियजमगसमगपवातितेणं संखप्पणवभेरिझल्लरिखरमुहिदुंदुभिणिग्घोसणातियरवेणं समुद्धुयमुइंगं अभिलायमल्लदामं पमुदितपक्कीलितं उस्सुक्कं उक्करं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अडंडकुडंडं अधरिमं गणितावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं सपुरजणुज्जाणजणवयं दस दिवसे ठितिवडितं करेंति, सतिए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य जाव लंभे पडिच्छेमाणे यावि विहरंति। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमदिवसे ठितिपडितं करेंति, ततियदिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति, छट्ठे दिवसे जागरियं करेंति, एगारसमे दिवसे अतिक्कंते णिव्वत्ते असुइजातकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणं नायए त खत्तिए आमंतेत्ता ण्हाया जाव पायच्छित्ता भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणव-

रगता तेहिं सद्धिं विउलं असणं ४ अस्सादेमाणा विस्सादेमाणा परिभुंजेमाणा परिभोएमाणा एवं वावि विहरंति, जिमितभुत्तुत्तरागतावियं णं आयंता चोक्खा सुतिभूया विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति संमाणेंति २ तेसिं पुरतो एवं वयासी-पुव्वंपिय णं देवाणुप्पिया ! अम्हं एतारूवे अज्झत्थिए जप्पभिति जाव नामं करेस्सामो वद्धमाण इति, तं होतु णं अज्ज अम्ह मणोरहसंपत्ती कुमारो वद्धमाणे णामेणंति णामधेज्जं करेंति ।

समणे भगवं महावीरे कासवगोत्तेणं, तस्स णं ततो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा-अम्मापिउसंतिए वद्धमाणे १ सहसमुदिते समणे २ अयले भयभेरवाणं खंता पडिमासतपारए अरतिरतिसहे दविए धितिविरियसंपन्ने परीसहोवसग्गसहेत्ति देवेहिं से कतं णामं समणे भगवं महावीरे ३ । भगवतो माया चेडगस्स भगिणी, भोयी चेडगस्स धुया, णाता णाम जे उसभसामिस्स सयाणिज्जगा ते णातवंसा, पित्तिज्जए सुपासे, जेट्ठे भाता णंदिवद्धणे, भगिणी सुदंसणा, भारिया जसोया कोडिन्नागोत्तेणं, धूया कासवीगोत्तेणं, तीसे दो नामधेज्जा, तं०-अणोज्जगित्ति वा पियदंसणावितिवा, णत्तुई कोसीगोत्तेणं, तीसे दो नामधेज्जा (जसवतीतिवा) सेसवतीति वा, एवं (यं) नामाहिगारे दरिसितं। एवं भगवतो अम्मापियरो अणेगाइं कोउयसयाइं अणेगाइं पच्चंकमणादीणि उस्सवसयाणि अणेगाइं पकीलणसयाइं पकरेंताणि विहरंति ।

इयाणिं चउत्थित्ति, तए णं-अह वड्ढति सो भयवं दियलोयचुओ अणोवमसिरीओ। दासीदासपरिवुडो परिकिण्णो पीढमद्दहिं ॥ (६९ भा.) ॥ पीढमद्दा णाम सरिव्वया पीतिबहुला, महारायिसुया पीढं मद्दिऊणं पच्चासत्तीए आसन्ना उवविसंतीत्ति । असितसिरजो सुनयणो बिंबोट्ठो धवलदंतपंतीओ । वरपउमगब्भगोरो फुल्लुप्पलगंधनीसासो



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात-निर्युक्तौ ॥२४६॥

॥ ३ ॥ २९६ ॥ (मा. ७०) इयाणिं सरणंति—जातीसरो उ भगवं अप्परिवडिएहिं तिहि उ णाणेहिं। कंतीय य बुद्धीय य अब्भहितो तेहि मणुएहिं ॥ ३ ॥ २९७ ॥ (७१ भा.)

इयाणिं भेसणंति-- तए णं एवं वड्ढमाणे भगवं ऊणअट्ठवासे जाते, से य अछीणे भद्दए विणीए सूरे वीरे विक्कंते, तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे जहा अवहारहारे जाव पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने भगवतो संतगुणकित्तणयं करेति-अहो भगवं ! बाले अबालभावे बाले अबालपरक्कमे अवुड्ढे वुड्ढसीले महावीरे ण सक्का देवेण वा दाणवेण वा जाव इंदेहिं वा भेसेउं परक्कमेण वा पराजिणितुं छलेउं वा, तत्थ एगे देवे सक्कस्स एयमट्ठं असद्दहंते जेणेव भगवं तेणेव उवागते, भगवं च पमदवणे चेडरूवेहिं समं सुंकलिकडएण अभिरमति, तस्स तेसु रुक्खेसु जो पढमं विलग्गति जो पढमं ओलुभति सो चेडरूवाणि वाहेति, सो य देवो आगंतूण हेट्ठतो रुक्खस्स सामिभेसणट्ठं एगं महं उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायमहाकायं मसिमूसाकालगणयणं विसरोसपुन्नं अंजणपुंजणिगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुवलचंचलंतजीहं धरणितलवेणिदंडभूतं उक्कडफुडकुडिलचडुलकक्खडविगडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं समुहं तुरियं चवलं धमधमेंतं, एवं जथा उच्चासगदासासु कामदेवे जाव दिव्वं दिट्ठीविससप्परूवं विउव्वित्ता उप्पराहुत्तो अच्छति, ताहे सामिणा अमूढेणं वामहत्थेणं सत्ततले उच्छूढो, ताहे देवो चिंतेति-एत्थ ताव ण छालओ. अह पुणरवि सामी तंदूसएण अभिरमति, सो य देवो चेडरूवं विउव्विऊणं सामिणा समं अभिरमति, तत्थ सामिणा सो जितो, तस्स य उवरिं विलग्गो सामी. तएणं से देवे सामिभेसणट्ठं एगं महं तालपिसायरूवं विउव्वित्ता पव्वाहुउं पवत्तो, तंजहा—सीसं से गोकिलिंजसंठाणसंठियं वियडकुप्परण्णिभं सालिभसेल्लगस-

वृद्धौ देवकृता धैर्यपरीक्षा

॥२४६॥

रिसा से केसा कविला तेएण दिप्पमाणा महल्ले उदियकभल्लसरिसोवमे णिडाले भुगुसपुच्छं व तस्स भुमुगाओ कविलजडिलाओ बित्ततबीभच्छं दसणाओ सीसघडी चेव उब्भडा, तस्स दोवि णयणा विणिग्गया विगतदंसणिज्जा कन्ना जह सुप्पकप्परं चेव विग-तबीभच्छदंसणिज्जा, उरब्भपुडसंठिता से णासा झुसिरा इव जमलबुल्लिसंठाणसंठिता दोवि णासिकपुडा महल्लकुव्वरगसंठिता तस्स दो कवोला, घोडगपुंछंव कविलजाडिलाओ उट्ठलोमाओ दाढियाओ उट्ठा से घोडगस्स जह दोवि लंबमाणा पासुफालसरिसा से दंता वायपडागतुरियचवला य तस्स जिब्भा हिंगुलुगधातुकंदरविलंव तस्स वयणं, हलकुंडगसंठिता तस्स होति हणुगा, गल्लकडिल्लं व तस्स खंडं फुट्टं कविलफरुसं महल्लं, मुइंगागारोवमा से खंधा, कोट्ठियसंठाणसंठिता दोवि तस्स बाहा, सुक्ख-दइयसंठाणसंठिया से हत्था, णीसालोढगसरिसा य तस्स हत्थेसु अंगुलीओ, सप्पिणीपुडसंठिता से णहा, अडतालगसंठितोदरो तस्स लोमगुविलो, विगता ण्हाविगपस्सेव उच्चे उदरंमि तस्स लंबंति दोवि थणगा, कोत्थलसरिसोवमो से मज्झे पोट्टं, अपकोट्ट-गोव्व वट्टा पाणी लंदसरिसोवमा से णाभि ओट्ठियलंबंतबद्धपोट्टे भग्गकडी विगते य वंकपट्टी असरिससरिसा य तस्स दोवि फिट्टगा कित्तपुडगसंठिया से वसणा जंतसिवगसंठाणसंठिते से नेत्ते कोत्थलसरिसोवमा से ऊरू पिडगमूलसरिसाणि तस्स जाणूणि कुडिलकुडिलाणि विगयबीभत्थदंसणाणि, जंघा से कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ णीसापासाणसरिगा तस्स दोऽवि पाया णीसालोढेण सरिसगा तस्स पाएसु अंगुलीओ सप्पिणीपुडसंठिता से णक्खा, कोसीग्रुहसरिसतिक्खणक्खे विसमे लंबोदरपलंबे विगते बीभच्छभग्गभूमए मसिमूसामहिसकालए भरितमेहवन्ने लंबोट्ठे णिग्गयग्गदंते निल्लालियजमलजुगलजीहे आऊसितवयण-गंडदेसे तहवीणेविविडफुग्गणासे विगते तहस्सुग्गभग्गभुमए खज्जोवगदित्तचक्खुरागे भिगुडीकुडिलंतलोयणे दित्तअट्टट्टहासे उत्ता-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सणए विसालवच्छे दिवंगताहिं बाहाहिं विसालपोट्ठे पलंबपोट्ठे विसालकुच्छी पलंबकुच्छी तालदीहजंघे णाणाविहपंचवन्नेहिं लोमेहिं उवचिते हिंगुलुयधातुगिरिकंदरा इव मुहेण अवतासिएण पतिभएण सरडकतवणमालए उदुरकतकन्नपूरए णउलकतकंचिपूरे मुंगुसकतसुंभलए विच्छुतकतवेकत्थे सप्पकतजन्नोवइए अभिन्नमुहनयणकन्नचरणणक्खवग्घचित्तकत्तीणियंसणे सरसरुधिरमंसावलित्तगत्ते अवदालियवयणसिंघगहितग्गहत्थे जंभितपट्टहसितपयंपियपयंभियंभि फुट्टंतवातगंठी कंपंति य धरनिवहा पहसियपच्चलितपवाडितगत्ते पणच्चमाणे पप्फोडेंते आभिवग्गंते अभिगज्जंते बहुसो बहुसो य अट्टट्टहासं विणिम्मुयंते एवं जहा उवासगदसासु कामदेवकहाणगे, एवं सामिणा दट्ठूण अभीतेणं तलप्पहारेणं आहते जहा तत्थेव णिबुड्डे, ताहे भीते देवे चिंतेति-एत्थवि ण चतितो छलेउंति, पच्छा सामिं वंदित्ता णट्ठो ॥ इयाणिं चसद्दसूचितं लेहायरियोवणयणंति दारं—

अन्नया अधितअट्ठवासजाते भगवं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते पवरसेयवत्थनियत्थो सियमल्लालंकारविभूसिते पवरधवलहत्थिखंधवरगते उवरिं समुच्चाजालसितमल्लदामेणं छत्तेणं धारिज्जमाणेणं सेतवरचामराहिं ओधुव्वमाणाहिं २ मित्तणातिणिययसयणसंबंधिपरियणेणं णातएहिं खत्तिएहिं समणुगम्ममाणमग्गे अम्मापिऊहिं लेहायरियस्स उवणीते । इमस्स य लेहायरियस्स महतिमहालयं आसणं रतियं, सक्कस्स य आसणचलणं, सिग्घं आगमणं, ताहे सक्को तत्थ सामिं निवेसाति, सोऽवि लेहायरियो तत्थेव अच्छति, ताहे सक्को करतलकतंजलिपुडो पुच्छति-(उपोद्घातपदपदार्थक्रमगुरुलाघवसमासविस्तरसंक्षेपविषयविभागपर्यायवचनाक्षेपपरिहारलक्षणया व्याख्यया व्याकरणार्थं) अकारादीण य पज्जाए भंगे गमे य पुच्छति, ताहे सामी वागरेति अणेगप्पगारं, इमोऽवि आयरियो सुणति, तस्स तत्थ केति पयत्था लग्गा, तप्पाभितिं च णं ऐदं व्याकरणं संवृत्तं, ते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

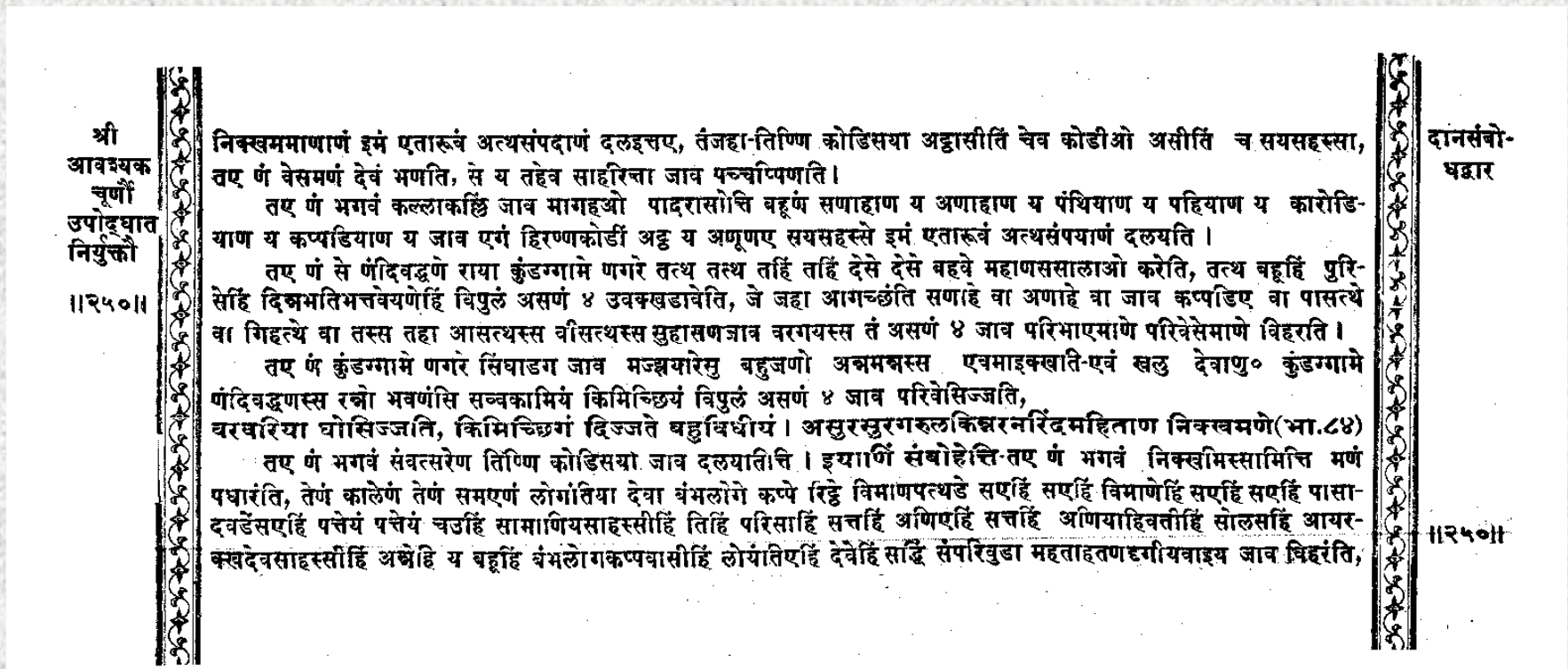
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

य विम्हिता, सक्केण से सिट्ठं जहा भगवं सव्वं जाणति जातिसरो तिण्णाणोवगतोत्ति । ताहे ताणि परितुट्ठाणि, एवं निरुवसग्गं वट्टति । इयाणिं विवाहेत्ति दारं, जहा गाहाहिं तहा भाणियव्वं ।

उम्मुक्कबालभावं० (भा १८) । ॥ (भा०१४) तिहिरिक्खंमि० (भा० १९) । ॥ (भा०११) इयाणिं अवचोत्ति तत्थ पंचविहे माणुस्से० (भा८०) । ॥ (भा४०) इयाणिं दाणत्ति–एवं भगवं अट्ठावीसतिवरिसो जातो, एत्थंतरे अम्मापियरा कालगता, पच्छा सामी णंदिवद्धणसुपासपमुहं सयणं आपुच्छति, समत्ता पतिण्णत्ति, ताहे ताणि बिगुणसोगाणि भणंति-मा भट्टारगा ! सव्वजगदपिता परमबंधू एक्कसराए चेव अणाहाणि होमुत्ति, इमेहिं कालगतेहिं तुब्भेहिं विणिक्खमवन्ति खते खारं पक्खेव, ता अच्छह किंचि कालं जाव अम्हे विसोगाणि जाताणि, सामी भणति-'केचिरं अच्छामि ?, ताहे भन्नति-अम्हं परं बिहिं संवत्सरेहिं रायदेविसोगो णस्सेज्जति, ताहे पडिस्सुतं तो णवरं अच्छामि जति अप्पच्छंदेण भोयणादिकिरियं करेमि, ताहे समत्थितं, अतिसयरूवंपि ताव से किंचि कालं पासामो, एवं सयं निक्खमणकालं णच्चा अवि साहिए दुवे वासे सीतोदगमभोच्चा णिक्खंते, अप्फासुगं आहारं राइभत्तं च अणाहारेंतो बंभयारी असंजमवावाररहितो ठिओ, ण य फासुगेणवि ण्हातो, हत्थपादसोयणं तु फासुगेणं आयमणं च, परं णिक्खमणमहाभिसेगे अप्फासुगेणं ण्हाणितो, ण य बंधवेहिवि अतिणेइं कतवं, ताहे सेणियपज्जोयादयो कुमारा पडिगता, ण एस चक्किकत्ति । एत्थंतरे भगवं संवत्सरावसाणे णिक्खमिस्सामीति मणं पधारेति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स देविंदस्स आसणे चलिते, आभोइयं जहा जीतमेतं सक्काणं अरिहंताणं भगवंताणं

अत्र भगवंत वीरस्य दीक्षा निमित्त दत्त 'वर्षीदान'स्य वर्णनं आरभ्यते



निक्खममाणाणं इमं एतारूवं अत्थसंपदाणं दलइत्तए, तंजहा-तिण्णि कोडिसया अट्ठासीतिं चेव कोडीओ असीतिं च सयसहस्सा, तए णं वेसमणं देवं भणति, से य तहेव साहरित्ता जाव पच्चप्पिणति।

तए णं भगवं कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पादरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य कारोडियाण य कप्पडियाण य जाव एगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणए सयसहस्से इमं एतारूवं अत्थसंपयाणं दलयति।

तए णं से णंदिवद्धणे राया कुंडग्गामे णगरे तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहवे महाणससालाओ करेति, तत्थ बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभतिभत्तवेयणेहिं विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति, जे जहा आगच्छंति सणाहे वा अणाहे वा जाव कप्पडिए वा पासत्थे वा गिहत्थे वा तस्स तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणजाव वरगयस्स तं असणं ४ जाव परिभाएमाणे परिवेसेमाणे विहरति।

तए णं कुंडग्गामे णगरे सिंघाडग जाव मज्झयारेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति-एवं खलु देवाणु० कुंडग्गामे णंदिवद्धणस्स रन्नो भवणंसि सव्वकामियं किमिच्छियं विपुलं असणं ४ जाव परिवेसिज्जति, वरवरिया घोसिज्जति, किमिच्छिगं दिज्जते बहुविधीयं। असुरसुरगरुलकिन्नरनरिंदमहिताण निक्खमणे(भा.८४)

तए णं भगवं संवत्सरेण तिण्णि कोडिसया जाव दलयातीत्ति। इयाणिं संबोहेत्ति-तए णं भगवं निक्खमिस्सामित्ति मणं पधारेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा बंभलोगे कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहिं सएहिं विमाणेहिं सएहिं सएहिं पासादवडेंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं बंभलोगकप्पवासीहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महताहतणट्टगीयवाइय जाव विहरंति,

॥२५०॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तंजहा—सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य (भा. ८६)

तए णं तेसिं पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलंति, ताहे ओहिं पउंजंति आभोएंति सामी निक्खमस्सामीति मणं पधारेंति, तं जीतमेतं लोयंतियाणं भगवंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए, तं गच्छामो णं अम्हेवि सामिं संबोहेमोत्तिकट्टु एवं संपेहेंति संपेहेत्ता उत्तरपुर जाव जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति २ अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं पंचवन्नाइं वत्थाइं पवरपरिहिता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं अट्ठसतियाहिं अपुणरुत्ताहिं वग्गूहिं अणवरयं अणवरयं अभिणंदमाणा य २ अभित्थुणमाणा य २ एवं वयासी—जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! जय जय नंदं ते ! भद्दं ते, जय जय खत्तियवरवसभा !, बुज्झाहि भगवं! लोयणाहा पवत्तेहि धम्मतित्थं हितसुहणिस्सेसकरं जीवाणं भविस्सतित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति २ सामिं वंदंति नमंसंति २ नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव पडिगता । इयाणिं णिक्खमणत्ति, एत्थ निज्जुत्तिगाहाओ—

हत्थुत्तरजोगेणं (४५१) सो देवपरिग्गहितो (४६०) तए णं सामी लोगंतिएहिं संबोहिते समाणे जेणेव णंदिवद्धणसुपासप्पमुहे सयणवग्गे तेणेव उवागच्छति २ जाव एवं वयासी-इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, ताहे ताइं अकामगाइं चेव एवं वयासी-'अहासुहं भट्टारगा ! ।

तए णं से णंदिवद्धणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव भोमेज्जाणं अन्न च महत्थं महरिहं जाव उवट्ठवेह, जह महब्बलो, तेवि उवट्ठवेंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया जाव भुंजमाणे विहरति । तए णं तस्स आसणे चलिए आभोएति एवं जहा उसभसामिअभिसेगे तहा

अत्र भगवंत वीरस्य दीक्षा-कल्याणक वर्णनं आरभ्यते

आगतो। णवरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं सामिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति करेत्ता भगवतो उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे ईसिं चतुरंगुलमसंपत्तं धरणितलं तं दिव्वजाणविमाणं एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए अभिसेगे जाव अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं दोहि य अणिएहिं णट्टाणिएण गंधव्वाणिएण य सद्धिं ताओ दिव्वातो जाणविमाणाओ पुरत्थिमेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुभति, तए णं तस्स चउरासीतिं सामाणियसहस्सीओ ताओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुभति, तएणं तस्स सक्कस्स अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ जाव दाहिणिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुभंति, तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीतीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव निग्घोसणातियरवेणं जेणेव भगवं तेणेव उवागच्छति २ सामिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति करेत्ता वंदति णमंसति २ णमंसित्ता जाव पज्जुवासति। एवं सव्वे इंदा आणेयव्वा जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव सूरे आगते पज्जुवासति। तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे असुरकुमारा देवा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था। कालमहाणलसरिसणीलगुलियागवलप्पगासा विगसितपत्ततविणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणमसिणरुयगरमणिज्जणिद्धकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फप्पगासाइं संकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवर परिहिता वयं च पढमं समइक्कंता वितियं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियपवरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडितभुता दसमुद्दामंडितग्गहत्था चूलामणीविविधचित्तचिंधगता सुरूवा महिद्धिया महाजुत्तीया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइतवच्छा कडगतुडियथंभितभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडतलकन्नपीढचारी विचित्तवत्थाभरणा विचित्तमालामेलाओ कल्लाणयपवरवत्थपरिहिता कल्लाणयपवरमल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेणं दिव्वेण गंधेण दिव्वेण फासेणं

॥२५२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात-निर्युक्तौ ॥२५३॥

दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दस दिसातो उज्जोएमाणा २ पभासेमाणा २ आगम्म २ समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति २ णमंसित्ता सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पज्जुवासंति । एवं णागा सुवण्णा य विज्जू अग्गी य दीव उदही दिसाकुमारा य पवण थणिया य भवणवासी णागफडागरुलवइरपुण्णकलसणिउप्फेससीहहयवरगयंकमगरंकमउडवरवद्धमाणनिज्जुत्तचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे वाणमंतरा सामिस्स अंतिअं पाउब्भवित्था पिसाय भूया य जक्ख रक्खस किन्नर किंपुरिसा भुयगपतिणो य महाकाया गंधव्वगणा य णिउणगंधव्वगीतरयिणो, अणवन्निय पणवन्निय इसिवाइय भूतिवातिय कंद महाकंदिया य कुहंड पनका देवा चंचलचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गंभिरहसितपियगीतणच्चणरती वणमालाभेलमउडकुंडलसच्छंदविगुव्वितामरणचारुभूसणधरा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरयितपलंबसोभंतकंतविगसितचित्तवणमालरइतवच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविहवन्नरागवरवत्थचित्तचित्तचिंधणियंसणा विविहदेसिणेवत्थगहितवेसा पमुदितकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया य हासबोलबहुला अणेगमणिरयणविविहाभरणुज्जुत्तचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति । तेणं कालेणं २ बहवे जोतिसिया देवा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था बहस्सती चंदसूरसुक्कसणिच्चरा राहुधूमकेउबुहा अंगारया य तत्ततवणिज्जकणयवन्ना जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति केतू य गतीरतिया अट्ठावीसतिविहा य णक्खत्तदेवतगणा णाणासंठाणसंठिताओ य पंचवन्नाओ तारगाओ ठितिलेसाचारिणो अविस्साममंडलगती पत्तेयं नामयंकपागडितचिंधमउडा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे वेमाणिया देवा सामिस्स अंतियं पाब्भवित्था, सोहम्मीसाणा

इन्द्रागमनं

॥२५३॥

सणंकुमारमाहिंदबंभलंतयसुक्कसहस्साराणतपाणतआरणच्चुतवती पट्ठा सामाणियतावत्तीससहिता सलोगपालग्गमहिसिप रिसाणियातरक्खेहिं संपरिवुडा देवसहस्साणुयातमग्गेहिं सुरवरगणीसरेहिं पयतेहिं समणुगम्मंता सस्सिरीया सव्वादरभूतिसमूहणायगा सोम्मचारुरूवा विमलविधुव्वंतचामरा देवसंघजयसद्दकतालोया मिगमहिसवराहछगलदद्दुरहयगयवतिधुयगखगउसभंकविडिमपागडीतचिंधमउडा पालयविमाणपुप्फसोमणससिरिवच्छणंदियावत्तकामपीतिमणविमलवरसव्वतोभद्दणामधेज्जेहिं विमाणेहिं तरुणदिवाकरकरतिरेगप्पभेहिं मणिकणयरयणघंटियाजालुज्जलेहमजालेपरंतपरिगतेहिं समंतवरमुत्तदामलंबंतभूसणेहिं पयलियघंटावलिमधुरसद्दवंसतंतीतलतालगीतवाइतरवेण वरतुरितमीसएणं पूरेंता अंबरं समंता तुरितं संपत्थिता देवेंदा हट्ठतुट्ठमणसा सेसाविय कप्पतरविमाणा देवा सुरवरा सविमाणविचित्तचिंधनामंकविगडपागडमउडाडोवसुहदंसणिज्जा तेऽवि समण्णेंति सुरवरिंदे। लोगंतविमाणवासिणो चेव देवसंघा पत्तेयविरयितमणिरयणुक्कडेभिसंतणिम्मलनिययंकितावीचित्तपागडितचिंधमउडा दाएंता अप्पणो समुदयं पेच्छंतावि य परस्स रिद्धीओ उत्तमाओ, एवं कप्पालया सुरवरा जिणिंदचंदनिमित्तभत्तीय चोदितमती हरिसितमणसो य जीतकप्पमणुयत्तमाणा देवा जिणदंसणुस्सुया गमणजणितहासा विउलबलसमूहपिंडिता संभमेण गगणतलविमलविउलगमणचलचवलचलियमणपवणजइणवेगा णाणाविहजाणवाहणगता ऊसितविमलधवलातपत्ता विउव्वितजाणवाहणविमाणदेवरयणप्पभावेण य सच्विड्ढीय हुलियं पयाता पसिढिलवरमउडतिरीडधारी कुंडलउज्जोइताणणा मउडादित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हा गोरा सेता सुहवण्णगंधरसफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लधारी महिड्ढीया जाव पज्जुवासंति।

तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे अच्छरसंघा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था, ताओ णं अच्छराओ धंतधोयकणगरुयगविमल-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

णिरुवहतपिंजराओ समइक्कंता य बालभावं मज्झिमजरढवयभावविरहिताओ अतिवरसोमचारुरूवा णिरुवहतसरसजोव्वणकक्कसतरुणवयभावमुवगताओ णिच्चमवट्ठितसभावसव्वंगसुंदरंगाओ इच्छितणेवत्थरइतरमणिज्जगहितवेसाओ कंतहारद्धहारवत्तरयणकुंडलचासुत्तगहेमजालमणिजालकणयजालयसुत्तयउव्वितियकडयखड्डुयएकावलिकंठउत्तपगरयउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तयचूलामणिकणयतिफुल्लयसिद्धत्थिकन्नवालिससिसूरउसभचक्कयतालभंगयतुडियहत्थमालयहरिस्सयकेऊरवलयपालंबअंगुलेज्जयवलक्खदीणारमालिता चंदसूरमालिया कंचीमेहलकलावपयतरथपरिहेरयपादजालघंटियखिखिणिरयणोरुजालतुद्दियवरणेउरचलणमालिता कणयणियलजालयमगरमुहविरायमाणणेपुरपचलियसद्दालभूसणधारीओ दसद्धवन्नरागरइतरत्तमणहरे महग्घे णासाणीसासवातवोज्झे चक्खुहरे वन्नफरिसजुत्ते आगासफलियसमप्पभे अंसुए णियत्थाओ, आदरेणं तुसारगोखीरहारदगरयपंडुरदुगुल्लसुउमालसुकतरमणिज्जउत्तरिज्जाणि पाउताओ वरचंदणचच्चिता वराभरणभूसिताओ सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरयितविचित्तवरमल्लधारिणीओ सुगंधचुन्नंगरागवरवासपुप्फपूरयविराइता उत्तमवरधूमधूविता अधियसस्सिरीया दिव्वकुसुममल्लदामगब्भंजलिपुडाओ उच्चत्तेण य सुराण थोवूणमूसिताओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ उक्का इव उज्जोवेमाणीओ विज्जुघण मिरीयिसूरदिप्पंततेयअधिकतरसंनिकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगतगतहसितभणितचिट्ठितविलाससललितसंलावणि उणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणलावन्नरूवजोव्वणविलासकलिताओ सुरवहूओ सिरीसणवर्णीतमउयसुउमालतुल्लफासा ववगतकलिकलुसधोतणिद्धंतरयमला सोम्माओ कंताओ पियदंसणाओ सुसीलाओ जिणभत्तिदंसणाणुरागेणं हरिसिताओ उवतिताविं जिणसगासं दिव्वेणं वन्नेणं जाव ठितियाओ चेव सुस्सूसमाणीओ णमंसमाणीओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिकडाओ पज्जुवासंति ।

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

॥२५५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

एवं एत्थ (भा. ८८) मणपरिणामो (भा. ८४) भवणवइ (भा. ८०) जाव य कुंडग्गामो (भा. ८१) तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया आभियोगिये देवे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवतो महावीरस्स महत्थं महरिहं विउलं णिक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, एवं जहा उसभसामिस्स जम्माभिसेगे जाव उवट्ठवेंति, एवं पाणतेवि, एवं परिवाडीए जाव सक्कस्स आभिओगा उवट्ठवेंति । तए णं ते दिव्वा कलसा य (ते) चेव कलसे अणुपविट्ठा ।

तए णं से णंदिवद्धणे राया सामिं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेति निवेसेत्ता अट्ठसहस्सेणं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं जाव रवेणं महता २ णिक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचीत । तए णं सामिस्स महता २ णिक्खमणाभिसेगंसि वट्टमाणंसि सव्वेवि इंदा छत्तचामरकलसधूवकडुच्छुतपुप्फगंध जाव हत्थगता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव हियया पंजलियडा सामिस्स पुरतो चिट्ठंति जाव वज्जसूलपाणी, अन्नेवियणं देवा य देवाओ य वंदणकलसहत्थगता एवं भिंगार-आदंसथालपातीसुपतिट्ठावातकरगचित्तरयणकरंडा पुप्फचंगेरी जाव लोमहत्थचंगेरी पुप्फपडल जाव सीहासणछत्तचामरतेल्लसमुग्गय जाव धूवकडुच्छुगत्ति जाव अप्पेगतिया देवा कुंडग्गामं णगरं आसितसंमज्जितोवलित्तं करेंति जाव आघावंति, जहा विजयस्स । तए णं से णंदिवद्धणे राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, सामिं सीतापीतेहिं कलसेहिं जाव अलंकारितसभाए सीहासणे पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने,तए णं सामिस्स इंदा महरिहं सुबहुअलंकारियभंडं उवणेंति, तप्पढमताए पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाइए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेण गाताइं अणुलिंपंति, अणुलिंपेत्ता णासाणीसासवातवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्तं हतलालापेलवातिरेयं चवलं कणगखतितंतकम्मं आगासफालितसमप्पभं अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियंसेंति णियंसेत्ता

कडिसुत्तगं पिणिद्धंति, तए णं तं पवरजच्चमुत्तियं सुसज्जितं सुरभिगंधमल्लफरिसजुत्तं अवगतमलसकलणित्तलुज्जलजहिच्छितविभागरयितसमणिजणजुत्तिजोइयखयवड्ढिविसेसजणिततणुयत्तमज्झपीवरसुजातरूवं णिम्मलतवणिज्जसुत्तकायितचउसट्ठिसलिट्ठलट्ठिकट्ठितसुलिट्ठपमाणलट्ठलक्खणगुणोववेतं पविसरपरिरत्तपंचवन्नियविराइतं वातविहुतपरिज्जमाणं रमणिज्जपट्टियागोच्छपल्लवइतं थवलमहापत्तइंदकायोमं (व) उरणभंगणड्ढयंदं णिसाकरकरातिरेगसीतलतरं उसिणपसरसतुरितावसारं ऊरलत्थीहत्थविच्छूरं कुंदकुसुमाणिरुहपहतणिकरगोरं हारं आभरणपडीहारं पिणिद्धंति हट्ठतुट्ठमणसा, तयणंतरं च णं मणियणोवगूढसंखसोभंतमज्झागरमुहणिग्गतसरं तवणिज्जमयं विचित्तमणिरयणभत्तिचित्तं पालंबं अप्पणो पमाणेण सुप्पमाणं पिणिद्धंति वयणकमलणालं, तदणं० च णं तवणिज्जमयाइं चंचलचलंतचलियसोदामणिप्पभाइं विमलमिसिमिसेंतमणिरयणपरिमंडिताइं गंडपरिपुंछकाइं कवोलनोयल्लगाइं मुहलच्छीदीवगाइं आभरणोदारचारुथिक्किल्लचिल्लकाइं कन्नेसु कुंडलाइं पिणिद्धंति हट्ठतुट्ठमणसा, तहेव तं धन्नगं च सुहफारिससुसंपयुत्तं विमलं सिरिविभूसेक्कमउडपडिसवत्तिं अमंगलासंतिरोगदोसावहारकं अवरिसं पवरलक्खणगुणोववेयं मंगल्लं उत्तमं पवित्तं अवणितमउडमिरिकूडभूतं गुणागरं सिरिवरं महातेयकंतिजुत्तं रूवणाभातारकं पुढविरयणसव्वसारं देविंदणरिंदमुद्धकताणिलयणं अग्घं चूलामणिं पिणद्धिंति हट्ठतुट्ठमणसा, तयणंतरं च णं अतिरुग्गयसिसिरसमयरवितरुणमंडलणिभं जंबूणयविमलविपुलविदलितं सोलसपररयणकलितविणियुत्तदेसभागं मंगलभत्तिसहस्ससोभंतसस्सिरीयं मरगयमणयमगररयणवालरुयगकक्केतणकणगचित्तणिज्जुत्तचारुणिम्मलविचित्तरमुहसतविणिग्गओग्गिन्नपवरसुत्तियपतरपलंबंतदामकलितं तवणिज्जविचित्तमुत्तियाजालरयणपचलितघंटियसद्दालमधुरमुहलं अतिसयमतिविभवणितुणाविणइतमणोरहुप्पादकं अहियपेच्छणिज्जरूवं मणिरयणजलंतजालमालाकुलाभिरामं आभरणवडेंसयं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२५८॥

पभाससुदओपहारं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धंति हट्ठतुट्ठमणसा, एवं हारं पिणिद्धंति २ अद्धहारं पिणद्धंति २ एकावलिं २ मुत्तावलिं २ कणगावलिं २ रयणावलिं २ मुरविं कंठे २ मुरविं पलंबं २ पादावलंबाइं पलंबाइं २ कडगाइं २ तुडियाइं २ केऊराइं २ अंगयाइं २ दसमुद्दियाणंतकं २ कडिसुत्तगं२ कुंडलाइं २ चूलामणिं२ चित्तरयणसंकडं मउडं२ दिव्वं सुमणदामं २ दद्दरयमलयसुगंधिगंधिए य गंधे पिणिद्धंति २ त्ता जाव णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहणिउणोवइवितमिसिमिसेंतविरइतसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठतेलोक्कवीरवलए आविंधंति २ तए णं ते सामिं गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खयंपिव अलंकितविभूसितं करेंति, ताहे सुगंधगंधाइं पक्खिवंति२ एवं वासाइं जाव चुन्नाइं पक्खिवंति२ ताहे पत्तेयं पत्तेयं करतलपरिग्गहितं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मितमधुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं अभिणंदमाणा य अभिथुणमाणा य एवं वयासी- जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! जय जय णंदा ! भद्दं ते, जय जय खत्तियवरवसभा ! अजियं जिणाहि इंदियसेन्नं जियं पालयाहि समणधम्मं जियमज्झे वसाहि बहूइं दिवसाइं बहूइं पक्खाइं बहूइं मासाइं बहूइं उडूइं बहूइं अयणाइं बहूइं संवच्छराइं, अभीता परीसहोवसग्गाणं खंतिखमा भयभेरवाणं धम्मे अविग्घं भवउत्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति, पउंजेत्ता णट्ठविहिं उवदंसेंति जहा सूरियाभो। तए णं से णंदिवद्धणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं एवं सीयावन्नओ जहा णाएसु मेहकुमारस्स जाव तुरियं चवलं वेगिकं पन्नासधणुआयामं पणुवीसधणुविच्छिन्नं छत्तीसधणुस्सुव्विद्धं चंदप्पभं सीयं उवट्ठवेह, तए णं ते जाव उवट्ठवेंति। तए णं से अच्चुए आभियोगिए देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो जाव चंदप्पहं सीयं उवट्ठवेह, णवरं जाणविमाणवन्नओ,

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

॥२५८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तेऽवि जाव उवट्ठवेंति । तए णं सा सीता तं चेव सीतं अणुप्पविट्ठा ।

एत्थ-चंदप्पभा य० ॥ भा. ९२ ॥ पंचासति० ॥ भा. ९३ ॥ सीयाय मज्झयारे ॥ भा. ९४ ॥ तए णं सामी वेसालीए केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति अब्भुट्ठेत्ता जेणेव चंदप्पभा सीता तेणेव उवागच्छति उवागच्छेत्ता चंदप्पभं सीयं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ चंदप्पभं सीयं दुरुहति २ सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ।

तए णं भगवतो कुलमहत्तरिता ण्हाया जाव सरीरा हंसलक्खणं पडसाडयं गहाय जाव सीयं दुरुहति २ त्ता सामिस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसन्ना, एवं सामिस्स अम्मधाती उवगरणं गहाय वामे पासे संनिसन्ना, तए णं सामिस्स पिट्ठतो एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगतगत जाव रूवजोव्वणविलासकलिता हिमरयजाव धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं धरेमाणी २ चिट्ठति, तए णं सामिस्स उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ जाव चवलाओ चामराओ गहाय जाव चिट्ठंति, तए णं सामिस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी जाव सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगयमुहाकीतिसामाणं भिंगारं गहाय जाव चिट्ठति । एवं दाहिणपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी चित्तं कणगदंडं जाव तालवेंटं गहाय चिट्ठति, केति पुण भणंति- सव्वं देवा य देवीओ य ।

तए णं सामिस्स पिट्ठतो सक्कादिया देविंदा हिमरययकुंदेंदुपगासाइं वेरुलियविमलदंडाइं जंबूणयकन्नियागाइं वइरसंधीणि मुत्ताजालपरिगताणि अट्ठसहस्सवरकंचणसलागाणि दद्दरमलयसुगंधिं सव्वोउयसुरभिसीयलच्छायाइं मंगलभत्तिचित्ताइं चंदागारो-

वमाइं जाव सकोरेंटमल्लदामाइं छत्ताइं सलीलं धरेमाणा धरेमाणा चिट्ठंति । तए णं सामिस्स उभतो पासिं चंदप्पभवेरुलियणाणा-मणिकणगरयणखचियचित्तदंडाओ सुहुमरययदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिकासाओ सव्वरयणामतीओ अच्छाओ चामराओ जाव वीएमाणा २ चिट्ठंति, एवं तएणं से णंदिवद्धणे राया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया सीयं परिवहह, तए णं ते जाव सिवियं परिवहंति, तए णं से सक्के देविंदे देवराया चंदप्पभाए सीयाए दाहिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, चमरे असुरिंदे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं बाहं गेण्हति, बली [धायरणिंदे] वइरोयणिंदे उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं बाहं गेण्हति, अवसेसा भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिता देवा जहारिहं चंदप्पभं सीयं गेण्हंति । एवं एत्थ

आलतिय०॥ भा. ९५ ॥ छट्ठेणं०॥ भा. ९६ ॥ सीहासणे०॥ भा. ९७॥ पुव्विं० भा.॥९८॥ चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । असुरसुरवंदियाणं, वहंति सीयं जिणिंदाणं भा ॥९९॥ कुसुमाणि० ॥ भा. १०० ॥ वणसंडो य०॥ भा. १०१॥ सिद्धत्थवणं० ॥ १०२ ॥ अयसि० ॥ भा. १०३ ॥ वरपडह० ॥ भा. १०४ ॥

तए णं सामिस्स सीयं दूरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलया पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिता, तंजहा- सोत्थिय सिरिवच्छ णंदियावत्त वद्धमाणय भद्दासण कलस मच्छ दप्प सव्वरयणामया पासादीया जाव अभिरूवा पडिरूवा, तयणंतरं च णं पुन्नकलसा भिंगारदिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरचितआलोकदरिसणिज्जा वातुद्धयविजयवेजयंती य समूसिया गगणतल-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिता । तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडलणिभं समूसितविमलमातवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयणपादपीढं सपाउयायोगसमाजुत्तं बहुकिंकरामरपरिक्खित्तं सच्छत्तभिंगारं जाव संपट्ठितं, तयणंतरं च णं तरमल्लिहायणाणं हरिमेलामउलिमल्लियच्छाणं चंचुच्चियललितपुलियचलचवलचंचलगतीणं लंघणवग्गणाधावणाधारणतिवदिजइणसिक्खितगतीणं ललंतलासगललामवरभूसणाणं मुहभंडगओचूलगथासगअमिलाणचामरगंडेगपरिमंडितकडीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहिताणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीय संपत्थियं, तयणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसालविउलदंताणं ईसीकंचणकोसीपिणिद्धदंताणं कंचणमणिरयणभूसियाणं वरपुरिसारोहसुसंपउत्ताणं अट्ठसयं कुंजरवराणं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं, तयणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं हेमवंतचित्ततेणिसकणगणिजुत्तदारुयाणं कालायससुकतणेमीयंतकम्माणं सुसंविद्धचिक्कमंडलधुराणं आइण्णवरतुरगसंपउत्ताणं कुसलणरच्छेदसारहिसुसंपग्गहिताणं हेमजालगवक्खजालखिखिणिघंटाजालपरिक्खित्ताणं बत्तीसतोणपरिमंडिताणं ससंकडवडेंसयाणं सचावसरपहरणावरणभरितजुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरतो जाव संपत्थियं, तयणंतरं च णं सन्नद्धबद्धवम्मियकवयाणं उप्पीलियसरासणपट्टियाणं पिणिद्धगेवेज्जविमलबरबद्धचिंधपट्टाणं गहियाउहपहरणाणं अट्ठसयं वरपुरिसाणं पुरतो जाव संपत्थियं, तयणंतरं च णं हयाणीयं गच्छति, तयणंतरं च णं गयाणीयं गच्छति, तयणंतरं च णं पायत्ताणियाणीयं गच्छइ, तयणंतरं च णं वइरामयवट्टलट्ठिसंठितसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठियविसिट्ठे अणेगवरपंचवन्नकुडभीसहस्सपरिमंडिताभिरामे वाउद्धतविजयवेजयंति-

॥२६१॥

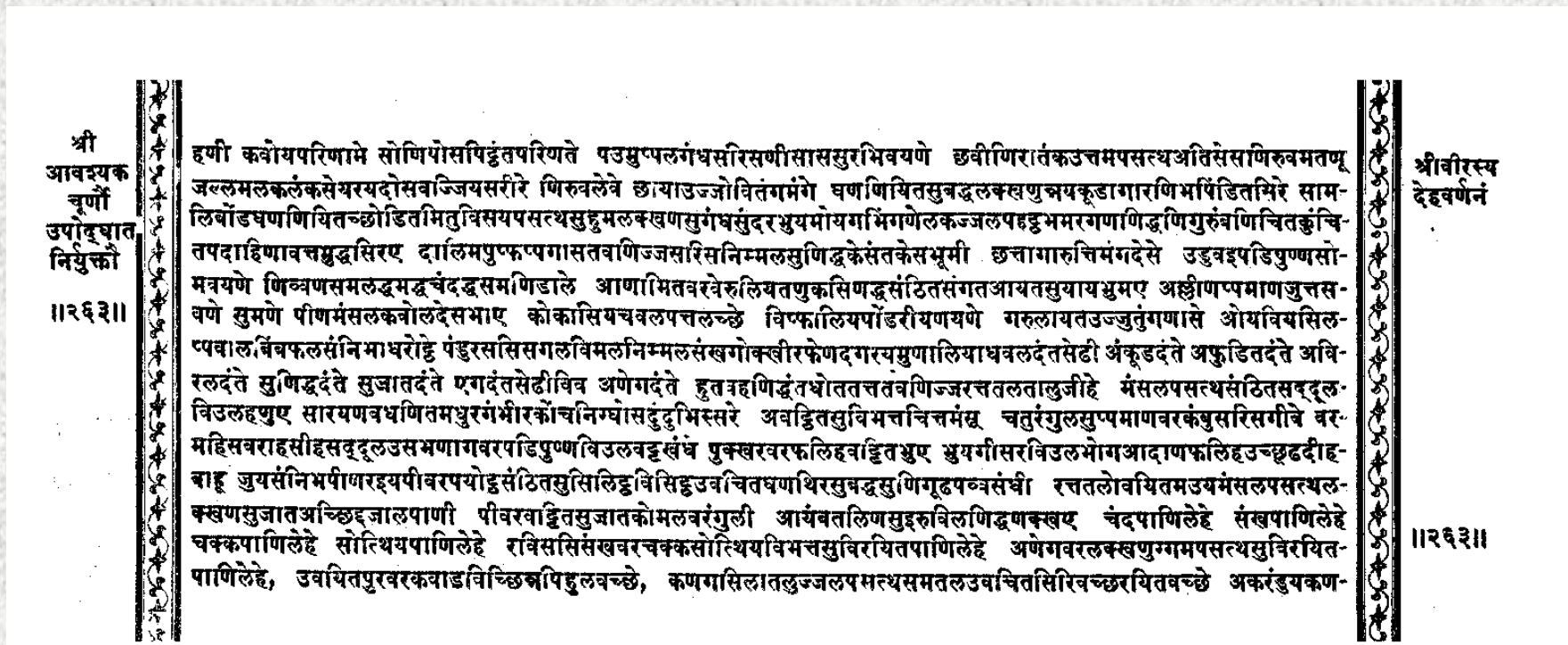
प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

षडागच्छत्तादिच्छत्तकलिते तुंगे गगणतलमभिकंख(लंघ)माणसिहरे जोयणसहस्समूसिते महतिमहालए महिंदज्झए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए । तयणंतरं च णं बहवे

अस्सिलट्ठ० (औप०) कुंत० (औप०) जाव संपत्थिया, तयणंतरं च णं बहवे डंडिणो बहवे मुंडिणो बहवे ढंढिणो जाव बहवे जडिणो हासकारका दवकारका खेड्डकारका चाटुकारका कंदप्पिया कुक्कुतिया गायंतया वायंतया नच्चंतया हसंतया रमंतया हसावेंतया रमावेंतया जाव आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं च पउंजेमाणा जाव संपत्थिया, तयणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा राइन्ना खत्तिया जाव सत्थवाहप्पभितयो ण्हाता जहा उववातिए जाव अप्पेगतिया पायविहारेणं महता पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता सामिस्स पुरतो य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपत्थिता । एवं बहवे देवा देवीओ य सएहिं २ रूवेहिं सएहिं २ वेसेहिं सएहिं २ चिंधेहिं सएहिं २ निओएहिं पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपत्थिया । तए णं से णंदिवद्धणो राया ण्हाते जहा कूणिते जाव हत्थिखंधवरगते सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेतवरचामराहिं ओधुव्वमाणीहिं २ हतगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महता भडचड जाव परिक्खित्ते सामिं पिट्ठतो २ अणुगच्छति । ततेणं सामिस्स पुरतो महं आसा आसवारा उभतो पासिं नागा णागधरा पिट्ठतो रहा रहसंगेल्ली ।

तए णं से समणे भगवं महावीरे वेसालीए दक्खे पडिन्ने पडिरूवे अल्लीणे भद्दए विणीए णाते णातपुत्ते णातकुलविणिवट्ठे विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे विदेहसूमाले सत्तुस्सेहो समचउरंससंठाणसंठिते वज्जरिसभणारायसंघयणे अणुलोमवायुवेगे कंकग्ग-



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६३॥

हणी कवोयपरिणामे सोणियोसपिट्ठंतपरिणते पउमुप्पलगंधसरिसणीसाससुरभिवयणे छवीणिरातंकउत्तमपसत्थअतिसेसणिरुवमतणू जल्लमलकलंकसेयरयदोसवज्जियसरीरे णिरुवलेवे छायाउज्जोवितंगमंगे घणणिचितसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारणिभपिंडितमिरे सामलिबोंडघणणिचितच्छोडितमिदुविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगणेलकज्जलपहट्ठभमरगणणिद्धणिगुरुंबणिचितकुंचितपदाहिणावत्तमुद्धसिरए दालिमपुप्फप्पगासतवणिज्जसरिसनिम्मलसुणिद्धकेसंतकेसभूमी छत्तागारुत्तिमंगदेसे उडुवइपडिपुण्णसोमवयणे णिव्वणसमलद्धमद्धचंददसमणिडाले आणामितवरवेरुलियतणुकसिणद्धसंठितसंगतआयतसुयायभुमए अछीणप्पमाणजुत्तसवणे सुमणे पीणमंसलकवोलदेसभाए कोकासियचवलपत्तलच्छे विप्फालियपोंडरीयणयणे गरुलायतउज्जुतुंगणासे ओयवियसिलप्पवालबिंबफलसंनिभाधरोट्ठे पंडुरससिसगलविमलनिम्मलसंखगोक्खीरफेणदगरयमुणालियाधवलदंतसेढी अकूडदंते अफुडितदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजातदंते एगदंतसेढीविव अणेगदंते हुतवहणिद्धंतधोततत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहे मंसलपसत्थसंठितसद्दूलविउलहणुए सारयणवधणितमधुरगंभीरकोंचनिग्घोसदुंदुभिस्सरे अवट्ठितसुविभत्तचित्तमंसू चतुरंगुलसुप्पमाणवरकंबुसरिसगीवे वरमहिसवराहसीहसद्दूलउसभणागवरपडिपुण्णविउलवट्टखंधे पुक्खरवरफलिहवट्टितभुए भुयगीसरविउलभोगआदाणफलिहउच्छूढदीहबाहू जुयसंनिभपीणरइयपीवरपयोट्ठसंठितसुसिलिट्ठविसिट्ठउवचितघणथिरसुबद्धसुणिगूढपव्वसंधी रत्ततलोवयितमउयमंसलपसत्थलक्खणसुजातअच्छिद्दजालपाणी पीवरवट्टितसुजातकोमलवरंगुली आयंवतलिणसुइरुइलणिद्धणक्खए चंदपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे सोत्थियपाणिलेहे रविससिसंखवरचक्कसोत्थियविभत्तसुविरयितपाणिलेहे अणेगवरलक्खणुग्गमपसत्थसुविरयितपाणिलेहे, उवचितपुरवरकवाडविच्छिन्नपिहुलवच्छे, कणगसिलातलुज्जलपसत्थसमतलउवचितसिरिवच्छरयितवच्छे अकरंडुयकण-

श्रीवीरस्य देहवर्णनं

॥२६३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

गरुइलनिम्मलसुजातणिरुवहतदेहधारी अट्ठसहस्सपडिपुन्नवरपुरिसलक्खणधरे संनतपासे संगतपासे सुंदरपासे सुजातपासे मितमाइ-
यपीणरइतपासे झसविहगसुजातपीणकुच्छीसमोदरे पउमविगडनाभी साहतसोणंदमुसलदप्पणणिगरियवरकणगवरुयसरिसवरवइरव-
लितमज्झे गंगावत्तयपयाहिणावत्ततरंगभंगरविकिरणतरुणबोहितअकोसायंतपउमगंभीरविरयणाभे उज्जुयसमसहितसुजातजच्चतणु
कसिणणिद्धआएज्जलडहसुमालमउयरमणिज्जरोमरायी पमुदितवरतुरगसीहअतिरेगवट्टितकडी पसत्थवरतुरगसुजातगुज्झदेसे आइन्न-
हयव्व निरुवलेवे गयससणसुजातसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्कमविलसितगती समुग्गणिमुग्गगूढजन्नू एणीकुरुविंदावत्तवट्टाणुपु-
व्वजंघे संठितसुसिलिट्ठविसिट्ठगूढगोप्फे सुपतिट्ठयकुम्मचारुचलणे अणुपुव्वसुसाहतपीवरंगुलीए उन्नततणुतंबनिद्धनखे रत्तुप्पलपत्त-
मउयसुकुमालमंसलतले नगणगरमगरसागरचक्कंकवरंकमंगलंकितचलणे निविट्ठचलणे विसिट्ठरूवे हुतवहनिद्धूमजलिततडितडियत-
रुणरविकिरणसरिसतेए अब्भहियं रज्जतेयलच्छीय दिप्पमाणे सूरे वीरे विक्कंते पुरिसोत्तिमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवर-
गंधहत्थी तीसं वासाइं विदेहंसि कट्टु अम्मापितिहिं देवत्तिगएहिं गुरुमयहरएहि य अब्भणुन्नाते समत्तपइन्ने पुणरवि लोयंतिएहिं
जीतकप्पेहिं देवेहिं संबोहिते तेणं अणुत्तरेणं आभोहिएणं णाणदंसणेणं अप्पणो णिक्खमणकालं आभोगेऊण चिच्चा हिरण्णं चिच्चा
सुवण्णं चेच्चा धणं चेच्चा रज्जं चेच्चा रट्ठं एवं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं चेच्चा पुरं चेच्चा जणवयं चेच्चा धणकणगरयणमणि-
मोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमादीयं संतसावतेज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दाणं दाइयाणं परिभाएत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे
पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं पातीणगामिणीए छायाए पोरुसीए अहिणिव्वट्टाए पमाणपत्ताए
सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं चंदप्पभाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखियचक्कियणंगलिय-

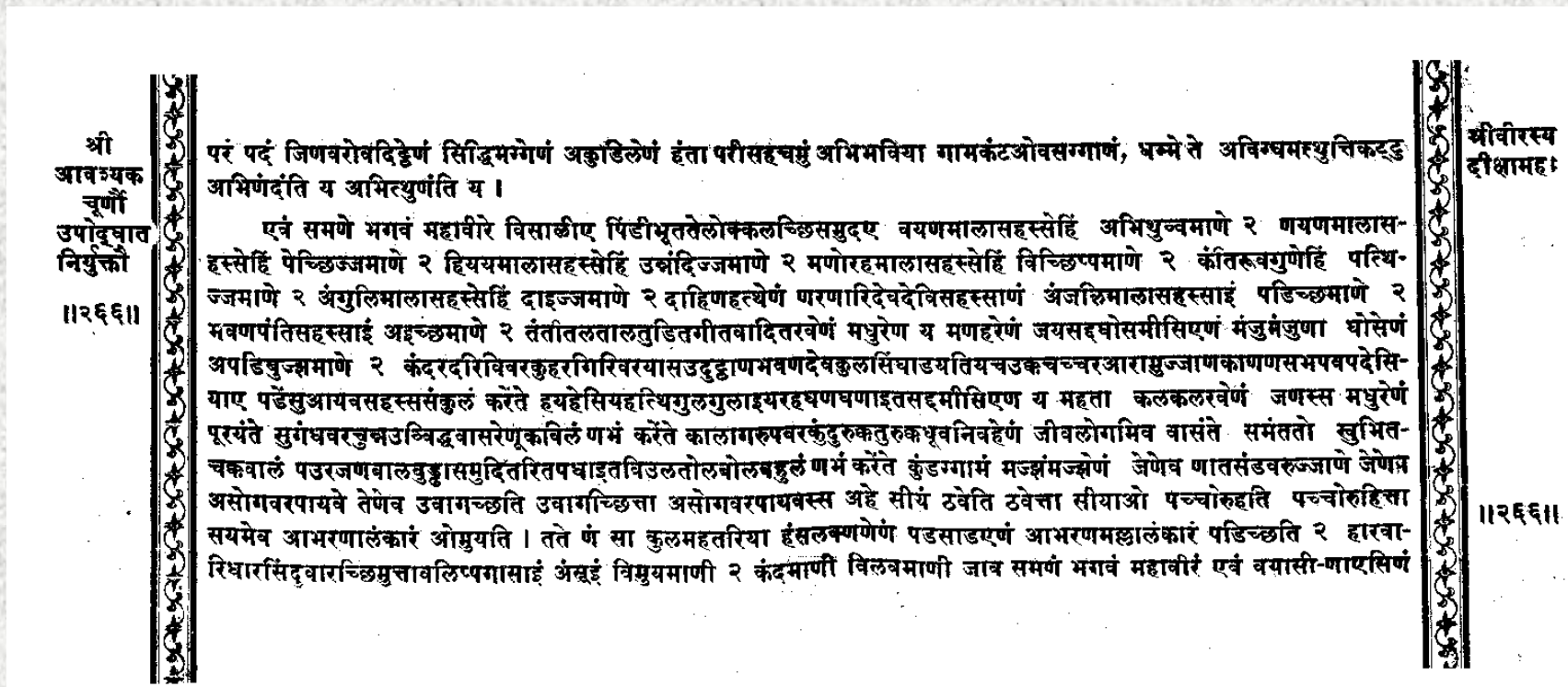
॥२६४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुहमंगलियपूसमाणवद्धमाणघंटियगणेहिं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे य अभिथुव्वमाणे य अब्भुग्गयाभिंगारे पग्गहिततालएंटे ऊसवितसेतछत्ते पवीयितसेतचामरावालवीयणीए सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्ववलेणं सव्वसमुदएणं सव्वविभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपगतीहिं सव्वणातगेहिं सव्वणाडगेहिं सव्वतालातरेहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिगसद्दसंनिनादेणं एवं महता इड्ढीए जाव महता समुदएणं महता वग्गतुडितजमगसमगपडुप्पवातियसंखपणवभेरिझल्लरिखरमुहिदुंदुहुडक्कितमुरवमुइंगदुंदुभिणिग्घोसणादितरवेणं कुंडपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव णातसंडवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं सामिस्स तहा णिग्गच्छमाणस्स अप्पेगतिया देवा कुंडपुरं णगरं सब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जितं जधा अभिसेगे जाव आहावंति परिधावंति। तए णं सामिस्स कुंडपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडगतिगचउक्क जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया लाभत्थिया जाव करोडिया अन्ने य तहा बहवे नरनारी देवदेविसंघाता ताहिं इट्ठाहिं जाव गाहियाहिं वग्गूहिं अभिनंदमाणा य अभित्थुणंता य एवं वयासी-जय जय नन्दा! जय जय भद्दा! जय जय णंदा! भद्दं ते जय जय खत्तियवरवसभा! बुज्झाहि भगवं लोगणाहा! पवत्तेहि धम्मतित्थं हियसुहनिस्सेयसकरं सव्वजीवाणंति, जय जय णंदा धम्मेणं जय जय णंदा तवेणं जय जय णंदा भद्दं ते अभग्गेहिं णाणदंसणचरित्तुत्तमेहिं अजिताइं जिणाहि इंदियाइं जितं च पालेहि समणधम्मं जितविग्घोऽविय वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे णिहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणितबद्धकच्छो महाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो हराहि आराहणापडागं च वीरतेलोक्करंगमज्झे पावयवितिमिरमणुत्तरं केवलं च णाणं गच्छय मोक्खं



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६६॥

परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिभग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमुं अभिभविया गामकंटओवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घमत्थुत्तिकट्टु अभिणंदंति य अभित्थुणंति य ।

एवं समणे भगवं महावीरे विसालीए पिंडीभूततेलोक्कलच्छिसमुदए वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे २ णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे २ हिययमालासहस्सेहिं उन्नंदिज्जमाणे २ मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे २ कंतिरूवगुणेहिं पत्थिज्जमाणे २ अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिणहत्थेणं णरणारिदेवदेविसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे २ भवणपंतिसहस्साइं अइच्छमाणे २ तंतीतलतालतुडितगीतवादितरवेणं मधुरेण य मणहरेणं जयसद्दघोसमीसिएणं मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्झमाणे २ कंदरदरिविवरकुहरगिरिवरयासउद्दुद्दाणभवणदेवकुलसिंघाडयतियचउकचच्चरआरामुज्जाणकाणणसभपवपदेसियाए पडेंसुआयवसहस्ससंकुलं करेंते हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइतसद्दमीसिएण य महता कलकलरवेणं जणस्स मधुरेणं पूरयंते सुगंधवरकुसुमउव्विद्धवासरेणूकविलं णभं करेंते कालागरुपवरकुंदुरुकतुरुकधूवनिवहेणं जीवलोगमिव वासंते समंततो खुभितचक्कवालं पउरजणबालवुड्ढासमुदितरितपधाइतविउलतोलबोलबहुलं णभं करेंते कुंडग्गामं मज्झंमज्झेणं जेणेव णातसंडवरुज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठवेति ठवेत्ता सीयाओ पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति । तते णं सा कुलमहतरिया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति २ हारवारिधारसिंदुवारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूइं विमुयमाणी २ कंदमाणी विलवमाणी जाव समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-णाएसिणं

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

॥२६६॥

तुमं जाता कासवगोत्तेसिणं तुमं जाता ! उदितोदितणातकुलणभतलमियंकसिद्धत्थजच्चखत्तियसुते सि णं तुमं जाता ! वासिट्ठ-गोत्तजच्चखत्तियाणिए तिसलाए अत्तए सि णं तुमं जाया ! जच्चखत्तिए सि णं तुमं जाता ! बहुपुरिसविदत्तनिम्मलजसकित्तिवत्त-संजलणणातकुलवरवडेंसए सि णं तुमं जाता ! गब्भसुकुमाले सि णं तुमं जाता! अभिनिव्वट्टजोव्वणे सि तुमं जाया ! अभिनिव्व-दलायक्खे सि णं तुमं जाया ! अप्पडिरूवरूयलावन्नजोव्वणगुणे सि णं तुमं जाता ! अहियसस्सिरीएणं तुमं जाया ! अहियपेच्छणि-ज्जे सि णं तुमं जाता ! अहियपीहणिज्जे सि णं तुमं जाता ! अहियपत्थणिज्जे सि णं तुमं जाता ! अहियअभिनिविट्ठमतिविन्नाणे सि णं तुमं जाता ! देविंदणरिंदपहितकित्ती सि णं तुमं जाता, सुहोसिएसि णं तुमं जाया ! एत्थ य तिव्वं चंकमियव्वं गरुयं आलम्बेयव्वं असिधारं महव्वयं चरियव्वं, तं घडियव्वं जाया ! जतितव्वं जाता ! परक्कमेयव्वं जाता, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाए-यव्वंतिकट्टु णेदिवद्धणप्पमुहे सयणवग्गे सामिं वंदति णमंसति अभिणंदति अभित्थुणति, थुणेत्ता एगंते अवक्कमति, सेसाणवि आणंदअंसुपातो । तए णं सामी एवमेतंमिति वयासी २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, तते णं से सक्के देविंदे देवराया सामिस्स केसे हंसलक्खणेणं पडसाडएणं पडिच्छति, पडिच्छित्ता अणुजाणतु मे भगवंतिकट्टु खीरोदगसमुद्दे साहरति, ततेणं सामी णमोऽत्थुणं सिद्धाणंतिकट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जति, तंसमयं च णं देवाण मणुस्साण य निग्घोसे तुरियगणगीतवादितनिग्घोसे य सक्कवयणसंदेसेणं खिप्पामेव निलुक्के यावि होत्था, ताहे करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव वोसिरामित्ति, भदंतत्ति ण भणति जीतमिति, जंसमयं च णं सामी सामाइयं पडिवज्जति तंसमयं च णं सक्किस्स मणुस्सधम्मातो उत्तरिए मणप-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

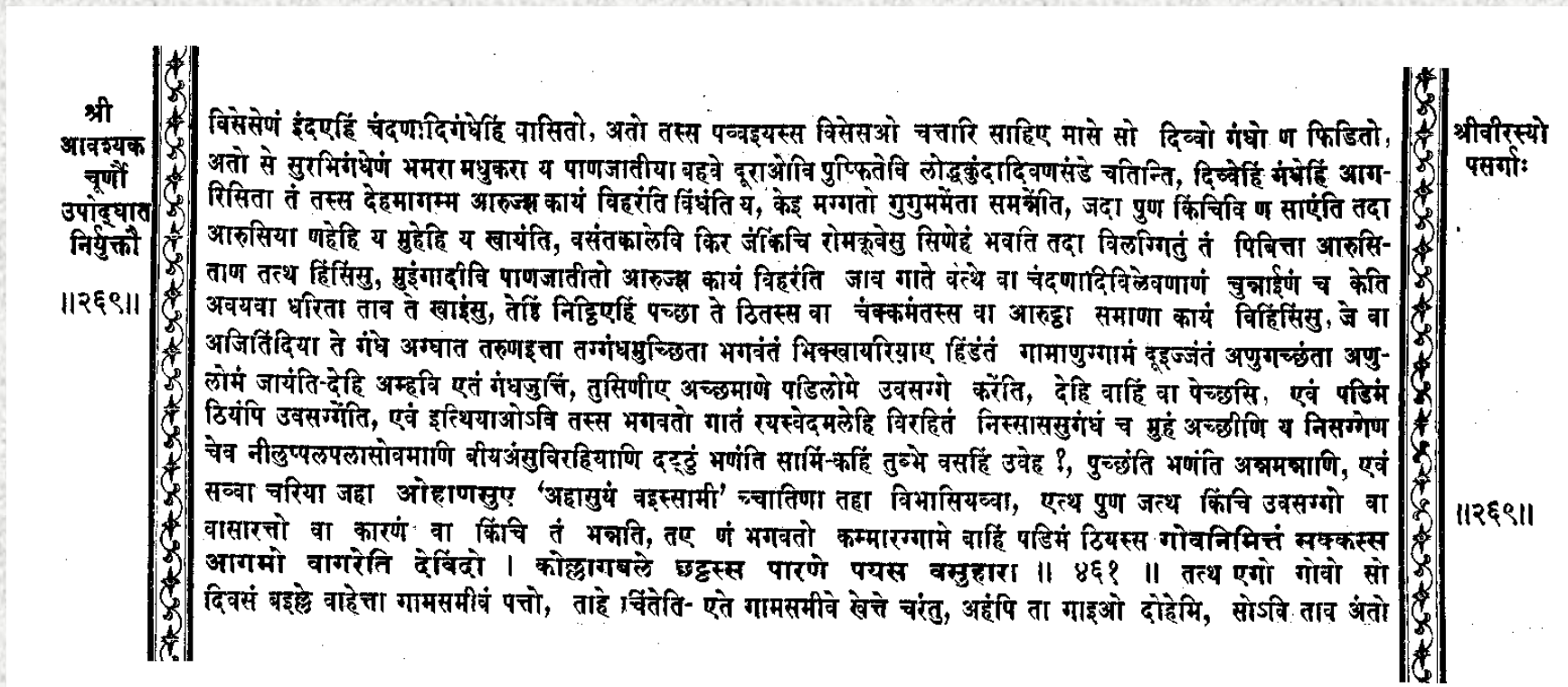
दीप अनुक्रम [-]

ज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने। सामी छट्ठेणं भत्तेणं अप्पाणएणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेहिं जोगमुवागतेणं एगं देवदूसमादाय णिग्गिणे भवित्ताणं तं वामे खंधे काउं, जीतमिति, आगाराओ अणगारियं पव्वइए। एत्थ गाहाओ—

एवं सदेवमणु. ॥भा.१०५॥ उज्जाणं संपत्तो ॥भा.१०६॥ जिणवर० ॥भा.१०७॥ दिव्वा मणुस्सा ॥भा.१०८॥ काऊण० ॥ भा. १०९ ॥ तिहिं नाणेहिं ॥ भा. ११० ॥

तए णं सामी अहासंनिहिए सव्वे नायए आपुच्छित्ता णायसंडवहिया चउब्भागऽवसेसाए पोरुसीए कुंमारग्गामं पहावितो, एत्थंतरा पितुवयंसो विजातितो उवट्ठितो, अन्ने भणंति- जदा चरित्तं पडिवज्जति तदा उवट्ठितो, सो य दाणे कहिंपि गतेल्लओ, पच्छा आगतो मज्जाते अंबाडिए, सामिणा एवं परिचत्तं तुमं पुण वाइंगणिवणाणि हिंडसि, जाहि जदि एत्थंतरेऽवि लभेज्जासित्ति, सो भणति जहा- सामि ! मम न किंचि तुब्भेहिं दिन्नं, इयाणिंपि देहित्ति, ताहे सामिणा तस्स देवदूसस्स अद्धं दिन्नं, अन्नं परिचत्तंति, तं तेण तुन्नागस्स उवणीयं, जहा एयस्स दसिया बंधाहि, तेण पुच्छितं-इमं कओत्ति ?, भणइ- भगवया दिन्नंति, तुन्नाओ भणइ-तंपि से अद्धं आणेहि, जया पडिहिति भगवओ अंसाओ तदा आणेज्जासि, तो णं अहं तुन्नेहामि ताहे सयसहस्सं मोल्लं भविस्सइ, तो तुज्झवि अद्धं ममवि अद्धंति, पडिवन्नो, ताहे सो भगवं पओलग्गिओ, सेसं उवरिं भणिही। तत्थ य दो पंथा-एगो पाणिएणं एगो पालीए, सामी पालीए जा वच्चति ताव पोरुसी मुहुत्तावसेसा जाता, संपत्तो य तं गामं, तस्स बाहिं सामी पडिमं ठितो, स हि भगवान् दिव्वेहिं गोसीसारत्तीएहिं चंदणेहिं चुन्नेहिं तहा वासेहि य पुप्फेहि य वासियदेहो निक्खमणाभिसेगेण य अभिसित्तो

अथ उपसर्गस्य वर्णनं आरभ्यते



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२६९॥

विसेसेणं इंदएहिं चंदणादिगंधेहिं वासितो, अतो तस्स पव्वइयस्स विसेसओ चत्तारि साहिए मासे सो दिव्वो गंधो ण फिडितो, अतो से सुरभिगंधेणं भमरा मधुकरा य पाणजातीया बहवे दूराओवि पुप्फितेवि लोद्धकुंदादिवणसंडे चतिन्ति, दिव्वेहिं गंधेहिं आगरिसिता तं तस्स देहमागम्म आरुज्झ कायं विहरंति विंधंति य, केइ मग्गतो गुगुममेंता समग्गेंति, जदा पुण किंचिवि ण साएंति तदा आरुसिया णहेहि य मुहेहि य खायंति, वसंतकालेवि किर जंकिंचि रोमकूवेसु सिणेहं भवति तदा विलग्गितुं तं पिबित्ता आरुसिताण तत्थ हिंसिंसु, मुइंगादीवि पाणजातीतो आरुज्झ कायं विहरंति जाव गाते वत्थे वा चंदणादिविलेवणाणं चुन्नाईणं च केति अवयवा धरिता ताव ते खाइंसु, तेहिं निट्ठिएहिं पच्छा ते ठितस्स वा चंक्कमंतस्स वा आरुट्ठा समाणा कायं विहिंसिंसु, जे वा अजितिंदिया ते गंधे अग्घात तरुणइत्ता तग्गंधमुच्छिता भगवंतं भिक्खायरियाए हिंडंतं गामाणुग्गामं दूइज्जंतं अणुगच्छंता अणुलोमं जायंति-देहि अम्हवि एतं गंधजुत्तिं, तुसिणीए अच्छमाणे पडिलोमे उवसग्गे करेंति, देहि वाहिं वा पेच्छसि, एवं पडिमं ठियंपि उवसग्गेंति, एवं इत्थियाओऽवि तस्स भगवतो गातं रयस्वेदमलेहि विरहितं निस्सासमुगंधं च मुहं अच्छीणि य निसग्गेण चेव नीलुप्पलपलासोवमाणि वीयअंसुविरहियाणि दट्ठुं भणंति सामि-कहिं तुब्भे वसहिं उवेह ?, पुच्छंति भणंति अम्हमम्हाणि, एवं सव्वा चरिया जहा ओहाणसुए 'अहासुयं वइस्सामी' त्यातिणा तहा विभासियव्वा, एत्थ पुण जत्थ किंचि उवसग्गो वा वासारत्तो वा कारणं वा किंचि तं भन्नति, तए णं भगवतो कम्मारग्गामे बाहिं पडिमं ठियस्स गोवनिमित्तं स्मकस्स आगमो वागरेति देविंदो । कोल्लागबले छट्ठस्स पारणे पयस वसुहारा ॥ ४६१ ॥ तत्थ एगो गोवो सो दिवसं वइल्ले वाहेत्ता गामसमीवं पत्तो, ताहे चिंतेति- एते गामसमीवे खेत्ते चरंतु, अहंपि ता गाइओ दोहेमि, सोऽवि ताव अंतो

श्रीवीरस्यो पसर्गाः

॥२६९॥

परिकम्मं करेति, ते बइल्ला चरंता अडविं पइट्ठा, सो गोवो निग्गतो, ताहे पुच्छति-कहिं ते बइल्ला?, ताहे सामी तुण्हिक्को अच्छति, सो चिंतेइ- एस ण जाणति, तो मग्गितुमाढत्तो, ते य बइल्ला जाहे धाता ताहे सामसमीवं आगता माणुसं दट्ठूण रोमंथेंता अच्छंति, ताहे सो आगतो पेच्छति तत्थेव निविट्ठे, ताहे आसुरुत्तो, एतेण दामएण हणामि, एतेण मम चोरिता एते बइल्ला, पभाए घेत्तुं वच्चीहामि, ताहे सक्को देविंदो देवराया चिंतेइ-किं अज्ज सामी पढमदिवसे करेति ?, जाव पेच्छति तं गोवं धावंतं, ताहे सो तेण थंभितो, पच्छा आगतो तं तज्जेति- दुरात्मा न जाणसि सिद्धत्थरायपुत्तो अज्ज पव्वतितो, ताहे तंमि अंतरे सिद्धत्थो सामिस्स मातुत्थितापुत्तो बालतवोकम्मेणं वाणमंतरो जातेल्लओ, सो आगतो, ताहे सक्को भणति- भगवं ! तुब्भ उवसग्गबहुलं तो अहं बारस वासाणि वेयावच्चं करेमि, ताहे सामिणा भन्नति- नो खलु सक्का ! एवं भूअं वा ३ जं णं अरिहंता देविंदाण वा असुरिंदाण वा नीसाए केवलणाणं उप्पाडेंति उप्पाडेंसु वा ३ तवं वा करेंसु वा ३ सद्धिं वा वच्चिंसु वा ३, णण्णत्थ सएणं उट्ठाण-कम्मबलविरियपुरिसक्कारपरक्कमेणं, ताहे सक्केण सिद्धत्थो भणितो- एस तव णीयल्लओ पुणो य मम वयणं, सामिस्स जो परं मारणंतियं उवसग्गं करेति तं वारेहि, एवमस्तु तेण पडिसुतं, सक्को पडिगतो, सिद्धत्थो ठितो, सामिस्स य अगारवासं मोत्तूण संजयस्स सतो एयं चउत्थभत्तं, नत्थि अन्नं, अवसेसं कालं जहन्नगं छट्ठभत्तं आसि। ततो बीयदिवसे छट्ठपारणए कोल्लाए संनिवेसे घतमधुसंजुत्तेणं परमन्नेणं बलेण माहणेण पडिलाभितो पंच दिव्वा जहा उसभस्स ।

दुइज्जंतग पितुणो वयसं तिव्वा अभिग्गहा पंच । आचियत्तोग्गह ण वसण णिच्चं वोसट्ठ मोणेणं ॥ ४-१।४६२।

इन्द्र-प्रार्थना

॥२७०॥

पाणीपत्तं गिहिवंदणं च तह वद्धमाण वेगवती । धणदेव सूलपाणी दसमं वासऽट्ठितग्गामो ॥४-२।४६३।
रोद्दा य सत्त वेयणि थुति दस सुमिणुप्पलऽद्धमासे य। मोराए सक्कारं सक्को अच्छंदए कुवितो ॥४-३।४६४।

ताहे सामी विहरमाणो गतो मोरागं संनिवेसं, तत्थ दूइज्जंतगा णाम पासंडत्था, तेसिं तत्थ आवासा, तेसिं च कुलवती भगवतो पितुमित्तो, ताहे सो सामिस्स सागतेणं उवगतो, ताहे सामिणा पुव्वपतोगेण तस्स सागतं दिन्नं, सो भणति-अत्थि घरं एत्थ कुमारवर ! अच्छाहि, तत्थ सामी एगंतराइं वासिऊण पच्छा गतो विहरति, तेण भणियं-विविचाओ वसहीओ, जदि वासारत्तो कीरति तो आगमेज्जाह, ताहे सामी अट्ठ उउबद्धिए मासे विहरित्ता वासावासे उवग्गे तं चेव दूइज्जंतगगामं एति, तत्थेगमि मढे वासावासं ठितो, पढमपाउसे य गोरूवाणि चारिं अलभंताणि जुण्णाणि तणाणि खायंति, ताणि य घराणि उव्वेल्लेंति, पच्छा ते वारेंति, सामी ण वारेइ, पच्छा ते दूइज्जंतगा तस्स कुलवइस्स साहेंति, जहा एस एताणि ण वारेति, ताहे सो कुलवती तं अणुसासेति, भणति कुमारवरा ! सउणीवि ताव णेडं रक्खति, तुमंपि वारेज्जासित्ति सप्पिवासं भणति, ताहे सामी अचित्तोग्गहोत्ति निग्गतो, इमे य तेण पंच अभिग्गहा महिता, तंजहा—अचियत्तोग्गहे ण वसितव्वं, निच्चं वोसट्ठे काए मोणं च, पाणीसु भोत्तव्वं, ता केई इच्छंति-सपत्तो धम्मो पन्नवेयव्वोत्ति तेण पढमपारणगे परपत्ते भुत्तं, तेणं परं पाणिपत्ते, गोसालेण किर तंतुवायसालाए भणियं—अहं तव भोयणं आणामि, गिहिपत्ते काउं, तंपि भगवया नेच्छियं, उप्पन्नाणस्स उ लोहज्जो आणेति ॥ धन्नो सो लोहज्जो खंतिखमो पवरलोहसरिवन्नो । जस्स जिणो पत्ताओ इच्छइ पाणीहिं भोत्तुं जे ॥ १ ॥ किं तत्थ ता ण अडितवां ?,

भणितं च-" देविंदचक्कवट्टी मंडलिया ईसरा तलवरा य। अभिगच्छंति जिणिंदं गोयरवडियं ण सो अडति ॥ १ ॥' छउमत्थकाले अडितं, गिहत्थी न वंदियव्वो न अब्भुट्ठेयव्वोत्ति। तत्थ अद्धमासं अच्छित्ता ततो पच्छा अट्ठियग्गामं वच्चति, तस्स पुण अट्ठियगामस्स पढमं वद्धमाणयं णामं होत्था, तो किह जातो अट्ठितगामो ?,

तत्थ धणदेवो नाम वाणियओ पंचहिं पुरस्सरेहिं गणिमधरिममेज्जस्स भरितेहिं तेणंतेण आगतो, तस्समीवे वेगवती णाम णदी, तं सगडाणि उत्तरंति, तस्स य एगो बतिल्लो सो मूलधुरे जुप्पति, ताहच्चएणं (बलेणं) ताओ भंडीओ उत्तिन्नाओ, पच्छा सो छिन्नो पडितो, सो वाणियतो तं अवहाय तणं पाणितं च पुरतो छड्डेऊणं गतो, सो य तत्थ वालियाए जेट्ठामूले मासे अतीव उण्हेण तण्हाए य परिताविज्जति,वद्धमाणओ य लोगो तेणंतेणं तणं च पाणियं वहति, ण य तस्स कोइ देति, ताहे सो गोणो तस्स लोगस्स पदोसमावन्नो, सो तत्थ अकामतण्हाए य अकामछुहाए य तत्थ चेव गामे अग्गुज्जाणे सूलपाणी वाणमंतरो उववण्णो, उवउत्तो पासइ तं बलद्दसरीरगं, ताहे आसुरुत्तो मारिं विउव्वति, सो गामो मरिउमारद्धो, एवं अद्दण्णो समाणो कोउगसयाणि करेति, तहावि ण ट्ठाति, ताहे भिन्नो गामो अन्नेसु संकंतो, तत्थवि ण मुंचति, ताहे तेसिं चिंता जाता-अम्हेहिं तत्थ ण णज्जति कोऽवि देवो वा दाणवो वा विराहितो, तम्हा तहिं चेव वच्चामो, आगता समाणा णगरदेवताए विउलं बलिउवहारं करेत्ता समंततो उम्मुहा सरणंति जं अम्हेहिं सम्मं ण चेट्ठितं तस्स खमहा, ताहे अंतलिक्खपडिवन्नो सो देवो ते भणति--तुब्भे दुरात्मा णिरणुकंपा तेणंतेण जाव एह य, ण य तस्स गोणस्स तणं वा पाणियं वा दिन्नं, तस्स मे एतं फलं, ते ण्हाता पुप्फबलिहत्थगता भणंति--दिट्ठो कोवो, पसादं

इच्छामो, ताहे भणति-एताणि माणुस्सट्ठियाणि पुंजं काऊणं उवरिं देवकुलं करेह, बलिवदं च एगपासेत्ति, अन्ने भणंति--तं बइल्लरूवं करेह, तस्स य हेट्ठा ताणि बइल्लट्ठियाणि निक्खणह, तेहिं अचिरेणं कयं, तत्थ इंदसम्मो णाम तस्स पडियरओ, ताहे लोगो पंथियादी पेच्छति--पंडरट्ठियं गामं देवकुलं च, ताहे पुच्छंति अन्ने--कयराओ गामाओ आगता ?, भणेति-जत्थ ताणि अट्ठियाणि, एवं सो अट्ठितगामो जातो। तत्थ पुण वाणमंतरघरे जो रत्तिं परिवसति तत्थ सो सूलपाणी संनिहितो तं रत्तिं वाहेत्ता पच्छा मारेति, ताहे तत्थ लोगो दिवसं अच्छिऊणं पच्छा विगाले अन्नत्थ वच्चति, इंदसम्मोऽवि धूवं दीवगं दातुं दिवसतो चेव जाति। इतो य तत्थ सामी आगतो दूइज्जंतगाण पासातो, तत्थ य सव्वलोगो तद्दिवसं पिंडितो अच्छति, सामिणा देवकुलितो अणुन्नवितो, सो भणति--गामो जाणति, सामिणा गामो मिलितओ चेव अणुन्नवितो, सो गामो भणइ--ण सक्का एत्थ वसिउं पुंजे, सामी भणति-णवरि तुब्भे अणुजाणह, ताहे भणंति--ट्ठाह, तत्थेक्केका वसहिं देंति, सामी णेच्छति, भगवं जाणति-सो संबुज्झिहितित्ति, ताहे गंता एगकोणे पडिमं ठितो, ताहे सो इंदसम्मो सूरे धरेंते चेव धूवपुप्फं दाऊण कप्पडियकरोडिया सव्वे पलोएत्ता तंपि देवज्जगं भणति-तुब्भेवि णीह, मा मारिज्जिहिह, भगवं तुसिणीओ अच्छति, ताहे सो वंतरो चिंतेति--देवकुलिएण गामेण य भन्नंतोऽवि न जाति पेच्छ से अज्जं जं करेमि, ताहे सज्झाए अट्टट्टहासं मुयंतो बीहावेइ, भीमं अट्टट्टहासं मुंचंतो ताहे भेसेउं पवत्तो, ताहे सव्वो लोगो तं सद्दं सोऊण भीतो भणति--एस सो देव्वज्जतो मारिज्जति, तत्थ य उप्पलो नाम पच्छाकडो परिव्वाओ पासावच्चिज्जो नेमित्तिओ भोमउप्पातसिमिणंतलिक्खअंगसरलक्खणवंजणअट्ठंगमहानिमित्तजाणओ जणस्स सोऊण चिंतेति-मा तित्थकरो होज्जात्ति अद्धितिं करेति, बीहेति य तत्थ रत्तिं गंतुं, ताहे सो वाणमंतरो जाहे सद्देण ण बीहेति ताहे हत्थिरूवेण उवसग्गं

शूलपाणि चैत्यं

॥२७३॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

करेति पिसायरूवेण य, एतेहिंवि जाहे ण तरति खोभेउं ताहे पभायसमए सत्तविहं वेयणं करेति, तंजहा-सीसवेयणं १ कन्नवेयणं २ अच्छिवेयणं ३ दंतवेयणं ४ णहवेयणं ५ नक्कवेयणं ६ पिट्ठिवेयणं ७ एक्केक्का वेयणा समत्था पागतस्स जीतं संकामेतुं, किं पुण सत्त तायो उज्जलाओ ?, भगवं अहियासेति, ताहे सो देवो जाहे न तरइ चालेउं वा खोभेउं वा ताहे तंतो संतो परितंतो पायपडिओ खामेइ-खमेह भट्टारगत्ति, ताहे सिद्धत्थो उद्धातितो-हं भो सूलपाणी ! अपत्थियपत्थया न जाणसि सिद्धत्थरायसुयं भगवंतं तित्थगरं, जति सक्को देवराया जाणंतो तो ते णं पावेंतो,ताहे सो भीतो दुगुणं खामेति, ताहे सिद्धत्थो धम्मं कहेति, तत्थ उवसंतो सामिस्स महिमं करेति, तत्थ लोगो चिंतेति सो तं देवज्जतं मारेत्ता इयाणिं कीलेति । सामी य देसूणचत्तारि जामे अतीव परितावितो समाणो पभायकाले मुहुत्तमेत्तं निद्दापमादं गतो, तत्थिमे दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धो, तंजहा-तालपिसाओ हतो १ सेयसउणो चित्तकोइलो य दोधेवे पज्जुवासंता दिट्ठा २-३ दामदुगं च सुरभिकुसुममयं ४ गोवग्गो य पज्जुवासंतो ५ पउमसरो विउद्धपंकओ ६ सागरो य मि णित्थन्नोत्ति ७ सूरो य पइन्नरस्सिमंडलो उग्गमतो ७ अंतेहि य मे माणुसुत्तरो वेढिओत्ति ९ मंदरं चारुढो मित्ति१०, लोगो पभाते आगतो, उप्पलो य इंदसम्मो य, ते अच्चणियं दिव्वं गंधचुन्नपुप्फवासं च वासंति भट्टारगं च अक्खयसव्वंगं, ताहे सो लोगो सव्वो सामिस्स उक्किट्ठिसीहणादं करेंतो पादेसु पडितो भणति, जहा देवज्जतेण देवो उवसामितो, महिमं पगतो, उप्पलोऽवि सामिं दट्ठुं पहट्ठो वंदति, ताहे भणति-सामी ! तुब्भेहिं अंतिमरातीए दस सुमिणा दिट्ठा, तेसिं इमं फलंति-जो तालपिसायो हतो तमचिरेण मोहणिज्जं उम्मूलेहिसि १ जो य सेयसउणो तं सुक्कज्झाणं ज्झाहिसि २ जो विचित्तो कोइलो तं दुवालसंगं पन्नवेहिसि ३ गोवग्गफलं च ते चउव्विहो समणसंघो भविस्सति, ५ पउमसरो चउव्विहदेवसंघातो

भविस्सति ६ जं च सागरं तिण्णो तं संसारमुत्तारिहिसि ७ जो य सूरो तमचिरा केवलनाणं ते उप्पज्जिहिति ८ जं च अंतेहिं माणुसुत्तरो वेढितो तं ते निम्मलजसकित्तिपयावा सयले तिहुयणे भविस्सति ९ जं च मंदरमारुढोसि तं सीहासणत्थो सदेवमणुयासुराए परिसाए धम्मं पन्नवेहिसित्ति १० दामदुगं पुण ण जाणामि, सामी भणति-हे उप्पला! जं नं तुमं न याणसि तं नं अहं दुविहमगाराणगारियं धम्मं पन्नवेहामित्ति ४ ततो उप्पलो वंदित्ता गतो। तत्थ सामी चत्तारि मासे अद्धमासं खममाणो एतं पढमं समोसरणं वुच्छो। एत्थ इमाओ मूलभासागाहाओ—

भीमट्टहास हत्थी पिसाय णागा य वियण सत्तेमा। सिर कन्न णास दंते णहऽच्छि पट्ठी य सत्तमिया ४-४।४६५॥
ताल पिसायं दो कोइला य दामदुगमेव गोवग्गं। सर सागर सूरंते मंदर सुविणुप्पले चेव ॥ ४-५।४।६६॥
मोहे य झाण पवयण धम्मे संघे य देवलोगे य। संसारत्ताण जसे धम्मं परिसाए मज्झंमि ॥४-६।४६७॥

पच्छा सरदे निग्गओ मोरायं नाम सन्निवेसं गओ, तत्थ सामी बहिं उज्जाणे ठिओ, तत्थ य मोरागए सन्निवेसे अच्छंदगा-नामं पासंडत्था, तत्थ एगो अच्छंदओ तत्थ गामे अच्छइ, सो पुण तत्थ गामे कोंटलवेंटलेण जीवति, सिद्धत्थगो एक्कओ अच्छंतओ अद्धिर्तिं करेति बहुसंमोइतो य, भगवतो य पूयं अपेच्छंतो, ताहे सो वोलेंतं गोहं सद्दावेत्ता वागरेति, जहिं पधावितो जं जिमितो जं पंथे दिट्ठं जे य सुविणगा दिट्ठा, ताहे सो आउट्टो गामं गंतुं मित्तपरिजिताण परिकहेति, सव्वहिं गामे फुसितं एस देवज्जतो उज्जाणे अतीतवट्टमाणागतं जाणति, ताहे अन्नोऽवि लोओ आगतो,सव्वस्स वागरेति, लोगो तहेव आउट्टो महिमं

करेति, सो लोगेण अविरहितो अच्छति, ताहे सो लोगो भणइ-एत्थ अच्छंदओ णाम जाणंतओ, सिद्धत्थो भणति-से ण किंचि जाणति, ताहे लोगो गंतुं भणति-तुमं ण किंचि जाणसि, देवज्जतो जाणति, सो लोगमज्झे अप्पाणं ठाविउकामो भणति-एह जामो, जदि मज्झ जाणति तो जाणति, ताहे लोगेण परिवारितो एति, भगवतो पुरतो ट्ठितो, तणं गहाय भणति-किं एतं छिज्जिहिति?, जइ भणिहिइ छिज्जिहिइ तो ण च्छिदिस्सं, अह भणिहिति णवि तो छिंदिस्सामि, सिद्धत्थेण भणितं-ण छिज्जिहिति, आढत्तो छिंदितुं, सक्केण य उवओगो दिन्नो, ताहे अच्छंदगस्स कुवितो।

तणछेयंगुलि कम्मार वीरघोसमहिसेंदु दसपलिए। बिइइंदसम्म ऊरण बदरीए दाहिणुक्कुरुडे ॥ ४-८।४६९ ॥
ततियमवच्चं भज्जा कहए णाहं ततो पिउवयंसो। दक्खिणवाचाल सुवन्नवालुया कंटए वत्थं ॥ ४-९।४७० ॥

ताहे तेण वज्जं पक्खित्तं, अच्छंदगस्स अंगुलीओ दसवि भूमीए पडिताओ, लोगेण खिंसितो गतो, ताहे सिद्धत्थो तस्स पदोसमावन्नो तं लोगं भणति-एस चोरो, कस्सेतेण चोरितं?, सिद्धत्थो भणति-अत्थि एत्थ वीरघोसो नाम कम्मकारो ?, सो पाएहिं पडितो, अहंति, तुज्झं सुए काले दलपलियं वड्ढयं णट्ठपुव्वं ?, आमं अत्थि, तं एतेण हरितं, तं पुण कहिं ? तं तस्स पुरोहडे महिसेंदुरुक्खस्स पुरत्थिमेणं हत्थमेत्तं गंतूणं तत्थ णिक्खतं, वच्चह, ते गता, दिट्ठं, ताहे आगता कलकलं करेमाणा, अम्हंपि सुणेह, किं अत्थि इहं इंदसम्मो णाम गाहावती ?, तेहिं भणितं-अत्थि, ताहे सो सयमेव उवट्ठिओ भणति-अहं, आणावेह, अत्थि तुज्झं ऊरणओ असुयं कालं णट्ठो?, अत्थि, सो एतेण मारेत्ता खइतो, अट्ठियाणि से बदरीए दाहिणे पासे उक्कुरुडियाए, गता जाव

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

दिट्ठाणि, पुणरवि कलकलं करेमाणा आगता, भणति-एतं ताव बितियं, ताहे भणति-अलाहि अन्नेण, ताहे ते निबंधं करेंति, पच्छा भणति-जहा तं अवच्चं, भज्जा से कहेहीति, सा पुण तस्स चेव छिद्दाणि मग्गमाणी अच्छति, ताहे ताए सुतं, जहा सो धरिसितो अंगुलीओ छिण्णाओ, सा य तेण तद्दिवसं पिट्ठितया, ताहे सा चिंतेति-णवरि गामो एतु, ताहे ते आगता पुच्छंति, सा भणति-मा से णामं गेण्हह, भगिणीए पतित्तणं करेति, स मं णेच्छति, ताहे ते उक्कुट्ठिं करेमाणा तं पणेंति, एस पावो, एवं तस्स उड्डाहो जातो जहा तस्स कोऽवि भिक्खंपि ण देति, ताहे सो अप्पसागारियं आगतो भणति-भगवं! तुब्भे अण्णत्थवि जुज्जह, अहं कहिं जामि?, ताहे अचियत्तोग्गहोत्तिकाऊण सामी निग्गतो, ताहे ततो निग्गतो समाणो दो वाचालातो दाहिणवाचाला य उत्तरवाचाला य, तासिं दोण्हं अंतरा दो णदीओ-सुवन्नकूला य रूप्पकूला य, ताहे सामी दक्खिणवाचालाओ उत्तरवाचालं वच्चति, तत्थ सुवण्णकूलाए वुलिणे तं वत्थं कंटियाए लग्गं, ताहे तं थितं, सामी गतो, पुणो य अवलोइतं, किं निमित्तं?, केती भणंति-जहा ममत्तीए, अन्ने भणंति-मा अत्थंडिले पडितं, अवलोइतं सुलभं वत्थं पत्तं सिस्साणं भविस्सति?, तं च भगवता य तेरसमासे अहाभावेण धरियं, ततो वोसिरियं, पच्छा अचेलते, तं एतेण पितुवतंसधिज्जातितेण गहितं, तेण उवट्ठितं तुन्नागस्स, तेण तुन्निंतं, ताहे सयसहस्समोल्लं जातं, इमस्सवि पन्नासं सहस्साइं इमस्सवि पन्नासं ॥

उत्तरवाचालंतर वणसंडे चंडकोसिओ सप्पो। ण डहे चिंता सरणं जोइस कोवाऽहि जातोऽहं ॥ ४-१०।४७१ ॥

ताहे सामी उत्तरवाचालं वच्चति, तत्थ अंतरा कणकखलं णाम आसमपदं, दो पंथा-उज्जुओ य वंको य, जो सो उज्जुओ

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सो कणगखलमज्झेण वच्चति, वंको परिहरंतो, सामी उज्जुएण पधाइतो । तत्थ सामी गोवालएहिं वारितो, जथा एत्थ दिट्ठिविसो सप्पो, मा एतेण वच्चह, सामी जाणति-जहा सो भव्वत्ति संबुज्झिहिति, ताहे गतो, गंता जक्खघरगमंडवियाए पडिमं ठितो, सो पुण सप्पो को पुव्वभवे आसि ?, खमओ, पारणए खुड्डएण समं वासियस्स गतो, तेण मंडुक्कलिया विराहिता, सो खुड्डएण पडिचोदितो, ताहे सो अण्णं मतेच्छिंत दावेति, भणति-इमावि मए मारिता ?, जातो लोएण मारियाओ ताओ दावेति, ताहे खुड्डएण णातं-वियाले आलोएहिति, सो वियाले आवस्सगआलोयणाए आलोइत्ता णिविट्ठो, खुड्डओ चिंतेति-णूणं से विस्सरितं, तेण सारितो, रुट्ठो खुड्डगस्स आहणामित्ति उद्धातितो, तत्थ खंभे आवडितो मतो विराहितसामन्नो कालगतो जोइसिएहिं उववन्नो, ततो चुतो कणगखले पंचण्हं तावससयाणं कुलवइस्स तावसीपोट्ठे आयातो, दारओ जातो, तत्थ से कोसिओत्ति नामं कतं, सो य तेण सभावेण अतीव चंडक्कोवो, तत्थ य अन्नेऽवि अत्थि कोसिया, ताहे से चंडकोसिओत्ति णामं कतं, सो य कुलवती जातो, सो तत्थ वणसंडे मुच्छितो, तेसिं तावसाणं ताणि फलाणि ण देति, ते अलभंता दिसोदिसिं गता, जो व तत्थ गोवालगादि एति तंपि हंतूणं धाडेति, तस्स य अदूरे सेयाविया णाम णगरी, ताओ रायपुत्तेहिं आगतेहिं विहरित्तप्पडिणिवेसेण भग्गो विणासिओ य, तस्स गोवालेहिं कहितं, सो कंटियाणं गतओ, ताओ छड्डेत्ता परसुहत्थगतो रोसेणं धगधगेंतो कुमारेहिं एंतो दिट्ठो, ते तं दट्ठूण पलायंति, सोऽवि कुहाडहत्थो पहावितो, आवडितो पडितो, सो कुहाडो से अद्धो ट्ठितो, तत्थ से सिरं दोभागे कयं, तत्थ मतो तंमि चेव वणसंडे दिट्ठीविसो सप्पो आयातो, तेण रोसेण लोभेण य तं वणसंडं रक्खति, ते तावसा सव्वे दड्ढा, जे अदड्ढगा ते णट्ठा, सो तिसञ्झं तं वणसंडं परियंतेऊणं जं सउणगमवि पासति तं डहति,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

ताहे सामी तेण दिट्ठो, भगवं च गंतूण तत्थ पडिमं ठितो, आसुरुत्तो ममं ण जाणसित्ति सूरिएणाभाइत्ता पच्छा सामिं पलोएति जाव सो ण डज्झति जहा अन्नं, एवं दो तिन्नि वारे, ताहे गंतूण डसति, डसित्ता सरत्ति अवक्कमति मा मे उवरिं पडिहिति, तहवि ण मरति, एवं तिन्नि वारे, ताहे पलोएंतो अच्छति अमरिसेणं, तस्स तं रूवं पलोएंतस्स ताणि विसभरिताणि अच्छीणि विज्झाताणि, सामिणो कंतिं सोम्मतं च दट्ठूणं, ताहे सामिणा भणियं—उवसम भो चंडकोसिया! उवसमित्ति, ताहे तस्स ईहापूहमग्गणगवेसणं करेंतस्स जातिस्सरणं समुप्पन्नं, ताहे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति णमंसति, णमंसेत्ता ताहे भत्तं पच्चक्खाति, मणसा तित्थगरो जाणाति, ताहे सो बिले तोंडं छोढूणं एवं ठिओ, माऽहं रुट्ठो समाणो लोगं मारेहं, सामी तत्थ अणुकंपणट्ठाए अच्छति, तं सामीं दट्ठूण गोवालगवच्छवालगा अल्लियंति, रुक्खेहिं आवरेत्ता अप्पाणं पाहाणे खिवंति, ण चलंतित्ति अल्लीणा, रुद्धेहिं घट्टितो तहवि ण फंदति, तेहिं लोगस्स सिट्ठं, ताहे लोगो आगंतु सामिं वंदित्ता तंपि सप्पं वंदति महं च करेति, अन्नाओ य घयविक्किणियातो तं सप्पं घतेण मक्खंति, फरुसोति सो पिपीलियाहिं गहितो, तं वेयणं सम्मं अहियासेति, अद्धमासस्स कालगतो सहस्सारे उववन्नो ॥

उत्तरवाचाला णागसेण खीरेण भोयणं दिव्वा । सेयवियाए पएसी पंच रहे णेज्जरायाणो ॥ ४-११।४७२ ॥

पच्छा सामी उत्तरवाचालं गतो, तत्थ पक्खखमणपारणए अतिगतो, तत्थ णागसेणेण गाहावतिणा खीरभोयणेण पडिलाभितो, तत्थ पंच दिव्वाणि । पच्छा सेयवियं गतो, तत्थ पएसी राया समणोवासए, सो महेति सक्कारेति, ततो सुरभिपुरं व्रजति,

तत्थ अंतराए णेज्जगा रायाणो पंचहिं रहेहिं एंति पएसिस्स रन्नो पासं, तेहिं तत्थ गतेहिं सामी पूतितो य वंदितो य । ततो सुरभिपुरं गतो, तत्थ गंगा उत्तरियव्विया, तत्थ सिद्धजत्तो णाम णाविओ, खेमिलो नेमित्तियो, तत्थ य णावाए लोगो विलग्गति, तत्थ य कोसिएण महासउणेण वासितं, तत्थ सो नेमित्तिओ वागरेति-जारिसं सउणेण भणियं तारिसं अम्हेहि मारणंतियं पावियव्वं, किं पुण ?, इमस्स महरिसिस्स पभावेण मुच्चीहामो, सा य णावा पहाविता, एत्थंतरा सुदाढेण णागकुमारेणाभोइतं, तेण दिट्ठो सामी, तं वेरं सरित्ता कोवो जातो, सो य किर सीहो वासुदेवत्तणे मारितेल्लओ, सो त संसारं चिरं भमित्ता सुदाढो णागो जातो, सो संवट्टगवातं विउव्वित्ता णावं उब्बोलेतुं इच्छति । इतो य कंबलसंबला दो णागकुमारा तं आभोएंति, का पुण कंबलसंबलाणं उप्पत्ती ?—

मथुरा णगरी, तत्थ जिणदासो सड्ढो साधुदासी साविगा, दोऽवि अभिगताणि परिमाणकडाणि, तेहिं चउप्पतस्स पच्चक्खाणं गहितं, दिवसदेवसियं गोरसं गेण्हंति, तत्थ य एगा आभीरी गोरसं गहाय आगता, तत्थ सा ताए साविया भन्नति-मा तुमं अन्नत्थ भमाहि, णिच्चं तुमं इहं एज्जासि, जत्तियं तुमं आणेसि तत्तियं अहं गेण्हामि, एवं तासिं संगतं जातं, इमावि से गंधपुडियाइं देंति, इमावि कुतियाओ दुद्धं दहिं वा देति, एवं तासिं दढं सोहियं जायं। अन्नया तासिं गोवाणं विवाहो जाओ, ताहे आभीरी ताणि निमंतेइ, ताणि भणंति--अम्हे वाउलाणि न तरामो गंतुं, जं तत्थ भोयणे उवउज्जति कडुहुंडाइ वत्थाणि वा आभरणाणि वा बहुवरस्स तेसिं दिन्नाइं, तेहिं अईव सोभावियं, लोगेण य सलाहियाणि, तेहिं तुट्ठेहिं दो तिवरिसा गोणपोतलगा हट्ठसरीरा उवणीता कंबलसंबलत्ति णामेणं, ताणि नेच्छंति, इतराणि बला बंधिऊण गताणि, ताहे तेण सावएण चिंतियं--जइ मुच्चीहिंति ताहे

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

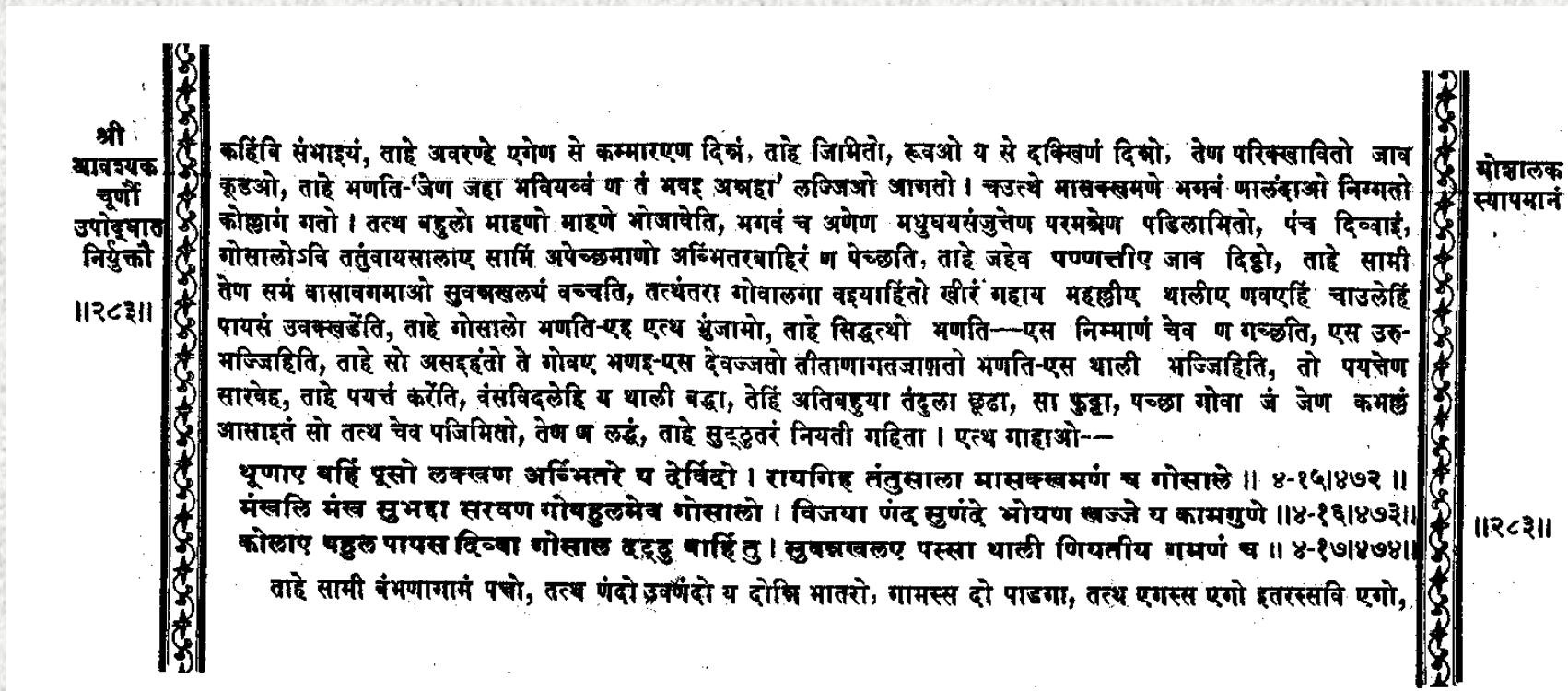
लोगो वाहेहिति, एत्थ चेव अच्छंतु, ताहे से फासुगा चारी किणिऊण दिज्जति, एवं पोसेज्जंति, सो य सावतो अट्ठमिचाउद्दसीसु उववासं करेति, पोत्थयं च वाएति, तेऽवि तं सोऊण भद्दया जाता, उवसंता संता सन्निणो जद्दिवसं सावओ ण जेमेति तद्दिवसं तेवि ण चरंति, तस्स सावगस्स भावो जातो, जहा इमे भविया उवसंता, अब्भहितो णेहो जातो, ते रूवस्सिणो, तस्स य सावगस्स मित्तो, तत्थ भंडीरवडजत्ता, तारिसा णत्थि अन्नस्स वइल्ला, ताहे तेण ते भंडीए जोतेत्ता णीया अणापुच्छाए, तत्थ अन्नेणवि जाइज्जंता तस्स दिन्ना, ताहे ते च्छिन्ना आणेउं बद्धा, तत्थ ते णवि चरंति णवि पाणितं पिबंति, जाहे सव्वहा ण इच्छंति ताहे सो सावतो तेसिं भत्तं पच्चक्खाति णमोक्कारं च से देति, ते कालमासे कालं किच्चा णागकुमारेसु उववन्ना, ओधिं पउंजंति जाव पेच्छंति तित्थगरस्स उवसग्गं, अलाहि ता णं अन्नेणं, सामी मोएमोत्ति आगता, एगेण णावा गहिता, एगो सुदाढेण सम्मं जुज्झति, सो महिद्धीओ, तस्स पुण चयणकालो, इमे य अहुणोववन्नगा, सो तेहिं पराजितो, ताहे ते नागकुमारा तित्थकरमहिमं करेंति, सत्तं रूवं च गायंति, एवं लोगोऽवि। ततो सामीवि उत्तिन्नो, तत्थ तेहिं देवेहिं सुरभिवासं वुट्ठं, तेऽवि पडिगता, एत्थ गाहाओ–

सुरभिपुर सिद्धदत्तो गंगा कोसी विदू य खेमिलओ। णाग सुदाढे सीहे कंबलसबला य जिणमहिमा ।४-१२।७३।
मधुराए जिणयासो आहीर विवाह गोण उववासे। भंडीर मित्त बंधे भत्ते णागोहि आगमणं ॥४-१३।४७४॥
वीरवरस्स भगवतो णावारूढस्स कासि उवसग्गं। मिच्छादिट्ठि परद्धं कंबलसबला समुत्तारे ॥ ४-१४।४७५॥

ततो भगवं उदगतीराए पडिक्कमित्तु पत्थिओ, गंगामट्टियाए य तेण मधुसित्थेण लक्खणा दीसंति, तत्थ पूसो णाम सामुद्दो

सो ताणि सोचिते लक्खणाणि पासति, ताहे-एस चक्कवट्टी एगागी गतो वच्चामिणं वागरेमि तो मम एत्तो भोगवत्ती भविस्सति, सेवामि णं कुमारत्ते, सामीवि थुणागसंनिवेसस्स बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ सो तं पडिमं ठितं तित्थगरं पेच्छति, ताहे तस्स चित्तं जातं-अहो इमं मए पलालं अहिज्जितं, इमेहिं लक्खणेहिं एतेण समणएण ण होयव्वं, अलाहि, जहा सामि एतं होतु एत्तिमं। इतो य सक्को देवराया पलोएति अज्ज कहिं सामी ?, ताहे पेच्छति तित्थंकरं, तं च पूसं, तत्थ आगतो, सामीं वंदित्ता भणति सो पूसं-तुमं लक्खणं ण जाणसि, एसो अपरिमितलक्खणो, ताहे सक्को अब्भितरलक्खणं वन्नेति, गोक्खीरगौररुहिरं प्रशस्तं०,सत्थं ण होति अलियं, एस धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी देवदेवेहिं पूइज्जिहिति। ततो सामी रायगिहं गतो, तत्थ णालंदाए बाहिरियाए तंतुवालयसालाए एगदेसंसि अहापडिरूवं उग्गहं अणुन्नवेत्ता पढमं मासक्खमणं विहरति, एत्थंतरा मंखली एति। तस्स उप्पत्ती–

तेणं कालेणं तेणं समएणं मंखली णाम मंखे, तस्स भद्दा भारिया गुव्विणी, सरवणे संनिवेसे गोबहुलस्स गोसालाए पसूता दारगं, तस्स गोभं नामं कयं गोसालोत्ति, संवड्ढति मंखसिप्पं अहिज्जति, अहिज्जित्ता चित्तफलगं कारेति, कारेत्ता सो एगल्लतो विहरंतो रायगिहतंतुवायसालाए ट्ठितो। जत्थ सामी ठिओ तत्थ एगदेसंमि वासावासं उवगतो, भगवं मासखमणपारणए अब्भितरियाए विजयस्स घरे विपुलाए भोयणविहीए पडिलाभितो, तत्थ पंच दिव्वाणि, भणति य वंदित्ता-अहं तुब्भं सीसोत्ति, सामी तुसिणीओ णिग्गतो, बितियं मासक्खमणं ठितो, बितियपारणए आणंदस्स घरे खज्जगविधीए, ततिए सुदंसणस्स घरे सव्वकामगुणिएणन्ति, भगवं चउत्थं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। गोसालो य कत्तियपुण्णिमाए दिवसओ पुच्छति-'किमहं अज्ज भत्तं लभेज्ज'-त्ति, सिद्धत्थेण भणितं-कोद्दवओविलसित्थाणि कूडगरूवगं च दक्षिणं, ताहे सो सव्वादरेण हिंडति, एवं तेण भंडीसुणएण जहा ण



कहिंवि संभाइयं, ताहे अवरण्हे एगेण से कम्मारएण दिन्नं, ताहे जिमितो, रूवओ य से दक्खिणं दिन्नो, तेण परिक्खावितो जाव कूडओ, ताहे भणति-'जेण जहा भवियव्वं ण तं भवइ अन्नहा' लज्जिओ आगतो। चउत्थे मासक्खमणे भगवं णालंदाओ निग्गतो कोल्लागं गतो। तत्थ बहुलो माहणो माहणे भोजावेति, भगवं च अणेण मधुघयसंजुत्तेण परमन्नेण पडिलाभितो, पंच दिव्वाइं, गोसालोऽवि तंतुवायसालाए सामिं अपेच्छमाणो अब्भितरबाहिरं ण पेच्छति, ताहे जहेव पण्णत्तीए जाव दिट्ठो, ताहे सामी तेण समं वासावगमाओ सुवन्नखलयं वच्चति, तत्थंतरा गोवालगा वइयाहिंतो खीरं गहाय महल्लीए थालीए णवएहिं चाउलेहिं पायसं उक्खडेंति, ताहे गोसालो भणति-एह एत्थ भुंजामो, ताहे सिद्धत्थो भणति—एस निम्माणं चेव ण गच्छति, एस उरुभज्जिहिति, ताहे सो असद्दहंतो ते गोवए भणइ-एस देवज्जतो तीताणागतजाणतो भणति-एस थाली भज्जिहिति, तो पयत्तेण सारेह, ताहे पयत्तं करेंति, वंसविदलेहि य थाली बद्धा, तेहिं अतिबहुया तंदुला छूढा, सा फुट्टा, पच्छा गोवा जं जेण कमलुं आसाइतं सो तत्थ चेव पंजिमितो, तेण य लद्धं, ताहे सुट्ठुतरं नियती गहिता। एत्थ गाहाओ—

थूणाए बहिं पूसो लक्खण अब्भितरे य देविंदो। रायगिह तंतुसाला मासक्खमणं च गोसाले ॥ ४-१५।४७२ ॥
मंखलि मंख सुभद्दा सरवण गोबहुलमेव गोसालो। विजया णंद सुणंदे भोयण खज्जे य कामगुणे ॥४-१६।४७३॥
कोलाए बहुल पायस दिव्वा गोसाल दट्ठु बाहिं तु। सुवन्नखलए पस्सा थाली णियतीय गमणं च ॥ ४-१७।४७४॥

ताहे सामी बंभणागामं पत्तो, तत्थ णंदो उवणंदो य दोन्नि भातरो, गामस्स दो पाडगा, तत्थ एगस्स एगो इतरस्सवि एगो,

तत्थ सामी णंदस्स पाडगं पविट्ठो णंदघरं च, तत्थ दवि दोसीणेण य पडिलाभितो णंदेण, गोसालो उवणंदस्स, तेण उवणंदेण संदिट्ठं देह भिक्खत्ति, तत्थ अदेसकाले सीतकूरो णिणितो, सो तं ण इच्छति, पच्छा सा दासी उवणंदेण भणिता, जहा-एयस्स चेव उवरिं छुभह, छूढो, सो अप्पत्तिएण भणति-जदि मम धम्मायरियस्स अत्थि तवो वा तेओ वा तो एयस्स घरं डज्झतु, तत्थ अहासंनिहिएहिं वाणमंतरेहिं मा भगवतो अलियं भवतुत्ति तं घरं दड्ढं, ततो सामी णिग्गतो चंपं गतो, तत्थ वासावासं ठाति। तत्थ दुमासक्खमणेण ठाति, चत्तारिवि मासे विचित्तं तवोकम्मं ठाणादिए पडिमं ठाइ, ठाणुक्कुडुए एवमादीणि करेति। तत्थ चत्तारि मासे वसित्ता जं चरिमं दोमासियापारणयं तं बाहिं पारेति, एत्थ—

बंभण गामे णंदोवणंद तेण उवणंद थ पविट्ठे। चंपा दुमासखमणे वासावासं सुणी खमति ॥ ४-१८।४७५॥

ताहे कालायं णाम संनिवेसं तत्थ वच्चति, गोसालेण समं भगवं सुन्नघरे पडिमं ठितो, गोसालो तिंतस्स दारुयेहे ठितो, तत्थ सीहो णाम गामउडपुत्तो विज्जुमतियाए गोट्ठिदासियाए समं तं चेव सुन्नघरं पविट्ठो, तत्थ तेण भन्नति-जइ एत्थ कोति समणो वा बंभणो वा पव्वितो वा सो साहतु जा अम्हत्थ वच्चामो, सामी तुण्हिक्को अच्छति, इतरोऽवि तुण्हिक्को, ताहे ताणि तत्थ अच्छित्ता णिग्गताणि, णिंताण मोसालेण सा महिला छिक्का, सा भणति-एत्थ एस कोति, तेण अतिगंतूण पिट्ठितो, एस वुत्तो-अहो अम्हे अणायारं करेंताणि दिट्ठाणि, ताहे सामिं भणति-अहं एक्कल्लओ पिट्ठिज्जामि, तुब्भे ण वारेह, सिद्धत्थो भणति—कीस सीलं ण रक्खसि ?, किं अम्हेऽवि पिट्ठिज्जामो ?, कीस वा अणंतो ण अच्छसि ?, तो दारे ठितओ बाहिं, ततो निग्गतो सामी पत्तकालयं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

नाम गामो तत्थ गतो, तत्थवि तहेव सुन्नघरे ठितो, गोसालो तेण भएण तद्दिवसं कोट्ठे ठितो, तत्थ खंदो णाम गामउडपुत्तो अप्पणिज्जियाए दासीए दंतिछियाए समं महिलाए लज्जंतो तमेव सुन्नघरं गतो, तेहिंवि तहेव पुच्छियं, तहेव तुण्हिक्का अच्छंति, जाहे ताणि णिग्गच्छंति ताहे गोसालेण हसितं, ताहे सो पुणोऽवि पिट्ठितो, ताहे सो सामिं खिंसति--अम्हे हम्मामो तुब्भेऽवि ण वारेह, किं अम्हे तुब्भे ओलग्गामो ?, ताहे सिद्धत्थो भणति--तुमं अप्पदोसेण हंमसि, कीस पुण तुंडं ण रक्खसि ?। एत्थ--

कालाते सुन्नगारे सीहो विज्जुमती गोट्ठिदासी य । खंदो दिंतिलियाए पत्तालयसुन्नगारंमि ॥ ४ ॥ १९।४७६॥

ततो कुमारायं संनिवेसं गता, तस्स बहिया चंपरमणिज्जं णाम उज्जाणं, तत्थ भगवं पडिमं ठितो, तत्थ कुमाराए संनिवेसे कूवणओ णाम कुंभकारो, तस्स कुंमारावणे पासावच्चिज्जा मुणिचंदा णाम थेरा बहुसुता बहुपरिवारा, ते तत्थ परिवसंति, ते य जिणकप्पपरिकम्मं करेंति सीसं गच्छे ठवेत्ता, ते सत्तभावणाए अप्पाणं भावेंति 'तवेण सत्तेण सुत्तेण, एगत्तेण बलेण य । तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पडिवज्जतो ॥ १ ॥ एताओ भावणाओ, ते पुण सत्तभावनाए भावेंति, 'पढमा उवसग्गंमि बितिया वाहि ततिया चतुकम्मी । सुन्नघरंमि चउत्थी तह पंचमिया मसाणंमि ॥ १ ॥ सो य बितियाए भावेति । गोसालो य भगवं भणति--' एह देसकालो हिंडामो' सिद्धत्थो भणति--अज्ज अम्हं अंतरं, सो हिंडंतो ते पासावच्चिज्जे थेरे पेच्छति, भणति--के तुब्भे ?, ते भणंति-समणा णिग्गंथा, सो भणति--अहो निग्गंथा, इमो मे एरिसओ गंथो, कहिं तुब्भे निग्गंथा ?, सो अप्पणो आयरियं वक्खेति, एरिसो महप्पा, तुब्भेत्थ के ?, ताहे तेहिं भन्नति--जारिसओ तुमं तारिसओ धम्मायरिओऽवि सयंगिहीतलिंगो, ताहे सो रुट्ठो, मम

॥२८५॥

धम्मायरियं सवधाचि, ताहे भणति-जति मम धम्मायरियस्स तवो वा तेयो वा अत्थि तो तुब्भं पडिस्सतो डज्झउत्ति, तेहिं भणितं-ण तुज्झ भणितेण अम्हे डज्झामो, ताहे सो गतो सामिस्स साहति-अज्ज मए सारंभा सपरिग्गहा दिट्ठा, ते भणंति-जारिसो तं०-सच्चं साहति, ताहे सिद्धत्थेण भणितो-ते पासावच्चिज्जा थेरा साधू , ण तेसिं पडिस्सतो डज्झति, ताहे रत्ती जाता, ते मुणिचंदा आयरिया बाहिं पडिमं ठिता, सोऽवि कूवणओ तद्दिवसं सेणीभत्ते पत्तेणं वियाले एति मत्तेल्लओ जाव पासति ते मुणिचंदायरिते, सो चिंतेति-एसो चोरोत्ति, ते य तेण गलए गहिता, ते निरुस्सासा कता, ण य झाणाओ कंपिता, केवलनाणं उप्पन्नं, आउं च निट्ठियं, सिद्धो, तत्थ अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं महिमा कता, ताहे गोसालो बाहिं ठितो पेच्छति देवे उप्पयंते य निवयन्ते य, सो जाणति-एस सो पडिस्सतो डज्झति, सामिस्स साहति-भगवं! तेसिं पडिणीयाण घरं डज्झति, सिद्धत्थो भणति-न तेसिं पडिस्सओ डज्झति, तेसिं आयरियस्स केवलणाणं उप्पन्नं, सो य सिद्धिं गतो, तस्स देवा महिमं करेंति, ताहे सो चिंतेति-जामि पेच्छामि जाव सो तं पदेसं गतो ताव देवा महिमं काऊण गता, ताहे तस्स तं गंधोदकं पुप्फवासं च दट्ठूण अब्भधियं हरिसो जातो, ते सीसे उवट्ठवेति-अरे तुब्भे ण किंचि जाणह, एरिसगा चेव बोद्दा हिंडह. उट्ठह, आयरियंपि कालगतं ण जाणह, सच्चं रत्तिं सुवह, ताहे ते जाणंति-एस सच्चयं चेव पिसाओ, रत्तिंपि हिंडति, ताहे तस्स सद्देण पुणो उट्ठिता गता य आयरियसगासं, जाव पेच्छंति कालगतं ताहे ते अद्धिंतिं करेंति-अम्हेहिं ण णाया आयरिया कालं करेंता, सोऽवि चमढेत्ता गतो, ताहे सामी ततो चोरागसन्निवेसं गता, तत्थ चारियत्तिकाऊण ओउंबालगं अगडे पज्जिज्जंति, पुणो य उत्तारिज्जंति, तत्थ ताव पढमं गोसालो, सामी ण ताव, तत्थ य सोमाजयंतीओ उप्पलस्स भगिणीओ पासावच्चिज्जाओ दो परिव्वाइयातो ण तरंति पव्वज्जं काऊण ताहे परि-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

ग्वाइयत्तं करेति, ताहे सुतं-केवि दो जणा ओंबालए पज्जिज्जंति, ताओ पुण जाणंति-जहा चरिमतित्थयरो पव्वतितो, तो ताओ तत्थ गताओ जाव पेच्छंति, ताहिं मोइओ, ते य ओद्दंसिया-अहो विणस्सिउकामत्थ, तेहिं भएण खमिता, महितो य, एत्थ—

सुणिचंदो कुमाराए कुवणय चंपरमणिज्ज उज्जाणे । चोराग चारि अगडे सोम जयंती उवसमंती ॥४-२०।४७७॥

ततो भगवं पिट्ठीचंपं गतो, तत्थ वासावासं पज्जोसवेइ, चाउम्मासियखमणं च वयं विचित्तं पडिमादीहिं, बाहिं पारेत्ता कतंगलं गतो, तत्थ दरिद्धेरा णाम पासंडत्था सारंभा समहिला, ताण वाडगस्स मज्झे देउलं, तत्थ सामी पडिमं ठितो, तद्दिवसं च सकुसितं सीतं पडति, ताणं च तद्दिवसं जागरओ, ते समहिला जागरओ मायंति । तत्थ गोसालो भणति-एसोऽवि णाम पासंडो भवति सारंभो समहिलो य, सव्वाणि य एगट्ठाणि गायंति य, ताहे सो तेहिं बाहिं णिच्छूढो, सो तहिं माहमासे तेण सीतेण सतुसारेण संकुचितो अच्छति, तत्थ तेहिं अणुकंपतेहिं पुणोवि अतिणीतिए अत्तेहिं, एवं तिन्नि वारे निच्छूढो अतिणीतो य, पुणो भणति-जदि अम्हे फुडं भणामो तोवि णिच्छुब्भामो, तत्थ अन्नेहिं भणितं-एस देवज्जगस्स कोऽवि पेढियावाहो छत्तधारो वा असि, तुण्हिक्का अच्छह, सव्वाउज्जाणि खडखडावेह जह से सद्दोऽवि ण सुव्वति । एत्थ—

पिट्ठीचंपा वासं तत्थ सुणी चाउमास खमणेणं । कयगलदेउलवासं दरिद्धेरा य गोसालो ॥ ४-२१।४७८ ॥

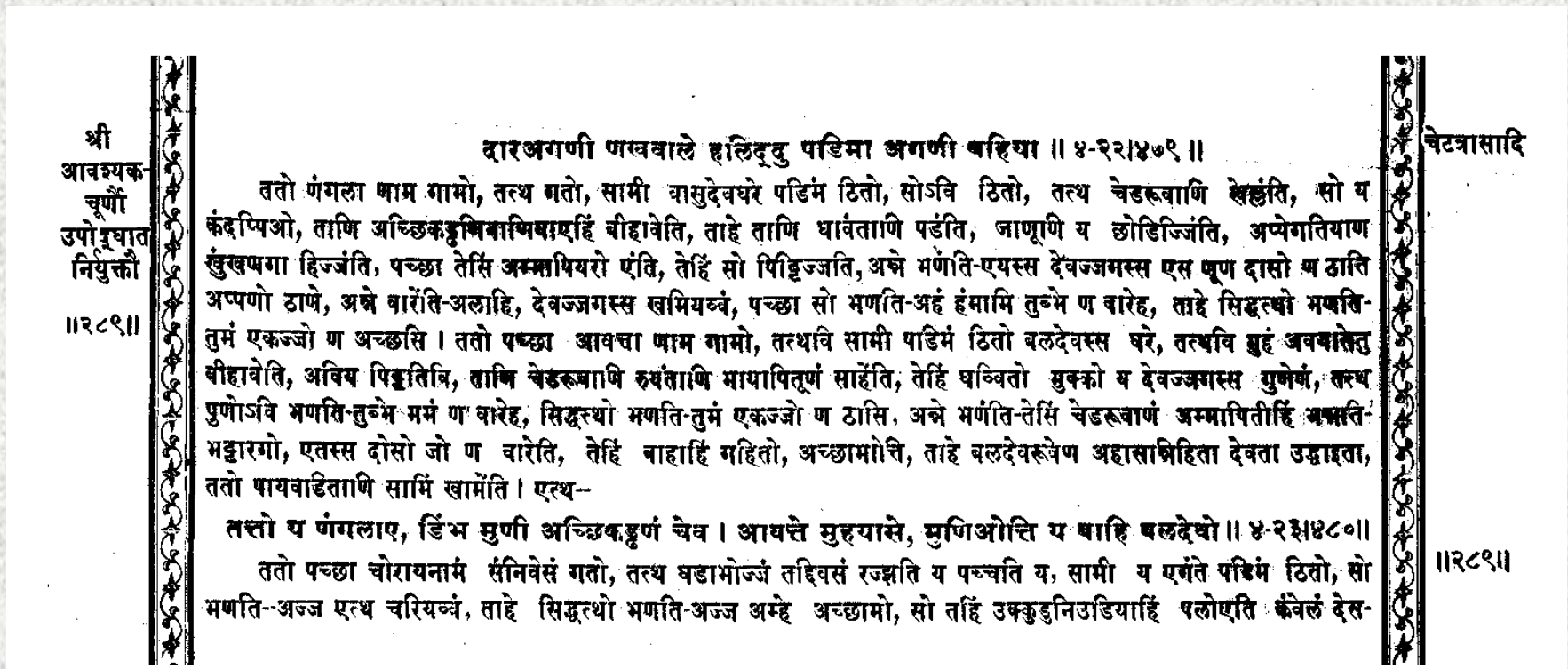
पच्छा पभाए सामी सावत्थिं गतो, तत्थ सामी बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ सो पुच्छति-भगवं!, तुब्भ अतीहं?, सिद्धत्थो भणति-अज्ज अम्हं अंतरं, सो भणति-अज्ज अहं किं आहारं लभीहामि ?, ताहे सिद्धत्थो भणति-अज्ज तुमए माणुसमांसं खाइयव्वंति,

सो भणति-तं अज्ज जेमेमि जत्थ मंससंभवो णत्थि, किमंग पुण माणुसमंसं ?, सो पहिंडितो, तत्थ सावत्थीए पितुदत्तो णाम गाहावती, तस्स सिरिभद्दा णाम भज्जा, सा य णिंदू, सा अन्नया कयाई सिवदत्तं नेमित्तियं पुच्छति-किह मम पुत्तो होज्जा ?, सो भणति-जो सुतवस्सी तस्स तं गब्भं ससोणितं रंधिऊण पायसं करेत्ता ताहे देह, णिग्गंथस्स य देह, तस्स य घरस्स अन्ततोमुहं दारं करेज्जासि, मा सो जाणित्ता डहिहिति, एवं ते थिरा पया भविस्सति, ताए य तहा कतं, सो हिंडन्तो तं घरं पविट्ठो, सो य से पायसो घयमधुसंजुत्तो दिन्नो, तेण चिंतितं- एत्थ कओ मंसंति ?, ताहे तुट्ठेण भुत्तं, ताहे गंतूण भणति-चिरं ते निमित्तकरणं करेंतस्स अज्ज सि णवरि फिडितो, सिद्धत्थो भणति ण विसंवदासि, जदि न पत्तियसि तो वमेहि, तेण वंतं, जाव दिट्ठा णक्खा वाला य विकुंचियए य अवयवा, ताहे सो रुट्ठो तं घरं गंतुं मग्गति, तेहिवि तं बारं ओहाडियगं, तेण ण जाणति, आघाडीओ करेति, जाहे ण लभति ताहे भणइ-जदि मम धम्मायरियस्स तवो तेयो वा अत्थि तो डज्झतु, ताहे सव्वा बाहिरिया डड्ढा ताहे सामी हलेदुता णाम गामो तं गतो, तत्थ महतिमहप्पमाणो हलेदुगरुक्खो, तत्थ सावत्थीओ णगरीओ अन्नो लोगो एंतो तत्थ वसति सत्थनिवेसो, तत्थ सामी पडिमं ठितो, तेहिं सत्थिएहिं रत्तिं सीयकाले अग्गी जालिओ, ते पभाए संते उट्ठेत्ता गता, सो अग्गी तेहिं न विज्झाविओ, सो डहंतो २ सामिस्स पासं गतो, सो भगवं परितावेति, गोसालो भणति-भगवं णासह णासह एस अग्गी एइ, सामिस्स पादा डड्ढा, गोसालो णट्ठो। एत्थ—

सावत्थी सिरिभद्दा णिंदू भोयण पिउदत्त तहय सिवदत्ते।

चेटत्रासादि

॥२८८॥



श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात-निर्युक्तौ ॥२८९॥

दारअगणी णग्गवाले हलिदुदु पडिमा अगणी बहिया ॥ ४-२२।४७९ ॥

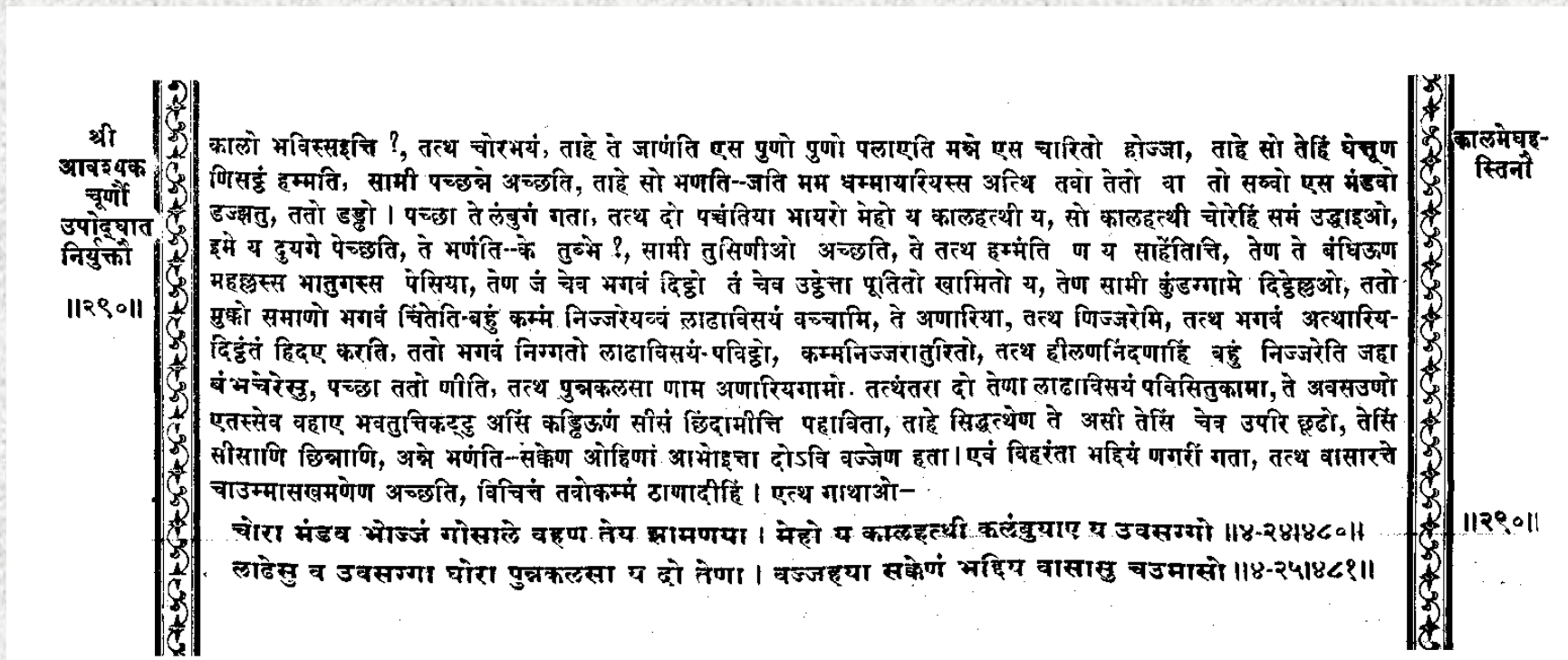
ततो णंगला णाम गामो, तत्थ गतो, सामी वासुदेवघरे पडिमं ठितो, सोऽवि ठितो, तत्थ चेडरूवाणि खेलंति, सो य कंदप्पिओ, ताणि अच्छिकडुणिवाणियाएहिं वीहावेति, ताहे ताणि धावंताणि पडंति, जाणूणि य छोडिज्जंति, अप्पेगतियाण खुरुखुगा हिज्जंति, पच्छा तेसिं अम्मापियरो एंति, तेहिं सो पिट्टिज्जति, अन्ने भणंति-एयस्स देवज्जगस्स एस णूण दासो ण ठाति अप्पणो ठाणे, अन्ने वारेंति-अलाहि, देवज्जगस्स खमियव्वं, पच्छा सो भणति-अहं हंमामि तुब्भे ण वारेह, ताहे सिद्धत्थो भणति-तुमं एकज्जो ण अच्छसि । ततो पच्छा आवत्ता णाम गामो, तत्थवि सामी पडिमं ठितो बलदेवस्स घरे, तत्थवि मुहं अवघाडेतु वीहावेति, अविय पिट्ठतिवि, ताणि चेडरूवाणि रुयंताणि मायापितूणं साहेंति, तेहिं घव्वितो मुक्को य देवज्जगस्स गुणेणं, तत्थ पुणोऽवि भणति-तुब्भे ममं ण वारेह, सिद्धत्थो भणति-तुमं एकज्जो ण ठासि, अन्ने भणंति-तेसिं चेडरूवाणं अम्मापितीहिं भणंति-भट्टारगो, एतस्स दोसो जो ण वारेति, तेहिं बाहाहिं गहितो, अच्छामोत्ति, ताहे बलदेवरूवेण अहासन्निहिता देवता उट्ठाइता, ततो पायवडिताणि सामिं खामेंति । एत्थ--

तत्तो य णंगलाए, डिंभ मुणी अच्छिकडुणं चेव । आवत्ते मुहयासे, मुणिओत्ति य बाहि बलदेवो ॥ ४-२३।४८०॥

ततो पच्छा चोरायनामं संनिवेसं गतो, तत्थ घडाभोज्जं तद्दिवसं रज्झति य पच्चति य, सामी य एगंते पडिमं ठितो, सो भणति--अज्ज एत्थ चरियव्वं, ताहे सिद्धत्थो भणति-अज्ज अम्हे अच्छामो, सो तहिं उक्कुडुनिउडियाहिं पलोएति केवलं देस-

चेटत्रासादि

॥२८९॥



श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात नियुक्तौ

॥२९०॥

कालो भविस्सइत्ति ?, तत्थ चोरभयं, ताहे ते जाणंति एस पुणो पुणो पलाएति मन्ने एस चारितो होज्जा, ताहे सो तेहिं घेत्तूण णिसट्ठं हम्मति, सामी पच्छन्ने अच्छति, ताहे सो भणति--जति मम धम्मायरियस्स अत्थि तवो तेतो वा तो सव्वो एस मंडवो डज्झतु, ततो डड्ढो। पच्छा ते लंबुगं गता, तत्थ दो पचंतिया भायरो मेहो य कालहत्थी य, सो कालहत्थी चोरेहिं समं उद्धाइओ, इमे य दुयगे पेच्छति, ते भणंति--के तुब्भे ?, सामी तुसिणीओ अच्छति, ते तत्थ हम्मंति ण य साहेंतित्ति, तेण ते बंधिऊण महल्लस्स भातुगस्स पेसिया, तेण जं चेव भगवं दिट्ठो तं चेव उट्ठेत्ता पूतितो खामितो य, तेण सामी कुंडग्गामे दिट्ठेल्लओ, ततो मुक्को समाणो भगवं चिंतेति-बहुं कम्मं निज्जरेयव्वं लाढाविसयं वच्चामि, ते अणारिया, तत्थ णिज्जरेमि, तत्थ भगवं अत्थारिय-दिट्ठंतं हिदए करति, ततो भगवं निग्गतो लाढाविसयं-पविट्ठो, कम्मनिज्जरातुरितो, तत्थ हीलणनिंदणाहिं बहुं निज्जरेति जहा बंभचेरेसु, पच्छा ततो णीति, तत्थ पुन्नकलसा णाम अणारियगामो. तत्थंतरा दो तेणा लाढाविसयं पविसितुकामा, ते अवसउणो एतस्सेव वहाए भवतुत्तिकट्टु असिं कड्ढिऊणं सीसं छिंदामीत्ति पहाविता, ताहे सिद्धत्थेण ते असी तेसिं चेव उपरि छूढो, तेसिं सीसाणि छिन्नाणि, अन्ने भणंति--सक्केण ओहिणा आभोइत्ता दोऽवि वज्जेण हता। एवं विहरंता भद्दियं णगरीं गता, तत्थ वासारत्ते चाउम्मासखमणेण अच्छति, विचित्तं तवोकम्मं ठाणादीहिं। एत्थ गाथाओ–

चोरा मंडव भोज्जं गोसाले वहण तेय आमणया। मेहो य कालहत्थी कलंबुयाए य उवसग्गो ॥४-२४।४८०॥

लाढेसु व उवसग्गा घोरा पुन्नकलसा य दो तेणा। वज्जहया सक्केणं भद्दिय वासासु चउमासो ॥४-२५।४८१॥

कालमेघह-स्तिनौ

॥२९०॥

ताहे बाहिं पारेत्ता विहरंतो कदलीनाम गामो, तत्थ सरदकाले अच्छारियभत्ताणि दधिकूरेण णिसट्ठं दिज्जंति, तत्थ गोसालो भणति–वच्चामो, ताहे सिद्धत्थो भणति–अम्हं अंतरं, सो तहिं गतो, भुंजति लभति दधिकूरं, सो य वट्टिफोडो ण चेव धाति, तेहिं भणितं-वट्टं भायणं करंबेह, करंबितं, पच्छा ण णित्थरति, ताहे से उवरिं छूढं, ताहे उक्कीलंतो गच्छति । ततो भगवं जंबुसंडं णामं गामं गतो, तत्थवि संमेल्लो, तहेव अच्छारियभत्तं, तत्थ पुण खीरं कूरं, तहिंपि तहेव धरिसिओ जिमिओ य । एत्थ–

कदलिसमागम भोयण मंखलि दधिकूर भगवतो पडिमा । जंबूसंडे गोट्ठिय भोयणं भगवतो पडिमा ॥४-२६।४८२॥
ततो-तंबाए णंदिसेणो पडिमा आरक्खिय हण भये डहणं । कूविय चारिय मोक्खो विजयपगब्भा य पत्तेयं॥४-२७।४८३
तेणेहि पहे गहितो गोसालो मातुलोत्ति वाहणता । भगवं वेसालीए कम्मारघणेण देविंदो ॥ ४-२८।४८४॥

पच्छा तंबायं णाम गामं एंति, तत्थ णंदिसेणा णाम थेरा बहुस्सुया बहुपरिवारा, ते तत्थ जिणकप्पस्स पडिकम्मं करेंति पासावच्चिज्जा, इमेवि बाहिं पडिमं ठिता, गोसालो अतिगतो, तहेव पेच्छति पव्वतिते, तत्थ पुणो खिंसति, ते आयरिया तद्दिवसं चउक्के पडिमं ठायंति, पच्छा तहिं आरक्खियपुत्तेणं हिंडंतेणं चोरोत्ति भल्लएण आहतो, केवलणाणं, सेसं जहेव मुणिचंदस्स जाव गोसालो बोहेत्ता आगतो । ततो पच्छा कूविया णामं संनिवेसो, तत्थ गता, तेहिं चारियत्तिकाऊण घेप्पंति, तत्थ बज्झंति पिट्टिज्जंति य, तत्थ लोगसमुल्लावो अपडिरूवो देवज्जतो रूवेण य जोव्वणेण य चारिओत्ति गहिओ, तत्थ विजया पगब्भा य दोन्नि पासंतेवासिणीओ परिव्वाइया सोऊण लोगस्स तित्थगरो इतो वच्चामो ता पुलएमो, को जाणति होज्जा ?, ताहिं मोतितो,

दुरप्पा ! ण जाणह चरिमतित्थकरं सिद्धत्थरायसुतं, अज्ज मे सक्को उवालभतीत्ति ताहे मुक्का खामिया य । ततो मुक्का समाणा निग्गता, तत्थ अंबसालाए दुवे पंथा, ताहे गोसालो भणति--तुब्भे ममं हम्ममाणं ण वारेह, अविय-तुब्भेहिं समं बहूवसग्गं, अहं च अहं चेव पढमं हम्मामि, तो वरं एगल्लो विहरिस्सं, सिद्धत्थो भणति--तुमं जाणसि, ताहे सामी वेसालीमुखो पधावितो, इमो य भगवतो फिडितो एगल्लओ वच्चति, अंतरा य छिण्णट्ठाणं, तत्थ चोरो रुक्खाविलग्गो पलोएति, तेण दिट्ठो, भणति-एगो अज्ज-समणओ एति, ते भणंति--एसो ण बीभेति, णत्थि हरियव्वयंति, अज्ज से णत्थि फेडओ, जं अम्हे परिभवति, आगतो पंचहिवि चोरसएहिं वाहितो मातुलोत्तिकाउं, पच्छा चिंतेति- वरं सामिणा समं, अविय-कोति सामिं मोएति, तस्स निस्साए मज्झवि मोक्खणं भवति, ताहे सामिं मग्गितुमारद्धो, सोऽवि ताव मग्गति । सामीवि वेसालिं गतो, तत्थ कम्मारसालाए अणुण्णवेत्ता पडिमं ठितो, सा साहारणा, जे साधीणा ते अणुण्णविता, अन्नदा तत्थ एगो कम्मारो छम्मासा पडिमग्गतो, आढत्तो सोभणतिधिकरणे आयोज्जाणि गहाय आगतो, सामिं च पडिमं ठितं पासति, अमंगलंति सामिं आहणामित्ति चम्मट्ठेण पहावितो, सक्केण ओही पउत्तो जाव पेच्छति, तहेव णिमिसंतरेण आगतो, सक्केण तस्स चेव उवरि घणो पाडितो, तह चेव मतो । ताहे सक्को वंदित्ता गतो ।

गामाग विहेलगजक्ख तावसी उवसमावसाणथुती । छट्ठेण सालिमीसे विसुज्झमाणस्स लोगोधी ॥४-४८५॥१९

सामी गामायं संनिवेसं एति, तत्थ उज्जाणे विभेलओ णाम जक्खो, सो भगवतो पडिमं ठितस्स थूयं करेति, ततो सामी सालिसीसयं णाम गामो तहिं गतो, तत्थ उज्जाणे पडिमं ठितो, माहमासो य वट्टति, तत्थ कडपूयणा वाणमंतरी सामीं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

दट्ठूणं तेयं असहमाणी पच्छा तावसरूवं विउव्विता वक्कलनियत्था जडाभारेण य सव्वं सरीरं पाणिएण ओल्लेत्ता दहंमि उवरिं ठिता सामिस्स अंगाणि धुणति वायं च विउव्वति, जदि पागतो सो फुट्टितो होन्तो, सा य किल तिविट्ठुकाले अंतेपुरिया आसि, ण य तदा पडियरियत्ति पदोसं वहति, तं दिव्वं वेयणं अहियासंतस्स भगवतो ओही विगसिओ सव्वं लोगं पासितुमारद्धो, सेसं कालं गब्भातो आढवेत्ता जाव सालिसीसं ताव सुरलोगप्पमाणो ओही एक्कारस य अंगा सुरलोगप्पमाणमेत्ता, जावतियं देवलोगेसु पेच्छिताइता । सावि वंतरी पराजिता संता ताव उवसंता पूयं करेति ।

पुणरवि भद्दियणगरे तवं विचित्तं तु छट्ठवासंमि । मगहाए निरुवसग्गं मुणि उदुबद्धंमि विहरित्था ॥ ४-४८६॥३०

ततो भगवं भद्दियं नाम णगरिं गओ, तत्थ छट्ठं वासावासं उवगतं, तत्थ वरिसारत्ते गोसालेण समं समागमो, छट्ठे मासे भगवतो गोसालो मिलितो । तत्थ चतुमासखमणं, विचित्ते य अभिग्गहे कुणति भगवं ठाणादीहिं, वाहिं पारेत्ता ततो पच्छा मग-हविसए विहरति निरुवसग्गं अट्ठमासे उदुबद्धिए ।

आलभियाए वासं कंडग तब (हि) देउले पराहुत्तो । महणदेउलसारिय मुहमूले दोसुवि मुणित्ति ॥४-४८७॥३१

एवं विहरिऊणं आलाभितं एति, तत्थ सत्तमं वासावासं उवगतो चाउम्मासखमणेण, ततो वाहिं पारेत्ता कंडगं नाम संनिवेसं तत्थ एति, तत्थ वासुदेवघरे सामी कोणे ठितो पडिमं, गोसालोवि वासुदेवपडिमाए अधिट्ठाणं मुहे काउं ठितो, सो वासपडियरओ आगतो तं तहाठितं पेच्छति, ताहे चिंतेति--मा लोगो भणिही धम्मिओ रागदोसिओत्ति, गामं गंतूण कहेति--एह पेच्छह, मा भणिहिह राइतओत्ति, ते आगता, ताहे दिट्ठो पिट्टितो, पच्छा णिव्वासिज्जति य, अन्ने भणंति--एस पिसाओ, ताहे मुक्को, ताहे निग्गया

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

समाणा महणाणाम गामो, तत्थ बलदेवघरे सामी अंतो कोणे पडिमं ठितो, सो गोसालो तस्स मुहे सागारितं पदातुं ठिओ, तत्थवि तहेव कहितं, ततो य पिट्ठिऊण मुणिउत्तिकाऊण मुक्को, मुणिओ नाम पिसाओ । तत्थ सामीवि पिट्ठिता, ताहे बलदेवपडिमा णंगलं गहाय उट्ठिता, ते भीया खामियं च ।

बहुसालगसालवणे कडपूयण पडिम विग्घ सोवसमे । लोहग्गलंमि चारिय जियसत्तू उप्पले मोक्खो ॥४-३२।४८९॥

ततो निग्गता बहुसालगं णाम गामो तत्थ गता, तत्थ बहिं सालवणं णाम उज्जाणं, तत्थ ठितो, तत्थ य सालज्जा णाम वाणमंतरी, सा भगवतो पूयं करेति, एवं अम्हं, अन्नेसिं आदेसो-जहा सा कडपूयणा वाणमंतरी भगवतो पडिमागयस्स उवसग्गं करेति, ताहे संता तंता पच्छा महिमं करेति, ततो निग्गता गता लोहग्गलं रायहाणिं, तत्थ जियसत्तू राया, सो य अन्नेण राइणा समं विरुद्धो, तस्स चारपुरिसेहिं गहिता पुच्छिज्जंता ण साहंति, तत्थ य चारियत्ति रन्नो अत्थाणीवरगतस्स उवट्ठाविता, तत्थ उप्पलो अट्ठियग्गामतो, सो य पुव्वामेव अतिगतो, सो य ते आणिज्जंते दट्ठूण उट्ठितो तिक्खुत्तो वंदति, पच्छा सो भणति-ण एस चारितो, एस सिद्धत्थरायसुतो धम्मवरचक्कवट्टी, एस भगवं, लक्खणाणि से पेच्छह, तत्थ सक्कारेऊण मुक्को ॥

तत्तो य पुरिमताले वग्गुरईसाण अच्चए महिमं ।
मल्लिजिणायणपडिमा [ओण्णाए दंतुरगा] वंसकडगंसि बहुगोट्ठी ॥ ४-३३।४९० ॥

ततो पुरिमतालं एति, तत्थ वग्गुरो णाम सेट्ठी, तस्स भद्दा भारिया वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाता, बहूणि देवसतोवाइ-

चारकतया ग्रहणं

॥२९४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

याणि काउं परिसंता, अन्नया सगडमुहे उज्जाणियाए गताणि, तत्थ पासंति जुन्नदेउलं सडितपडितं, तत्थ मल्लिसामिणो पडिमा, तं णमंसंति, तेहिं भणितं–जदि अम्ह दारओ वा दारिया वा पयाति ता एतं देउलं करेमो, एतब्भत्ताणि य होमो, एवं णमंसित्ता गयाणि, तत्थ य अहासंनिहियाए वाणमंतरीदेवयाए पाडिहेरं कतं, आहूतो गब्भो, जं चेव आहूतो तं चेव देवउलं काउमारद्धाणि, अतीव पूजं तिसंझं करेंति, पव्वइया य अल्लियंति, एवं सो सावओ जातो। इतो य सामी विहरमाणो सगडमुहस्स उज्जाणस्स णगरस्स य अंतरा पडिमं ठितो। तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया जहा अभिसेगे जाव जाणविमाणेणं सव्विड्ढीए सामीं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं काऊणं वंदति णमंसति, णमंसित्ता जाव पंजलिकडे भगवतो चरितं आगातमाणे सामिंमि दिन्नदिट्ठीए पज्जुवासेमाणे चिट्ठति, वग्गुरो य तं कालं ण्हातो ओल्लपडसाडओ सपरिजणो महता इड्ढीए विविहकुसुमहत्थगतो तं आयतणमच्चतो जाति, तं च वितिवयमाणं ईसाणिंदो पासति, भणति य--भो वग्गुरा ! तुब्भं पच्चक्खतित्थगरस्स महिमं ण करेसि, तो पडिमं अच्चतो जासि, जा एस महतिमहावीरवद्धमाणसामी जगनाहेति लोगपूज्जेति, सो आगतो मिच्छादुक्कडं काउं खामेति महिमं करेति। ततो सामी उप्पागं वच्चति, तत्थ अंतरा वधुवरं सपडिहुत्तं एति, ताणि पुण दोवि विरूवाणि दंतिल्लगाणि य, तत्थ गोसालो भणति–अहो इमो सुसंजोगो, 'तत्तिल्लो पहराओ जाणति दूरेवि जो जहिं वसति। जं जस्स होति सरिसं तं तस्स वितिज्जयं देति ॥ १ ॥ जाहे ण ठाति ताहे ताहिं पिट्ठित्ता बद्धो, ताहे वंसीकुडंगे छूढो। तत्थ पडितो उत्ताणओ अच्छति, वाहराति य सामिं, तत्थ सिद्धत्थो भणति---सतं कडं, तो ताहे सामि अदूरं गंतुं पडिच्छति, पच्छा ते भणंति---णूणं एस एयस्स देवज्जगस्स पीढियावाहो वा छत्तधरो वा आसि ओसट्ठितो, तो णं मुएह, ततो मुको, अन्ने भणंति--पहिएहिं ओतारिओ

सामिं अच्छंतं दट्ठूणं ।

गोभूमि वज्जलाढेत्ति गोवकोहे य वंसि जिणुदसमो । रायगिहऽट्ठमवासं भवज्जभूमी बहुवसग्गा ॥४-३४।४९१॥

ततो विहरंतो सामी गोभूमी वच्चति, तत्थ अंतरा अडविघणं, सदा गावीओ चरंति तेण गोभूमी । तत्थ गोसालो गोवालए भणति--अरे वज्जलाढा ! एस पंथो कहिं वच्चति ?, वज्जलाढा णाम मेकच्छा (मेच्छा), ताहे ते गोवा भणंति-कीस अक्कोससि ?, सो भणति-असुगए सुयपुत्ता सुट्ठु अक्कोसामि, तुब्भे एरिसगा मेच्छा, ताहे तेहिं मिलित्ता पिट्ठिऊण बंधित्ता वंसीसु छूढो, तत्थ अन्नेहिं पुणो मोइतो अणुकंपाए, ततो विहरंता रायगिहं गता । तत्थ अट्ठमं वासारत्तं, चाउम्मासखमणं, विचित्ते य अभिग्गहे, बाहिं पारेत्ता सरदे समतीए दिट्ठंतं करेति, सामी चिंतेति-बहुं कम्मं ण सक्का णिज्जरेउं, ताहे सतेमेव अत्थारियदिट्ठंतं पडिकप्पेति, जहा एगस्स कुडुंबियस्स साली जाता, ताहे सो कप्पडियपंथिए भणति-तुब्भं हिइच्छितं भत्तं देमि मम लुणह, पच्छा भे जहासुहं वच्चह, एवं सो ओवातेण लुणावेति, एवं चेव ममवि बहुं कम्मं अच्छति, एतं तच्छारिएहिं णिज्जरावेयव्वंति य अणारियदेसेसु, ताहे लाढावज्जभूमिं सुद्धभूमिं च वच्चति, ते णिरणुकंपा णिद्दया य, तत्थ विहरितो, तत्थ सो अणारिओ जणो हीलति निंदति जह **बंभचेरेसु** 'छुच्छुकरेंति आहंसु समणं कुक्कुरा दसंतु' त्ति (८-८३) एवमादि, तदा य किर वासारत्तो, तंमि जणवए केणइ दइवनिओगेण लेहट्ठो आसी वसहीवि न लब्भति । तत्थ य छम्मासे अणिच्चजागारियं विहरति । एस नवमो वासारत्तो ।

अणियतवासं सिद्धत्थपुरं तिलत्थंबपुच्छ णिप्फत्ती । उप्पाडेति अणज्जो गोसालो वासबहुलाए ॥ ४-३५।४९२ ॥

अनार्ये-विहारः

॥२९६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

ततो निग्गता पढमसरयदे, सिद्धत्थपुरं गता, सिद्धत्थपुराओ य कुंमागामं संपत्थिया, तत्थ अंतरा एगो तिलथंभओ, तं दट्ठूण गोसालो भणति -भगवं ! एस तिलथंभओ किं निप्फज्जिहिति नवत्ति ?, सामी भणइ-निप्फज्जिही, एते य सत्त पुप्फजीवा ओहाइत्ता एतस्सेव तिलथंभस्स एगाए सिंबलियाए पच्चायाहिंति, तेण असद्दहंतेण अवकमित्ता सलेट्ठुओ उप्पाडितो एगंते य एडिओ, अहासंनिहितेहिं य देवेहिं 'मा भगवं मिच्छावादी भवतु' त्ति वुट्ठं, आसत्थो बहुला य गावी आगता तेण य पएसेण, ताए खुरेण निक्खतो, तो पट्ठितो पुप्फा य पच्चायाता, ताहे कुंमागामं संपत्ता । तस्स बाहिं वेसियायणो बालतवस्सी आतावेति, तस्स पुण वेसियायणस्स का उप्पत्ती ? ।

मगहा गोब्बरगामे गोसंखी वेसियाणपाणामा । कुंमग्गामाआवण गोसाले कोहण पउट्ठो ॥ ४-३६ । ४९३ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाए णयरीए रायगिहस्स य अन्तरा गोब्बरगामो, तत्थ गोसंखी नाम कुडुंबिओ, जो तेसि आभीराण अधिवती, तस्स बंधुमती भज्जा अविण्णाइणी इतो य तस्स अदूरसामंते गामो चोरेहिं हतो, ते हंतूण वंदिग्गहं च काऊण पधाइता, एगा य अचिरप्पसूइता पइंमि मारिते चेडेण समं गहिता, सा तं चेडं छड्डावेता, सो चेडो तेण गोसंखिणा गोरूवाण गतेण दिट्ठो, गहितो य, अप्पाणिज्जताए महिलिताए दिन्नो, तत्थ य पगासितं, जहा मम महिलाए गूढो गब्भो आसी, तत्थ छम्मासेहं मारेत्ता लोहियगंधं करेत्ता धातियाणेवत्थेण ठिता, सव्वं जं इतिकायव्वं तं कीरति, सोऽवि ताव एवं संवड्ढति सावि से माता चंपाए विक्कीया, वेसियाए थेरीए गहिया, एस मम धूतत्ति, ताए जो गणियाणं उवयारो तं सिक्खाविया, सा तत्थ णामनिग्गता गणिया जाता, सो य गोसंखियपुत्तो तरुणो जातो, धयसगडेहिं चंपं गतो, वयंसगा य से, सो तत्थ णागरं जणं पेच्छति जहिच्छियं अभिरमंतं, तस्सवि

तिलस्तंबः वैश्याय-नोत्पत्तिः

॥२९७॥

इच्छा जाता अहंपि ताव रमामि, सो तत्थ गतो वेसं, तत्थ सच्चेव से माता अभिरुतिता, मोल्लं देति, वियाले कदुहंडेऊण अप्पाणं वच्चति, तत्थ तस्स वच्चंतस्स अंतरा पाओ अमेज्झेण लित्तो, सो जाणति इमो मम पादो ण णज्जति कहंपि बुड्डो, तत्थंतरा एतस्स कुलदेवता, सा चिंतेइ-मा अकिच्चमायरतु, मोहेमित्ति तत्थ गोट्ठए गाविं सवच्छं विउव्वति, विगुरुव्विऊण अच्छति, ताहे सो तं पातं तस्स वच्छयस्स उवरिं फुसति, ताहे सो वच्छतो भणति—एस ममं अंमो मीढलेत्तयं पादं उवरिं फुसति, ताहे सा गावी माणुसियाए वायाए भणति—किं तुमं पुत्ता! अद्धितिं करेसि?, एसो य अज्ज मायाए समं वासं गच्छति, तं एस एरिसयं अकिच्चं ववसति, अन्नं किंच काहिति?, ताहे तं सोऊणं तस्स चिंता जाता, भणति-गतो पुच्छीहामि, ताहे पविट्ठो पुच्छति-का तुज्झ उप्पत्ती?, ताहे भणति-किं तुज्झ उप्पत्तीए?, सा महिलाभावं दाएति, ताहे सो भणति—अम्हंपि एत्तियं चेव मोल्लं देमि साह सब्भावं, तीए सवहसाविताए सव्वं सिट्ठं, ताहे सो निग्गतो, सग्गामं गतो, अम्मापितरो पुच्छति, ताणि ण साहंति, ताहे सो ताव अणसितो ठितो जाव से कहितं, ताहे सो तं मातं वेसाओ मोएत्ता पच्छा विरागं गतो, एतावत्था विसयत्ति पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइओ एसा उप्पत्ती॥ सो य विहरंतो तंकालं कुम्मग्गामे आतावेति, तस्स छप्पदीओ जडाहिंतो आइच्चताविता पडंति, जीवहियाए पडियाओ सीसे छुभति, तं गोसालो दट्ठूण ओसरित्ता तत्थ गतो भणति-किं भवं मुणी मुणितो उयाहु जूयासेज्जातरो?, कोऽर्थः?—'मन ज्ञाने' ज्ञात्वा प्रव्रजितो नेति, अहवा किं इत्थी पुरिसे?, एकसिं दो तिन्नि वारे, ताहे वेसियायणो रुट्ठो तेयं निसिरति, ताहे सामिणा तस्स अणुकंपट्ठाए वेसियायणस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठाए एत्थंतरा सीतलिता लेस्सा णिसिरिया, सा जंबुद्दीवं बाहिरओ वेढेति उसिणा तेयलेस्सा, भगवतो सीतलिता तेयल्लेसा अब्भंतरओ वेढेति, इतरा तं परिचयंति सा तत्थेव

सीतलाए विज्झविता, ताहे सो भगवतो लद्धिं पासित्ता भणति-से गतमेतं भगवं ! गतमेतं भगवं !, ण जाणामि जहा तुब्भं सीसो, खमह, ताहे गोसालो पुच्छति-सामी ! किं एस जूयासेज्जातरो पलवति ?, सामिणो कहितं-जहा पन्नत्तिए, ताहे भीतो पुच्छति-भगवं ! किह संखित्तविउलतेयलेस्सो भवति ?, भगवं भणति-जे णं गोसाला ! छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं आयावेति, पारणए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं जावेति जाव छम्मासा, से णं संखित्तविउलतेयलेस्से भवतीति । अन्नदा सामी कुंमग्गामाओ सिद्धत्थपुरं संपत्थितो, पुणरवि तिलथंभस्स अदूरसामंतेण जाव वतिवयति ताहे पुच्छइ-भगवं ! जहा न निप्फण्णो, भगवता कहितं-जहा निप्फण्णो, तं एवं वणप्फईण पउट्टपरिहारो, पउटपरिहारो नाम परावर्त्य परावर्त्य तस्मिन्नेव सरीरके उववज्जंति तं, सो असद्दहंतो गंतूणं तिलसेंगलियं हत्थे पप्फोडेत्ता ते तिले गणेमाणो भणति-एवं सव्वजीवावि पयोट्टपरिहारंति, णितितवादं धणितमवलंबित्ता तं करेति जं भगवता उवदिट्ठं, जहा संखित्तविपुलतेयलेस्सो भवति । ताहे सो सामिस्स मूलाओ ओप्फिडो सावत्थीए कुंभगारसालाए ठितो, तेयनिसग्गं आआवेति, छहिं मासेहिं संखित्तविपुलतेयलेस्सो जातो, कूपतडे दासीए विण्णासितो, पच्छा छद्दिसाचरा आगता, ताहे निमित्तउल्लोओ से कहितो, एवं सो अजिणो जिणपलावी विहरति । एसा से अवत्था ।

वेसालाए पडिमं ठिंभमुणिओत्ति तत्थ गणराया । पूएति संखणामो चित्तो णावाए भगिणिसुतो ४-३७।४९४

भगवंपि वेसालिं णगरिं संपत्तो, तत्थ संखो णाम गणराया, सिद्धत्थरन्नो मित्तो, सो तं पूजेति, पच्छा वाणियग्गामं पधावितो, तत्थंतरा गंडइता णदी, तं सामी णावाए उत्तिन्नो, ते णाविया सामिं भणंति-देहि मोल्लं, एवं वाहंति, तत्थ संखरन्नो भाइणेज्जो चित्तो णाम दूइकाए गएल्लओ णावाकडएण एति, ताहे तेण मोइतो महितो य ।

वाणियगामायावण आणंदो ओहि परिसहसहत्ति ।सावत्थीए वासं चित्ततवो साणुलट्ठि बहिं ॥ ४-३८।४९५ ॥

ताहे वाणियग्गामं गतो, तस्स बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ आणंदो नाम समणोवासगो छट्ठंछट्ठेण आतावेति, तस्स य ओहिनाणं उप्पन्नं, जाव तित्थगरं पेच्छति, तं वंदति णमंसति, भणति य-अहो सामी परीसहा अधियासिज्जंति, वागरेति य जहा एच्चिरेण कालेणं तुब्भं केवलनाणं उप्पज्जिहिति पूजेति य । पच्छा सामी सावत्थिं गतो, तत्थ दसमं वासारत्तं विचित्तं तवोकम्मं ठाणादीहिं ।

पडिमा भद्दमहाभद्द सव्वतोभद्द पढमिया चउरो। अट्ठ य वीसाऽऽणंदे बहुलिय तह उज्झिति य दिव्वा ॥४-३९।४९६॥

ततो साणुलट्ठितं णाम गामं गतो, तत्थ भद्दं पडिमं ठाति, केरिसिया भद्दा ?, पुव्वाहुत्तो दिवसं अच्छति, पच्छा रत्तिं दाहिणहुत्तो अवरेण दिवसं उत्तरेण रत्तिं, एवं छट्ठेण भत्तेण णिट्ठिता । तहवि ण चेव पारेति, अपारितो चेव महाभद्दं ठाति, सा पुण पुव्वाए दिसाए अहोरत्तं, एवं चउसुवि चत्तारि अहोरत्ता, एवं दसमेण णिट्ठिता । ताहे अपारितो चेव सव्वतोभद्दं पडिमं ठाति, सा पुण सव्वतोभद्दा इंदाए अहोरत्तं, पच्छा अग्गेयाए, एवं दससुवि दिसासु सव्वासु, विमलाए जाइं उड्ढलोतियाणि दव्वाणि ताणि झाति, तमाए हिट्ठिल्लाइं, चउरो दो दिवसा दो रातिओ, अट्ठ चत्तारि दिवसा चत्तारि रातीतो, वीसं दस दिवसा दस राईओ, एवं एसा दसहिं दिवसेहिं बावीसइमेण णिट्ठाति । पच्छा तासु सम्मत्तासु आणंदस्स गाहावतिस्स घरे बहुलियाए दासीए महाणसिणीए भायणाणि खणीकरेंतीए दोसीणं छट्ठउक्कामाए सामी पविट्ठो, ताए भन्नति-किं भगवं ! एतेण अट्ठो ?, सामिणा पाणी

॥३००॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पसारितो, ताए परमाए सद्धाए दिन्नं, पंच दिव्वाणि, मत्थओ धोओ, अदासीकता ।

दढभूमी बहुमेच्छा पेढालग्गाममागतो भगवं । पोलासचेइयंमी ठितेगराइं महापडिमं ॥ ४-४०।४९७ ॥

ततो सामी दढभूमीं गतो, तीसे बाहिं पेढालं नाम उज्जाणं, तत्थ पोलासं चेतियं, तत्थ अट्ठमेणं भत्तेण अप्पाणएण ईसिंपब्भारगतेण, ईसिपब्भारगतो नाम ईसिं ओणओ काओ, एगपोग्गलनिरुद्धदिट्ठी अणिमिसणयणो तत्थवि जे अचित्तपोग्गला तेसु दिट्ठिं निवेसेति, सचित्तेहिं दिट्ठी अप्पाइज्जति, जहा दुव्वाए, जहासंभवं सेसाणिवि भासियव्वाणि । अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सव्विंदिएहिं गुत्तेहिं दोवि पादे साहट्टु वग्घारियपाणी एगराइयं महापडिमं ठितो ।

सक्को य देवराया सभागतो भणति हरिसितो वयणं । तिन्निवि लोगऽसमत्था जिणवीरमणं चलेउं जे ॥४-४१।४९८॥

सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कस्स सो अमरिसेण । सामाणियसंगमओ बेति सुरिंदं पडिणिविट्ठो ॥४-४२।४९९॥

तेलोक्कं असमत्थंति वेहए तस्स चालणं काउं । अज्जेव पासह इमं मम वसगं भट्ठजोगत्तं ॥ ४-४३।५०० ॥

अह आगतो तुरंतो देवो सक्कस्स सो अमरिसेणं ।कासी य य (ह) उवसग्गं मिच्छादिट्ठी पडिनिविट्ठो ॥४-४४।५०१॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया जहा अवहारे जाव बहूहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे विहरति जाव सामिं च तहागतं ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता हट्ठतुट्ठचित्ते आणंदिए जाव सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोत्थुणं अरहंताणं जाव सिद्धिगतिणामधेयं ठाणं संपत्ताणं, णमोऽत्थुणं समणस्स भगवतो महतिमहावीरवद्धमाणसामिस्स णातकुलव-

संगम-कृत् उपसर्गस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता आगमसूत्र-[४०],मूलसूत्र-[०१] आवश्यकनिर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणिरचिता चूर्णि:-1

रवडेंसयस्स तित्थगरस्स सहसंबुद्धस्स, पुरिसोत्तमस्स पुरिससीहस्स पुरिसवरपुंडरियस्स पुरिसवरगंधहत्थिस्स, अभयदयस्स जाव ठाणं संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तिलोगवीरं तत्थ गतं इहगते, पासतु मे भगवं तत्थ गए इहगतंतिकट्टु वंदति नमंसति नमंसित्ता जाव सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे संनिसन्ने । तए णं से सक्के देविंदे सामिगुणातिसयअक्खिप्पमाणहियए एवं उप्पन्नंदिज्जमाणहियए० हियए संभंते जाव हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयणीमसुरभिकुसुमचंचुमालइयऊसवियरोमकूवे वियसियवरकमलाणणवयणे बहवे सामाणियतायत्तिसगादयो देवा य देवीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी–हं भो देवा ! समणे भगवं महावीरे तिलोगमहावीरे निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केति उवसग्गा समुप्पज्जंति, तंजहा- दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिक्खजोणिया वा पडिलोमा वा अणुलोमा वा, तत्थ पडिलोमा वासेण वा जाव काए आउडेज्जा, अणुलोमा वंदेज्ज जाव पज्जुवासेज्ज वा, ते सव्वे सम्मं सहति जाव अहियासेति । तए णं से भगवं समणे इरियासमिते भासासमिते जाव पारिट्ठावणियासमिते मणसमिए वतिसमिते कायसमिते मणगुत्ते वतिगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोभे संते पसंते उवसंते पडिणिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुवलेवे कंसपाती इव मुक्कतोये संखे इव निरंगणे जच्चकणगंव जायरूवे आदंसपलिभा इव पागडभावे जीवेविव अप्पडिहतगती गगणमिव निरालंबणे वायुरिव अप्पडिबद्धे सारयसलिलंव सुद्धहियए पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे कुम्मे इव गुत्तिंदिए खग्गिविसाणं व एगजाए विहग इव विप्पमुक्के भारंडपक्खी विव अप्पमत्ते मंदरो विव अप्पकंपे सागरो विव गंभीरे चंदोविव सोमलेस्से सूरो विव दित्ततेये कुंजरोविव सोंडीरे सीहोविव दुद्धरिसे वसभोविव जायत्थामे वसुंधराविव सव्वफासविसहे सुहुतहुतासणोविव तेयसा जलंते, णत्थि णं तस्स भगवतो कत्थति पडिबंधे भवति, तंजहा-

॥३०३॥

दव्वतो जाव भावतो, दव्वतो इह खलु माता मे पिता मे जाव सच्चित्ताचित्तमीसएसु वा दव्वेसु, एवं तस्स ण भवति, खेत्तओ गामे वा णगरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा जाव अंगणे वा, एवं तस्स ण भवति, कालतो- समए वा आवलियाए वा आणापाणूए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा दिवसे वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उडुए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नतरे वा दीहकालसंजोगे, एवं तस्स ण भवति । भावतो-कोहे वा [ण्क] पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुण्णे वा परपरिवादे वा अरतिरतीएवा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा, एवं तस्स ण भवति ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गेम्हहेमंतियाइं मासाइं गामे एगरादीए णगरे पंचराइए ववगयहस्ससोगअरतिरतिभयपरित्तासे णिरहंकारे लहुभूए अगंधे वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोयपरलोयअप्पडिबद्धे जीवियमरणे निरावकंखी संसारपारगामी कंमसंगणिग्घातणट्ठाए अब्भुट्ठिते, एवं च णं विहरति ।

तं अहो भगवं तिलोगवीरे तिलोगसारे तिलोगब्भहितपरक्कमे तेलोक्कं अभिभूत ट्ठिते, ण सक्का केणइ देवेण दाणवेण वा जाव तेलोक्केण वा झाणाओ मणागमवि चालेउंतिकट्टु वंदति णमंसति ।

इतो य संगमको सोधम्मकप्पवासी देवो सक्कसामाणिओ अभवसिद्धीओ, सो भणति--अहो देवराया रागेण उल्लावेति, को नाम माणुसमेत्तो देवेण न चालिज्जति ?, अज्जेव णं अहं चालेमित्ति, ताहे सक्को न वारेति, मा जाणिहिति परनिस्साए भगवं तवोकम्मं करेतित्ति । एवं सो आगतो ।

॥३०३॥

इत: संगमदेवकृता उपसर्गा: द्वितिय भागे वर्तते....

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-3

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

"आवश्यक मूलसूत्र" [निर्युक्ति एवं जिनदासगणि-रचिता चूर्णि: (भाग-१)]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलिता

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: नामेण

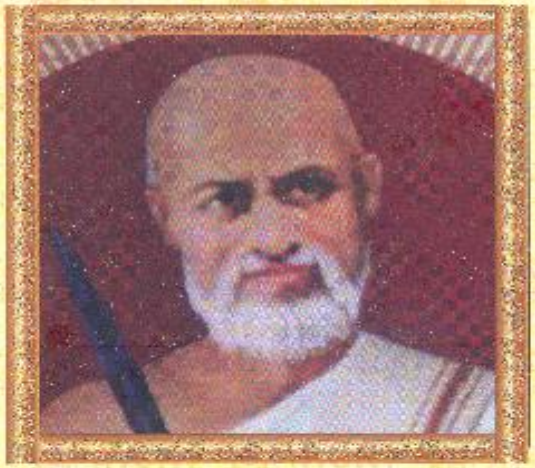
परिसमाप्ता:


आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

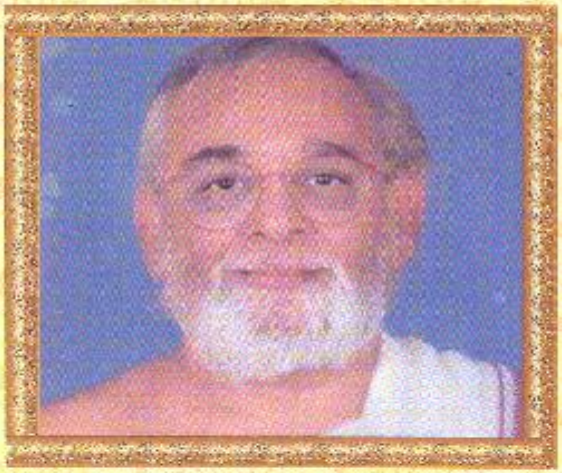
सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

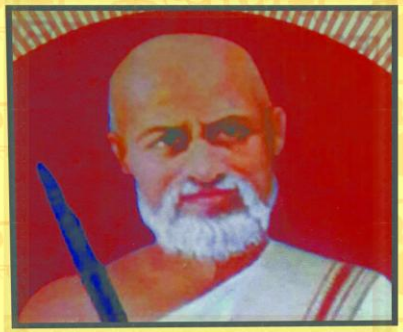


श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्व र्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू -भगवंत एवं साध्वी -महाराज के लिए उपाश्रय भी है , जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |



मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम - ४०

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [१]

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

